प्रस्तावना

हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् सुख-शान्ति है, जिसके लिए ज्ञान, योग, धारणा और सेवा साधन हैं। हमारी इस पढ़ाई का सेवा एक मुख्य विषय है। सेवा से ही आत्मा को परमात्मा की दुआयें मिलती हैं, परमात्मा का प्यार मिलता है, दूसरी आत्माओं की दुआयें मिलती हैं, आत्मा को यहाँ भी जीवनमुक्ति का अनुभव होता है और भविष्य नये कल्प में जीवनमुक्ति के लिए सुख-साधनों का निर्माण करता है। हमारी सेवा में सदा रुचि बनी रहे और सेवा में हम सदा सफलता को पाते रहें, उसके लिए बाबा समय-समय पर जो महावाक्य उच्चारे हैं, जो विधि-विधान बताये हैं, उनका ज्ञान होना अति आवश्यक है। उसके सम्बन्ध में ही यहाँ पर कुछ विचार किया गया है।

सेवा, साधना, सिद्धि और परमात्मा

विषय-सूची

सेवा, साधना, सिद्धि और परमात्मा 1
ब्राह्मण जन्म और ईश्वरीय सेवा
ईश्वरीय सेवा और परमात्मा
ईश्वरीय सेवा और साकार ब्रह्मा बाबा
Q. ईश्वरीय सेवा क्या है?
ईश्वरीय सेवा और ब्राह्मण जीवन 1
ईश्वरीय सेवा का ब्राह्मण जीवन में महत्व
ईश्वरीय सेवा से प्राप्तियाँ
ईश्वरीय सेवा का फल और बल
ईश्वरीय सेवा के विधि-विधान
ईश्वरीय सेवा और निश्चय 1
ईश्वरीय सेवा के प्रकार
1. मन्सा-वाचा-कर्मणा
2. तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क
3. देश-काल-परिस्थिति के आधार पर सेवा 1
यज्ञ सेवा अर्थात् मधुवन में सेवा
सेन्टर्स पर सेवा
अपने निवास स्थान
4. ज्ञान की सेवा 1
योग द्वारा सेवा अर्थात् शक्ति का दान
कर्मों द्वारा गुणों का दान
यज्ञ की स्थूल सेवा
लेखनी से सेवा
इण्टरनेट आदि से सेवा
5. स्व-सेवा, विश्व-सेवा, परिवार की सेवा 1
6. दृष्टि-वृत्ति और स्मृति से सेवा
7. स्वार्थ से सेवा और निस्वार्थ सेवा
निष्काम सेवा और कामना से सेवा
8. जड़, जंगम, चेतन की सेवा
9. स्व-स्थिति से सेवा 1

आदि-आदि मुख्य हैं, जिनसे हम दूसरों की सेवा करके अपना भाग्य बनाते हैं।

1. मन्सा-वाचा-कर्मणा,

मन्सा सेवा

(I) परमात्मा की याद से आत्मिक और परमात्मिक गुणों और शक्तियों के वायब्रेशन्स वातावरण में प्रसारित करके आत्माओं और प्रकृति को पावन बनाना। 1

(II) ज्ञान का मनन-चिन्तन करके उसके वायब्रेशन्स वातावरण में प्रसारित करना।

(III) लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थिति में स्थित होकर आत्माओं को मन्सा द्वारा लाइट-माइट देना।

(IV) यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति और परमात्मा की प्राप्ति की अनुभूति की खुशी और नशे में रहकर अन्य आत्माओं को भी ईश्वरीय खुशी और नशे की अनुभूति कराना।

(V) ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा कर सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखना भी मन्सा सेवा है।

(VI) मन्सा द्वारा दूसरी आत्माओं को ज्ञान की धारणा और सेवा की प्रेरणा देना भी मन्सा सेवा है।

वाचा सेवा 1

(I) वाचा द्वारा अन्य आत्माओं को आत्मा-परमात्मा-सृष्टि चक्र का ज्ञान देना, मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा रास्ता बताना।

(II) दुखी-अशान्त आत्माओं के दुख-अशान्ति के कारणों को सुनकर, उसका समाधान करना अर्थात् उनको सुख-शान्ति का सच्चा रास्ता बताना, शुभ राय देना वाचा सेवा है।

(III) वाचा द्वारा ज्ञान के गुह्य राज़ों को स्पष्ट करना और अन्य आत्माओं को उनकी अनुभूति कराना वाचा सेवा है।

(IV) ज्ञान-योग का महत्व बताकर आत्माओं की परमात्मा के साथ प्रीत जुटाना।

कर्मणा सेवा 1

(I) कर्म द्वारा दूसरों को प्रेरणा देना।

(II) स्थूल सेवा अर्थात् यज्ञ की स्थूल सेवा करना।

(III) कर्म द्वारा आत्माओं को गुणों का दान देना।

(IV) वर्तमान समय इन्टरनेट आदि के द्वारा भी सेवा की जा सकती है।

2. तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क से ईश्वरीय सेवा 1

(I) अपने तन से यज्ञ की स्थूल-सूक्ष्म सेवा करना।

(II) मन के द्वारा आत्माओं की सेवा करना, स्वयं भी अपने मन को ईश्वरीय सेवा में समर्पित करना और अन्य आत्माओं को भी अपना तन-मन-धन यज्ञ सेवा में समर्पित करने की प्रेरणा देना।

(III) धन को यज्ञ में लगाकर अन्य आत्माओं को सहयोग करना, धन को यज्ञ में समर्पित करना। सेन्टर खोलना, मेला-प्रदर्शनी आदि लगाना, उसका प्रबन्ध करना और सहयोग करना, यज्ञ के अन्य कार्यों में धन से मदद करना।

(IV) जन अर्थात् अपनी कन्याओं आदि को यज्ञ सेवा में समर्पित करना। इस जन-सेवा का ही भक्ति मार्ग में कन्या-दान के रूप में गायन है परन्तु वह कन्या-दान का तमोप्रधान स्वरूप है और अभी जो ईश्वरीय सेवा अर्थ कन्या-दान करते हैं, वह कन्या-दान का सतोप्रधान स्वरूप है।

(V) सम्बन्ध-सम्पर्क से सेवा अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं की ज्ञान-योग से सेवा करना।

3. देश-काल-परिस्थिति के आधार पर सेवा 1

यज्ञ सेवा अर्थात् मधुवन में सेवा

सेन्टर्स पर सेवा

अपने निवास स्थान
4. ज्ञान की सेवा 1
योग द्वारा सेवा
यज्ञ की स्थूल सेवा
लेखनी से सेवा
इण्टरनेट आदि से सेवा
5. स्व-सेवा 1
विश्व-सेवा
परिवार की सेवा
6. दृष्टि-वृत्ति और स्मृति से सेवा
7.स्वार्थ से सेवा और निस्वार्थ सेवा
निष्काम सेवा और कामना से सेवा
8. जड़, जंगम, चेतन की सेवा
9. स्व-स्थिति से सेवा 1
ईश्वरीय सेवा और स्व-स्थिति
ईश्वरीय सेवा और साधना
ईश्वरीय सेवा, साधना और साधन
ईश्वरीय सेवा, साधना और साध्य
ईश्वरीय सेवा, साधना और सिद्धि 1
ईश्वरीय सेवा, साधना और सतयुगी राजाई
ईश्वरीय सेवा और कर्म-बन्धन एवं माया
ईश्वरीय सेवा और विघ्न और विघ्नों का विनाश अर्थात् निर्विघ्न स्थिति
त्याग-तपस्या और ईश्वरीय सेवा 1
Q. ईश्वरीय सेवा से त्याग-तपस्या का क्या सम्बन्ध है?
ईश्वरीय सेवा और गीता ज्ञान
ईश्वरीय सेवा और श्रीमत
ईश्वरीय सेवा और मुरली 1
ईश्वरीय सेवा और राजतन्त्र अर्थात् राजशाही और उसकी स्थापना
Q. ईश्वरीय सेवा का विश्व के राजतन्त्र से क्या सम्बन्ध है?
ईश्वरीय सेवा और मनन-चिन्तन
ईश्वरीय सेवा और विनाश की प्रक्रिया 1
Q. ईश्वरीय सेवा और विनाश की प्रक्रिया का क्या सम्बन्ध है?
ईश्वरीय सेवा और अन्तिम विनाश का समय
ईश्वरीय सेवा और पवित्रता
ईश्वरीय सेवा और याद 1

ईश्वरीय सेवा की सफलता का आधार 1
Q. ईश्वरीय सेवा की सफलता के लिए किस-किस बात की याद रहे और याद एवं सेवा कैसी हो?
ईश्वरीय सेवा की सफलता का दर्पण
Q. सकाश देने की सेवा क्या है, उसका विधि-विधान क्या है? 1
Q. किसी आत्मा को याद करने और सकाश देने में क्या अन्तर है?
Q. किसी आत्मा को सन्देश देने और सकाश देने में क्या अन्तर है?
Q. किसी आत्मा को याद करना और उसके स्व-स्वरूप और परमात्मा की याद दिलाने और सकाश देने में क्या अन्तर है?
Q. सकाश और दृष्टि में क्या अन्तर है? 1
Q. सकाश और लाइट-हाउस, माइट-हाउस, सर्च-लाइट में क्या अन्तर है?
सेवा और विश्व-नाटक अर्थात् ड्रामा
ईश्वरीय सेवा और संगमयुग
ईश्वरीय सेवा और कल्प-वृक्ष 1
ईश्वरीय सेवा और विभिन्न धर्म, मठ-पंथ और सभ्यतायें
Q. ईश्वरीय सेवा और कल्प-वृक्ष में क्या सम्बन्ध है अर्थात् ईश्वरीय सेवा के लिए कल्प-वृक्ष के ज्ञान का क्या महत्व है?
ईश्वरीय सेवा और पुरुषार्थ 1
ईश्वरीय सेवा और धारणा
ईश्वरीय सेवा, भाग्य और भाग्य-विधाता
ईश्वरीय सेवा और समर्पणता
ईश्वरीय सेवा और गृहस्थ-व्यवहार
ईश्वरीय सेवा और भारत 1
ईश्वरीय सेवा और फरिश्ता स्वरूप
ईश्वरीय सेवा और संगठन
ईश्वरीय सेवा और समाज सेवा
ईश्वरीय सेवा और विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी 1
ईश्वरीय सेवा और एडवान्स पार्टी
ईश्वरीय सेवा और सतयुगी राजाई
प्रश्नोत्तर 1
ईश्वरीय सेवा के सम्बन्ध में विविध ईश्वरीय महावाक्य
साकार तन द्वारा उच्चारे महावाक्य
अव्यक्त बापदादा के आदि के महावाक्य
अव्यक्त बापदादा के वर्तमान के महावाक्य

सेवा, साधना, सिद्धि और परमात्मा

सेवा, साधना और सिद्धि तीनों का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है, इसलिए बाबा बार-बार याद दिलाता रहता है कि सेवा और साधना का बैलेन्स चाहिए अर्थात् सेवा और साधना दोनों साथ-साथ हों। जब सेवा और साधना साथ-साथ होगी तो सिद्धि स्वभाविक ही मिलेगी अर्थात् अवश्य मिलेगी।

सेवा अर्थात् विश्व-कल्याणार्थ अर्थात् आत्माओं और प्रकृति को पावन बनाने के लिए अपने तन-मन-धन से किया गया पुरुषार्थ।

साधना अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित रहने के लिए किया गया पुरुषार्थ अर्थात् विश्व-नाटक के गुह्य रहस्यों की स्मृति, स्व-स्वरूप की स्मृति, परमात्मा के स्वरूप, उनके गुण-कर्तव्यों की स्मृति में रहना या रहने का पुरुषार्थ करना। सिद्धि अर्थात् निर्भय-निश्चिन्त-निर्संकल्प स्थिति में स्थित होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द, परम-सुख की अनुभूति अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होना। जीवन में सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव होना। विश्व-नाटक के विधि-विधानों की स्मृति में सहज स्थित होकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक के परम-सुख की अनुभूति होना। पुरुषोत्तम संगमयुग का परम-सुख अनुभव होना। परमात्मा के साथ में परमानन्द का सहज अनुभव होना।

ब्राह्मण जन्म और ईश्वरीय सेवा

ये ईश्वरीय पढ़ाई है, इसमें मुख्य चार विषय हैं, जिनके विषय में बाबा ने सविस्तार ज्ञान दिया है और उसके विधि-विधान और प्राप्तियों का ज्ञान दिया है अर्थात् बाबा ने बताया है कि किस विषय से क्या विशेष प्राप्ति होती है और उसमें सफलता प्राप्त करने का क्या विधि-विधान है। ईश्वरीय सेवा उन मुख्य चार विषयों में से एक है। ईश्वरीय सेवा करने और यज्ञ की अन्य आत्माओं और परमात्मा की सेवा लेने का हिसाब-किताब है, उसको समझने वाले ही ईश्वरीय सेवा में सफलता प्राप्त करते हैं अर्थात् सेवा करके अपना श्रेष्ठ भाग्य जमा करते हैं। सेवा से ही अन्य आत्माओं और परमात्मा की दुआयें प्राप्त होती है, जो आत्मा को समय पर बहुत काम आती हैं।

''वर्णों का तुमको ही अभी ज्ञान है। ब्राह्मण वर्ण है सबसे ऊंच परन्तु महिमा व पूजा देवताओं की होती है।... यह ब्राह्मण जन्म तुम्हारा सबसे उत्तम है। यह है कल्याणकारी जन्म। देवताओं

या शूद्रों का जन्म कल्याणकारी नहीं है। तुम्हारा यह जन्म बहुत कल्याणकारी है क्योंकि तुम बाप का मददगार बन सृष्टि पर प्योरिटी-पीस स्थापन करते हो।''

सा.बाबा 1.12.08 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और परमात्मा

परमात्मा ज्ञान का सागर, पतित-पावन, सृष्टि-चक्र का रचयिता है (सृष्टि का रचयिता नहीं है परन्तु सृष्टि-चक्र का रचयिता है अर्थात् सृष्टि-चक्र को पुनरावृत्ति का आधार बनता है।) वह आकर आत्माओं की सेवा कर उनको पतित से पावन बनाते हैं और अन्य आत्माओं को पावन बनाने के लिए ईश्वरीय सेवा का विधि-विधान बताते हैं, उनके द्वारा सेवा कराकर, उनका भाग्य बनाते हैं। इसको ईश्वरीय सेवा कहते हैं परन्तु हम कोई ईश्वर की सेवा नहीं करते हैं बल्कि ईश्वर हमारी सेवा करते हैं और हमारा भाग्य बनाने के लिए हमारे द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा कराते हैं, आत्माओं को और प्रकृति को पावन बनाने का विधि-विधान बताते हैं। परमात्मा नये सृष्टि-चक्र का रचयिता है, हम उनके कार्य में सहयोगी बनते हैं और वह हमारे को सहयोग देकर यह सेवा का कार्य सम्पन्न करते हैं और कराते हैं।

''अच्छा जिज्ञासु देखकर बाप भी प्रवेश कर मदद करते हैं। बाप तो सदा विदेही है, उनको शरीर का भान है नहीं। वह ज्ञान और योग दोनों की मदद दे सकते हैं।''

सा.बाबा 4.02.09 रिवा.

''अभी बाप विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हैं। तुमको बाप का आक्यूपेशन सिद्ध कर बताना है। बाप के आक्यूपेशन और कृष्ण के आक्यूपेशन में बहुत फर्क है।... आत्मा में नॉलेज है परन्तु वह दे कैसे ? शरीर द्वारा ही देंगे। जब देते हैं तब तो उनकी महिमा गाई जाती है।''

सा.बाबा 21.11.09 रिवा.

''अन्त में सबको पता चलेगा कि हमारा ज्ञान सागर बाबा आया हुआ है, वह अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भरते हैं। फिर बहुत बच्चे आयेंगे। रात को भी फुर्सत नहीं मिलेगी। तुम ज्ञान और योग की सर्विस करते हो। जो ज्ञान-योग की सर्विस नहीं कर सकते हैं तो फिर कर्मणा सर्विस की भी मार्क्स है। सभी की आशीर्वाद मिलेगी।'' सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

''पहले-पहले शिवबाबा स्वदर्शन चक्रधारी है, ज्ञान का सागर है। वे ही जानते हैं कि हम कैसे इस 84 के चक्र में आते हैं। ... बाप करनकरावनहार है। वह कहते हैं तुम भी यह ज्ञान सीखो और औरों को भी सिखलाओ। बाप जो पढ़ाते हैं, वह पढ़कर औरों को भी पढ़ाओ।''

सा.बाबा 10.04.10 रिवा.

''अभी बाप तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रतनों की सौगात देते हैं, जिससे तुम राजाई प्राप्त करते हो। जो अविनाशी ज्ञान रतनों का दान करते हैं, वे प्रीतबुद्धि हैं।''

सा.बाबा 25.03.10 रिवा.

''बाप की यथार्थ महिमा तुम बच्चे ही जानते हो, मनुष्य तो न बाप को जानते हैं और और न बाप की महिमा को जानते हैं। ... तुम बच्चों को भी बाप जैसा प्यार का सागर बनना है, प्यार से कोई को भी समझाना है। नम्बरवन प्यार है - किसको भी बाप का परिचय देना। यह तुम गुप्त दान करते हो।''

सा.बाबा 17.03.10 रिवा.

''जो बच्चे सच्ची दिल वाले हैं, उन पर बाप का बहुत प्यार रहता है। सच्ची दिल पर साहेब राजी रहते हैं। जो अन्दर-बाहर सच्चे हैं, बाप के मददगार बनते हैं, सर्विस पर तत्पर रहते हैं, वे ही बाप को प्रिय लगते हैं। अपनी दिल से पूछना है कि हम सच्ची-सच्ची बाप की सर्विस करते हैं, सच्चे बाप के साथ रहते हैं?''

सा.बाबा 24.02.10 रिवा.

''यहाँ भी जो सर्विस में तत्पर रहते हैं, रहमदिल बनते हैं, वे बाप को प्यारे लगते हैं। भक्ति में रहम माँगते हैं। कहते हैं - खुदा रहम करो, मर्सी ऑन मी। परन्तु ड्रामा को कोई जानते नहीं हैं। जब बहुत तमोप्रधान बन जाते हैं, तब ही बाबा के आने का प्रोग्राम है। ऐसे नहीं कि ईश्वर जो चाहे सो कर सकते हैं या जब चाहे तब आ सकते हैं।''

सा.बाबा 22.12.09 रिवा.

''यह भी तुम बच्चे जानते हो कि बाप हमको जो शिक्षा देते हैं, हमको वह औरों को भी देनी है। किसको भी पहले-पहले बाप का ही परिचय देना है क्योंकि बाप को और बाप की शिक्षा को सब भूल गये हैं। ... हम सभी आत्मायें आपस में भाई-भाई हैं, सभी आत्माओं को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है, जो सबको बजाना ही है।''

सा.बाबा 25.11.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैं तो सबका बाप हूँ, हमारा सब पर प्यार है।... यहाँ बैठे भी बाप की नज़र सर्विसएबुल बच्चों की तरफ चली जाती है।... जो बच्चे मुझे याद करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ। जो मुझे नहीं भी याद करते हैं तो भी मैं सबको याद करता हूँ क्योंकि मुझे तो सबको वापस घर ले जाना है।''

सा.बाबा 3.11.09 रिवा.

''बेहद के बाप ने जरूर कोई सर्विस की होगी, तब तो इतना गायन है ना। कितनी वण्डरफुल बात है, उनकी कितनी महिमा की जाती है।''

सा.बाबा 27.10.09 रिवा.

''बाप ही आकर कलियुगी पतित से सतयुगी पावन देवता बनाते हैं, इसलिए ही कलियुगी मनुष्य पुकारते हैं कि बाबा आकर हमको पावन बनाओ। कलियुगी पतित मनुष्यों और सतयुगी पावन देवताओं में फर्क देखो कितना है।... बाप तुमको स्वर्गवासी देवता बनाते हैं, अभी तुम

पुरुषोत्तम संगमयुग पर हो।'' सा.बाबा 3.10.09 रिवा.

''कोई आये तो उसको समझाना चाहिए कि जिसको भगवान कहा जाता है, वह हमारा बाबा भी है, टीचर भी है और सत्गुरु भी है। ... बेहद का बाप है तो जरूर बेहद का वर्सा ही देंगे।... परन्तु यह भूल जाने के कारण किसको बता नहीं सकते।'' सा.बाबा 4.08.09 रिवा.

''जैसे बाप बहुत अच्छी तरह से समझाते हैं, ऐसे बच्चों को भी समझाना है। ... अभी यह है ही विशश वर्ल्ड। नई दुनिया को कहा जाता है वाइसलेस वर्ल्ड, शिवालय। यह सब समझाना पड़े तो बेचारों का कुछ कल्याण हो। बाप को ही सर्व का कल्याणकारी कहा जाता है। वह आते ही हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर।'' सा.बाबा 28.07.09 रिवा.

''किसको सीधा कहेंगे कि भगवान आया है, तो ऐसे कभी मानेंगे नहीं। इसलिए किसको समझाने की भी युक्ति चाहिए।... पहले उनको दो बाप का समझाना है। एक है पारलौकिक बेहद का बाप, दूसरा है शरीर का बाप... बेहद के बाप है नई सृष्टि का रचने वाला।''

सा.बाबा 25.07.09 रिवा.

''मेरे सिवाए कोई निष्काम सेवा कर नहीं सकता है। मनुष्य जो सेवा करते हैं, उसका उनको फल जरूर मिलता है। अभी तुमको फल मिल रहा है। गायन है कि भक्ति का फल भगवान देंगे क्योंकि भगवान है ज्ञान का सागर।... यह है ज्ञान और वह है भक्ति।''

सा.बाबा 22.04.09 रिवा.

''मैं अपकारी पर भी उपकार करता हूँ। बाप कहते हैं - इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। यह ड्रामा का खेल है। सतयुग आदि से लेकर कलियुग अन्त तक का यह खेल है, जो फिरना ही है। इसको बाप के सिवाए कोई समझा न सके।'' सा.बाबा 11.04.09 रिवा.

''बाबा परमधाम छोड़कर यहाँ पराये देश में आये हैं। उनको तो अब बहुत सर्विस करनी है। बाप कहते हैं - मुझे रात-दिन यहाँ सर्विस करनी पड़ती है। बाबा है तो यहाँ ही। वहाँ तो कोई सर्विस नहीं है। सर्विस बिगर बाबा को सुख न आये। सारी दुनिया की सर्विस करनी है। सब पुकारते हैं - बाबा आओ।'' सा.बाबा 8.03.09 रिवा.

''बाप को काँटों से भी प्यार है तो फूलों से भी प्यार है। पहले किससे प्यार है? जरूर काँटों से प्यार है। इतना प्यार है जो मेहनत कर उनको काँटों से फूल बनाते हैं। बाप आते ही काँटों की दुनिया में हैं।'' सा.बाबा 7.02.09 रिवा.

''बाबा सारी सृष्टि की बेहद सेवा पर आया हुआ है।... बाप को नर्क को स्वर्ग बनाने आना पड़ता है। बाबा बहुत उकीर से आते हैं। जानते हैं - मुझे बच्चों की सेवा में आना है। मैं कल्प-कल्प तुम बच्चों की सेवा पर उपस्थित होता हूँ।'' सा.बाबा 18.01.09 रिवा.

''सारी सृष्टि का कल्याणकारी दाता तो एक ही है। बाप जानते हैं - सारी दुनिया की जो भी आत्मायें हैं, सबको मैं ही वर्सा देने आता हूँ। ... बाप भल यहाँ बैठे हैं परन्तु उनकी नज़र सारे विश्व पर है। ... सारी विश्व को ही निहाल करना है। ड्रामा प्लेन अनुसार कल्प पहले मिसल सारे विश्व की आत्मायें निहाल हो जाने वाली हैं।''

सा.बाबा 18.01.09 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और साकार ब्रह्मा बाबा

परमपिता परमात्मा निराकार है, वह इस जगत में अवतरित होकर आत्माओं को पावन और तत्वों सहित विश्व को पावन बनाते हैं, इसलिए उनको पतित-पावन कहा जाता है। वह निराकार है, इसलिए उनको अपना शरीर न होने के कारण उनकी अपनी कोई आवश्यकतायें नहीं हैं, कोई इच्छा-आकांक्षा, कामना नहीं है परन्तु ब्रह्मा बाबा शरीरधारी हैं और शिवबाबा के साथ ईश्वरीय सेवा में सहयोगी हैं क्योंकि ब्रह्मा बाबा के तन में शिवबाबा आकर विश्व-कल्याण की सेवा करते हैं और कराते हैं। ब्रह्मा बाबा साकार में इस ईश्वरीय सेवा के आधारमूर्त हैं, जिन्होंने शिवबाबा की श्रीमत पर अपना तन-मन-धन-जन सब ईश्वरीय सेवा में समर्पित करके ईश्वरीय सेवा में अपना समय, स्वांस, शक्ति और संकल्प सफल किया और ईश्वरीय सेवा के उदाहरण स्वरूप दर्पण बन गये। साकार में तो उन्होंने अपना तन-मन-धन, समय, श्वांस, संकल्प सफल किया ही लेकिन अभी भी फरिश्ता स्वरूप में विश्व-कल्याण की सेवा कर रहे हैं, करा रहे हैं और हम सबको ईश्वरीय सेवा के लिए प्रेरणा देते रहते हैं।

''यह भी बच्चे जानते हैं कि नई दुनिया स्थापन करने में कुछ तकलीफ भी होती है।... बाबा को सारा दिन ख्यालात चलते हैं कि कैसे सबको यह सन्देश सुनायें कि बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आये हैं। ... परन्तु वण्डर है कि बच्चों को वह खुशी रहती नहीं है, न उस उमंग से सबको खुशखबरी सुनाते हैं। बाप ने तुमको मैसेन्जर बनाया है।''

सा.बाबा 22.02.10 रिवा.

''कोई का भी कमी का संस्कार अपनी शुभ भावना को कम नहीं करे। ... जैसे ब्रह्मा बाप ने क्या नहीं देखा, क्या नहीं किया ... अन्त में भी शुभ भावना, शुभ कामना के तीन शब्द सभी को देकर गये। याद हैं ना तीन शब्द। स्वयं भी निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी इसी स्थिति में अव्यक्त बने। किसी को भी कर्मभोग की फीलिंग नहीं दिलाई। किसने समझा कि कर्मभोग समाप्त हो रहा है। क्या हो गया ? अव्यक्त हो गया।'' अ.बापदादा 30.01.10

''इस बाबा ने धक से सबकुछ छोड़ दिया क्योंकि बाबा ने प्रवेश किया। सबकुछ इन माताओं

के अर्पण कर दिया। बाबा ने कहा - इतनी बड़ी स्थापना करनी है, सब इस सेवा में लगा दो। एक पैसा भी किसको देना नहीं है। नष्टोमोहा इतना चाहिए। बड़ी मन्जिल है। मीरा ने लोकलाज विकारी कुल की मर्यादा छोड़ी तो उनका कितना मान है।''

सा.बाबा 19.01.10 रिवा.

''बच्चे हार खाते हैं, फिर भी बाप उम्मीद रखते हैं, कभी नाउम्मीद नहीं होते हैं। अधम से अधम का भी बाप को उद्धार करना होता है। बाप को तो सारे विश्व का उद्धार करना है। ... सर्विस में कब थकना नहीं है। भल कोई चढ़कर फिर अधम बना है, अगर फिर आता है तो बाबा स्नेह से बिठायेंगे ना, हालचाल पूछेंगे या कहेंगे चले जाओ!''

सा.बाबा 16.12.09 रिवा.

''जो समझते हैं कि ब्रह्मा तो कुछ नहीं है, तो उनकी क्या गति होगी। ऐसे समझने वाले दुर्गति को पा लेते हैं। ... ज्ञान की धारणा कर औरों को सुनाते हैं तो असर पड़ता है। खुद विकार में जाते रहे और दूसरों को कहे निर्विकारी बनो, तो उनका क्या असर पड़ेगा। एक पण्डित की कहानी है ना। ... जो बहुतों की सेवा करते हैं, वे जरूर सबको प्यारे लगते हैं।''

सा.बाबा 3.12.09 रिवा.

''बच्चों को कितनी अच्छी सर्विस करनी चाहिए। इन लक्ष्मी-नारायण दोनों ने यह सर्विस की है।... हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप हमको कहते हैं - सबको मेरा परिचय देते रहो। सर्विस से ही तुम शोभा पायेंगे और तब ही बाप की दिल पर चढ़ेंगे।''

सा.बाबा 27.10.09 रिवा.

''अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर तुम जितना पवित्र बनेंगे और पढ़ेंगे, उतना सतयुग में ऊंच पद पायेंगे। ... जो सम्पूर्ण बनेंगे, अच्छी रीति पढ़कर औरों को पढ़ायेंगे, ऊंच पद भी वे ही पायेंगे। ... पढ़ाने वाला है शिवबाबा, यह नहीं पढ़ाते हैं। वह इनके द्वारा पढ़ाते हैं। इसको गाया जाता है भगवान का रथ, भाग्यशाली रथ।''

सा.बाबा 19.09.09 रिवा.

''जब बापदादा कहते हैं, तो यह जानते हैं कि शिवबाबा है और वह इस रथ पर बैठा है। ... अभी तुम बाप को पहचानते हो तो ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि बाप का परिचय दूसरों को कैसे दें! ... जैसे तुमने बाप को जाना है, वैसे तुम दूसरों को भी कह सकते हो हम आत्माओं का बाप तो एक ही शिवबाबा है। ... बाबा इस ब्रह्मा तन में आते हैं। इनको प्रजापिता ब्रह्मा कहा जाता है।''

सा.बाबा 18.09.09 रिवा.

''बाप की महिमा अपरमअपार है तो बाप की प्रापर्टी की महिमा भी अपरमअपार है। बच्चों को कितना नशा चढ़ना चाहिए। बाप कहते हैं मैं उन आत्माओं को याद करता हूँ, जो सर्विस करते

हैं। वे ऑटोमेटिकली याद आते हैं। ... सर्विसएबुल सदैव मीठा बोलेंगे।''

सा.बाबा 2.07.09 रिवा.

''जितना-जितना तुम सर्विसएबुल बनते हो, उतना बाप को बहुत-बहुत प्यारे लगते हो। ... बाप तुमको सब दुखों से दूर करने आया है, तो ऐसे बाप में कितना प्यार होना चाहिए। ... अब जैसे तुमको रास्ता मिला है, फिर तुमको औरों को भी सुख का रास्ता बताना है।''

सा.बाबा 1.06.09 रिवा.

''सभी बातों में, कदम-कदम में समानता रखो। लेकिन समानता कैसे आयेगी ? ... साकार में क्या विशेष्ता थी ? एक तो सदैव अपने को आधारमूर्त समझो। सारे विश्व के आधारमूर्त। इससे क्या होगा ? जो कार्य करेंगे, जिममेवारी से करेंगे।... और दूसरा उद्धारमूर्त बनना है। जितना अपना उद्धार करेंगे, उतना ही औरों का भी उद्धार कर सकेंगे और जितना औरों का उद्धार, उतना अपना भी उद्धार करेंगे।'' अ.बापदादा 6.08.70

''मैं सुबह को भी बैठकर बच्चों को याद की यात्रा में मदद करता हूँ। सारे बेहद के बच्चे याद रहते हैं। तुम सब बच्चों को इस याद की मदद से सारे विश्व को पावन बनाना है। इसमें ही तुम सब अंगुली देते हो। पवित्र तो सारी दुनिया को बनाना है ना। बाप सभी बच्चों पर नज़र रखते हैं कि सब शान्तिधाम में चले जायें।'' सा.बाबा 11.05.09 रिवा.

''जो सितारे अच्छे सर्विसएबुल हैं, उनको ही देखता रहता हूँ। बाप का लब है ना क्योंकि स्थापना में मदद करते हैं। हू-ब-हू कल्प पहले मिसल यह राजधानी स्थापन हो रही है। अनेक बार हुई है। यह ड्रामा का चक्र चलता ही रहता है।'' सा.बाबा 12.05.09 रिवा.

''माया के तूफान तो आयेंगे लेकिन तुमको कर्मेन्द्रियों से कुछ भी नहीं करना है। ... बाप कहते हैं - मेरी सर्विस करने वाले बच्चे ही मुझे प्रिय लगते हैं। जो बहुतों को सुखदाई बनाते हैं, ऐसे बच्चों को मैं भी याद करता रहता हूँ।'' सा.बाबा 20.04.09 रिवा.

''सवेरे बाबा आकर सर्च-लाइट देते हैं। बाबा अनुभव सुनाते हैं कि जब बैठते हैं तो जो अनन्य बच्चे हैं, वे पहले याद आते हैं। ... बच्चे तो भल यहाँ भी बैठे हैं परन्तु बाबा याद उनको करते हैं, जो सर्विस करते हैं। जो अच्छे बच्चे शरीर छोड़ जाते हैं, उनकी आत्मा को भी बाबा याद करते हैं। ... उनको भी बाबा सर्च-लाइट देते हैं।'' सा.बाबा 26.03.09 रिवा.

''बाबा ने माताओं को ही ट्रस्टी बनाया है। सब-कुछ तुम मातायें सम्भालो। ... शास्त्रों में भी लिखा है - सागर मन्थन किया, अमृत का कलष लक्ष्मी को दिया बांटने के लिए। ... ड्रामा अनुसार मुझे काँटों की दुनिया में ही आना पड़ता है, काँटों को फूल बनाने।''

सा.बाबा 7.02.09 रिवा.

Q. ईश्वरीय सेवा क्या है?

ईश्वर अर्थात् परमात्मा तो स्वयं आत्माओं की सेवा करने आते हैं, फिर भी इसे ईश्वरीय सेवा क्यों कहते हैं, यह भी विचारणीय विषय है। क्या हम ईश्वर अर्थात् परमात्मा की सेवा करते हैं?

नहीं, इस विश्व नाटक के विधि-विधान अनुसार भाग्य-विधाता परमात्मा ने हमारा भाग्य बनाने के लिए हमको ये रुहानी सेवा दी है, इसलिए इसको ईश्वरीय सेवा कहते हैं। वास्तव में है ये अपनी सेवा क्योंकि इससे हमारा अपना भाग्य बनता है।

परमात्मा ने अभी हमको आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है, उस ज्ञान को धारण करने से आत्मा को अपार खुशी होती है क्योंकि ज्ञान को धन कहा जाता है अर्थात् जैसे धन कमाने में खुशी होती है, उसी प्रकार इस ज्ञान धन को समझने और धारण करने में आत्मा को खुशी होती है और ज्ञान को समझने और धारण करने में ईश्वरीय सेवा का विशेष महत्व है। जो उस महत्व समझता है, वही इस ईश्वरीय सेवा में अपना तन-मन-धन लगाकर इसके परमानन्द को पाता है। ज्ञान धन को समझकर, उसको धारण कर, उसकी खुशी और नशे में रहना, जिससे अन्य आत्माओं को भी उसके महत्व का अनुभव हो, यही ईश्वरीय सेवा है।

परमात्मा पतित-पावन है अर्थात् सारे विश्व को पावन बनाने का उत्तरदायित्व उनके ऊपर है। वह जब इस कार्य अर्थ इस धरा पर आते हैं तो उसका सन्देश पाकर जो आत्मायें अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाती हैं और अन्य आत्माओं को भी जीवन बनाने का सन्देश देती है, उनको सहयोग करती हैं, परमात्मा के दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनती है, उनका जीवन धन्य-धन्य हो जाता है। इससे ईश्वर के कर्तव्य में सहयोग होता है, इसलिए इसको ईश्वरीय सेवा कहा जाता है।

आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है, परमात्मा पिता सच्चिदानन्द घन है, ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है और ये पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन परमानन्दमय है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अपने आत्मिक स्वरूप का आनन्द अनुभव करना और कराना ईश्वरीय सेवा है।

परमात्मा के सानिध्य में परमानन्द का अनुभव करना और अन्य आत्माओं को कराना ईश्वरीय सेवा है।

विश्व-नाटक परमानन्दमय है, उसके यथार्थ ज्ञान को समझकर, उसको साक्षी होकर देखना, उसका आनन्द लेना और अन्य आत्माओं को उसका राज़ बताकर, उनको उसका

आनन्द अनुभव कराना ईश्वरीय सेवा है।

ये कल्प का पुरुषोत्तम संगमयुग है, इसकी सत्यता को अनुभव करके अर्थात् उसके महत्व को जानकर, इस समय के सुख का अनुभव करना और अन्य आत्माओं को उसका ज्ञान देकर उनको भी इसके सुख का अनुभव कराना ईश्वरीय सेवा है।

ये ईश्वरीय यज्ञ है, इसकी स्थूल और सूक्ष्म सेवा से आत्मा को परम भाग्य की प्राप्ति होती है, इस सत्य को अनुभव करके यज्ञ की स्थूल वा सूक्ष्म सेवा द्वारा अपना भाग्य बनाना और और अन्य आत्माओं को भी अनुभव कराकर निमित्त बनाकर यज्ञ सेवा में सहयोगी बनाना ईश्वरीय सेवा है।

हम इस कल्प-वृक्ष की पूर्वज आत्मायें हैं, सारे वृक्ष की आत्माओं की पालना करना हमारा कर्तव्य है, इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है - तुम पूर्वजों को दुखी-अशान्त आत्माओं की पुकार सुननी है और उनको दुख-अशान्ति से मुक्त करने का पुरुषार्थ करना है। इस रहस्य को समझकर अपना कर्तव्य पालन करना ईश्वरीय सेवा है।

''भल कोई भी धर्म वाला हो, उनको समझाना चाहिए। बाप को लिबरेटर कहा जाता है। बाप लिबरेटर गाइड है, उनका परिचय सबको देना है। सुप्रीम गॉड फादर आकर सबको लिबरेट करते हैं। ... अब बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे। बाप है एवर प्योर।''

सा.बाबा 15.04.10 रिवा.

''बाप आये हैं हमको पावन बनाने। ... पावन बनना है और बनाना है। तुम पावन बनेंगे तो फिर दुनिया भी पावन बनेंगी। ... इन बातों को जो अच्छी रीति समझते हैं, वे फिर औरों को भी समझाते हैं। बाप तो सिर्फ कहते हैं - बच्चे, अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो और औरों को भी ऐसे समझाओ।''

सा.बाबा 28.03.10 रिवा.

''तुम जब बाप के सम्मुख बैठते हो तो तुम्हारे रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। अहो सौभाग्य, 100 प्रतिशत दुर्भाग्यशाली से हम सौभाग्यशाली बनते हैं। ... अभी तुम्हारे में सारे 84 जन्मों का और सृष्टि-चक्र का पूरा ज्ञान है। ... जैसे बाप ने तुमको पढ़ाया है, अब तुमको औरों का भी कल्याण करना है, स्वदर्शन चक्रधारी बनना है और बनाना है।''

सा.बाबा 22.03.10 रिवा.

''आपके चेहरे और चलन द्वारा, आपके नयनों में बाप प्रत्यक्ष हो। अभी आपस में यह प्लेन बनाओ। ... अभी एडीशन करो कि भगवान वर्सा दे रहा है। अभी वर्सा नहीं लिया तो कब लेंगे! बाप को बच्चों का दुख-अशान्ति का वायुमण्डल देखकर रहम आता है और बाप और आप जानते ही हो कि यह तो अति में जाना ही है। बिना अति के अन्त नहीं होता है। ... यह

अनुभव कराओ।'' अ.बापदादा 15.03.10

''अब बाप कहते हैं - देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ एक बाप से सम्बन्ध रखना है। ... बाप है दुख हर्ता, सुख कर्ता। तुमको भी सबको सुख का रास्ता बताना है अर्थात् अन्धों की लाठी बनना है।'' सा.बाबा 16.03.10 रिवा.

''रुहानी बच्चे, यह अक्षर एक बाप ही कह सकते हैं, और कोई को कहना आयेगा ही नहीं।... मनुष्यों को पता नहीं है कि शिवबाबा भारत में आते हैं तो आकर क्या करते हैं। तुमको अब सबको परिचय देना है त्रिमूर्ति शिव बाप का।... बाप तुमको अपना परिचय देते हैं, तुमको फिर और सबको बाप का परिचय देना है।'' सा.बाबा 17.02.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैं ही पतित-पावन हूँ। तुम घर-घर में यह मैसेज दो कि बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे, तुम पवित्र बन जायेंगे। विनाश सामने खड़ा है। ... सभी विकारों रूपी रावण की जेल में पड़े हैं, मैं सर्व की सद्गति करता हूँ।''

सा.बाबा 15.02.10 रिवा.

''जो कुछ होता है, सब ड्रामा में नूँध है। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ हूँ। मैं भी नूँध बिगर कुछ कर नहीं सकता हूँ। ... यह सुख और दुख का खेल है। इस बेहद सृष्टि के 3 फ्लोर हैं, जिनको तुम बच्चों के सिवाए कोई भी नहीं जानते हैं। यह खुशी की बात सबको खुशी से सुनानी है।'' सा.बाबा 13.02.10 रिवा.

''पहले तो किसकी बुद्धि में बिठाओ कि हमको पढ़ाने वाला कौन है?... शिवबाबा ब्रह्मा के द्वारा देवी-देवता धर्म यानी नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं, फिर शंकर द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश और विष्णु द्वारा नई दुनिया की पालना कराते हैं।''

सा.बाबा 4.02.10 रिवा.

''पावन बनकर, दूसरों को भी पावन बनाना, यही रुहानी सच्ची सेवा है। तुम अभी रुहानी सेवा करते हो, इसलिए तुम बहुत ऊंचे हो। ... बाप कहते हैं - यह खेल बना हुआ है। कल्प बाद फिर ऐसा ही होगा। अब ड्रामा प्लेन अनुसार मैं आया हूँ तुमको समझाने के लिए।''

सा.बाबा 25.01.10 रिवा.

''भावना के अनुसार भक्ति में साक्षात्कार होता है, इसमें ग्लानि की कोई बात नहीं है। बच्चों को सदैव हर्षित रहना है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। ... इसमें नाराज़ होने की बात नहीं है। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। प्यार से समझानी देनी होती है। बेचारे अज्ञान अन्धेरे में पड़े हैं। नहीं समझते हैं तो तरस पड़ता है। सदैव मुस्कराते रहना चाहिए।''

सा.बाबा 15.07.09 रिवा.

''बाप इस सृष्टि-चक्र का राज़ तुमको समझाते हैं, जिसको समझने से तुम देवता बन जाते हो। जैसे तुम समझकर देवता बनते हो, वैसे औरों को भी बनाते हो। तुम किसको भी कह सकते हो - बाप ने हमको यह सब राज़ समझाया है, जो हम आपको बताते हैं। हम किसकी ग्लानि नहीं करते हैं। ... यह ज्ञान बाप के सिवाए कोई दे नहीं सकता है।''

सा.बाबा 20.11.09 रिवा.

''तुम अखबार में लिख सकते हो - जो आकर रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देवे, उनके लिए हम आने-जाने का प्रबन्ध करेंगे, अगर रचता और रचना का सही परिचय दिया तो। ... ऐसी एडवारटाइज़ और कोई कर न सके। ... तुम्हारी बुद्धि में ये सब बातें आनी चाहिए। ऐसी-ऐसी तुम चेलेन्ज दो। जो इन बातों को अच्छी रीति समझते हैं, वे ही ऐसी चेलेन्ज देंगे।''

सा.बाबा 21.11.09 रिवा.

''सभी को बापदादा का सन्देश दे दें क्योंकि समय पर कोई भरोसा नहीं है। बापदादा ने पहले से ही कहा है कि अचानक क्या भी हो सकता है।... ब्राह्मणों की डिक्शनरी में कभी-कभी शब्द शोभता नहीं है। अभी-अभी संकल्प किया और करना ही है। देखेंगे, करेंगे - यह गे-गे का शब्द ही नहीं है। इसलिए आपकी मम्मा ने भी यही लक्ष्य रखा कि 'अब नहीं तो कब नहीं'।''

अ.बापदादा 25.10.09

''अभी यही लक्ष्य रखो कि बेहद के वैरागी और हिम्मत, उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते रहो और उड़ाते रहो। अभी उड़ने का समय है। सदा अपने पंखों को चेक करो कि कमजोर तो नहीं हो रहे हैं। ... हर बच्चा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण दिखाई दे।''

अ.बापदादा 25.10.09

''अविनाशी ज्ञान रतनों को लेकर फिर औरों को दान करते जाओ। इन ज्ञान रत्नों के लिए कहा जाता है कि एक-एक रत्न लाखों का है। कदम-कदम पर पदम देने वाला तो एक ही बाप है। सर्विस पर बड़ा अटेन्शन चाहिए। तुम्हारा कदम है याद की यात्रा का, उससे तुम अमर बन जाते हो। वहाँ मरने आदि का फिक्र होता नहीं। एक शरीर छोड़ दूसरा लिया।''

सा.बाबा 6.08.09 रिवा.

''ये सब बातें बच्चों को अच्छी रीति समझकर औरों को भी समझाना है और बहुत खुशी में भी रहना है। अभी हम सदैव के लिए बीमारियों आदि से छूटकर 100 परसेन्ट हेल्दी, वेल्दी बनते हैं। ... तुम जानते हो सबका मौत तो होना ही है। कल्प-कल्प का यह खेल है। फिकरात कोई नहीं होती। जो पक्के योगी हैं, वे कभी हाय-हाय नहीं करेंगे।''

सा.बाबा 29.07.09 रिवा.

''अब बाप आये हैं आत्माओं को पावन बनाकर, पावन दुनिया शान्तिधाम में ले जाने के लिए। फिर जो राजयोग सीखते हैं, वे ही पावन सुखधाम में आयेंगे।... बच्चे अपने को आत्मा समझो और मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। मैं कल्प-कल्प यही पैग़ाम देता हूँ।''

सा.बाबा 30.07.09 रिवा.

''अपने को ऐसी ट्रान्सपेरेण्ट स्थिति में ट्रान्सफर करना है, जो आपके शरीर के अन्दर जो आत्मा विराजमान है, वह स्पष्ट सभी को दिखाई दे। आपका आत्मिक स्वरूप उनको अपने आत्मिक स्वरूप का साक्षात्कार कराये। इसको ही कहते हैं अव्यक्त वा आत्मिक स्थिति का अनुभव कराना।''

अ.बापदादा 18.1.71

''मीठे बच्चो, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे सब पाप कट जायेंगे और चक्र फिराओ, औरों की सर्विस कर आप समान बनाओ। बाप एक-एक को बैठ देखते हैं कि यह क्या सर्विस कर रहे हैं। स्थूल सेवा करते हैं, सूक्ष्म सेवा करते हैं या मूल सेवा करते हैं। सबको बाप का परिचय देना है, मूल सेवा।''

सा.बाबा 24.06.09 रिवा.

''अब तुम बच्चों को यह सन्देश सबको देना है। सबको बोलो - आओ तो हम तुमको रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनायें, परमपिता परमात्मा की बायोग्राफी बतायें।''

सा.बाबा 30.05.09 रिवा.

''अब तुम ट्रस्टी बनो। ... आगे पापात्माओं की पापात्माओं से लेनदेन होती आई है। अब संगमयुग पर तुम्हारी पापात्माओं से लेनदेन नहीं है। पापात्माओं को दान किया तो पाप सिर पर चढ़ जायेगा। ... बाप कहेंगे जाकर सेन्टर खोलो तो बहुतों का कल्याण होता।''

सा.बाबा 15.04.09 रिवा.

''आप सबकी सेवा है - विश्व की आत्माओं की समस्या का कारण निवारण करना। निवारण करके ही सबको निर्वाणधाम में ले जाना है क्योंकि आप सभी मुक्तिदाता हो। जब औरों को भी मुक्ति दिलाने वाले हो तो स्वयं भी कारण को निवारण करेंगे, तब तो औरों को मुक्ति दिला सकेंगे, निर्वाण में भेज सकेंगे।''

अ.बापदादा 7.04.09

''समस्यायें दिन प्रतिदिन बहुत बढ़नी है। तो समस्या समाधान रूप में बदल जाये। मेहनत और समय समस्या मिटाने में नहीं लगे। क्या आपको अपने भक्तों की और समय की पुकार सुनाई नहीं देती! ... अभी हर एक को अनुभवी मूर्त बन कोई न कोई अनुभव कराने की आवश्यकता है।''

अ.बापदादा 7.04.09

ईश्वरीय सेवा और ब्राह्मण जीवन

ईश्वरीय सेवा का ब्राह्मण जीवन में महत्व

वास्तव में ये ब्राह्मण जीवन है ही सेवा के लिए। योग भी एक सेवा है, जिससे आत्मा स्वयं तो पावन बनती ही है, साथ में योग से जो वायब्रेशन पैदा होते हैं, वे आत्माओं को और प्रकृति को भी पावन बनाते हैं। आत्माओं को पावन बनने में सहयोग देते हैं। सेवा में ही इस ब्राह्मण जीवन की सफलता समाई हुई है। जो जितनी स्थूल-सूक्ष्म सेवा करता है, उसको उतना ही ये ब्राह्मण जीवन सुखमय अनुभव होता है।

वास्तविकता ये है कि सारे कल्प में यह ब्राह्मण जीवन ही है, जो सारे विश्व की यथार्थ सेवा करता है। ब्राह्मण ही परमात्मा के साथ सारे विश्व की सेवा करते हैं, जिसके द्वारा जड़ और चेतन तत्वों सभी पावन बनते हैं, इसलिए ही इस जीवन का विशेष महत्व है।

''दाता के बच्चे सदैव देने वाले होते हैं। उनका हाथ कभी देने से रुकता नहीं है। सर्व के सहयोगी तब बनेंगे, जब सर्व के स्नेही बनेंगे। सर्व के स्नेही नहीं तो सर्व के सहयोगी भी नहीं बन सकते। ... सर्व का सहयोगी बनने के लिए अपने आपको मिटाना भी पड़ता है। ... अपने को मिटाना अर्थात् अपने पुराने संस्कारों को मिटाना।'' अ.बापदादा 30.7.70

''मैं आकर इन बच्चों के द्वारा कार्य कराता हूँ। बाबा के साथ तुम ब्राह्मण ही सर्विस करते हो, जिनको खुदाई खिदमतगार कहा जाता है। सबसे अच्छे ते अच्छी खिदमत यह है। ... यह नई बात नहीं है। कल्प पहले भी जितने देवी-देवता निकले थे, वे ही अभी भी निकलेंगे। यह कोई नई बात नहीं है। सब ड्रामा में नूँध है। तुमको सिर्फ सबको पैग़ाम पहुँचाना है।''

सा.बाबा 5.05.09 रिवा.

''योगी और ज्ञानी तू आत्मा को शौक रहता है कि हम जाकर औरों को भी समझायें। ... अभी देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि हम अभी देवी-देवता धर्म के हैं। नहीं, अभी तुम ब्राह्मण धर्म के हो, देवी-देवता धर्म के बन रहे हो। देवताओं का परछाया भी इस पतित सृष्टि पर नहीं पड़ सकता है।'' सा.बाबा 18.02.10 रिवा.

''बाप ने तुमको सिखाया है कि तुम औरों को भी रास्ता बताते रहो और सबको कहो - इस दुनिया को देखते भी नहीं देखो। बुद्धियोग एक शिवबाबा से लगा रहे।... स्कूल में जो तीखे स्टूडेण्ट्स होते हैं, वे फिर औरों को भी उठाने की कोशिश करते हैं।... बहुतों को समझाने से बहुत उन्नति होती है।'' सा.बाबा 16.02.10 रिवा.

''किसको समझाने के लिए भी बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। ... अभी बाग़वान बाप फूलों का

बगीचा लगाते हैं, काँटों को फूल बनाते रहते हैं। उनका धन्धा ही यह है। जो खुद काँटा होगा, वह दूसरों को फूल कैसे बनायेगा। ... अच्छे गुणवान बच्चे वे हैं, जो काँटों को फूल बनाने की अच्छी सेवा करते हैं, किसी को भी काँटा नहीं लगाते हैं अर्थात् किसको दुख नहीं देते हैं।''

सा.बाबा 22.01.10 रिवा.

''सारा जंगल भरा हुआ है। तुम जहाँ जायेंगे, शिकार करके आयेंगे, प्रजा बनाकर आयेंगे। राजा भी बना सकते हो। ... तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। बहुत खुशी उनको होगी, जो सारा दिन सर्विस करते रहेंगे।'' सा.बाबा 21.01.10 रिवा.

''तुमको सबका कल्याण करने का शौक होना चाहिए। महारथी बच्चे, जो सर्विस पर रहते हैं, उनको तो बहुत खुशी रहती है। ... हर एक को अपनी दिल से पूछना चाहिए कि हम कितनी ईश्वरीय सर्विस करते हैं? गॉड फादर की सर्विस क्या है? सबको बाप का पैग़ाम देना - मन्मनाभव।'' सा.बाबा 5.01.10 रिवा.

''एक होती है साधारण स्मृति, दूसरी होती है पॉवरफुल स्मृति। ... पॉवरफुल स्मृति रहनी चाहिए। ... निरन्तर समझो - मैं ईश्वरीय सर्विस पर हूँ।... भोजन बनाते समय ईश्वरीय स्वरूप होगा तो उस अन्न का असर मन पर होगा।... हम ईश्वरीय सन्तान सिर्फ और सदैव इसी सर्विस के लिए ही हैं।'' अ.बापदादा 30.5.71

''जब तक यह ईश्वरीय जन्म है तब तक हर सेकेण्ड, हर संकल्प, हर कार्य ईश्वरीय सर्विस है। ... जब अपनी इस ईश्वरीय सर्विस की सीट को छोड़ देते हो तो सीट को छोड़ने से स्थिति भी सेट नहीं हो पाती है। इसलिए कब सीट नहीं छोड़नी चाहिए।'' अ.बापदादा 30.5.71

''हम ब्राह्मण हैं, हमारा धन्धा ही है मनुष्य को देवता बनाना। ... इस समय हम बाबा की श्रीमत से स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। जो स्थापना करेंगे वे ही जरूर मालिक भी बनेंगे।''

सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

''जो अच्छे समझदार हैं, उनको सर्विस का बहुत शौक रहता है। वे समझते हैं इस ईश्वरीय सर्विस में तो बहुत लॉटरी मिलनी है।... किन्होंकी यहाँ बैठे भी बुद्धि बाहर भटकती रहती है। ... अभी तुम बच्चे विश्व में सुख-शान्ति स्थापन कर रहे हो।'' सा.बाबा 27.10.09 रिवा.

''अभी सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। स्वदर्शन चक्रधारी तुम्हारी ही महिमा है। तुम ब्राह्मण ही मेहनत कर मनुष्यों को आप समान बनाकर स्वर्गवासी देवी-देवता बनाते हो। ... जब तुम देवता बन जाते हो तो तुमको पास्ट, प्रजेन्ट, फ्युचर का कोई ज्ञान नहीं रहता है।'' सा.बाबा 10.10.09 रिवा.

''अभी बाप ने बच्चों को समझाया है - असुल में तुम सब आत्मायें भाई-भाई हो, अब नई सृष्टि

रचनी होती है तो पहले-पहले ब्राह्मण चोटी चाहिए। तुम शूद्र थे, अभी ट्रान्सफर होकर ब्राह्मण बने हो। ... जो अपने को ब्रह्मा कुमार-कुमारी कहलाते हैं, वे जरूर भाई-बहन ठहरे। प्रजापिता की सन्तान हैं तो भाई-बहन ही हुए। यह बेसमझों को समझाना है।''

सा.बाबा 12.09.09 रिवा.

''तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण। ये बातें और कोई जानते नहीं हैं। ये बातें जब समझें, तब बुद्धि में आये कि हम यह क्या कर रहे हैं। ... स्वर्ग में शान्ति होती है ना। उसको ही आदि सनातन देवी=देवता धर्म कहा जाता है।... जो इन बातों को समझते हैं, वे ब्राह्मण बन औरों को भी समझाते रहते हैं। जो राज्य पद के अथवा आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हैं, वे निकल आते हैं।''

सा.बाबा 28.07.09 रिवा.

''तुम बच्चे हो विश्व को परिवर्तन करने वाले विश्व के आधारमूर्त, उद्धार करने वाले भी हो और साथ-साथ विश्व के आगे उदाहरण बनने वाले भी हो। जो आधारमूर्त होते हैं, उनके ऊपर ही सारी जिम्मेवारी रहती है। ... पहले साकार रूप फॉलो फादर के रूप में सामने था। अभी आप लोग निमित्त मूर्तियाँ हो।''

अ.बापदादा 26.1.70

''अपने को निमित्त समझकर हर कदम उठाना है क्योंकि सारे विश्व की आत्माओं की नज़र आप आत्माओं के ऊपर है। जैसे ईश्वरीय स्नेह, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ चरित्रों का साक्षात्कार आप लोगों से होता है, वैसे अव्यक्त स्थिति का भी उतना ही स्पष्ट साक्षात्कार हो। जो कोई भी महसूस करे कि यह तो चलता-फिरता फरिश्ता है। जैसे साकार रूप में फरिश्तेपन का अनुभव किया ना।''

अ.बापदादा 26.1.70

''बाप आया है, वह कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जायेंगे। ... सबको बाप का पैग़ाम जरूर पहुँचाना है। पिछाड़ी में तुम्हारी वाह-वाह निकलेगी, कहेंगे - कमाल है इन्हों की। इतना हमको जगाया परन्तु हम जागे नहीं। जो जागे, उन्होंने पाया, जो सोये उन्होंने खोया।''

सा.बाबा 23.03.09 रिवा.

''सारे ब्राह्मणों से ऐसी शक्ति सेना तैयार करो, जो निमित्त बन चारो ओर चक्कर लगाते हुए वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाये और यह दृढ़ संकल्प करे - हम वायुमण्डल को बदलकर दिखायेंगे। ... अपनी स्थिति, वाणी और संग से वायुमण्डल को ठीक करे।''

अ.बापदादा 18.1.09 दादियों से

''बापदादा को चित्र याद आया - जगदम्बा बीच में खड़ी है झण्डा लहरा रही है और पीछे सब शक्तियां साथ में खड़ी हैं। तो अभी यह चित्र बापदादा विश्व के आगे दिखाना चाहता है। ... बापदादा को चित्र याद आया तो यह प्रैक्टिकल होना चाहिए। ... अगर शुभ भावना है तो

समय मिलेगा। ऐसा ग्रुप बनाकर देना।'' अ.बापदादा 18.1.09 दादियों से

''दाता के बच्चे हो तो जो भी आये, हर एक को कोई न कोई गुण की गिफ्ट दो। दातापन का दृढ़ संकल्प लिफ्ट बन जायेगा और वे सेकण्ड में परमधाम, सूक्ष्मवतन, स्थूल मधुबन अर्थात् साकार वतन, जहाँ चाहेंगे, वहाँ बिना मेहनत के सेकण्ड में पहुँच जायेंगे। कोई को भी खाली हाथ नहीं भेजना।'' अ.बापदादा 18.1.09

ईश्वरीय सेवा से प्राप्तियाँ

ये ब्राह्मण जीवन पुरुषार्थी जीवन है और इस समय विश्व में तमोप्रधानता का साम्राज्य है, ऐसे समय में अपने को व्यर्थ से बचाकर अभीष्ट पुरुषार्थ करके अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। ईश्वरीय सेवा में बिजी रहने से हम अनेक व्यर्थ बातों से बच जाते हैं, जिससे हमारा ये ब्राह्मण जीवन सदा सहज सफलता को प्राप्त होता है और सहज मायाजीत बन जाते हैं।

ज्ञान की ईश्वरीय सेवा करने वाले का ज्ञान के विभिन्न बिन्दुओं पर और ईश्वरीय सेवा अर्थ चिन्तन चलता है, जिससे ज्ञान के अनेक गुह्य राज़ उसकी बुद्धि में स्पष्ट होते हैं, आत्मा में अनेक गुह्य रहस्यों को समझने की सामर्थ धारण होती है और उन गुह्य रहस्यों को समझने वाले ही इस ब्राह्मण जीवन के महत्व को अनुभव करते हैं, इसका सच्चा सुख अनुभव करते हैं। जिनकी अपनी बुद्धि में ज्ञान के गुह्य राज़ स्पष्ट होते हैं, वे ही अन्य आत्माओं को ज्ञान की गुह्यता को समझाने में समर्थ होते हैं अर्थात् ईश्वरीय सेवा में सफलता प्राप्त करते हैं।

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा अभी इस विश्व में राजतन्त्र (Kingdomship) स्थापन कर रहे हैं, उस राजाई में कौन राजा-रानी बनेंगे, कौन साहूकार प्रजा बनेंगे और कौन गरीब या दास-दासी बनेंगे, यह सब इस समय की ईश्वरीय सेवा पर आधारित है। जो जितना अपने तन-मन-धन से ये ईश्वरीय सेवा करता है, वह उस अनुसार वहाँ जाकर पद पाता है।

परमात्मा अभी सतयुगी राजधानी स्थापन कर रहे हैं, उसमें राजा, प्रजा, दास-दासी अभी की सेवा के आधार पर ही बनते हैं। अभी जो आत्मा जिन आत्माओं की सेवा करती है, वे ही भविष्य में उसकी प्रजा, सहयोगी, नौकर-चाकर या दास-दासी बनते हैं अर्थात् उनके साथ हमारे मधुर सम्बन्ध बनते हैं।

इस समय की सेवा का भविष्य में तो फल मिलता ही है परन्तु इस समय भी उसका फल मिलता है, जिसके लिए बाबा ने कहा है - सेवा ही मेवा है अर्थात् सेवा से आत्मा में बल आता है, सेवा से आत्मा को खुशी होती है, सेवा से आत्मा को आत्माओं की और परमात्मा की

दुआयें मिलती हैं, जो आत्मा को खुशी प्रदान करती हैं और समय पर उनका सहयोग भी प्राप्त होता है।

जिन आत्माओं की हम सेवा करते हैं, उनको इससे सुख-शान्ति मिलती है, इसलिए उन आत्माओं की सेवा करने वाले को दुआयें मिलती हैं, जो दुआयें आत्मा को समय पर बहुत काम आती हैं। ये दुआयें उस आत्मा को अभी भी सुख-शान्ति का अनुभव कराती हैं और भविष्य में भी समय पर सहयोग करती है।

ज्ञान से आत्माओं की सेवा करने से ही ज्ञान प्रशस्त होता है क्योंकि सेवा करने से ज्ञान के विभिन्न बिन्दुओं पर चिन्तन चलता है। ज्ञान का चिन्तन चलने से ज्ञान की आत्मा में धारणा होती है, जो भी आत्मा को सुख का अनुभव कराती है।

वाचा से ईश्वरीय सेवा करने से वाचा में ओज आता है, वाचा मे बल आता है। स्थूल कर्म से सेवा करने से कर्मों में कुशलता आती है, कर्मों से श्रेष्ठ भाग्य जमा होता है। बाबा कहते हैं - तुम अपने कर्मों से दूसरों को गुणों का दान देते हो अर्थात् गुण सिखलाते हो। आत्मा कहने से इतना नहीं सीखती है, जितना देखकर सीखती है। परमात्मा के चरित्रों का इतना जो गायन है, वह उनके ब्रह्मा द्वारा किये गये कर्मों के आधार पर ही है।

मन्सा सेवा करने से मन स्वस्थ होता है अर्थात् आत्मा निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प होकर इस ब्राह्मण जीवन का सुख अनुभव करती है और भविष्य में भी निर्विघ्न राज्य प्राप्त करती है।

ईश्वरीय सेवा से ही वर्तमान और भविष्य के लिए मधुर सम्बन्धों का निर्माण होता है, जो सतयुगी राजाई की स्थापना का मूलाधार है। ईश्वरीय सेवा से चेतन आत्माओं के साथ जड़-जंगम प्रकृति भी पावन बनती है, जो सेवा करने वाले को वर्तमान में भी सुख देती है और भविष्य में भी सुख देती है।

''अभी तुम्हारी बुद्धि में बेहद की सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी है।... बाप रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं। फिर जो जितना बाप को याद करते हैं, स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं और औरों को भी बनाते हैं, जास्ती सर्विस करते हैं, उनको जास्ती पद मिलेगा। यह तो कॉमन बात है समझने की।''

सा.बाबा 8.04.10 रिवा.

''जो जितना आप समान बनायेगे, उनको उतना ऊंच पद मिलेगा। अविनाशी ज्ञान रतनों का दान ही नहीं करेंगे तो रिटर्न में क्या मिलेगा। ... सबसे पुण्यात्मा हैं यह लक्ष्मी-नारायण। हाँ, ब्राह्मणों को भी ऊंच रखेंगे क्योंकि वे सबको ऊंच बनाते हैं।''

सा.बाबा 10.03.10 रिवा.

''बच्चों को ये सब बातें भूलनी नहीं चाहिए, परन्तु बच्चे भूल जाते हैं क्योंकि नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही राजधानी में पद पायेंगे। हर एक के पुरुषार्थ से पता पड़ जाता है कि यह क्या पद पाने वाला है। ... सारा मदार सर्विस पर है। बाप भी आकर सर्विस करते हैं।''

सा.बाबा 22.10.09 रिवा.

''जितना तुम समझदार बनते हो, उतना औरों को भी आप समान बनाने का पुरुषार्थ करते हो। तुम्हारा बाप रहमदिल, सर्व का कल्याणकारी है तो तुम बच्चों को भी ऐसा बनना है। ... हिम्मते बच्चे मदद दे बाप। सेवा भी जरूर चाहिए। नहीं तो वर्सा कैसे पायेंगे। सर्विस अनुसार ही तो वर्सा पाते हो।''

सा.बाबा 20.07.09 रिवा.

''एक ज्ञान का खजाना नहीं है लेकिन योग का भी खज़ाना है, जिससे सर्व-शक्तियों की प्राप्ति होती है। साथ-साथ धारणा करने का भी खज़ाना है, जिससे सर्व गुणों की प्राप्ति होती है। साथ-साथ सेवा का भी खज़ाना है, जिससे दुआओं का खज़ाना, खुशी का खज़ाना प्राप्त होता है।''

अ.बापदादा 24.3.09

''सर्वात्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं, पावन बनाते हैं तो अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। परन्तु वह खुशी तब आयेगी, जब तुम औरों का कल्याण कर सबको खुश करेंगे, रहमदिल बनेंगे। ... जो अच्छी रीति पढ़ेंगे, वे ही पहले आयेंगे और ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 28.03.09 रिवा.

''जिनको सर्विस का शौक है, वे तो इसमें लगे रहते हैं। उनका और सब तरफ से मोह आदि टूट जाता है। हम इन ऑखों से जो कुछ देखते हैं, उनको भूलना है।... बाबा उनको आफरीन देते हैं, जो औरों को समझाकर लायक बनाती हैं। प्राइज़ भी उनको मिलती है, जो काम करके दिखाते हैं।''

सा.बाबा 17.03.09 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को यही ईश्वरीय धन्धा करना चाहिए। सबको समझाना चाहिए। सब आसुरी नींद में सोये हुए हैं, उनको जगाना चाहिए। स्वयं गोरा बनकर औरों को भी बनायें तो उन पर बाप का प्यार भी जाये। सर्विस नहीं करेंगे तो क्या मिलेगा।''

सा.बाबा 11.03.09 रिवा.

''अब बच्चों को ज्ञान समझना और समझाना सहज हैं। दूसरों को सुनायेंगे तो खुशी होगी और पद भी ऊंच पायेंगे। ... आत्मा निर्लेप नहीं है, अच्छे या बुरे संस्कार आत्मा में ही रहते हैं, तब ही कर्मों का भोग होता है।... तुम बच्चों को रहमदिल, कल्याणकारी बनना है।''

सा.बाबा 5.03.09 रिवा.

''इन्दौर का अर्थ है इन्-डोर अर्थात् अन्तर्मुखी।... अन्तर्मुखी सदा सुखी। अन्तर्मुखी सदा बाप के दिल तख्तनशीन हैं। अन्तर्मुखी सदा सर्व के प्यारे होते हैं। यज्ञ सेवा का गोल्डन चान्स

मिलना, यह बहुत बड़ा पुण्य जमा करने का चान्स होता है। ... सेवा करना अर्थात् वरदान प्राप्त करना।''

अ.बापदादा 18.1.09 सेवा का टर्न

''नई-नई प्वाइन्ट्स निकलेगी। जो सर्विस में तत्पर रहते हैं, वे झट पकड़ लेते हैं। जो सर्विस नहीं करते हैं, उनकी बुद्धि में कुछ बैठेगा नहीं। बिन्दी रूप कैसे समझें?... आत्मा इतनी छोटी बिन्दी है, उसमें इतना सारा पार्ट भरा हुआ है।''

सा.बाबा 27.01.09 रिवा.

''भक्त जरूर मन्दिरों में ही मिलेंगे, उनको प्यार से समझाओ। ... बुद्धि में ज्ञान की पराकाष्ठा चाहिए। बाबा कितनी दूर से हमको सिखाने आया है। अगर सर्विस नहीं करेंगे तो ऊंच पद कैसे पायेंगे।''

सा.बाबा 24.12.08 रिवा.

''जिनमें देहाभिमान है, वे क्या सर्विस कर सकेंगे! सर्विस अगर पूरी नहीं की तो नाम बदनाम करेंगे। योगी में बल बड़ा अच्छा रहता है। बाबा समझाने के लिए प्वाइन्ट्स तो बहुत देते रहते हैं परन्तु अच्छे-अच्छे महारथी भी भूल जाते हैं। ... सर्विस वाले मान भी बहुत पाते हैं... कार्य-व्यवहार के साथ-साथ यह सर्विस भी कर सकते हैं।''

सा.बाबा 24.12.08 रिवा.

''सर्विस में लग जाने से फिर मज़ा आयेगा। मम्मा-बाबा को भी सर्विस में मज़ा आता है। बच्चों को भी सर्विस करनी है। ... इसमें सर्विस का बहुत विचार सागर मन्थन चलना चाहिए। प्रैक्टिस कर, फिर बाहर जाकर ट्रॉयल करनी चाहिए।''

सा.बाबा 24.12.08 रिवा.

''अब पुरुषार्थ करो। यह रेस है बुद्धियोग की। समय लगता है। बुद्धियोग से ही पाप कटेंगे। ... बाप ने तो स्वर्ग रचा है। ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ हैं सबको प्राण-दान देने वाले। प्राण-दान देने वालों के प्राणों को कब काल बेकायदे, अकाले नहीं ले जायेंगे।''

सा.बाबा 26.12.08 रिवा.

''उठते-बैठते, चलते-फिरते तुम लाइट हाउस हो।... अभी तुम सेवा पर उपस्थित हो। तुम सेवाधारियों के बाद में भक्ति मार्ग में मन्दिर बनेंगे।... जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार वे स्वर्ग के मालिक बनेंगे।''

सा.बाबा 12.12.08 रिवा.

ईश्वरीय सेवा का फल और बल

Q. सच्चे दिल से सेवा, दिखावे की सेवा, भय से सेवा ... सबका फल अलग-अलग होगा या क्या होगा?

ईश्वरीय सेवा का आत्मा को फल भी मिलता है तो सेवा का बल भी मिलता है। सेवा का फल है खुशी और सेवा का बल है माया पर सहज विजयी बनना। ईश्वरीय सेवा से आत्माओं को सुख मिलता है, उससे उनकी दुआयें निकलती हैं, जो सेवा करने वाले को खुशी प्रदान करती

हैं। सेवा से ज्ञान की गुह्यता समझ में आती है, जिससे आत्मा को खुशी होती है। ज्ञान को भी बल कहा जाता है, इसलिए जिसकी बुद्धि में जितना ज्ञान स्पष्ट होता है, उसमें उतना ही बल होता है और उतना ही उसकी सेवा का प्रभाव अन्य आत्माओं पर पड़ता है। सेवा करने वाले सेवा में बिजी रहने के कारण सहज ही माया पर विजयी बन जाते हैं। इसलिए ही बाबा ने बच्चों को सेवा का खिलौना दिया है।

''बाप की अवज्ञा करते, वे कितना भी माथा मारें लेकिन सर्विस लायक बन न सकें।... अभी तुम बच्चों को दोनों बाप बहुत बड़े मिले हैं, कब उनकी अवज्ञा नहीं करनी है। अवज्ञा करेंगे तो जन्म-जन्मान्तर, कल्प-कल्पान्तर के लिए पद कम हो जायेगा। पुरुषार्थ ऐसा करना है, जो अन्त समय एक शिवबाबा ही याद आये।'' सा.बाबा 24.09.09 रिवा.

''बाबा की सर्विस में ज़रा भी कदम नहीं उठा सकते तो वे फिर पद्म कैसे पायेंगे। पद्मपति तो सर्विस से ही बन सकते हैं। सर्विस ही कदम में पदम ले आती है।... पहले शूद्र से ब्राह्मण बनाना पड़े। ब्राह्मण ही नहीं बनायेंगे तो क्या बनेंगे!'' सा.बाबा 4.08.09 रिवा.

''बाप भक्ति का फल देने आते हैं। किसने जास्ती भक्ति की है, यह भी अभी तुम जानते हो। ... सबसे तीखी जो सर्विस करते हैं, जरूर उन्होंने जास्ती भक्ति भी की है। ... कुमारका है, जनक है, मनोहर है, गुल्जार है। नम्बरवार तो होते ही हैं।'' सा.बाबा 31.07.09 रिवा.

''सर्व के उद्धारमूर्त बनने के कारण सर्व आत्माओं की जो आशीर्वाद मिलती है तो फिर हल्कापन भी आ जाता है। मदद भी मिलती है, जिस कारण जिम्मेवारी हल्की हो जाती है। बड़ा कार्य होते हुए भी ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कोई करा रहा है। यह जिम्मेवारी और ही थकावट मिटाने वाली है। फ्री रहना मन को भाता ही नहीं है। जिम्मेवारी अवस्था को बनाने में बहुत मदद करती है।'' अ.बापदादा 26.1.70

''जब स्वयं ही स्वयं को सेवा के लिए ऑफर करेंगे तब बापदादा आफरीन मिलेगी। ... सदा यह स्लोगन याद रखना है - समाना है और सामना करना ही हमारा निशाना है। ... माया से सामना करना है और पुराने संस्कारों को समाना है। नॉलेजफुल के साथ-साथ पॉवरफुल भी बनना है, तब ही सर्विसएबुल बनेंगे।'' अ.बापदादा 9.12.70

''जब एक सेकेण्ड भी मन्सा, वाचा, कर्मणा सर्विस से रेस्ट नहीं लेंगे, तब ही बेस्ट बनेंगे। ... सच्चा पुरुषार्थी कब रेस्ट नहीं करता और वेस्ट भी नहीं करता। इसलिए इस हार्ड वर्कर्स ग्रुप वा रुहानी सेवाधारी संगठन को सेवा के सिवाए और कुछ सूझे ही नहीं।''

अ.बापदादा 9.12.70

''सर्विस के लिए नींद भी फिटानी पड़े। सर्विस से और योग से बल भी आता है। तुम्हारी

कमाई होती है। कमाई करने वाले को कभी उबासी नहीं आती है। ... तुम बहुत भारी कमाई करते हो। उबासी देवाला निकालने वाले खाते हैं। जो अच्छी रीति ज्ञान समझते हैं, याद में रहते हैं, उनको कब उबासी नहीं आयेगी। अगर मित्र-सम्बन्धी आदि याद आते हैं तो उबासी आती है। ये निशानियाँ हैं। स्वर्ग में तुमको कब उबासी आदि आयेगी ही नहीं।''

सा.बाबा 29.05.09 रिवा.

''सर्विसएबुल बनकर आपही अपना नाम बाला करना चाहिए। जो ज्ञान में तीखे हैं, जिनकी बुद्धि में बहुत प्वाइन्ट्स हैं, उनकी मदद सब माँगते हैं। उनके नाम जपते रहते हैं। ... भक्ति मार्ग में हाथ से माला फेरते हैं, अभी फिर मुख से नाम जपते हैं।''

सा.बाबा 21.11.08 रिवा.

''महारथीपन के क्या-क्या गुण और कर्तव्य होते हैं, इसको भी ध्यान देना है। आज वही सुनाने और अन्तिम स्थिति के स्वरूप का साक्षात्कार कराने आये हैं। सर्विसएबुल क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते हैं।... महारथियों के मुख से कब शब्द भी नहीं निकलेगा। अब करेंगे।''

अ.बापदादा 26.3.70

''सर्विसएबुल बच्चों का पुरुषार्थ सफलता सहित होता है। ... जो सोचेंगे, वही कहेंगे और वही करेंगे। ... बापदादा कब व्यर्थ रचना नहीं रचते हैं और बच्चे व्यर्थ रचना रचकर फिर उनको हटाने और मिटाने का पुरुषार्थ करते हैं।... अब व्यर्थ संकल्पों की रचना को बेक लगाना है।''

अ.बापदादा 26.3.70

''बाबा कहते हैं - जो सच्चे दिल से, निस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं, ऐसे बच्चों की हुण्डी मैं सकारता हूँ। यह भी ड्रामा में नूँध है। ... बाप ने कह दिया है - सर्विस करते रहो, माँगो कोई से भी नहीं। माँगने से मरना भला। आपही तुम्हारे पास आ जायेगा। माँगने से सेन्टर इतना जोर नहीं भरेगा। बिगर माँगे तुम सेन्टर जमाओ, फिर आपही सब आता रहेगा। उसमें ताक़त रहेगी। जैसे बाहर वाले चन्दा इकट्ठा करते हैं, सेसे तुमको नहीं करना है।''

सा.बाबा 13.05.09 रिवा.

''सब तरफ बुद्धि को हटाकर अन्तर्मुखी होकर मेरे को याद करने का पुरुषार्थ करो।... सर्विस से सबका पुरुषार्थ का मालूम पड़ जाता है। सर्विस करने वालों को सर्विस की खुशी रहती है। जो अच्छी सर्विस करते हैं, उनकी सर्विस का सबूत भी मिलता है।''

सा.बाबा 10.04.09 रिवा.

''जो बहुतों का कल्याण करते हैं तो बहुतों की आशीर्वाद भी मिलेगी। प्रजा बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। अपने को आपेही बन्धन से छुड़ाना चाहिए।''

सा.बाबा 1.04.09 रिवा.

''अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। जो अच्छे पुरुषार्थी हैं, वे खुद भी समझते हैं और औरों को भी पुरुषार्थ कराते हैं। ... तुमको बहुत आन्तरिक खुशी होनी चाहिए। वह भी उन्हें होती है, जो आप समान बनाते हैं। प्रजा बनायें तब तो राजा बनें।'' सा.बाबा 26.03.09 रिवा.

''आपके जड़ चित्र भी वरदान दे रहे हैं। ... कभी ये नहीं सोचो कि ये तो सुनने वाले नहीं हैं, ये तो चलने वाले नहीं हैं। नहीं, आप रहमदिल बनो, देते जाओ। ... कोई सीज़न का फल होता है, कोई सदा का फल होता है। सीज़न का फल सीज़न पर ही फल देगा।... आप बीज डालते चलो, समय पर सर्व आत्माओं को जगना ही है।'' अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी

''टीचर बनकर सेन्टर चलाना, यह भी बहुत बड़ा भाग्य है। कॉमन चीज नहीं है क्योंकि टीचर बनना अर्थात् वर्तमान बाप की गद्दी के मालिक बनना, वह है मुरली सुनाना, मुरली द्वारा आत्माओं को रिफ्रेश करना। बापदादा टीचर्स को गुरुभाई कहते हैं।... निमित्त हो और निमित्त का फल बहुत बड़ा पुण्य का खाता जमा होता है। निमित्त भाव नहीं छोड़ना, मैंपन नहीं लाना। मैंपन साँप है।'' अ.बापदादा 9.03.09 फॉरेन की टीचर्स

''ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करना है। जो करेंगे सो पायेंगे। वे ही खुशी में आयेंगे और दूसरों को भी खुशी में लायेंगे। औरों पर भी कृपा करनी है, रास्ता बताने की। ... संगमयुग याद रहे तो खुशी का पारा चढ़ा रहे, बाप-टीचर-सतगुरु याद रहे तो भी खुशी का पारा चढ़ा रहे।'' सा.बाबा 27.01.09 रिवा.

''जो ज्ञान अच्छी रीति नहीं उठाते तो वे समझा भी कम सकते हैं, इसलिए उनको फल भी थोड़ा मिलता है। पूरा हिसाब है ना। ... इन ज्ञान रत्नों से तुम पारसबुद्धि बनते हो। यह भी समझने की बात है। कोई अच्छे सयाने हैं, जो इन बातों को धारण करते हैं। अगर धारणा नहीं होती तो कोई काम के नहीं हैं।'' सा.बाबा 19.01.09 रिवा.

''अभी हमारा मददगार बाप है। माया पर जीत पानी है, धारणा करनी है। बाबा ने समझाया है - धन दिये धन न खुटे। सर्विस करेंगे तो बाप की दिल पर चढ़ सकेंगे।... बाबा का प्यार तो सबसे है परन्तु बाप की मदद सर्विसएबुल को ही मिलती है।''

सा.बाबा 27.11.08 रिवा.

''तुम जितना मीठा बनेंगे, उतना बाप का शो करेंगे। बाबा प्यार का सागर है। तुम भी प्यार से किसको समझायेंगे तो तुम्हारी विजय अवश्य होगी। ... जो अच्छा वफादार, सर्विसएबुल बच्चा होगा, वह हमको जरूर मीठा लगेगा। उनको पुचकार भी देंगे।''

सा.बाबा 2.01.09 रिवा.

''जितना तुम पुरानी दुनिया के आकर्षण से परे जायेंगे, फिर न चाहते हुए भी आकर्षणमूर्त बन

जायेंगे। साकार में होते हुए भी सभी को आकारी दिखाई दें और दूसरों को भी आकारी रूप में देखना है। सर्विस का भी बहुत बल मिलता है। एक है अपने पुरुषार्थ का बल और दूसरा है औरों की सर्विस करने से बल की प्राप्ति। तो दोनों बल प्राप्त होते हैं।''

अ.बापदादा 5.4.70

''बाप कहते हैं - जो जितना मुझे प्योरिटी-पीस स्थापन करने मदद करेंगे, उनको इतना फल दूँगा। ... जो करेगा सो पायेगा। थोड़ा करेगा तो प्रजा में चला जायेगा। ... अगर प्राप्ति करनी है तो बाप के मददगार बन सच्ची प्राइज़ ले लो।'' सा.बाबा 1.12.08 रिवा.

ईश्वरीय सेवा के विधि-विधान

परमात्मा के महावाक्य हैं - जो जितना अभी संगमयुग पर सेवा की जिम्मेवारी का ताज धारण करेंगे, उतना ही भविष्य में उनको राजाई का ताज मिलेगा।

बाप से वर्सा लेना आत्मा का अधिकार है तो सेवा करना आत्मा का कर्तव्य है। अधिकार और कर्तव्य जीवन रूपी गाड़ी के दो चक्र हैं, जो साथ-साथ और समानान्तर चलते हैं।

बाबा ने कहा है - तुमको बाप ने मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता दिखाया है, तुम्हारा फर्ज है अपने सभी भाइयों को अर्थात् आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताना। परमात्मा पिता ने यह केवल कहा ही नहीं है लेकिन यह वास्तविकता है कि हम आत्मायें इस कल्प-वृक्ष की जड़ और तना हैं, हमारे ऊपर इस सारे कल्प-वृक्ष के उत्थान और पतन का आधार है, इस सत्य को यथार्थ रीति समझने और धारण करने वाला ईश्वरीय सेवा के बिना रह नहीं सकता है।

जो जितना स्वयं ज्ञान योग की धारणा करता है अर्थात् स्वयं की सेवा करता है, वह उतना ही औरों को भी समझा सकता है अर्थात् उनकी सेवा कर सकता है, उनको अनुभव करा सकता है। कभी-कभी सेवा करने वालों से भी जिनकी सेवा करते हैं, वे आगे चले जाते हैं और ईश्वरीय सेवा में बहुत सहयोगी बनकर अपना भाग्य बनाते हैं, वह हुआ उनका अपना पुरुषार्थ।

जिसने ज्ञान को स्वयं समझा होगा, वह दूसरों को समझाने बिगर रह नहीं सकता। यदि दूसरों को नहीं समझाते हैं तो गोया स्वयं ज्ञान को यथार्थ रीति नहीं समझा है और ज्ञान-योग के महत्व एवं उनके विधि-विधान को नहीं समझा है। इस सम्बन्ध में ज्ञान सागर बाप ने अनेक बार महावाक्य उच्चारण किये हैं, समझाया है।

ईश्वरीय सेवा में श्रीमत का बड़ा महत्व है। जो श्रीमत अनुसार सेवा करता है, वही सेवा में स्थाई सफलता पाता है, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता है। जो मनमत पर सेवा

करता है, वह नाममात्र मान-शान का अनुभव करता है, उसको कोई विशेष सफलता प्राप्त नहीं होती है।

श्रीमत अनुसार सेवा करने से आत्मा को परमात्मा की विशेष दुआयें मिलती हैं और अन्य आत्माओं के साथ मधुर सम्बन्ध बनते हैं, जो इस जन्म में भी साथ देते हैं और भविष्य के मधुर सम्बन्धों का आधार बनते हैं।।

श्रीमत अनुसार सेवा करने से आत्मा के पुराने कटु सम्बन्धों का हिसाब-किताब चुक्तू होता है और मधुर सम्बन्धों का निर्माण होता है।

इस सत्य को भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि इस समय जिन आत्माओं की हम सेवा लेते हैं, उन आत्माओं की सेवा का हमको भविष्य में रिटर्न देना पड़ेगा। इसके सम्बन्ध में बाबा ने अनेक बार मुरलियों में स्पष्ट किया है।

श्रीमत अनुसार सेवा करने से ही भविष्य राजाई के लिए सम्बन्ध बनते हैं। कोई सेवा करके राजा बनते हैं तो कोई सेवा लेकर दास-दासी बनते हैं। इस सम्बन्ध में बाबा ने अनेक बार मुरलियों में शिक्षा दी है।

सेवा के फल के निर्णय के विधि-विधान में सेवा के स्वरूप के साथ सेवा करने वाले के भाव और भावना का विशेष महत्व होता है।

जब तक बाहर से अन्दर आ रहा है, तब तक अन्दर का बाहर जा नहीं सकता- यह मानव प्रकृति का नियम है। जब तक हमारे अन्दर कनरस (गीत आदि) अन्दर जा रहा है, अन्य इन्द्रियों के रसों का आत्मा अनुभव कर रही है या करने की इच्छा रखती है, तब तक आत्मा अन्तर्मुखी होकर ईश्वरीय प्राप्तियों का अनुभव कैसे कर सकती है और जब स्वयं ही अनुभव नहीं कर रही है तो अन्य आत्माओं को कैसे करा सकती है अर्थात् अन्य आत्माओं की सेवा कैसे कर सकती है। हमारे अन्दर बाहर से कोई रस अन्दर आ रहा है या हमको किसी इन्द्रीय रस की इच्छा है तो सिद्ध होता है कि हमारे अन्दर में खाली है और जिसका अपना ही खाली है, वह अन्य आत्माओं को दुआयें कैसे दे सकता है। जो स्वयं ही फरिश्ता की स्थिति में नहीं है, वह अन्य आत्माओं को फरिश्ता स्वरूप का अनुभव कैसे करा सकता है, अन्य आत्माओं को वरदान कैसे दे सकता है। फरिश्ता स्वरूप तो भरपूर है, सम्पन्न है, सन्तुष्ट है। यह विचारणीय है।

कोई भी आत्मा जो भी कार्य करती है, उससे जितनी आत्मायें प्रभावित होती हैं, उसका लाभ उठाती हैं, उसका फल निमित्त आत्मा को मिलता है। जैसे कोई स्वार्थपरता के कारण वातावरण में कार्बन फैलाता तो उसका दुखदायी हिसाब बनता है और जो ज्ञान-योग से

वातावरण को शुद्ध बनाती हैं, विश्व-कल्याण की भावना से कार्य करते हैं तो उसका अच्छा फल भी मिलता है

''प्रीत और विपरीत शब्द प्रवृत्ति मार्ग के लिए हैं। ... बाप के साथ प्रीत उनकी है, जो बाप की सर्विस में तत्पर हैं, बाप के सिवाए और कोई से प्रीत नही है। ... शिवबाबा के साथ जिन आत्माओं की प्रीत होगी, वे जरूर मददगार होंगे। वे शिवबाबा के साथ यह सर्विस करते रहेंगे।''

सा.बाबा 25.03.10 रिवा.

''मैं आता हूँ तुमको पढ़ाने। मैं कुछ लेता नहीं हूँ। तुम्हारे पास जो पैसे आदि हैं, वे सब इस सेवा में सफल करो। ऐसे भी नहीं कि सब खलास कर भूख मरो। सफल करने वाला कोई भूख मर नहीं सकता। इस बाबा ने सब कुछ दिया, फिर क्या भूख मरते हैं? ... शिवबाबा का भण्डारा है।''

सा.बाबा 23.02.10 रिवा.

''बाप आकर सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं, तुम फिर भक्ति मार्ग में उनके बड़े-बड़े मन्दिर बनाते हो। ... अभी देखो पतित दुनिया में, पतित शरीर में बैठा हूँ। तुम ही पहचानते हो और तुम ही बाबा के मददगार बनते हो। जो जितना औरों को रास्ता बताने में मदद करेगा, उसको उतना ही ऊंच पद मिलेगा। यह कायदा है।''

सा.बाबा 23.02.10 रिवा.

''सिवाए एक बाप के और कोई को भी याद नहीं करना है। जब आत्मा पावन बन जायेगी तो फिर शरीर भी पावन मिलेगा। ... आत्मा सतो, रजो, तमों में आती है तो शरीर भी उस अनुसार मिलता है। अभी तुम्हारी आत्मा पावन बनती जायेगी लेकिन शरीर अभी पावन नहीं होगा। ये समझने की बातें हैं। ये प्वाइन्ट्स भी उनकी बुद्धि में बैठेंगी, जो अच्छी रीति समझकर औरों को समझाते रहेंगे।''

सा.बाबा 19.02.10 रिवा.

''जितना बहुतों को आप समान बनायेंगे, उतना ही पद मिलेगा। देह को याद करने वाले कभी ऊंच पद पा न सकें। ... देह को याद करने वाले कोई पुरुषार्थ नहीं कर सकते हैं। बाप कहते हैं पुरुषार्थ करने वालों को फॉलो करो। यह भी पुरुषार्थी है ना।''

सा.बाबा 19.02.10 रिवा.

''जिसने जितना पढ़ा है, वे उतना ही पढ़ा सकते हैं। सबको टीचर भी जरूर बनना है। ... तुम मुरलीधर बाप के बच्चे हो तो तुमको मुरलीधर जरूर बनना है। जब औरों का कल्याण करेंगे, तब तो नई दुनिया में ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 23.12.09 रिवा.

''यहाँ से ज्ञान रत्नों की झोली भरकर फिर जाये दान देना है। परमपिता परमात्मा ज्ञान सागर है, वह ज्ञान रत्नों से झोली भरते हैं। यह ज्ञान रत्नों की बात है।... ड्रामा अनुसार फिर वहाँ तुमको स्थूल रत्नों की खानियाँ मिलती हैं।''

सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

''यह पढ़ाई है। पढ़ाई में पेपर भी होते हैं और कोई बड़ा जाँच भी करता है। यहाँ तुम्हारे पेपर्स की कौन जाँच करेगा ? तुम खुद ही अपने पेपर की जाँच करेंगे। खुद पढ़कर जो चाहिए सो बनो। जितना बाप को याद करेंगे, दूसरों की सर्विस करेंगे, उतना ही फल मिलेगा। ऊंच पद पाने वालों को सदा सर्विस की फिक्र रहेगी कि राजधानी स्थापन हो रही है तो प्रजा भी तो चाहिए ना।'' सा.बाबा 8.12.09 रिवा.

''बापदादा का वरदान है कि सदा खुश रहो और सदा खुशी बाँटो क्योंकि खुशी बाँटने से खुशी बढ़ेगी। और सब खज़ाने बांटने से कम होते हैं लेकिन खुशी का खज़ाना जितना बाँटेंगे, उतना बढ़ेगा। तो चेक करो खुशी का खज़ाना सदा कायम है ?''

अ.बापदादा 15.11.09

''जो जितना स्वयं को परिवर्तन में ला सकता है, वह उतना ही औरों को भी परिवर्तन में ला सकता है। अगर सर्विस में देखती हो कि परिवर्तन में कम आते हैं तो दर्पण में देखना कि मुझ में अपने आपको परिवर्तन में लाने की इतनी शक्ति आई है। अगर अपने को परिवर्तन करने की शक्ति कम है तो दूसरों को भी इतना ही परिवर्तन में ला सकेंगे।''

अ.बापदादा 05.03.71

''बेहद का बाप ही यह बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं। अब जो जैसा पढ़ेगा, ऐसा पद पायेगा। बाप तो पुरुषार्थ कराते हैं... टीचर स्टूडेण्ट्स को समझाते हैं - जब दूसरों को आप समान बनायेंगे, तब मालूम पड़ेगा कि ये अच्छी रीति पढ़ते और पढ़ाते हैं।'' सा.बाबा 13.08.09 रिवा.

''अच्छा फल निकालने के लिए स्नेही भी बनायें, सहयोगी भी बनायें और शक्ति स्वरूप भी बनायें। ... देवताओं की महिमा सर्व गुण सम्पन्न ... मर्यादा पुरुषोत्तम गाते हैं ना! एक-एक आत्मा में सर्व गुण भरने का प्रयत्न करना चाहिए। ... जो जितना स्वयं जितने गुणों से सम्पन्न होता है, वह औरों में भी उतने ही गुण भर सकता है।'' अ.बापदादा 22.1.71

''जो जितना स्वयं जितने गुणों से सम्पन्न होता है, वह औरों में भी उतने ही गुण भर सकता है। हर एक रचयिता की सूरत उसकी रचना से दिखाई देती है। सर्विस आप लोगों के लिए एक दर्पण है, जिस दर्पण के द्वारा आप अपनी अन्दर की स्थिति को देख सकते हो। ... वह है सूरत का आइना, यह है सीरत का आइना।'' अ.बापदादा 22.1.71

''वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। तो जरूर जो पार्ट कल्प पहले बजाया है, वह बजाना पड़े। सब धर्म फिर से अपने समय पर आयेंगे। समझो क्रिश्चियन अभी 100 करोड़ हैं, फिर इतने ही पार्ट बजाने आयेंगे। ... ये सब समझने की बातें हैं। जो समझते हैं, वे समझायेंगे भी जरूर। धन दिये धन ना खुटै।'' सा.बाबा 17.07.09 रिवा.

''रावण के आने से ही तुम्हारे ऊपर कट चढ़ना शुरू हुई है। पूरे क्रिमिनल अन्त में बनते हो। ... जितना-जितना तुम सर्विस में लगे रहेंगे, उतना देहाभिमान कम होता जायेगा। बाबा देही-अभिमानी है तो कितनी अच्छी सर्विस करते हैं।'' सा.बाबा 14.07.09 रिवा.

''ऐसी अनेक आत्माओं को सन्तुष्ट करने के लिए पहले स्वयं अपने हर कर्म से सन्तुष्ट हो ? सन्तुष्ट आत्मायें ही अन्य को सन्तुष्ट कर सकती हैं। अब ऐसी सर्विस करने के लिए अपने को तैयार करो। ... प्राप्ति की अनुभूति करानी होगी। इसलिए कहा कि अब अपने ब्राह्मणपन के कर्तव्य को सम्पन्न करने के लिए अपने को सम्पूर्ण बनाते रहो।'' अ.बापदादा 21.7.71

''अपने को आधारमूर्त समझेंगे तो बहुतों का उद्धार कर सकेंगे।... जैसे सुनाया कि सम्पर्क में तो लाया है परन्तु सम्बन्ध में लाना है। जो अनेकों को सम्बन्ध में लाता है, वह नज़दीक सम्बन्ध में आयेगा और जो अनेकों को सम्पर्क में लाते हैं, वह वहाँ भी नज़दीक सम्पर्क में आयेगा।''

अ.बापदादा 22.1.71 पार्टी 1

''पहले तो अपनी खुद की ऐसी अवस्था चाहिए। सिर्फ पण्डिताई नहीं चाहिए। ... तुम बच्चों की अवस्था बड़ी अच्छी चाहिए। योगबल नहीं है, क्रिमिनल आइज़ हैं तो उनका तीर लग नहीं सकता। ... ज्ञान तलवार में योग का जौहर चाहिए। नॉलेज से धन की कमाई होती है, ताकत है याद की।'' सा.बाबा 10.07.09 रिवा.

''बाप तुम बच्चों की झोली भरते हैं। गायन भी है - धन दिये धन ना खुटे। धन दान ही नहीं करते तो गोया उनके पास है ही नहीं। तो फिर मिलेगा भी नहीं। पूरा हिसाब है ना। ... यह सब हैं अविनाशी ज्ञान रत्न। नम्बरवार तो हर बात में होते ही हैं।... कोई राजा बनेंगे, कोई प्रजा पद पायेंगे। जैसे कल्प पहले पाया था।'' सा.बाबा 10.07.09 रिवा.

''जो भी कर्म करते हो, वे ज्ञानयुक्त हों, हर कर्म द्वारा सर्वात्माओं को सुख-शान्ति, आनन्द का अनुभव हो। इसको कहते हैं बाप के गुणों की समानता।... अलौकिक जन्म का हर कर्म सर्विस प्रति हो। जितना सर्विस करेंगे, उतना भविष्य ऊंचा होगा।''

अ.बापदादा 21.1.71 पार्टी

''जितना अपने को सर्विस में बिजी रखेंगे, उतना माया के वार से बच जायेंगे। बुद्धि को इन्गेज कर दिया तो कोई डिस्टर्व नहीं करेगा। ... ऐसे इस ईश्वरीय नशे में रहने से और दुनिया की आकर्षण से परे हो जायेंगे।'' अ.बापदादा 21.1.71 पार्टी

''जिनमें जितने गुण हैं, वे उतना ही औरों को भी दान देकर आप समान बना सकते हैं। ... जब देवता बनते हो तो दैवी गुण तो सब में हैं। बाकी पढ़ाई के कारण मर्तबे में अन्तर हो जाता है। एक तो पढ़ना है और दूसरा अवगुणों को निकालना है।'' सा.बाबा 17.06.09 रिवा.

''बाप विश्व में सुख-शानति स्थापन कर रहे हैं। जो मददगार बनेंगे, वे ही ऊंच पद पायेंगे। ... हर एक अपनी दिल से पूछे कि हम क्या कर रहे हैं? ... यह बुद्धि में याद रहे तो तुम चमकते रहो।''
सा.बाबा 10.06.09 रिवा.

''अपने को देखना चाहिए कि हम सर्विस नहीं करेंगे तो हम क्या बनेंगे? अगर कोई ने जमा किया तो वह खाते-खाते चुक्तू हो गया और ही उनके खाते में बोझा चढ़ता है। ... इसलिए मदद करने वालों की खातिरी भी की जाती है। समझना चाहिए कि वे खिलाने वाले हैं ... तुम उनकी सेवा करते हो तो यह बड़ा हिसाब है।''
सा.बाबा 10.06.09 रिवा.

''रेग्यूलर उनको कहा जाता है, जो सुबह से लेकर रात तक जो भी कर्तव्य करते हैं, वे श्रीमत के प्रमाण करते हैं... जो जितना रेग्युलर होता है, वह उतना दूसरों की सर्विस ठीक कर सकता है। सर्विसएबुल अर्थात् एक संकल्प भी सर्विस के सिवाए न जाये... सिर्फ मुख की सर्विस ही नहीं लेकिन सर्व कर्मेन्द्रियाँ सर्विस करने में तत्पर हों।''
अ.बापदादा 23.10.70

''यह भी तुम जानते हो कि बड़े आदमी इतना नहीं समझ सकेंगे। परन्तु तुम्हारी मेहनत कोई व्यर्थ नहीं जाती है। ... सबकी अपनी-अपनी तकदीर है ना। कोई-कोई समझने वाले समझाने वालों से भी तीखे हो जाते हैं।''
सा.बाबा 27.05.09 रिवा.

''बच्चों के दिल में आता है - हमको तो सभी का उद्धार करना है। गरीब भी पढ़कर बड़े ऑफीसर्स आदि बन जाते हैं ना। तुम हो ईश्वरीय मिशन। तुमको सबका उद्धार करना है। ... विवेक कहता है - दान हमेशा ग़रीबों को करना होता है, साहूकारों को नहीं।''
सा.बाबा 28.05.09 रिवा.

''जैसे बाप अव्यक्त होते व्यक्त में प्रवेश हो कार्य करते हैं वैसे बाप समान बने हो? बाप समान बनेंगे तब ही औरों को भी बाप समान बना सकेंगे। अपने आप से पूछो कि दृष्टि बाप समान बनी है? वाणी और संकल्प बाप समान बने हैं? ... जैसे बाप बेहद का बाप है, वैसे दादा भी बेहद का बाप है। बापदादा के समीप, समानता होनी चाहिए।'' अ.बापदादा 6.8.70

''सर्व का स्नेही बनने के लिए पहले न्यारा बनना है। ... दूसरों को भी महसूसता ऐसी आनी चाहिए कि यह न्यारा और अति प्यारा है। जो जितना स्वयं न्यारा होगा, उतना औरों को बाप का प्यारा बना सकेंगे।''
अ.बापदादा 6.08.70

''ऐसे नहीं कि पुरुषार्थ आज और प्राप्ति कब हो जायेगी। नहीं, अभी-अभी पुरुषार्थ और अभी-अभी प्राप्ति। ... जब स्वयं प्राप्ति स्वरूप बनेंगे, तब अनेक आत्माओं को प्राप्ति करा सकेंगे। अगर स्वयं ही प्राप्ति स्वरूप नहीं होंगे तो अन्य को कैसे प्राप्ति करा सकेंगे!''

अ.बापदादा 6.08.70 पार्टियों से

''सर्विस करते यह कभी नहीं भूलना कि हम विश्व के आगे साक्षात्कारमूर्त हैं। साक्षात्कारमूर्त बनने से आप के द्वारा बापदादा का साक्षात्कार स्वत: ही होगा। वह तब कर सकेंगे, जब स्वयं को ज्ञान और योग का प्रत्यक्ष प्रमाण बनायेंगे। जितना स्वयं को प्रत्यक्ष प्रमाण बनायेंगे, उतना ही बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।''

अ.बापदादा 6.08.70 पार्टियों से

''जैसे भक्तिमार्ग में जिस वस्तु की कमी होती है उसी वस्तु का दान करते हैं - तो दान देने से उस वस्तु की कभी कमी नहीं रहेगी। तो देना अर्थात् लेना हो जाता है। ऐसे ही जिस सब्जेक्ट में, जिस विशेषता में, जिस गुण की स्वयं में कमी महसूस करते हो, उसी विशेषता व गुण का दान करो, अन्य के प्रति सेवा में लगाओ तो सेवा का रिटर्न प्रत्यक्ष फल मेवे के रुप में स्वयं अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 22.1.76

''बाबा ने समझाया है कि इस नॉलेज के लिए लायक वे हैं, जिन्होंने बहुत भक्ति की है। उन्हें ही यह ज्ञान समझाना चाहिए। बाकी जो इस कुल के नहीं होंगे, वे समझेंगे ही नहीं। तो फिर उनके पिछाड़ी ऐसे ही टाइम वेस्ट क्यों करना चाहिए। जो हमारे घराने के ही नहीं हैं, वे इन बातों को मानेंगे ही नहीं।''

सा.बाबा 8.05.09 रिवा.

''बाप समझाते हैं - अपने को आत्मा समझ भाई-भाई की दृष्टि से देखो, तो तुम जब किसको ज्ञान देंगे तो तुम्हारी वाणी में ताक़त आयेगी। ... एक बाप के सिवाए और किसी को याद न करो। बेहद के बाप से हम मुक्ति और जीवनमुक्ति के हक़दार बनते हैं। ... तुम्हारा फर्ज है मनुष्य मात्र को यह पैग़ाम देना।''

सा.बाबा 13.04.09 रिवा.

''सम्पूर्ण फरिश्ता या अव्यक्त फरिश्ता, यह है संगमयुग की डिग्री और दैवी पद है भविष्य की प्रालब्ध। ... इस डिग्री की मुख्य क्वालिफिकेशन कौन-कौन सी हैं और कहाँ तक हर एक स्टूडेण्ट इसमें क्वालीफाइड बना है, यह देख रहे हैं। जो जितना क्वालीफाइड हो, वह उतना ही औरों को भी क्वालीफाइड बनायेगा।''

अ.बापदादा 11.7.70

''मैदान पर कमजेर नहीं आते हैं, शूरवीर आते हैं। तो अब मैदान पर प्रत्यक्ष होने का समय है। ... जितना इस रूप को प्रत्यक्ष करेंगे, उतनी प्रत्यक्षता होगी। तो बाप को प्रख्यात करने के लिए स्वयं को प्रत्यक्ष होना पड़े। अब तक अपनी ही कमजोरियों को विदाई न देंगे तो सृष्टि के कल्याणकारी कैसे बनेंगे।''

अ.बापदादा 11.7.70

''कामधेनु का अर्थ ही है सर्व की मनोकामनायें पूरी करने वाली। जिनकी अपनी सर्व कामनायें पूरी होंगे, वे ही औरों की कामनायें पूरी कर सकेंगी। सदैव यही लक्ष्य रखो कि हमको सर्व की कामनायें पूर्ण करने वाली मूर्ति बनना है। सर्व की इच्छायें पूर्ण करने वाले स्वयं इच्छा मात्रम्

अविद्या होंगे। अभी ऐसा अभ्यास करना है।'' अ.बापदादा 2.07.70

''प्राप्ति-स्वरूप बनने से ही औरों को प्राप्ति करा सकते हो। तो सदैव अपने को दाता अथवा महादानी समझना है। महाज्ञानी बनने के बाद महादानी का कर्तव्य चलता है। महाज्ञानी की परख महादानी बनने से होती है। ... जो जितना स्वयं बुद्धि की सैर करेंगे, वे उतना ही औरों को भी बुद्धियोग से सैर करायेंगे।'' अ.बापदादा 2.07.70

''जो जितना बाप को याद करते हैं, वे उतना ही औरों को भी परिचय देते हैं। याद न करने वाले देहाभिमान में होंगे। वे न बाप को याद कर सकते, न बाप का परिचय दे सकते हैं।'' सा.बाबा 1.04.09 रिवा.

''लोग समझते हैं कि हम निष्काम सेवा करते हैं, हमको फल की इच्छा नहीं है। परन्तु निष्काम सेवा कोई करता नहीं है। हर एक को फल जरूर मिलता है। निष्काम सेवा तो एक बाप ही करते हैं।'' सा.बाबा 25.03.09 रिवा.

''परमपिता परमात्मा जो राजयोग सिखाते हैं, उससे मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है। हठयोग से दोनों नहीं मिलते हैं। ... विचार सागर मन्थन कर भाषण करने की ताक़त उनमें रहेगी, जो अपने को आत्मा समझकर फिर बोलते हैं। हम भइयों को सुनाते हैं। ऐसे समझने से ताक़त रहेगी।'' सा.बाबा 26.03.09 रिवा.

''जो जितना अपने को अधकारी समझेंगे, वे उतना उदारचित्त जरूर बनेंगे और जो जितना उदारचित्त बनता है, वह उतना ही उदाहरण स्वरूप बनता है। ... जैसे बापदादा उदाहरण रूप बने, वैसे आप सभी भी अनेकों के लिए उदाहरण रूप बनेंगे। उदारचित्त रहने वाला उदाहरण भी बनता है और अनेकों का सहज ही उद्धार भी कर सकता है।'' अ.बापदादा 25.6.70

''अभी बापदादा बुद्धि की ड्रिल कराने आते हैं, जिससे परखने की और दूरांदेशी बनने की क्वालीफिकेशन इमर्ज रूप में आ जाये क्योंकि आगे चलकर ऐसी सर्विस होगी, जिससे दूरांदेशी दुद्धि और निर्णय शक्ति की बहुत आवश्यकता होगी।... अब सम्पूर्ण बनकर औरों को भी सम्पूर्ण बनाना बाकी रह गया है। जो बनता है, वह फिर सबूत भी देता है। अभी बनाने का सबूत देना है। इस कार्य के लिए इस व्यक्त देश में रहना है।'' अ.बापदादा 25.6.70

''यह ब्रह्मा भी बाप से ही सीखा है, जो समझाते रहते हैं, बच्चियाँ भी समझाती हैं। जो बहुतों का कल्याण करते हैं, उनको जरूर जास्ती फल मिलेगा। पढ़े हुए के आगे अनपढ़े भरी ढोयेंगे। ... दिल साफ तो मुराद हासिल हो सकती है।'' सा.बाबा 6.02.09 रिवा.

''कोई भी सामने आये, उसे खाली हाथ नहीं भेजना। हर एक को कोई न कोई गुण की, चेहरे से, चलन से, मुख से गुण की सौगात के बिना नहीं मिलना। ... आपके पास गुणों की, शक्तियों

की सौगात कितनी है ? गिनती करो तो कितनी बड़ी लिस्ट है और जितना देंगे, उतना कम नहीं होगी और ही बढ़ती जायेगी।... कहावत है - दे दान तो छूटे ग्रहण।'' अ.बापदादा 18.1.09

''याद और सेवा का बैलेन्स सदा की सफलता की आशीर्वाद स्वत: प्राप्त कराता है। ... आपकी खुशी को देखकर दूसरे खुश हो जायेंगे तो यही सेवा हो जायेगी। बापदादा बच्चों सदा कहते हैं - जितना महादानी बनेंगे, उतना खज़ाना बढ़ता जायेगा। ... यह देना ही लेना है।'' अ.बापदादा 1.02.09 रिवा. पार्टी

''विचार करना चाहिए कि हमारा योग इतना है, जो हमारा सतयुग के आदि में जन्म हो ? जो बहुत पुरुषार्थ करेंगे, वे ही सतयुग के आदि में आयेंगे। ... अगर पहले आते भी हैं तो नौकरी करते हैं। यह तो कॉमन बात है समझने की। ... अगर राजा बनना है तो प्रजा भी बनानी पड़े।'' सा.बाबा 27.01.09 रिवा.

''जो सेन्टर खोलते हैं, सर्विस करते हैं, उनकी भी कमाई होती है। उनको भी बहुत फायदा मिलता है। ... जो-जो करते हैं, उनका हिस्सा तो आता है ना। मिलकर माया के दुख का छप्पर उठाते हैं तो इसमें जो कन्धा देते हैं, उन सबको उजूरा मिलता है। ... सबकुछ करने का समय यही है।'' सा.बाबा 27.01.09 रिवा.

''ऐसा कोई न समझे कि हमने धन से मदद की है, इसलिए हमारा पद ऊंचा होगा। यह बिल्कुल भूल है। सारा मदार सर्विस और पढ़ाई पर है। ... बाबा देखते हैं कि ये अपने को घाटा डाल रहे हैं, इनको पता नही पड़ता। इसमें ही खुश हो जाते हैं कि हमने पैसे दिये हैं, इसलिए माला में नजदीक आयेंगे। ... योग में नहीं रहते, धारणा नहीं करते, किस पर रहम नहीं करते तो बाकी बाप को क्या फॉलो करते हैं।'' सा.बाबा 31.01.09 रिवा.

''जो इस धर्म के नहीं होंगे, उनकी बुद्धि में यह ज्ञान बैठेगा भी नहीं। ... जिसने पूरे 84 जन्म लिए होंगे, वे जरूर पुराने भक्त होंगे। ... थोड़ी भक्ति की होगी तो ज्ञान भी थोड़ा उठायेंगे और वे थोड़ों को ही समझायेंगे। बहुत भक्ति की होगी तो ज्ञान भी बहुत उठायें गे और बहुतों को समझायेंगे।'' सा.बाबा 19.01.09 रिवा.

''किसको भी ऐसे-ऐसे समझाना चाहिए। बोलो - हम जो सुनते हैं, वह आप भी बैठकर सुनो। बीच में प्रश्न पूछने से वह प्रवाह टूट जाता है। हम आपको सारी सृष्टि का राज़ बतलाते हैं। ... हर एक की नब्ज़ देखनी चाहिए, उस समय उसकी दृष्टि-वृत्ति देखनी चाहिए। ... दान सदा पात्र को देना चाहिए। फालतू समय वेस्ट नहीं करना चाहिए।'' सा.बाबा 29.12.08 रिवा.

''जो जितनी प्राइज़ बाप को देते हैं, उतनी फिर बाप से लेते भी हैं। पहले-पहले इसने प्राइज़ दिया ... इस दादा ने अपना सब कुछ दिया है, इसलिए वह फुल प्राइज़ लेते हैं। कन्याओं के

पास तो कुछ है नहीं। यदि माँ-बाप उनको कुछ देते हैं तो वे फिर शिवबाबा को दे सकती हैं। जैसे मम्मा गरीब थी फिर देखो कितनी तीखी गई है, तन-मन-धन से सेवा कर रही है।''

सा.बाबा 29.12.08 रिवा.

''ग़रीब हो तो भल पैसा कुछ भी नहीं निकालो परन्तु नॉलेज को तो समझो और मन्मनाभव हो जाओ। तुम्हारी मम्मा ने क्या निकाला, फिर भी वह ज्ञान में तीखी है। तन-मन से सेवा कर रही है। इसमें पैसे की बात नहीं। बहुत में बहुत एक रुपया दे देना, तो तुमको साहूकार जितना मिल जायेगा।''

सा.बाबा 22.12.08 रिवा.

''जगत अम्बा के मन्दिर में जाकर परिचय देना चाहिए, जिससे उन्होंका भी बुद्धियोग बाप से जुटे। जगत अम्बा भी उनसे योग लगाती है, तो हम भी उनसे योग लगायें। ... तुम्हारी बुद्धि में यह सारा ज्ञान रहना चाहिए।... बुद्धि में तब बैठे, जब सर्विस में लग जाये।''

सा.बाबा 24.12.08 रिवा.

''मैं-पन मिटाना, यही मर मिटना है। अंगीकार न करो तो ललकार कर सकते हो। कोई भी बात न निन्दा, न स्तुति; न मैं, न तुम; न मेरा, न तेरा; कुछ भी अंगीकार न करना, तब ललकार होगी। आप मन में संकल्प पीछे करते हो, आपके मन में संकल्प उठते ही वहाँ पहुँच जाता है। क्यों पहले पहुँचता है, यह गुह्य पहेली है।''

अ.बापदादा 2.4.70

ईश्वरीय सेवा और निश्चय

इस ईश्वरीय जीवन में निश्चय का सर्वोपरि महत्व है। बाबा हमको जो ज्ञान देते हैं, उसमें जिसका निश्चय जितना दृढ होता है, वह इस जीवन में उतनी ही सफलता प्राप्त करता है। बाबा ने हमको इस ईश्वरीय सेवा के अनेकानेक बातों का ज्ञान दिया है और विधि-विधान बताये हैं। इस ज्ञान और परमात्मा के द्वारा बताये विधि-विधानों में जिसका दृढ़ निश्चय होता है, वही अपना तन-मन-धन इस ईश्वरीय सेवा में सफल कर इस जीवन को सफल बनाता है और ईश्वरीय सेवा करके अनेक भविष्य जन्मों के लिए अपना खाता जमा करता है।

निश्चयबुद्धि अर्थात् सेवा करने वाले का भी ज्ञान की सब बातों में निश्चय और जिसको समझाते हैं, उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। स्वयं निश्चयबुद्धि होकर समझाने से ही सेवा में सफलता मिलेगी, सामने वालों पर प्रभाव होगा और जिसकी सेवा करते हैं, उनको परमात्मा पर निश्चय होगा, तब ही और बातों को समझ सकेंगे।

''कोई पूछते हैं - विनाश में बाकी कितना समय है। बोलो, यह पूछने की बात नहीं है, पहले तो यह जानो कि यह हमको किसने समझाया है। किसको भी पहले बाप का परिचय दो। ...

अगर कोई पूछे कि विनाश कब होगा तो बोलो - पहले अलफ को समझो। अलफ को नहीं समझा तो पीछे की बात बुद्धि में कैसे आयेगी।'' सा.बाबा 12.01.09 रिवा.

''पहले जब यह निश्चय होगा कि समझाने वाला सुप्रीम फादर है, तो फिर संशय नहीं लायेंगे। ... पहले-पहले बाप का निश्चय पक्का कराना है कि हमको परमात्मा बाप पढ़ाते हैं। यह कोई मनुष्य-मत नहीं है, यह है ईश्वरीय मत।'' सा.बाबा 12.01.09 रिवा.

''निश्चयबुद्धि वाले तो झट कहेंगे हमको अमृत पीना और पिलाना है। इसमें नष्टोमोहा चाहिए, पुरानी दुनिया से दिल हट जानी चाहिए। ऐसे सर्विसएबुल ही दिल पर चढ़ सकते हैं। बाप उनको शरणागति दे सकते हैं।. बस मेरा तो एक दूसरा न कोई।'' सा.बाबा 14.1.09 रिवा.

''किसको भी समझाते हो तो पहले-पहले तो पढ़ाने वाले में निश्चय कराना चाहिए। ... विष्टा के कीड़ों को भ्रमरी भूँ-भूँ करके आप समान बनाती है। मैंने भूँ-भूँ करके तुमको कीड़े से अर्थात् शूद्र से ब्राह्मण बनाया है। अभी तुम डबल सिरताज बनते हो तो तुमको कितनी खुशी रहनी चाहिए। पुरुषार्थ भी पूरा करना चाहिए।'' सा.बाबा 5.12.09 रिवा.

''पहले-पहले किसको ये निश्चय बिठाना है कि हम आत्मा हैं, परमात्मा नहीं हैं और न ही परमात्मा हमारे में व्यापक है। सभी के अन्दर चेतन्य आत्मा है, जो शरीर धारण कर अपना पार्ट बजाती है। ... यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया सृष्टि-चक्र है, जो फिरता रहता है। कल्प की आयु 5 हजार वर्ष है।'' सा.बाबा 25.11.09 रिवा.

''बहुत बच्चे हैं, जिनको यह निश्चय ही नहीं है कि शिवबाबा इस ब्रह्मा-तन द्वारा हमको सिखला रहे हैं। ... अगर पूरा निश्चय होता तो बहुत प्यार से बाप को याद करते-करते अपने में बल भरते, बहुत सर्विस करते क्योंकि सारे विश्व को पावन बनाना है। योग में भी कमी है तो ज्ञान में भी कमी है।'' सा.बाबा 14.09.09 रिवा.

जितना हम निश्चय बुद्धि होंगे, उतना मुझको देखकर औरों को भी बल मिलेगा, निश्चय होगा।... हमारी भावना होगी तो हमको कहने की आवश्यकता नहीं होगी। अपने आप सेवा देखकर देने वाले देंगे, अपना भाग्य बनायेंगे। दादी जानकी 19.06.09

''तुम्हारी बुद्धि में यह सारा ज्ञान रहना चाहिए। यह सारी नॉलेज है, जो तुम कोई को भी अच्छी रीति समझा सकते हो। हम आत्मा हैं, बाप के बच्चे हैं - यह यथार्थ रीति समझकर पक्का-पक्का निश्चय होना चाहिए। ... तुम रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो।'' सा.बाबा 8.06.09 रिवा.

''विशेष आत्मा बनने के लिए विशेष कार्य भी करना पड़ेगा। ... विशेष आत्मा पर ध्यान देने से वह विशेष नहीं, तुम विशेष बन जायेंगे। विशेष ध्यान से कोई भी व्यर्थ संकल्प, कर्म वा

समय नहीं जायेगा। शक्ति अगर जमा हो जाती है तो विशेष सर्विस भी सहज हो जाती है।''

अ.बापदादा 11.07.70 पार्टी

''जितना बड़ा जिम्मेवारी का ताज यहाँ पहनेंगे, उतना ही सतयुग में भी बड़ा ताज मिलेगा। इसको कहते हैं - बेहद की जिम्मेवारी। ... बेहद की जिम्मेवारी अर्थात् बेहद की बात सोचना, बेहद परिवार से सम्बन्ध और स्नेह, सर्व स्थान अपने हैं... ऐसे को कहते हैं बेहद का सर्विसएबुल।''

अ.बापदादा 11.07.70 दिल्ली

''ये सब अच्छी रीति समझने और समझाने की बातें हैं। यह भी तब समझें जब निश्चयबुद्धि हों। ... निश्चयबुद्धि होने से बाप का परिचय देने बिगर सुख नहीं आता है, तड़फन लग जाती है। यज्ञ में विघ्न भी बहुत पड़ते हैं।''

सा.बाबा 25.03.09 रिवा.

''पहले-पहले यह निश्चय चाहिए कि यह ईश्वरीय पढ़ाई है। परमात्मा सुप्रीम बाप और सुप्रीम शिक्षक भी है। तुम्हारी बुद्धि में जो नॉलेज है, वह औरों को भी देनी है। आप समान बनाना है, विचार-सागर मन्थन करना है। ... समझने और समझाने के आधार पर ही नई दुनिया में पद मिलता है।''

सा.बाबा 3.03.09 रिवा.

''बच्चे कहेंगे - ... आप हमको कल्प-कल्प देवता बनाकर चले जाते हो। यह जैसे एक कहानी है। जो होशियार हैं, उनके लिए तो एक कहानी है।... निराकारी आत्मायें शरीर ले पार्ट बजाती हैं, बाबा भी पार्ट बजाते हैं। जो अच्छी सर्विस करेंगे, उनको ही निश्चय होगा कि हम माला का दाना अवश्य बनेंगे।''

सा.बाबा 27.01.09 रिवा.

''तुम बच्चों को यह निश्चय है कि बाप ही हमको पढ़ाते हैं, यह ब्रह्मा भी पढ़ते हैं। जरूर यह सबसे अच्छा पढ़ते होंगे। ... हमारे पास तो कुछ धन है नहीं। बच्चे ही धन देते हैं और लेते हैं। दो मुट्ठी देते हैं और भविष्य में महल लेते हैं। कोई के पास कुछ भी धन नहीं है तो कुछ देते नहीं हैं परन्तु अच्छा पढ़ते हैं और अच्छी सर्विस करते हैं तो भविष्य में अच्छा पद पाते हैं।''

सा.बाबा 31.01.09 रिवा.

''किसको भी बाप का परिचय देने में कोई तकलीफ नहीं है, बहुत सहज है परन्तु अपने को पूरा निश्चय नहीं, प्रैक्टिस नहीं है तो किसको समझा नहीं सकते हैं। किसको ज्ञान नहीं देते हैं तो गोया अज्ञानी हैं। ज्ञान नहीं तो भक्ति है, देहाभिमान है। ज्ञान होगा ही देही-अभिमानी में।''

सा.बाबा 23.01.09 रिवा.

''तुम्हारा कोई दुश्मन नहीं है। फिर भी तुमको सबको समझाना जरूर है कि पाप और पुण्य कैसे जमा होता है। ... दिन प्रतिदिन ऐसे बहुत निकलते रहेंगे। विघ्न भी पड़ने हैं परन्तु ड्रामा में तुम्हारा विजय का पार्ट तो निश्चित है ही।''

सा.बाबा 8.01.09 रिवा.

ईश्वरीय सेवा के प्रकार

ईश्वरीय सेवा के विभिन्न प्रकार हैं, जिनके द्वारा सेवा करने वाले को उसका फल अवश्य मिलता है। जो जितनी श्रृद्धा-भावन और निश्चय से सेवा करता है, उस अनुसार उसको फल मिलता है। ईश्वरीय सेवा के जो विभिन्न प्रकार हैं, उनमें से निम्नलिखित मुख्य है।

1. मन्सा-वाचा-कर्मणा

2. तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क

3. देश-काल-परिस्थिति के आधार पर सेवा

यज्ञ सेवा अर्थात् मधुवन में सेवा

सेन्टर्स पर सेवा

अपने निवास स्थान

4. ज्ञान की सेवा

योग द्वारा सेवा अर्थात् शक्ति का दान

कर्मों द्वारा गुणों का दान

यज्ञ की स्थूल सेवा

लेखनी से सेवा

इण्टरनेट आदि से सेवा

5. स्व-सेवा, विश्व-सेवा, परिवार की सेवा

6. दृष्टि-वृत्ति और स्मृति से सेवा

7. स्वार्थ से सेवा और निस्वार्थ सेवा

निष्काम सेवा और कामना से सेवा

8. जड़, जंगम, चेतन की सेवा

9. स्व-स्थिति से सेवा

आदि-आदि मुख्य हैं, जिनसे हम दूसरों की सेवा करके अपना भाग्य बनाते हैं।

1. मन्सा-वाचा-कर्मणा - मन्सा सेवा

(I) परमात्मा की याद से आत्मिक और परमात्मिक गुणों और शक्तियों के वायब्रेशन्स वातावरण में प्रसारित करके आत्माओं और प्रकृति को पावन बनाना।

(II) ज्ञान का मनन-चिन्तन करके उसके वायब्रेशन्स वातावरण में प्रसारित करना।

(III) लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थिति में स्थित होकर आत्माओं को मन्सा द्वारा लाइट-माइट देना।

(IV) यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति और परमात्मा की प्राप्ति की अनुभूति की खुशी और नशे में रहकर अन्य आत्माओं को भी ईश्वरीय खुशी और नशे की अनुभूति कराना।

(V) ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा कर सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखना भी मन्सा सेवा है।

(VI) मन्सा द्वारा दूसरी आत्माओं को ज्ञान की धारणा और सेवा की प्रेरणा देना भी मन्सा सेवा है।

''जैसे फरिश्ता रूप से ब्रह्मा बाप ने आप सभी को मन्सा सेवा द्वारा आकर्षित किया, घर बैठे हिम्मत दी और चल पड़े, ऐसे आप भी फरिश्ते रूप से मन्सा सेवा कर सकते हो। फरिश्ता बनकर यह अनुभव भी बढ़ाते चलो। ... जैसे समय आगे बढ़ेगा, ऐसे दुख-अशान्ति की लहर बढ़ती रहेगी। कोई न कोई कारण ऐसे बनेंगे, जो दुख की लहर बढ़ेगी।''

अ.बापदादा 15.12.09

''हर एक के मन के भाव को समझने से उसकी जो चाहना है अथवा जिस प्राप्ति की इच्छा है, वही मिलने से क्या होगा ? आप जो उनको बनाने चाहते हो, वह बन जायेंगे अर्थात् सर्विस की सफलता बहुत जल्दी निकलेगी क्योंकि उनकी चाहना प्रमाण उनको प्राप्ति हो गयी। ... उस प्राप्ति से अविनाशी पुरुषार्थी बन जायेंगे।'' अ.बापदादा 18.4.71

''अभी सफलता को लाने के लिए आप लोगों को समय, संकल्प, सम्पत्ति और शक्ति बहुत लगानी पड़ती है, फिर क्या होगा ? सफलता स्वयं आपके सामने आयेगी। सम्पत्ति आपको लगानी नहीं पड़ेगी, लेकिन सम्पत्ति आपके सामने स्वयं स्वाहा होने आयेगी। समझा, इतना अन्तर है सिर्फ इस एक बात की धारणा से... मन्मनाभव की स्थिति से।''

अ.बापदादा 18.4.71

''अब तो हद की बातें, हद के पुराने संस्कारों को छोड़ मर्सीफुल बनो, सकाश दो, सहारा दो। उसमें ही बिजी रहेंगे तो हद की आकर्षण से स्वत: ही दूर हो जायेंगे। अब वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा की आवश्यकता है। ... मन बिजी रहेगा तो स्व का पुरुषार्थ भी है ही।''

19.8.09 अ.बापदादा का सन्देश

''आवाज़ से परे रहने का अभ्यास बहुत आवश्यक है। आवाज़ में आकर जो आत्माओं की सेवा करते हो, उससे अधिक आवाज़ से परे स्थिति में स्थित होकर सेवा करने से सेवा का

प्रत्यक्ष प्रमाण देख सकेंगे। अपनी अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अन्य आत्माओं को अव्यक्त स्थिति का एक सेकेण्ड में अनुभव कराया तो वह प्रत्यक्ष फलस्वरूप आपके सम्मुख दिखाई देगा।''

अ.बापदादा 18.1.71

''आवाज़ से परे स्थिति में स्थित होकर फिर आवाज़ में आने से वह आवाज़, आवाज़ नहीं लगेगा, लेकिन उस आवाज़ से भी अव्यक्ति वायब्रेशन का प्रवाह किसी को भी बाप की तरफ आकर्षित करेगा। वह आवाज़ सुनते हुए उनको आवाज़ से परे स्थिति का अनुभव होने लगेगा। जैसे साकार में बच्चे को लोरी देते हैं ... वह आवाज़, आवाज़ से परे ले जाने का साधन होता है।''

अ.बापदादा 18.1.71

''सदैव अपने को कम्बाइण्ड समझ, कम्बाइण्ड रूप की सर्विस करो अर्थात् अव्यक्त स्थिति और फिर आवाज़। दोनों की कम्बाइण्ड रूप की सर्विस वारिस बनायेगी। सिर्फ आवाज़ द्वारा सर्विस करने से प्रजा बनती जा रही है।''

अ.बापदादा 18.1.71

''अब के सम्बन्ध जुटने से ही भविष्य सम्बन्ध में आयेंगे। नहीं तो प्रजा में आयेंगे। तो नवीनता यही लानी है, जो एक सेकेण्ड में अव्यक्त स्थिति के अनुभव द्वारा सम्बन्ध जोड़ना। सम्बन्ध और सम्पर्क दोनों में फंर्क है।''

अ.बापदादा 18.1.71

''आजकल सभी थोड़े समय में अनुभव करने के इच्छुक हैं, सुनने के इच्छुक नहीं हैं। इसलिए अनुभव में स्थित रहकर अनुभव कराओ।''

अ.बापदादा 18.1.71

''शेरनी शक्तियों का एक भी संकल्प वा एक भी बोल व्यर्थ नहीं जा सकता। जो कहा, वह किया। संकल्प और कर्म में अन्तर नहीं होता है क्योंकि संकल्प भी जीवन का अनमोल खज़ाना है। ... उनके एक-एक संकल्प से स्वयं का और सर्व का कल्याण होता है।''

अ.बापदादा 2.07.70

''साइलेन्स के बल वालों को कहाँ जाने की अथवा उन्होंको आने की आवश्यकता नहीं। वे अपने शुद्ध संकल्पों द्वारा आत्माओं को खींचकर सामने लायेंगे। ... यह होगा अपनी विल-पॉवर से।''

अ.बापदादा 2.07.70

''गिफ्ट तो आपके पास बहुत हैं ... आप अविनाशी बाप समान बनने वाले इस वर्ष सभी को अविनाशी गिफ्ट दो। मन्सा द्वारा शक्तियों की गिफ्ट, वाचा द्वारा ज्ञान की गिफ्ट और कर्मणा द्वारा गुणों की गिफ्ट दो। ... कोई को भी खाली नहीं जाने दो। इसके लिए आपको अटेन्शन रखना होगा, हर समय मन्सा में शक्तियों का स्टॉक इमर्ज रखना पड़ेगा।''

अ.बापदादा 31.12.08

''हर समय मन्सा में शक्तियों का स्टॉक इमर्ज रखना पड़ेगा। ... वाचा के कारण सदा मन में

मनन शक्ति, ज्ञान को मनन करने की शक्ति स्मृति में रखनी पड़ेगी। चलन में, चेहरे में, कर्म में गुणों का स्वरूप बनना पड़ेगा। सदा ज्ञान, गुण, शक्तियों का स्वरूप इमर्ज रखना पड़ेगा।''

अ.बापदादा 31.12.08

वाचा सेवा

(I) वाचा द्वारा अन्य आत्माओं को आत्मा-परमात्मा-सृष्टि चक्र का ज्ञान देना, मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा रास्ता बताना।

(II) दुखी-अशान्त आत्माओं के दुख-अशान्ति के कारणों को सुनकर, उसका समाधान करना अर्थात् उनको सुख-शान्ति का सच्चा रास्ता बताना, शुभ राय देना वाचा सेवा है।

(III) वाचा द्वारा ज्ञान के गुह्य राज़ों को स्पष्ट करना और अन्य आत्माओं को उनकी अनुभूति कराना वाचा सेवा है।

(IV) ज्ञान-योग का महत्व बताकर आत्माओं की परमात्मा के साथ प्रीत जुटाना।

''सिर्फ माइक नहीं लेकिन स्नेही-सहयोगी बनें। क्योंकि स्नेह और सहयोग से उनको आशीर्वाद मिलती है, पुरुषार्थ में आगे बढ़ने की। ... बापदादा यह क्यों कहते हैं क्योंकि आप लोग जो पक्के ब्राह्मण हैं, उनको समय पर साक्षी होकर देखना पड़ेगा, मन्सा सेवा इतनी बढ़ेगी। वे सेवा करें और आप साक्षी होकर मन्सा सेवा करो। जैसे ब्रह्मा बाप ने सेवा लायक बनाया और स्वयं साक्षी होकर देखा ना।''

अ.बापदादा 15.12.09

''यह वाचा की सेवा आपके योग्य तैयार किये हुए करें, जिनकी आवाज़ में अनुभव की आकर्षण हो, पोजीशन की आकर्षण नहीं लेकिन अनुभव की आकर्षण। तब प्रभाव बहुत जल्दी पड़ेगा।... निमित्त बनने वालों को बापदादा की एक्स्ट्रा मदद मिलती है। कोई भी हो लेकिन जिसको बापदादा का समय पर विशेष वरदान मिलता है, उसकी रिजल्ट वे खुद भी नहीं जान सकते कि क्या होता है। वे खुद नहीं बोलते लेकिन वरदान बोलता है।''

अ.बापदादा 15.12.09

''अपनी स्मृति और स्थिति को ऐसा पॉवरफुल बनाकर स्टेज पर आओ, ऐसे समझो कि अपने कई समय के पुकारते हुए भक्तों को अपने द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने के लिए आई हूँ। ... सिर्फ भाषण की तैयारी नहीं करनी है लेकिन भाषण की तैयारी ऐसी करो, जो भाषण द्वारा भाषा से भी परे स्थिति में ले जाने का अनुभव कराओ।''

अ.बापदादा 11.2.71

''भाषण द्वारा भाषा से भी परे स्थिति में ले जाने का अनुभव कराओ। अभी भाषण की तैयारी ज्यादा करते हो लेकिन रुहानी आकर्षण स्वरूप की स्मृति में रहने की तैयारी पर अटेन्शन कम

देते हो। ... हर एक के दिल पर बाप के सम्बन्ध के स्नेह की छाप लगाना है।''

अ.बापदादा 11.2.71

''अपने को देखना है हम कितना दैवी गुणों में रहते हैं, कितना समय बाप की सेवा करते हैं? खुद भी याद करना है और फिर औरों को भी याद दिलानी है। आत्मा पर जो कट चढ़ी हुई है, वह याद के बिगर तो उतरेगी नहीं। ... जो करेगा, सो पायेगा, नहीं करेगा तो अन्त में पछतायेगा।''

सा.बाबा 23.05.09 रिवा.

''आवाज़ फैलाने में पास हो लेकिन आत्माओं को बाप के समीप लाने का आवाह्न अभी करना है। ... स्वयं ही आवाज़ से परे रहने के इच्छुक हैं, सदा के अभ्यासी नहीं हैं। इसलिए आवाज़ से आवाज़ फैल रहा है। लेकिन जितना स्वयं आवाज़ से परे होकर सम्पूर्णता का आवाह्न अपने में करेंगे, उतना आत्माओं का आवाह्न कर सकेंगे।''

अ.बापदादा 22.10.70

कर्मणा सेवा

कर्म द्वारा यज्ञ की स्थूल-सूक्ष्म सेवा करने वाले को उसका बड़ा फल मिलता है। भक्ति मार्ग में भी ऐसी सेवा का बड़ा महत्व है।

(I) कर्म द्वारा दूसरों को प्रेरणा देना।

(II) स्थूल सेवा अर्थात् यज्ञ की स्थूल सेवा करना।

(III) कर्म द्वारा आत्माओं को गुणों का दान देना।

(IV) वर्तमान समय इन्टरनेट आदि के द्वारा भी सेवा की जा सकती है।

''सम्पूर्ण बनने के लिए इन दो बातों (त्रिकालदर्शी बनकर कर्म करना और व्यर्थ संकल्पों की रचना बन्द करना) का ध्यान देना पड़े। ... इन दोनों बातों का ध्यान देने सर्विसएबुल बन सकेंगे। सर्विस सिर्फ मुख से नहीं होती है लेकिन श्रेष्ठ कर्मों द्वारा भी सर्विस कर सकते हो। ... ऐसे कर्तव्य करके दिखाओ जो आपके कर्तव्य हर आत्मा को बाप की तरफ आकर्षित करें।''

अ.बापदादा 1.3.71

''हर एक को अपने दीपक की आपही सम्भाल करनी है। अन्त तक पुरुषार्थ चलना ही है। ... रोज़ दीपक में योग और ज्ञान का घृत डालना पड़ता है। योगबल की ताक़त नहीं है तो दौड़ नहीं सकते हैं। ... स्थूल सेवा की सब्जेक्ट भी बहुत अच्छी है, बहुतों की आशीर्वाद मिलती है। कोई बच्चे ज्ञान की सर्विस करते हैं। दिन प्रतिदिन सर्विस की वृद्धि होती जायेगी।''

सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

''महान आत्माओं का कर्तव्य दान-पुण्य होता है। ... चेक करो - आज सारे दिन में कितनों

को दान दिया और कौनसा दान दिया ? ... देखना है - आज हमारी बुद्धि का भोजन महान रहा ? ... अपने को आपही चेक करो कि आज हमने बुद्धि द्वारा कोई भी अशुद्ध संकल्प का भोजन तो नहीं पान किया ? ... पुण्य अर्थात् किसको ऐसी चीज़ देना, जिससे उस आत्मा के दिल से आशीर्वाद निकले।'' अ.बापदादा 18.04.71

''आप लोगों के सामने जो भी आत्मायें आयेंगी, आते ही उनके संकल्प, स्वरूप, गुण और कर्तव्य बदल जायेंगे। न सिर्फ आत्माओं के लेकिन 5 तत्वों के भी गुण और कर्तव्य बदलने वाले हो। ... जैसे महादानियों के पास सदैव भिखारियों की भीड़ लगी रहती है, वैसे आप सभी के पास भी भिखारियों की भीड़ लगने वाली है।'' अ.बापदादा 15.4.71

''मुख्य तीन प्रकार के दान करने हैं। ज्ञान का दान भी करते हो, योग द्वारा शक्तियों का दान भी कर रहे हो और तीसरा दान है कर्म द्वारा गुणों का दान। ... मन्सा द्वारा सर्व शक्तियों का दान, वाणी द्वारा ज्ञान का दान और कर्म द्वारा सर्व गुणों का दान। सवेरे प्लेन बनाओ ... दिन समाप्त होने पर चेक करो - तीनों प्रकार का दान किया ?''

अ.बापदादा 15.04.71

''मन्सा-वाचा-कर्मणा, ज्ञान-गुण-शक्तियों तीनों प्रकार के दान की अपनी-अपनी प्रालब्ध वा प्राप्ति है। ... इस समय इस दान से न सिर्फ भविष्य बनता है लेकिन प्रत्यक्ष फल भी मिलता है। ... जो तीनों ही दान करते हैं, उनको तीनों ही फल प्रत्यक्ष रूप में मिलते हैं।''

अ.बापदादा 15.4.71

''सिर्फ मुख की सर्विस ही नहीं लेकिन सर्व कर्मेन्द्रियाँ सर्विस करने में तत्पर हों। ... सिर्फ एक प्रकार की सर्विस से सबूत नहीं निकलता है। उससे सिर्फ सराहना करते हैं। सबूत देने के लिए सर्व प्रकार की सर्विस में सदा तत्पर रहना है। जो जितना सर्विसएबुल होगा, वैसा बाप समान बनायेगा और फिर बाप समान बनेगा।'' अ.बापदादा 23.10.70

''जितना खुद सहज पुरुषार्थी होंगे, अव्यक्त स्थिति में होंगे, उतना ही औरों को भी आप समान बना सकेंगे। ... भाषण पर नहीं लेकिन स्थिति पर सफलता का आधार है क्योंकि भाषण अर्थात् भाषा की प्रवीणता तो दुनिया में बहुत है लेकिन आत्मा में शक्ति का अनुभव कराने वाले तो तुम ही हो।'' अ.बापदादा 23.1.70

''आज विश्व की सर्व आत्माओं को खुशी, शक्ति और स्नेह की आवश्यकता है। ... मन्सा से शक्तियाँ दो, वाचा से ज्ञान दो और कर्मणा से गुणदान दो। ब्रह्मा बाप ने अन्त में तीन शब्द सभी बच्चों को सौगात में दिये। ... मन्सा द्वारा निराकारी, वाचा द्वारा निरहंकारी और कर्मणा द्वारा निर्विकारी। ये तीन शब्द सेवा में लगाओ।'' अ.बापदादा 24.3.09

''हमको मन्सा सहयोग देना ही है और वायब्रेशन फैलाने हैं। ... प्रोग्राम के समय कोई कहाँ भी हो, लेकिन समझे हम सेवा पर हैं। ... समझे हमारी सेवा है तो अच्छा हो जायेगा।''

अ.बापदादा 24.3.09

''बाप समझाते तो बहुत अच्छा हैं परन्तु कल्प-कल्प जो जितना पढ़े हैं, वे उतना ही पढ़ते हैं। पुरुषार्थ से सारा मालूम पड़ जाता है। स्थूल सेवा की भी सब्जेक्ट है। मन्सा सेवा नहीं तो वाचा, कर्मणा सेवा करनी चाहिए। ... पहले याद की यात्रा में रहना है, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है।'' सा.बाबा 11.02.09 रिवा.

''तुम्हारे ज्ञान के वाण बहुत अच्छे हैं, परन्तु उनमें योग का जौहर चाहिए। जैसे तलवार में भी जौहर होता है तो उसकी वेल्यू अधिक होती है। ... बच्चों में भी ऐसे हैं। कोई में ज्ञान बहुत है लेकिन योग का जौहर कम है।'' सा.बाबा 12.02.09 रिवा.

''अभी बहुत सेवा रही हुई है। अभी तो मन्सा द्वारा सकाश देने का काम करना है। जैसे शुरू-शुरू में शिव बाप ने ब्रह्मा में प्रवेश किया तो ... साक्षात्कार हुआ, भागकर आये और जो शुरू में आये, वे कितने पक्के हैं। ... जो शुरू में हुआ, वह अभी अन्त में भी रिपीट होना है। इसलिए अपनी मन्सा शक्ति की सेवा को बढ़ाओ।'' अ.बापदादा 15.12.08

''केवल अमृतवेले ही ये मन्सा सेवा नहीं करनी है। भले कर्म कर रहे हो लेकिन बीच-बीच में माइण्ड को सब तरफ से कन्ट्रोल करके, एकाग्र होकर देखो सकाश दे सकता हूँ या नहीं दे सकता हूँ। इसकी ट्रायल करो। इसकी बहुत आवश्यकता होगी। आपके दुख-हर्ता, सुख-कर्ता के चित्र बनते हैं तो क्या चेतन्य में नहीं बनेंगे!''

अ.बापदादा 15.12.08

2. तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क से ईश्वरीय सेवा

(I) अपने तन से यज्ञ की स्थूल-सूक्ष्म सेवा करना।

(II) मन के द्वारा आत्माओं की सेवा करना, स्वयं भी अपने मन को ईश्वरीय सेवा में समर्पित करना और अन्य आत्माओं को भी अपना तन-मन-धन यज्ञ सेवा में समर्पित करने की प्रेरणा देना।

(III) धन को यज्ञ में लगाकर अन्य आत्माओं को सहयोग करना, धन को यज्ञ में समर्पित करना।

सेन्टर खोलना, मेला-प्रदर्शनी आदि लगाना, उसका प्रबन्ध करना और सहयोग करना, यज्ञ के अन्य कार्यों में धन से मदद करना।

(IV) जन अर्थात् अपनी कन्याओं आदि को यज्ञ सेवा में समर्पित करना। इस जन-सेवा का ही भक्ति मार्ग में कन्या-दान के रूप में गायन है परन्तु वह कन्यादान का तमोप्रधान स्वरूप है और अभी जो ईश्वरीय सेवा अर्थ कन्या-दान करते हैं, वह कन्या-दान का सतोप्रधान स्वरूप है।

(V) सम्बन्ध-सम्पर्क से सेवा अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं की ज्ञान-योग से सेवा करना।

''अन्त में एक बाप के सिवाए और कोई की याद न आये। एकदम लाइन क्लीयर चाहिए। एक बाप को याद करने से अन्दर में खुशी का पारा चढ़ता है। ... यह अविनाशी ज्ञान रत्न ही अन्त में साथ चलते हैं। ज्ञान रत्न अर्थात् इन ज्ञान रत्नों की कमाई ही साथ चलती है, जिससे तुम 21 जन्म प्रालब्ध भोगेंगे। विनाशी धन भी उनका साथ जाता है जो बाप को मदद करते हैं।'' सा.बाबा 14.03.10 रिवा.

''पैसा है तो बाप के डायरेक्शन पर चलो, हॉस्पिटल-कम-युनिवर्सिटी खोलो, जहाँ आकर कोई विश्व का मालिक बन सके। ... अभी तुम लाइट-हाउस हो। तुम सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति धाम का रास्ता बताते हो।'' सा.बाबा 15.02.10 रिवा.

''माँ-बाप शादी कराना चाहते हैं तो कन्यायें माँ-बाप को बोलें - आप हमारी शादी में जो पैसा खर्च करेंगे, वह हमको देंगे तो हम इन पैसों से रुहानी हॉस्पिटल-कम-युनिवर्सिटी खोलेंगे, जिससे बहुतों का कल्याण करेंगे तो तुम्हारा भी पुण्य, हमारा भी पुण्य हो जायेगा। परन्तु बच्चे खुद भी उत्साह में रहने वाले हों कि हम भारत को स्वर्ग बनाने के लिए अपना तन-मन-धन सब खर्च करेंगे। इतना नशा चढ़ा रहना चाहिए।'' सा.बाबा 16.02.10 रिवा.

''भक्ति मार्ग में तुम कितना पैसा वेस्ट करते हो। यहाँ तो तुम्हारी पाई भी वेस्ट नहीं होती है। तुम सर्विस करते हो सॉलवेन्ट बनने के लिए। भक्ति मार्ग में तो पैसे खर्च करते-करते इन्सॉलवेन्ट बन पड़ते हो। इस समय तुम जो कुछ देते हो, वह ईश्वरीय सर्विस के लिए शिवबाबा को देते हो।'' सा.बाबा 23.09.09 रिवा.

''बी.के. को देना भी राँग हो जाता है। बाबा ने समझाया है - तुम कोई से भी कोई चीज़ लेकर पहनेंगे तो उनकी याद आती रहेगी। ... देने वाले का भी कुछ जमा नहीं होता है। ... जितनी सर्विस करेंगे, उतनी कमाई जमा होगी।'' सा.बाबा 23.09.09 रिवा.

''तुम्हारा ज्ञान वृद्धि को पाता रहता है, बच्चों की भी वृद्धि होती जाती है। उसमें गरीब-साहूकार सब आ जाते हैं। शिवबाबा का भण्डारा भरता जाता है। जो भण्डारा भरते हैं, उनको वहाँ कई गुणा रिटर्न मिल जाता है।'' सा.बाबा 5.04.09 रिवा.

3. देश-काल-परिस्थिति के आधार पर सेवा

यज्ञ सेवा अर्थात् मधुबन में सेवा
सेन्टर्स पर सेवा
अपने निवास स्थान

''पहले-पहले किसकी बुद्धि में यह बिठाना है कि गीता का भगवान परमपिता परमात्मा है, उसने ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन किया। भारत का देवी-देवता धर्म ही मुख्य है।... यह भी तुम जानते हो कि ड्रामा अनुसार भारतवासियों को अपना धर्म भूल जाना है तब तो फिर बाप आकर स्थापन करे।''

सा.बाबा 26.11.08 रिवा.

''सेवा का टर्न - हर एक सेन्टर राज्य अधिकारी बनने वालों की संख्या लिखना ... समय प्रमाण हर एक अपने-अपने एरिया की आत्माओं का उल्हना पूरा करो। ... सभी को सन्देश दो, बापदादा से कम से कम वर्सा तो दिलाओ। ... लास्ट में आपके गुण गायें कि वाह, आपने हमें बाप का परिचय दिया। यह पुण्य का खाता तीव्र गति से जमा करना है।''

अ.बापदादा 15.11.08

''सम्बन्ध-सम्पर्क की सेवा और वाणी की सेवा करने का चान्स अभी है। जितनी कर सको, उतनी डबल-ट्रिबल करो। बापदादा फॉरेन साथ भारत वालों को भी कह रहा है।''

अ.बापदादा 15.11.08

''अभी चारो ओर दो शब्द की लात-तात लगाओ। एक सम्पूर्ण पवित्रता, सारे ब्राह्मण परिवार में फैलानी है। जो कमजोर है, उसको सहयोग देकर भी बनाओ। यह बड़ा पुण्य है। छोड़ नहीं दो कि यह तो है ही ऐसा, यह तो बदलना ही नहीं है। यह श्राप नहीं दे दो, पुण्य का काम करो।... उनकी उम्मीदें बढ़ाओ, गिरे हुए को गिराओ नहीं, सहारा दो, शक्ति दो।''

अ.बापदादा 30.11.08

4. ज्ञान की सेवा

योग द्वारा सेवा
कर्मों द्वारा गुणों का दान
यज्ञ की स्थूल सेवा
लेखनी से सेवा
इण्टरनेट आदि से सेवा

''जितना-जितना अपनी जिम्मेवारी का ताज धारण करेंगे, उतना दूसरों की जिम्मेवारी का ताज

भी धारण कर सकेंगे। जो निमित्त टीचर हैं, उन पर सभी की ज्यादा नज़र रहती है। ... आप लोग उनके आगे एक दर्पण के रूप में हो। आप नॉलेज की स्थिति के दर्पण से अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराने वाले दर्पण हो।'' अ.बापदादा 11.7.71

''आप सर्विस के निमित्त हो, इसलिए इस संगठन को मास्टर नॉलेजफुल, सर्विसएबुल और सक्सेसफुल संगठन कहेंगे। जो सक्सेसफुल हैं, वे किसी भी परिस्थिति में कोई कारण नहीं बताते लेकिन कारण को निवारण में परिवर्तन कर देते हैं। ... जो मास्टर नॉलेजफुल, सक्सेसफुल होते हैं, वे अपनी नॉलेज की शक्ति से कारण को निवारण में बदली कर देंगे।''

अ.बापदादा 11.7.71

''विनाश होगा, यह तो गॉरण्टी है। जब बीज ही अविनाशी है तो फल न निकले, यह हो नहीं सकता। ... इसलिए सर्विस करते कभी यह नहीं देखना वा सोचना! कि जो किया वह व्यर्थ गया। सभी नम्बरवार समय पर फल दिखाई देते जायेंगे।''

अ.बापदादा 11.07.71

''यह ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमत पर यह श्रेष्ठ कर्तव्य करते हैं। ... तुम्हारे में भी यथार्थ रीति कोई की बुद्धि में मुश्किल बैठता है। ... कोई को समझाने का भी अक्ल चाहिए। हर बात क्लियर लिखनी चाहिए जो मनुष्य समझें और पूछें।''

सा.बाबा 10.03.10 रिवा.

''बुद्धि में ज्ञान रहेगा तो दूसरों को भी समझा सकेंगे। बाप को याद करने से तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह समझाना तो बहुत सहज है। मुख चलाते रहो, एम एण्ड आब्जेक्ट सबको बताते रहो। विशालबुद्धि तो झट समझ जायेंगे।'' सा.बाबा 21.12.09 रिवा.

''जैसे समय आगे बढ़ेगा, ऐसे दुख-अशान्ति की लहर बढ़ती रहेगी। कोई न कोई कारण ऐसे बनेंगे, जो दुख की लहर बढ़ेगी। ... इसलिए औरों को वाचा सेवा के लिए तैयार करो। लेकिन फाउण्डेशन पक्का हो। अपना प्रभाव डालने वाले नहीं हों, रियल ज्ञान का प्रभाव डालने वाले हों। कभी-कभी ब्राह्मण बच्चे भी अपना प्रभाव डालने लगते हैं। कोई भी सेवा में बाप की तरफ आकर्षित करो, अपने ऊपर नहीं। अगर पर्सनल अपने पर प्रभावित करते हैं तो उसका पुण्य नहीं बनता है।'' अ.बापदादा 15.12.09

''अभी तुम बच्चे संगम पर हो, बाकी सब तो गन्द में पड़े हैं।... अभी तुम गन्द से निकल आये हो। जो-जो निकलकर आये हैं और उनमें ज्ञान की पराकाष्ठा है, उनको ही नशा चढ़ता है। तुमको बेहद का बाप मिला, और क्या चाहिए! यह नशा जब चढ़े, तब तुम किसको समझा सको।। विचार करो, बाप ने हमको कहाँ से निकाला है।''

सा.बाबा 11.12.09 रिवा.

''बच्चे जो सच्ची सर्विस करनी चाहिए, वह नहीं करते हैं। बाकी स्थूल सर्विस में ध्यान चला जाता है। भल ड्रामा अनुसार होता है परन्तु बाप फिर भी पुरुषार्थ तो करायेंगे ना। ... माया भी रुस्तम से रुस्तम होकर लड़ती है। बाबा अपना भी बताते हैं। मैं रुस्तम हूँ, जानता हूँ मैं बेगर टु प्रिन्स बनने वाला हूँ, तो भी माया सामना करती है। माया किसको भी छोड़ती नहीं है।''

सा.बाबा 12.10.09 रिवा.

''ऐसी अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर फिर स्थूल स्टेज पर आओ। इससे क्या अनुभव होगा ? संगठन के बीच भी अलौकिक आत्मायें दिखाई देंगी। ... साधारण रूप में होते असाधारण स्थिति वा अलौकिक स्थिति होने से संगठन के बीच जैसे कि अल्लाह लोग दिखाई देंगे। ... स्टेज सेक्रेटरी आपका परिचय न दे लेकिन आपकी स्टेज स्वयं ही आपका परिचय दे।''

अ.बापदादा 9.04.71

''स्टेज सेक्रेटरी आपका परिचय न दे लेकिन आपकी स्टेज स्वयं ही आपका परिचय दे। जैसे हीरा धूल में छिपा हुआ भी अपना परिचय खुद देता है तो संगमयुग पर हीरे तुल्य जीवन अपना परिचय स्वयं ही दे सकता है। ... वर्तमान समय में जो नम्बरवन प्रजा कहें, वह भी कम निकलते हैं, साधारण प्रजा ज्यादा निकल रही है क्योंकि साधारण रूप के साथ स्थिति भी बहुत समय साधारण बन जाती है।''

अ.बापदादा 9.04.71

''वर्तमान समय में जो नम्बरवन प्रजा कहें, वह भी कम निकलते हैं, साधारण प्रजा ज्यादा निकल रही है क्योंकि साधारण रूप के साथ स्थिति भी बहुत समय साधारण बन जाती है। अभी साधारण रूप में असाधारण स्थिति का अनुभव स्वयं भी करो और औरों को भी कराओ। बाहरमुखता में आने के समय अन्तर्मुखता की स्थिति को भी साथ-साथ रखो।''

अ.बापदादा 9.04.71

''नॉलेजफुल के साथ पॉवरफुल भी बनकर नॉलेज दो तो अनेक आत्माओं को अनुभवी बना सकेंगे। ... जिस समय सर्विस करती हो, उस समय यही लक्ष्य रखो कि ज्ञान दान के साथ अपने वा बाप के गुणों का दान भी करना है, अनुभव कराना है। ... जब स्वयं सर्वगुणों के अनुभव स्वरूप होंगे तब अन्य को भी अनुभवी बना सकेंगे।''

अ.बापदादा 9.04.71

''अभी नॉलेज की तरफ आकर्षित होते हैं लेकिन नॉलेजफुल के ऊपर आकर्षित करना है। अभी मास्टर रचयिता कहाँ-कहाँ रचना के आकर्षण में आकर्षित हो जाते हैं। ... शक्ति और शूरवीरता की सूरत ऐसी दिखाई दे जो कोई भी आसुरी लक्षण वाला हिम्मत न रख सके।''

अ.बापदादा 22.10.70

''अभी यह है विहंग मार्ग की सर्विस। सर्विसएबुल बच्चों का माथा चलता रहेगा कि क्या-क्या बनाना चाहिए। ... किसको समझाने का बड़ा नशा चाहिए। सर्विस के लिए बाहर में जाना चाहिए। ... बड़े बिजनेसमैन जो होते हैं, वे बड़ी-बड़ी ब्रान्चेज खोलते हैं। ... यह है ज्ञान सागर बाप की अविनाशी ज्ञान रत्नों की दुकान।'' सा.बाबा 24.11.08 रिवा.

''यह नॉलेज बुद्धि में रहने से खुशी भी रहती है। औरों को भी यह नॉलेज कैसे मिले, इस पर भी ख्यालात चलते रहते हैं। कैसे सबको बाप का परिचय दें? ... मनुष्य बेचारे बिल्कुल अन्जान हैं, कैसे उन्होंको सदा सुखी बनायें।'' सा.बाबा 13.05.09 रिवा.

''अभी तो बहुत सर्विस करनी है, बहुत प्रजा बनानी है। ... बाबा ने कहा था - अखबार वा मेगजीन में ऐसी वण्डरफुल बातें लिखो, जो मनुष्य समझें कि ब्रह्माकुमारियों ने यह बात बिल्कुल ठीक लिखी है। ... जो लिखते हैं, उनको फिर समझाना भी है। समझाना नहीं आता होगा, इसलिए लिखते भी नहीं हैं।'' सा.बाबा 3.03.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - सर्विस का सबूत दो, सभी को सुख दो। यहाँ तो बस यह सर्विस की तात लगी रहे, यह चिन्ता रहे। बुद्धियोग बाप के साथ हो। ... यज्ञ की स्थूल सेवा भी करनी चाहिए तो रुहानी सेवा भी जरूर करनी चाहिए। मन्मनाभव का मन्त्र सबको देना है। मन्मना भव है मन्सा सेवा, मध्याजी भव है वाचा सेवा।'' सा.बाबा 10.12.08 रिवा.

''अखण्ड महादानी सदा तीन प्रकार से दान करने में बिजी रहते हैं। पहला मन्सा द्वारा शक्तियां देने का दान, दूसरा वाणी द्वारा ज्ञान का दान और तीसरा कर्म द्वारा गुणों का दान। ... वाणी द्वारा ज्ञान का दान तो मैजारिटी करते हैं, मन्सा द्वारा शक्तियों का दान यथा शक्ति करते हैं और कर्म द्वारा गुण-दान करने वाले बहुत कम हैं।''

अ.बापदादा 2.12.93

''यह सदा स्मृति में रखो कि मैं दाता का बच्चा अखण्ड महादानी आत्मा हूँ। कोई भी आत्मा चाहे अज्ञानी हो या ब्राह्मण हो लेकिन हमको देना है। ... जिस आत्मा को जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस आत्मा को मन्सा द्वारा अर्थात् शुद्ध वृत्ति, वायब्रेशन्स द्वारा शक्तियों का दान अर्थात् सहयोग दो। दूसरा स्वयं जीवन में गुणमूर्त बन, प्रत्यक्ष सैम्पुल बन कर्म द्वारा औरों को सहज गुण धारण करने का सहयोग दो।'' अ.बापदादा 2.12.93

5. स्व-सेवा
विश्व-सेवा
परिवार की सेवा

बाबा ने अनेक बार मुरलियों में स्व-सेवा और विश्व-सेवा में सन्तुलन अर्थात् बैलेन्स रखने के लिए कहा है, प्रेरणा दी है। वास्तविकता ये है कि जो स्व-सेवा यथार्थ रीति करता है, वही विश्व-सेवा में और परिवार की सेवा में सफल होता है। स्व-सेवा करने वाले का अपना जीवन एक दर्पण बन जाता है अर्थात् जीता-जागता म्युजियम बन जाता है, जो स्वत: सेवा करता रहता है। जो स्व-सेवा और विश्व-सेवा के बैलेन्स को भूलकर मान-शान या किसी स्वार्थवश विश्व-सेवा में अधिक लग जाता है और स्व-सेवा भूल जाता है, वह एक न एक दिन धोखा अवश्य खाता है अर्थात् उसको पश्चाताप अवश्य करना होता है।

सृष्टि-चक्र के विधि-विधान के अनुसार कोई भी स्थूल या सूक्ष्म सेवा जो कोई भी आत्मा करती है, जिससे सारा विश्व प्रभावित होता है या जितनी आत्मायें प्रभावित होती हैं या लाभ उठाती हैं, उसके साथ उस आत्मा का जाने-अन्जाने हिसाब-किताब बन जाता है, सम्बन्ध जुट जाता है। जैसे जगदीश भाई जी ने जो साहित्य लिखा या किसी विशेष का अविष्कार किया, तो उस सेवा का जो लाभ उठाते हैं, उसका अंश उनके खाते में जमा होता है, उनके साथ उसका हिसाब-किताब बन जाता है। ऐसे ही कोई आत्मा कोई विकर्म करती है तो भी जो आत्मायें उससे प्रभावित होती हैं, उसका भी हिसाब-किताब उन आत्माओं के साथ बनता है। मम्मा-बाबा ने यज्ञ की स्थापना में जो सेवा की, उसका सम्बन्ध अन्त तक आने वाली सभी आत्माओं के साथ रहेगा, जैसे वृक्ष में फाउण्डेशन अथवा बीज के साथ सारे वृक्ष का सम्बन्ध रहता है।

''बापदादा ने देखा कि फारेन में भी वृद्धि हो रही है और होती रहेगी। जो देश रहे हुए हैं, उसका भी प्लेन बनाते रहते हैं और स्व पुरुषार्थ का अटेन्शन है। स्व-पुरुषार्थ को और अण्डरलाइन कर स्व-पुरुषार्थ में भी नवीनता लाते रहना। ... कोई भी वंचित न रह जाये - यही लक्ष्य है कि सभी बच्चों को सन्देश दे वारिस निकालें, परिवार से बिछुडे हुओं को परिवार में मिलायें।'' अ.बापदादा 15.12.09

''कोई भी प्रयोग पहले स्व प्रति करो क्योंकि जब स्व प्रति प्रयोग करने में सफल हो जायेंगे तो दूसरी आत्माओं के प्रति प्रयोग करना सहज हो जायेगा ... दिल में औरों के प्रति प्रयोग करने का उमंग-उत्साह स्वत: ही बढ़ता जायेगा। ... तो ऐसे प्रयोगशाली आत्मायें बनो। पहले स्वयं में सन्तुष्टता का अनुभव करो, फिर औरों में सहज हो जायेगा।'' अ.बापदादा 1.02.94

''सिर्फ अपने व्यर्थ संकल्पों अथवा विकर्म भस्म नहीं करने हैं लेकिन तुम तो विश्व-कल्याणकारी हो, इसलिए सारे विश्व के विकर्मों का बोझ हल्का करना वा अनेक आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों को मिटाना - यह है शक्तियों का कर्तव्य। ... ऐसे अभी यह विनाश और स्थापना की यह

रुहानी मशीनरी बहुत तेज होनी है।'' अ.बापदादा 15.4.71

''बाप ने आकर कितना समझदार बनाया है। महिमा भी उनकी करनी पड़े। ... समझाने वाला बेहद की बुद्धि वाला चाहिए। ... सर्विस नहीं करेंगे तो कौन समझेंगे कि इनके पास धन है, ये दानी हैं।'' सा.बाबा 24.11.08 रिवा.

''स्व पुरुषार्थ और सेवा का पुरुषार्थ और तीव्र गति में लाओ।... जैसे आपने बाप का प्यार अनुभव किया, ऐसे अन्य आत्माओं को भी बाप के प्यार का अनुभव कराओ। कोई वंचित न रह जाये क्योंकि आप विश्व-कल्याणी हो।... हर एक अपना फर्ज समझे कि जैसे हम तृप्त हुऐ हैं ऐसे अन्य आत्माओं को भी तृप्त बनायें।'' अ.बापदादा 15.11.08

''बापदादा तो लोगों की दुख की आहें सुनते हैं ना। जब बच्चों के दुख की आहें बाप को सुनाई देती हैं तो बताओ बाप को कितना तरस पड़ता है। आप भी रहमदिल, कल्याणकारी आत्मायें दुखियों का आवाज़ सुनो। हे विश्व-कल्याणी, आत्माओं का कल्याण करो।''

अ.बापदादा 15.11.08

''जो शान्ति माँगते हैं, तुम्हारा काम है उनको समझाना। ... बॉम्बस बनाने वाले कहते भी हैं - ऐसे करेंगे तो जरूर विनाश होगा। लिखा हुआ भी है कि महाभारी महाभारत लड़ाई में ऐसे हुआ था, सब खत्म हुए थे। ... तुम तो कहेंगे भावी ड्रामा की। तुम ईश्वर की भावी नहीं कहेंगे। ईश्वर का भी ड्रामा में पार्ट है। यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, यह भी बाप ही समझा सकते हैं।'' सा.बाबा 3.01.09 रिवा.

''समय और स्वयं दोनों को देखना है। समय चेलेन्ज कर रहा है और आप माया को चेलेन्ज करो, क्या करेगी माया। ... समय की रफ्तार इस समय तीव्र है। समय का सामना कौन करेगा ? आप ही तो करेंगे। बापदादा ने देखा कि दुखियों की पुकार, भक्तों की पुकार, समय की पुकार ... बेचारे हिम्मतहीन हैं, उन्होंको पंख लगाओ तो उड़ सकें। हिम्मत के पंख, उमंग-उत्साह के पंख लगाओ।'' अ.बापदादा 31.12.08

''शक्तियाँ जो प्राप्त हैं, उनको स्व-प्रति वा दूसरों के प्रति सफल करते हो तो भविष्य में आपके राज्य में सर्व शक्तियाँ हैं.. गुण-दान करते हो तो सर्वगुण सम्पन्न बन जाते हो। एक-एक सफलता की प्राप्ति से अनेक जन्मों के अधिकारी बन जाते हो।'' अ.बापदादा 31.12.08

''जब टाइटिल ही आपका विश्व-परिवर्तक है तो क्या स्व को परिवत्रन करना मुश्किल है! ... मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे मुश्किल क्या है ?... मुश्किल बात नहीं होती है लेकिन एक गलती करके मुश्किल बना देते हो।... सदा स्वमान की सीट पर सेट रहो।''

अ.बापदादा 31.12.08

''वास्तव में क्लास की बैठक ऐसी होनी चाहिए जो टीचर की हरेक के ऊपर नज़र पड़े। यह तो जैसे सतसंग हो जाता है। परन्तु क्या करें ड्रामा की भावी ऐसी है, जो क्लास में नम्बरवार बिठा नहीं सकते। जैसे बच्चे बाप का मुखड़ा देखने के प्यासे होते हैं, ऐसे बाप भी प्यासे रहते हैं। ... तुम बच्चे भारत को क्या सारी दुनिया में सोझरा करने वाले हो।''

सा.बाबा 18.12.08 रिवा.

6. दृष्टि-वृत्ति और स्मृति से सेवा

ईश्वरीय सेवा में दृष्टि का बहुत महत्व है। दृष्टि-वृत्ति और स्मृति से हम किसको उसके आत्मिक स्वरूप में स्थित करके आत्मिक गुणों और शक्तियों का अनुभव कराकर बाप का बना सकते हैं, उसको देहाभिमान से मुक्त करके देही-अभिमानी स्थिति का अनुभव करा सकते हैं। दृष्टि-वृत्ति से किसको आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की प्रेरणा दे सकते हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है कि मुख से जो ज्ञान सुनाते हो, वह आत्मा भूल सकती है परन्तु अपनी दृष्टि-वृत्ति से उसको जो अनुभव कराओगे, वह कभी भूल नहीं सकती। सबसे श्रेष्ठ सेवा है किसी आत्मा को अपनी दृष्टि-वृत्ति, सम्पर्क से आत्मिक गुणों और परमात्मिक गुणों की अनुभूति कराना।

''कब-कब किन्हीं ऐसी आत्माओं के लिए ज्ञान दाता बनने के साथ-साथ आप विशेष रूप से उस आत्मा को बल देने के लिए शुभ भावना रखते हो वा शुभ चिन्तक बनते हो तो विधाता के साथ-साथ वरदाता भी बनते हो। एक्स्ट्रा बल अपनी तरफ से उनको वरदान के रूप में देते हो। तो वरदान भी देना होता है और दाता भी बनना होता है।'' अ.बापदादा 20.5.71

''दृष्टि से सृष्टि बदलती है।... कैसी भी तमोगुणी वा रजोगुणी आत्मायें सामने आयें लेकिन आपकी सतोगुणी दृष्टि से उनकी सृष्टि, उनकी स्थिति बदल जाये, उनकी वृत्ति बदल जाये।... जैसे शुरू में स्थापना के समय ज्ञान की सर्विस इतनी नहीं थी लेकिन नज़र से निहाल करते थे। तो अन्त में भी ज्ञान की सर्विस करने का मौका नहीं मिलेगा, नज़र से ही निहाल करना होगा।''

अ.बापदादा 20.5.71

''खुशी अविनाशी बाप की देन है। तो अविनाशी बाप की देन को अविनाशी रखो। खुशी के लिए कहा जाता है - खुशी जैसी कोई खुराक नहीं, खुशी जैसा कोई खज़ाना नहीं। जिसके अन्दर सदा खुशी है, उनके नयनों से, चेहरे से, चलन से ऑटोमेटिक दिखाई देती है। बापदादा का वरदान है कि सदा खुश रहो और सदा खुशी बाँटो।'' अ.बापदादा 15.11.09

''जो मुख से ज्ञान का वर्णन करते हैं लेकिन जैसा पहला नम्बर सुनाया कि सदैव नयनों में बाप

की सूरत सभी को दिखाई दे, उसमें कुछ कम है। वे गले द्वारा सर्विस करते हैं, इसलिए गले की माला का रतन बनते हैं और तीसरा नम्बर है हाथ के कंगन का रतन। उनकी विशेषता है कि वे किस-न-किस रूप में बाप के मददगार बनते हैं।'' अ.बापदादा 6.05.71

''देही-अभिमानी बनकर विचार करना होता है कि आज हमको फलाने प्राइम-मिनिस्टर को जाकर समझाना है। उनको बाबा को याद कर दृष्टि दे तो उनको साक्षात्कार हो सकता है। ... अगर देही-अभिमानी होकर रहो तो तुम्हारी बैटरी भरती जायेगी। देही-अभिमानी होकर बैठे और अपने को आत्मा समझ बाप से योग लगाये तो बैटरी भर सकती है।''

सा.बाबा 5.11.09 रिवा.

''अभी इस वर्ष में विशेष कौन सी बात प्रैक्टिकल में करनी है, वह सुना दिया कि अभी चेहरे में चमक दिखाई दे। प्रत्यक्षता के निमित्त बनना है ... सदा आपका मुस्कराता हुआ चेहरा दिखाई दे, कोई चिन्तन में, कोई उलझन में नहीं हो।'' अ.बापदादा 25.10.09

''जो जितना समीप होगा, वह उतना समानता में रहेगा। तुम बच्चों के नैनों को कोई देखे तो उसको मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता दिखाई दे। ... नैन भी सर्विस करें तो मस्तक भी सर्विस करे। ... मस्तक से बाप का परिचय हो, ऐसी सर्विस करनी है। तब समीप सितारे बनेंगे। जैसे साकार में बाप को देखा मस्तक और नैन सर्विस करते थे।... ऐसे बाप समान बनना है।''

अ.बापदादा 23.10.70

''दृष्टि से सृष्टि रचने आती है?... यह जो कहावत है कि दृष्टि से सृष्टि बनेंगी। ऐसी दृष्टि, जिससे सृष्टि बदल जाये। ... दृष्टि धोखा भी देती है और दृष्टि पतितों को पावन भी करती है। दृष्टि बदलने से सृष्टि बदल ही जाती है। ... दृष्टि क्या बदलनी है, यह मालूम है? आत्मिक दृष्टि बनानी है।'' अ.बापदादा 6.08.70

''साक्षात्कार दृष्टि से ही करेंगे। एक-एक की दृष्टि में अपने यथार्थ रूप, यथार्थ घर और यथार्थ राजधानी देखेंगे, अगर यथार्थ दृष्टि है तो। सदैव अपने को चेक करो कि अभी कोई भी सामने आये तो मेरी दृष्टि द्वारा क्या साक्षात्कार करेंगे। जो आपकी वृत्ति में होगा, वैसे अन्य आप की दृष्टि से देखेंगे।'' अ.बापदादा 6.08.70

''अब यह सम्पूर्णता की छाप लगानी है। सम्पूर्ण अवस्था वर्तमान समय में ही हो। यह है महारथियों का कर्तव्य। ... बच्चों को स्टेज पर प्रत्यक्ष होना है।... मुख्य सर्विस है ही अपनी वृत्ति और दृष्टि को पलटाना। यह जो गायन है नज़र से निहाल। तो दृष्टि और वृत्ति की सर्विस प्रैक्टिकल में लानी है।'' अ.बापदादा 26.3.70

''यह दृष्टि और वृत्ति की सर्विस एक स्थान पर बैठे हुए एक सेकेण्ड में अनेकों की कर सकते

हो। ... जैसे शुरू में बापदादा का साक्षात्कार घर बैठे हुआ ना। ... यह दृष्टि-वृत्ति की सर्विस सफलता को तब पायेगी, जब वृत्ति और बातों में क्लियर होगी।'' अ.बापदादा 26.3.70

''वाणी के साथ-साथ वृत्ति और दृष्टि में इतनी ताक़त है, जो किसके संस्कारों को बहुत कम समय में बदल सकते हो। वाणी के साथ वृत्ति और दृष्टि नहीं मिलती है तो सफलता होती ही नहीं। मुख्य यह सर्विस है। ... अभी तो आप लोगों को बेहद में अपना सुख देना है, तब सारी विश्व आपको सुखादाता मानेगी।'' अ.बापदादा 26.3.70

''टीचर्स - आप में आप नहीं दिखाई दें, बाप दिखाई दे। इसमें सब धारणा आ जाती है। ... चारो तरफ के मधुवन वाले यह समझें कि मधुबन का एक-एक रत्न विशेष बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त है। सारा समय मधुबन वाले ऐसे मन्सा सेवा, कर्मणा सेवा और सबको बाप समान बनाने का एग्जॉम्पुल बनकर दिखायें। मधुबन वालों को यह रिजल्ट देनी है।''

अ.बापदादा 7.04.09

''सदा अपने नयनों द्वारा रुहानियत का अनुभव कराने वाले और चेहरे द्वारा सदा खुश-किस्मत, मन सदा खुशी में नाचता रहे। ... ऐसे बाप के हर बच्चे अपने मुख द्वारा बाप का परिचय देते हो लेकिन नयनों और चेहरे द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाले हों।''

अ.बापदादा 7.04.09

''बाबा अभी चाहता है कि आपका चेहरा और चलन ऐसा स्पष्ट दिखाई दे कि ये मुक्तिदाता के बच्चे मुक्ति देने वाले हैं। ... सिर्फ सुनाने से नहीं लेकिन चेहरे से ही अनुभव हो। ... यह अनुभव चेहरे और चलन से दिखाओ।'' अ.बापदादा 7.04.09

''जब साइन्स के साधन अनुभव कराते हैं तो क्या साइलेन्स की पॉवर, शक्ति का अनुभव नहीं करा सकती! ... अनुभव की स्थिति में स्थित रह नयनों से, मस्तक से कोई न कोई शक्ति का अनुभव कराओ। सुनी हुई बात, सुनने के समय अच्छी लगती है लेकिन कोई समस्या आती है तो भूल जाते हैं। लेकिन अनुभव जीवन भर नहीं भूलता है।'' अ.बापदादा 7.04.09

7. स्वार्थ से सेवा और निस्वार्थ सेवा

निष्काम सेवा और कामना से सेवा

निस्वार्थ और निष्काम सेवा एक परमात्मा ही करता है क्योंकि उनको अपना शरीर नहीं, इसलिए उनकी कोई कामना नहीं होती, उनको अपना कोई स्वार्थ नहीं होता है। देहधारी जितने भी हैं सबको स्थूल-सूक्ष्म कामना रहती ही है, जिसके लिए वे किन्हीं आत्माओं की सेवा करते हैं, धर्म-कर्म, दान-पुण्य आदि करते हैं। यदि कोई कामना न भी रखे तो हर आत्मा को

उसके कर्म का फल अवश्य मिलता है।

''आजकल सेवा द्वारा आपकी प्रशंसा बढ़ेगी, प्रकृति आपकी दासी होगी ... साधन बढ़ेंगे लेकिन बेहद की वैराग्य वृत्ति से साधन और साधना का बैलेन्स रहे। ... सेवा की वृद्धि के साथ बेहद की वैराग्य वृत्ति भी आवश्यक है। सिर्फ योग में बैठने के टाइम नहीं, भाषण करने के टाइम नहीं लेकिन चलते-फिरते अनुभव करें कि ये विशेष आत्मायें हैं।''

अ.बापदादा 7.04.09

8. जड़, जंगम और चेतन की सेवा

जड़, जंगम, चेतन तीनों प्रकार की प्रकृतियों का परस्पर गहरा सम्बन्ध है परन्तु मनुष्य तीनों में सबसे श्रेष्ठ है, जिसके आधार पर तीनों की स्थिति निर्भर करती है, इसलिए बाबा ने तीनों की सेवा करने के लिए श्रीमत भी दी है और प्रेरणा भी दी है और तीनों की सेवा का विधि-विधान भी बताया है। जो इस विधि-विधान को जानकर तीनों की सेवा करता है, उसको तीनों से सुख मिलता है।

जड़ अर्थात् पंच तत्वों को अपने योगबल से पावन बनाना, तब ही सतयुग में प्रकृति मनवांच्छित फल देगी।

जंगम अर्थात् पेड़-पौधों को भी पावन बनाना है क्योंकि चेतन प्राणियों के सुख-दुख में जंगम प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान है। जो जितना उनकी सेवा करता है, उतना ही वे उसके लिए सुखदायी बनते हैं।

चेतन की सेवा तो प्राय: सभी करते ही हैं और उस सेवा के आधार पर ही हमारे चेतन आत्माओं के मधुर सम्बन्ध बनते हैं।

''पवित्रता के व्रत में अमृतवेले चार बातें चेक करना। एक वृत्ति, दूसरा सम्बन्ध-सम्पर्क में शुभ भावना और शुभ कामना ... जब आप विश्व-परिवर्तक हो तो विश्व-परिवत्रन में तो यह प्रकृति के पाँच तत्व भी आ जाते हैं। तो उनको परिवर्तन कर सकते हो और अपने को वा साथियों को, परिवार को परिवर्तन नहीं कर सकते हो ? ... सबको परिवर्तन करना है।''

अ.बापदादा 30.11.08

''आत्माओं की पुकार बहुत बढ़ रही है। तो पुकार सुनने वाले और परिवर्तन करने वाले उपकारी आत्मायें कौन हैं ? आप ही हो ना ! ... पर-उपकारी वा विश्व-उपकारी बनने के लिए तीन शब्दों को खत्म करना पड़ेगा। ... परचिनतन, परदर्शन और परमत। इन तीनों शब्दों को खत्म करके ही पर-उपकारी बनेंगे।'' अ.बापदादा 30.11.08

''सबकी नज़र जम्मू-काश्मीर पर है ... जिस पर झगड़ा है, वहाँ शान्ति का झण्डा फहराओ। ... एक निविघ्न बनो और दूसरा सेवा में शान्ति का झण्डा लहराओ, जो सबको दिखाई दे कि हाँ अशान्ति के स्थान में शान्ति का झण्डा लहर रहा है।'' अ.बापदादा 30.11.08

''हर ब्राह्मण आत्मा की श्रेष्ठ वृत्ति और दृष्टि और श्रेष्ठ कृत्ति विश्व की सर्व आत्माओं को श्रेष्ठ बनाने के निमित्त है। हर ब्राह्मण आत्मा के ऊपर ये विशेष जिम्मेवारी हे। ... सारे विश्व का परिवर्तन, न सिर्फ आत्माओं का परिवर्तन करते हो लेकिन प्रकृति का भी परिवर्तन करते हो।''

अ.बापदादा 9.12.93

9. स्व-स्थिति से सेवा

जो आत्मा निश्चयबुद्धि, आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अतीन्द्रिय सुख के अनुभव में रहती है, उसकी वह स्थिति भी सेवा करती है और ये सेवा सदा और सर्वत्र हो सकती है, जिसके लिए बाबा कहते हैं - तुमको निरन्तर सेवाधारी बनना है। ऐसी अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में रहने वाली आत्मा को देखकर भी लोगों को जीवन बनाने की प्रेरणा मिलती है। उसके द्वारा जो खुशी और पवित्रता के वायब्रेशन प्रवाहित होते हैं, वे जो वातावरण निर्माण करते हैं, वह वातावरण चेतन आत्माओं और जड़-जंगम प्रकृति को भी प्रभावित करती है अर्थात् उनकी सेवा करती है। नियम-संयम में चलने वाली आत्मा की स्थिति सदा ही सेवा करती है।

ईश्वरीय सेवा और स्व-स्थिति

सेवा से स्व-स्थिति अच्छी बनती है क्योंकि सेवा से ज्ञान बुद्धि में जाग्रत रहता है। ज्ञान का चिन्तन चलता है, जिससे ज्ञान के गुह्य राज़ बुद्धि में स्पष्ट होते हैं।

सेवा से स्व-स्थिति की परख भी होती है कि हमारे जीवन में कितना ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा है और कितनी बाबा की याद है।

स्व-स्थिति अच्छी अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा और बाबा की याद से सेवा की सहज सफलता होती है।

आत्मिक स्वरूप शान्ति और शक्ति सम्पन्न, आनन्दमय, सुख-स्वरूप है, उसके लिए खर्चे या साधन-सम्पत्ति की बात नहीं है, बात है अपने उस स्वरूप में स्थित होने की, जो कोई भी आत्मा हो सकती है। जो भी आत्मा परमात्मा का सन्देश पाकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होने का सच्चे दिल से पुरुषार्थ करेगी, वह उसको अवश्य अनुभव करेगी। इसलिए ही

परमात्मा कहते कि सर्व आत्माओं को परमात्मा का सन्देश देकर उनको दुख-अशान्ति से मुक्त करो।

''सतयुग में सुख और शान्ति दोनों है और वहाँ तो सिर्फ शान्ति है, उसको कहा जाता है स्वीट साइलेन्स होम। मुक्तिधाम वालों को सिर्फ इतना ही समझाना होता है कि तुमको मुक्ति चाहिए तो बाप को याद करो। मुक्ति के बाद जीवनमुक्ति जरूर है।'' सा.बाबा 15.04.10 रिवा.

''देही-अभिमानी ही बाप के मददगार बनते हैं। देह-अभिमानी क्या मदद कर सकेंगे क्योंकि वे स्वयं ही माया की जंजीरों में फँसे हुए हैं। बाप ने डायरेक्शन दिया है - सबको माया की जंजीरों से छुड़ओ। तुम्हारा धन्धा ही यह है। बाप कहते हैं - जो मेरे अच्छे मददगार बनेंगे, पद भी वे ही पायेंगे।'' सा.बाबा 16.04.10 रिवा.

''तुम बच्चों को सर्विस की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ निकालनी हैं। तुमको अपना अनुभव सुनाकर अनेकों का भाग्य बनाना है। सर्विसएबुल बच्चों की अवस्था बड़ी निर्भय, अचल-अडोल और योगयुक्त होनी चाहिए। योग में रहकर सर्विस करो तो सफलता अवश्य मिलेगी।''

सा.बाबा 14.04.10 रिवा.

''बाप रोज़-रोज़ समझाते रहते हैं नशा चढ़ाने के लिए। परन्तु समझते सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही हैं। जो समझते हैं, वे सर्विस में लगे रहते हैं। जो सर्विस में लगे रहते हैं, वे ताज़े रहते हैं। ... अभी तुम समझते हो कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है।''

सा.बाबा 19.10.09 रिवा.

''(शिवरात्रि) अपने-अपने सेवाकेन्द्रों पर झण्डा भले लहराओ लेकिन हर एक आत्मा के दिल पर बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराओ, वह तब होगा, जब आपके शक्ति स्वरूप की प्रत्यक्षता होगी। अपने शक्ति स्वरूप से ही सर्वशक्तिवान को प्रत्यक्ष कर सकते हो। शक्ति स्वरूप अर्थात् संहारी और अलंकारी स्वरूप।'' अ.बापदादा 11.2.71

''आपके 'बाप' शब्द में इतना स्नेह और शक्ति भरी हुई हो, जो यह शब्द ज्ञान अंजन का काम करे। अनाथ को सनाथ बना दे। ... जिस समय स्टेज पर आते हो, उस समय की स्थिति एक तो तरस की, दूसरी तरफ कल्याण की भावना, तीसरी तरफ अति स्नेह के शब्द और चौथी तरफ स्वरूप में शक्तिपन की झलक हो। ... साक्षात्कार कराने आई हूँ।''

अ.बापदादा 11.2.71

''एक सेकेण्ड की अव्यक्त स्थिति का अनुभव आत्मा को अविनाशी सम्बन्ध में जोड़ सकता है। ... सिर्फ आवाज़ द्वारा प्रभावित हुई आत्मायें अनेक आवाज़ सुनने से आवागमन में आ जाती हैं। परन्तु अव्यक्त स्थिति में स्थित हुए आवाज़ द्वारा अनुभवी आत्मायें आवागमन से छूट

जाती हैं।'' अ.बापदादा 18.1.71

''जिस समय सर्विस करते हो, उस समय मन्थन चलता है लेकिन याद में मगन यह स्टेज मंथन की स्टेज से कम होती है। दूसरे के तरफ ध्यान अधिक रहता है, अपनी अव्यक्त स्थिति की तरफ ध्यान कम रहता है। इस कारण ज्ञान के विस्तार का प्रभाव पड़ता है लेकिन लगन में मगन रहने का प्रभाव कम दिखाई देता है।'' अ.बापदादा 18.1.71

''साहूकार पैसे वाले लोग तो अभी समझेंगे भी नहीं। वह पिछाड़ी में आयेंगे, फिर तो टू लेट हो जायेंगे। न उनका धन काम में आयेगा, न वे योग में रह सकेंगे। बाकी हाँ, सुनेंगे तो प्रजा में आ जायेंगे। ... तुम कोई से भी डरो मत, खुली रीति समझाना चाहिए। फुर्त होना चाहिए। ... शकल भी बहादुर शेरनी जैसी होनी चाहिए।'' सा.बाबा 26.06.09 रिवा.

बाबा ने कहा है - वाणी से सेवा करेंगे तो स्थिति उस समय अच्छी रहेगी, सदा अच्छी नहीं रहेगी परन्तु मन्सा से सेवा करेंगे तो सदा स्थिति अच्छी रहेगी। ... कभी ऐसा नहीं कहना चाहिए कि कर्मणा सेवा है, स्थूल सेवा है। नहीं, यज्ञ-सेवा है। यज्ञ-सेवा करने वाले की हडडियाँ मजबूत हो जायेंगी। ... यज्ञ सेवा से बहुत बल मिलता है।

दादी जानकी 19.06.09

हम किसको बुरा न माने, किसको बुरा मानना भी मेरा अभिमान है, हमारी उसके प्रति ऐसी भावना, दृष्टि-वृत्ति रहे, जो वह अच्छा बन जाये। दादी जानकी 19.06.09

''वर्तमान समय प्रमाण, पुकार प्रमाण हर एक दुखी आत्मा को मन्सा सकाश द्वारा सुख-शान्ति की अन्चलि देना है। ... कमी किस बात की है? तो यही दिखाई दिया कि एक सेकेण्ड में परिवर्तन कर फुल-स्टॉप लगाना, इसकी कमी है। ... लास्ट टाइम की लास्ट एक घड़ी होगी, जिसमें फुल-स्टॉप लगाना पड़ेगा।'' अ.बापदादा 30.11.08

''दोनों बात को एक पवित्रता और दूसरा फुल स्टॉप अर्थात् योगी। ... इस जनवरी मास में मन्सा सेवा, मन्सा स्थिति और अव्यक्त कर्म और बोल इसको बढ़ाओ। 18 जनवरी को बापदादा सभी की रिजल्ट देखेंगे। ... हर कर्म की श्रीमत चेक करना। अमृतवेले से रात तक की जो भी हर बात की श्रीमत मिली है, वह चेक करना कि मजबूत है।''

अ.बापदादा 30.11.08

ईश्वरीय सेवा और साधना / ईश्वरीय सेवा, साधना और साधन

यज्ञ में सेवा, साधना और साधनों के विषय में देखा जाये तो स्पष्ट होता है कि सेवा से साधनों की वृद्धि होती है क्योंकि सेवा में साधनों की आवश्यकता होती है और साधनों की वृद्धि के साथ-साथ साधना कम होती जाती है परन्तु बाबा ने कहा है - सेवा से साधन तो बढ़ेंगे, यह सृष्टि का विधि-विधान है परन्तु उनसे हमारी साधना कम न हो, तब ही हम अपने अन्तिम लक्ष्य को सफलता पूर्वक प्राप्त कर सकेंगे। यदि सेवा के द्वारा साधनों की वृद्धि के आधार पर साधना कम हो गई तो अन्त में पश्चाताप करना होगा। इसलिए सेवा और साधना दोनों साथ-साथ हों।

सेवा और साधनों के कारण हमारी साधना कम नहीं होनी चाहिए। जब सेवा और साधना जब साथ-साथ होती है तो साधन स्वत: ही आते हैं, उनके लिए विशेष पुरुषार्थ नहीं करना होता है। वैसे भी नियम है कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है अर्थात् जब सेवा की वृद्धि होती है, उसके लिए साधनों की आवश्यकता होती है तो साधन अवश्य आते हैं। इसलिए बाबा ने अनेक बार स्मृति दिलाई है कि पुरुषार्थ ऐसा हो जो साधनों और सेवा के कारण साधना भूले नहीं अर्थात् कम नहीं हो।

''अपना उमंग-उत्साह और एकरस अवस्था सदैव रहे। कितना भी कोई किन बातों द्वारा आप लोगों को हराने की कोशिश करे, लेकिन जब आप प्रैक्टिकल अनुभवीमूर्त होकर उनको आत्मिक दृष्टि और पॉवरफुल स्थिति में स्थित होकर दो शब्द भी पॉवरफुल बोलेंगे तो ... कितना भी बड़ा समझदार हो लेकिन आपके अनुभवीमूर्त और आत्मिक दृष्टि के सामने बिल्कुल ही अपने को बेसमझ समझेंगे।'' अ.बापदादा 10.6.71

ईश्वरीय सेवा, साधना और साध्य

जाने अन्जाने हर आत्मा का साध्य है मुक्ति-जीवनमुक्ति, सेवा और साधना उसको प्राप्त करने का एक आधार है अर्थात् साध्य है मुक्ति-जीवनमुक्ति और सेवा और साधना पुरुषार्थ है। जो आत्मा अपने साध्य को सदा स्मृति में रखती है, उसकी सेवा और साधना स्वत: चलती रहती है अर्थात् कम नहीं होती है।

ईश्वरीय सेवा, साधना और सिद्धि

वास्तव में सेवा भी एक साधना है, सिद्धि सेवा और साधना का फल है। हमारे पुरुषार्थ का लक्ष्य और सिद्धि है मुक्ति-जीवनमुक्ति की प्राप्ति, निर्संकल्प-निर्विकल्प स्थिति की अनुभूति,

अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति, अशरीरी अवस्था की अनुभूति, फरिश्ता स्वरूप की अनुभति और स्थिति। वर्तमान की मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति परमधाम की मुक्ति की अनुभूति और सतयुग की जीवनमुक्ति की अनुभूति से पदमगुणा श्रेष्ठ है। अतीन्द्रिय सुख संगमयुग की ही प्राप्ति है। अतीन्द्रिय सुख न परमधाम में होगा और न सतयुग में होगा। इसलिए सच्ची पुरुषार्थी को इनके आधार पर अपनी सेवा और साधना को चेक करना चाहिए। जिसका सेवा और साधना यथार्थ होगा, उसको इनकी अनुभूति अवश्य होगी।

''तुम बच्चों को सारा दिन खुशी रहनी चाहिए। सारी दुनिया में, सारे भारत में तुम्हारे जैसा पद्मापदम भाग्यशाली स्टूडेण्ट कोई नहीं है। ... तुम मूँझो मत। प्रदर्शनी में थोड़ा भी सुनकर जाते हैं तो वह भी प्रजा बनती जाती है क्योंकि अविनाशी ज्ञान का विनाश नहीं होता है।''

सा.बाबा 17.03.09 रिवा.

''सदैव समझो कि हमारे भक्त हर समय हमारा साक्षात्कार कर रहे हैं, तब ही साक्षात्कार मूर्त अर्थात् स्थिरमूर्त होंगे। ... स्पष्ट साक्षात्कार कराने के लिए स्थिरबुद्धि और एकटिक स्थिति आवश्यक है। समझा। अभी से ही भक्त लोग एक-एक का साक्षात्कार करेंगे।''

अ.बापदादा 29.6.70

ईश्वरीय सेवा, साधना और सतयुगी राजाई

साधना से ही ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा होती है, स्थिति शक्तिशाली बनती है और जब ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा होती है, तब ही आत्मा में सेवा का उमंग आता है और आत्मा सेवा करने में समर्थ होती है। जो आत्मा जिन आत्माओं की सेवा करती है, जिससे उनको ईश्वरीय सुख की अनुभूति होती है, वे ही आत्मायें ही उसकी सतयुगी राजाई में विभिन्न सम्बन्धों से आते हैं। इसलिए हर आत्मा यहाँ ईश्वरीय सेवा करके अपनी राजधानी आप ही स्थापन कर रहा है। परमात्मा स्वर्ग का रचता है और वह हम आत्माओं को राजाई की स्थापना के विधि-विधान बताता है परन्तु हर आत्मा अपनी साधना और ईश्वरीय सेवा से अपनी राजाई आपही स्थापन करता है। सतयुग में हम भी किनकी राजाई में आयेंगे और कोई हमारी राजाई में आयेगा क्योंकि आधे कल्प तक कोई एक ही आत्मा राजाई नहीं कर सकती है। अभी की अपनी तन-मन-धन से की गई सेवा और साधना और सेवा की सफलता से अपनी भविष्य राजाई का साक्षात्कार कर सकते हैं अर्थात् अभी की ईश्वरीय सेवा ही हमारी भविष्य राजाई का दर्पण है।

ईश्वरीय सेवा और कर्मभोग, कर्म-बन्धन एवं माया

ईश्वरीय सेवा और विघ्न और विघ्नों का विनाश अर्थात् निर्विघ्न स्थिति

ईश्वरीय सेवा कर्म-बन्धन और माया से मुक्त होने का सहज साधन है। बाबा ने कहा है - जो सेवा में बिजी रहते हैं, वे सहज माया से बचे रहते हैं और जो सेवा में बिजी रहते हैं, उनके कर्म-बन्धन भी सहज कट जाते हैं। सेवा से दुआयें मिलती हैं, जो कर्म-बन्धन से मुक्त होने में सहयोगी बन जाती हैं। जो आत्मायें कर्म-बन्धन के निमित्त हैं, सच्चे सेवाधारी की उनके प्रति भी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, उस शुभ-भावना और शुभ-कामना से वे कर्म-बन्धन सहज कट जाते हैं।

''इस समय ही बाप आकर तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। बाप कहते हैं - तुम भी औरों को यह दान देते रहो तो 5 विकारों का ग्रहण छूट जाये। ... मेरे सिवाए तुम बच्चों को रावण राज्य, दुख से कोई लिबरेट कर नहीं सकते।''

सा.बाबा 1.02.10 रिवा.

''जो औरों को आप समान बनाते हैं, उसका भी उनको फायदा तो मिलता है ना। अन्धों की लाठी बनना है। ... अब काम तो बच्चों को ही करना है। बहुतों का कल्याण होगा तो उनको भी लिफ्ट मिलेगी। सर्विस की लिफ्ट बहुत मिलती है। ... बाबा देखते हैं - सर्विस पर किन बच्चों का अटेन्शन रहता है। दिल पर भी वे ही चढ़ेंगे।'' सा.बाबा 27.01.10 रिवा.

''जब स्वयं अपना साक्षात्कार करेंगी कि हम क्या बने हैं, तब तो औरों को बनायेंगी। ... अगर घर को भी सेवा-स्थान समझेंगी तो स्वत: सेवा होती रहेगी। जो सेवाधारी होते हैं, उनके लिए हर स्थान पर सेवा है। ... बुद्धि में सेवा याद रहने से शक्ति आती है, उस शक्ति से कर्मबन्धन भी सहज और शीघ्र खत्म हो जायेगा।'' अ.बापदादा 11.6.71

''नम्बरवन पार्ट अर्थात् निर्विघ्न बन निर्विघ्न बनाना। ... क्या नहीं हो सकता है, सिर्फ दृढ़ता चाहिए। होगा या नहीं होगा ? नहीं, होना ही है। दृढ़ निश्चय। जहाँ दृढ़ता है, वहाँ सफलता है ही। ... सभी को करना है। ऐसे नहीं कि सिर्फ कर्नाटक ही करेगा। उन्होंने हिम्मत रखी है तो हिम्मत का फल और बल मिलेगा।'' अ.बापदादा 15.12.09

''सभी ने उमंग-उत्साह से प्रोग्राम किये... सेवा का फल भी मिला और बल भी मिला। और आगे के लिए यह करने का बल भी मिला।... जितना जो सेवा करते हैं, उसका फल है सदा खुशी रहती है। सेवा का फल है खुशी और निर्विघ्न। कभी-कभी नहीं, सदा।... एक-दो में राय करके सबकी राय से जो कार्य होता है, उसमें सफलता सहज होती है। ''

अ.बापदादा 30.11.09

''यह सारा ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए, जो किसको भी समझा सको। अब समझा कौन सकते हैं? जो बन्धनमुक्त हैं।'' सा.बाबा 28.09.09 रिवा.

''सेवा में किसी भी प्रकार की सेवा हो ... कर्म-बन्धन समझ कर नहीं करो। कर्म-बन्धन सोचने और कहने से ही बँध जाते हो। ... श्रीमत के आधार पर सेवा के सम्बन्ध का आधार है। कर्म-बन्धन नहीं लेकिन सेवा का सम्बन्ध है।'' अ.बापदादा 31.12.70

''सर्विस में दधीचि ऋषि मिसल हड्डियाँ भी दे देनी चाहिए। यहाँ हड्डी तो क्या, और ही अथाह सुख चाहिए। तबियत कोई इन चीजों से थोड़ेही अच्छी होती है। तबियत के लिए चाहिए याद की यात्रा।'' सा.बाबा 10.06.09 रिवा.

''जो अपने कुल के हैं, वे झट समझ जाते हैं और जो इस कुल के नहीं होंगे, वे विघ्न डालेंगे। ... 'काम महाशत्रु है', यह ऑर्डिनेन्स निकालना मासी का घर नहीं है। इसमें समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए। ... आदि सनातन हिन्दू धर्म वालों को समझाओ, वे इन बातों को समझ सकते हैं।'' सा.बाबा 14.03.09 रिवा.

''माया आये और भगाओ, इसमें समय नहीं गँवाओ क्योंकि समय कम है और आपका वायदा है कि विश्व-परिवर्तक बन विश्व-सेवक बन विश्व की आत्माओं को बाप का परिचय दे मुक्ति का वर्सा दिलायेंगे, वह कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है। उस कार्य को करने में समय लगाना है। ... बाप से जो शक्तियाँ मिली हैं, उनके आधार पर माया को दूर से ही भगाओ।''

अ.बापदादा 22.2.09

''माया के राज्य में बहुत भूलचूक होती रहती है, जिस कारण से सहन करना पड़ता है। जो पूरा नहीं पढ़ेंगे, कर्मातीत अवस्था को नहीं पायेंगे तो सहन करना ही पड़ेगा। फिर पद भी कम हो जायेगा। विचार सागर मन्थन कर औरों को सुनाते रहेंगे तब चिन्तन चलेगा। ... जिसके पास जितने ज्ञान रतन होंगे, उनको उतनी खुशी भी होगी।'' सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''दुनिया में हर समय का दुख है और आपके पास हर समय की खुशी है। दुखी को खुशी देना - यह सबसे बड़े से बड़ा पुण्य है।... विघ्नों का काम है आना और आपका काम है विजय प्रापत करना।'' अ.बापदादा 2.12.93 पार्टी

त्याग-तपस्या और ईश्वरीय सेवा

Q. ईश्वरीय सेवा से त्याग-तपस्या का क्या सम्बन्ध है?

त्याग-तपस्या सेवा का आधार है और सेवा से त्याग-तपस्या की सफलता अनुभव होती है।

त्याग-तपस्या वाला ही दूसरों की सेवा कर सकता है और जो सेवा का संकल्प करता है, उसके जीवन में त्याग की भावना अवश्य रहती है और सेवा के लिए कुछ न कुछ सहन भी करना पड़ता है, जो ही तपस्या है, जिसके फलस्वरूप उसको विभिन्न शक्तियाँ वरदान रूप में प्राप्त होती है। इसलिए बाबा कहते हैं सेवा, त्याग नहीं है लेकिन मेवा खाना है अर्थात् सेवा से आत्मा की मन-बुद्धि स्वस्थ बनती है। परमात्मा की याद में सेवा करने वाले को ईश्वरीय सेवा से अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, ईश्वरीय सेवा से आत्माओं की दुआयें प्राप्त होती है, जो सेवा करने वाले को वर्तमान में भी खुशी की अनुभूति कराती हैं और भविष्य में भी समय पर काम आती हैं। त्याग-तपस्या और सेवा की सफलता के लिए विशेष बात ध्यान में रखने की यह है कि तीनों श्रीमत के अनुसार होनी चाहिए अर्थात् अपनी मनमत पर अहंकार या दिखावे के लिए नहीं हों।

''सेवाधारी का मुख्य गुण है त्याग। अगर त्याग नहीं तो सेवा भी नहीं हो सकती है। त्याग से ही तपस्वीमूर्त बनते हो। ... सेवाधारी अर्थात् मन्सा-वाचा-कर्मणा निरन्तर सेवा में तत्पर रहने वाले। ... विशेष आत्मायें तब बनते हैं, जब कोई विशेष कर्तव्य करते हैं वा विशेषता दिखाते हैं। ... निरन्तर रुहानियत की अवस्था में रहने की नवीनता दिखानी है।''

अ.बापदादा 19.7.71

''जब शुरू में सर्विस पर निकले तो नॉलेज की शक्ति कम थी लेकिन त्याग और स्नेह के आधार पर सफलता हुई। बुद्धि की लगन दिन-रात बाबा और यज्ञ के तरफ थी। ... इसी स्नेह की शक्ति ने सभी को सहयोग में लाया, सेवाकेन्द्र बनें। तो आदि स्थापना में जिस शक्ति ने सहयोग दिया, अन्त में भी वही होना है।'' अ.बापदादा 29.6.71

''सेवा में मेरापन आ गया तो ये मेरापन आना अर्थात् अलाय मिक्स होना। ... हर परिस्थिति में, हर सम्बन्ध-सम्पर्क में, समय और वायुमण्डल को समझ स्वयं को परिवर्तन करना - यही नम्बरवन बनना है। ... दूसरे को न देख अगर अपने आपको परिवर्तन किया तो ये परिवर्तन ही विजयी बनने की निशानी है।'' अ.बापदादा 26.11.94

''जब आप मानते हो कि हम प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाने वाले हैं, तो वह तो मनुष्यात्मा है, ब्राह्मण कहलाता है लेकिन संस्कार के वश है। ... प्रकृति से ऊपर पुरुष है, आत्मा है, आपके सम्बन्ध में है। ... शुभ भावना देना, इस सेवा में भी पुण्य कमायेंगे। गिरे हुए को गिराना नहीं लेकिन उठाना है, सहयोग देना है। इसको कहेंगे सच्चे सेवाधारी, पुण्यात्मा।''

अ.बापदादा 30.1.10

''अभी आप साक्षी बनते जाओ, दूसरों को तैयार करते जाओ सेवा के लिए। क्योंकि अचानक

ऐसे सरकमस्टाँस बनेंगे, जो आप लोगों को बहुत तपस्या करनी पड़ेगी, मन्सा सेवा करनी पड़ेगी। समय नाज़ुक आ रहा है और बढ़ता ही रहेगा।'' अ.बापदादा 15.12.09

''त्याग का सदैव भाग्य बनता है। जो त्याग करता है, उसको भाग्य स्वत: ही प्राप्त हो जाता है, इसलिए यह जो बड़े से बड़ा त्याग करते हैं, उनका बड़े से बड़ा भाग्य जमा हो जाता है, इसलिए खुशी से सर्विस पर जाना चाहिए।'' (म्युजियम सर्विस पर पार्टी जा रही है)

अ.बापदादा 6.05.71

''हर कर्म से त्याग और तपस्या प्रत्यक्ष दिखाई दे, तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे। ... सेवाधारी बनने के साथ-साथ त्याग और तपस्यामूर्त भी हो, तब सेवा का प्रत्यक्ष फल दिखाई देगा। ... तीनों का साथ होने से मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होती है। समय कम और सफलता अधिक होती है।'' अ.बापदादा 19.4.71

''सेवा करते-करते अटेचमेन्ट में नहीं आ जाना। ... सेवा का सम्बन्ध अर्थात् त्याग और तपस्वी रूप। सच्ची सेवा के लक्षण यही त्याग और तपस्या है।'' अ.बापदादा 31.12.70

''जो जितनी सर्विस करते हैं, वे अपना ही कल्याण करते हैं। अपनी हड्डियां सर्विस में देते हैं तो अपनी ही कमाई करते हैं। ... अपने से आपही पूछना चाहिए कि हम सारे दिन में कितनी सर्विस करते हैं।'' सा.बाबा 31.01.09 रिवा.

''विश्वपति बनने के लिए बापदादा ताज, तख्त और तिलक लाये हैं। इन तीनों को धारण करने की हिम्मत है? ... इसको धारण करने के लिए त्याग, तपस्या और सेवा करनी होगी। तिलक को धारण करने के लिए तपस्या, ताज को धारण करने के लिए त्याग और तख्त पर विराजमान होने के लिए जितनी सेवा करेंगे, उतना अब भी तख्तनशीन रहेंगे और भविष्य में भी तख्तनशीन बनेंगे।'' अ.बापदादा 11.6.70

ईश्वरीय सेवा और गीता ज्ञान / ईश्वरीय सेवा और श्रीमत

परमात्मा का अवतरण विश्व के नव-निर्माण के लिए हुआ है। विश्व के नव-निर्माण के लिए विश्व की सर्वात्माओं को परमात्मा का सन्देश मिलना अति आवश्यक है और सन्देश के साथ सभी आत्माओं के जीवन परिवर्तन, तत्वों के परिवर्तन के लिए आवश्यक पुरुषार्थ चाहिए। इसलिए वह सेवा भी अति आवश्यक है। इस ईश्वरीय सेवा और हमारे जीवन के परिवर्तन के लिए परमात्मा ने हमको अपना बच्चा बनाया है और अनेक प्रकार से हमको श्रीमत दे रहे हैं। बाबा ने ईश्वरीय सेवा के लिए समय-समय पर अनेक प्रकार के महावाक्य उच्चारण

किये हैं और ईश्वरीय सेवा का महत्व बताया है। जो आत्मायें उस महत्व को समझती हैं, अनुभव करती हैं, वे ईश्वरीय सेवा के बिना रह नहीं सकती।

सेवा की सफलता के लिए परमात्मा पिता की श्रीमत अति आवश्यक है। जो आत्मायें उनकी श्रीमत अनुसार सेवा करती हैं, वे सेवा में विशेष सफलता प्राप्त करती हैं। जो श्रीमत के विरुद्ध मनमत के आधार पर सेवा करता है, वह इतनी सफलता को नहीं पाता है। इसलिए ईश्वरीय सेवा के लिए श्रीमत अति आवश्यक है।

''खुदा आकर जिनको पावन बनाते हैं, उनको ही कहते हैं कि अब तुम औरों को आप समान बनाओ, बाप की श्रीमत पर चलो। ... यह मृत्युलोक है। यहाँ बैठे-बैठे अचानक मृत्यु होती रहती है तो क्यों न हम उसके पहले ही मेहनत कर बाप से पूरा वर्सा ले लें, अपना भविष्य बना लें।'' सा.बाबा 16.04.10 रिवा.

''जब तुम इस धन्धे मे पूरी रीति लग जायेंगे, फिर वह धन्धा छूट सकता है। साथ में अपनी रचना को भी सम्भालना है। हाँ, कोई अच्छी रीति रुहानी सर्विस में लग जाते हैं, फिर उनसे जैसे दिल उठ जायेगी। ... बाप आये हैं पतित से पावन बनने का रास्ता बताने, तो बच्चों को भी यही सर्विस करनी है। हर एक का हिसाब देखा जाता है।'' सा.बाबा 7.04.10 रिवा.

''मूल बात है याद की। याद ही खुशी में लायेगी। ... किसको भी बोलो - अभी यह दुनिया स्थापन हो रही है, जहाँ पवित्रता, सुख, शान्ति सब था। ... वर्ल्ड में पीस स्थापन करने वाला तो वर्ल्ड का मालिक ही होगा ना। इन लक्ष्मी-नारायण के राज्य में विश्व में शान्ति थी। ... बाकी सब आत्मायें निराकारी दुनिया में थी। ऐसी दुनिया किसने स्थापन की।''

सा.बाबा 12.03.68

''अगर वानप्रस्थ अवस्था है तो बच्चों को समझाकर, खुद इस सर्विस में लग जाना चाहिए। फिर गृहस्थ व्यवहार में फँसना नहीं है। तुम अपना और दूसरों का कल्याण करते रहो। अभी तो तुम सबकी वानप्रस्थ अवस्था है।'' सा.बाबा 19.01.10 रिवा.

''बेहद के बाप के बने हो तो बाप की इस सेवा में लग जाना चाहिए। ... अभी तुम बच्चों को कितनी बेहद की खुराक मिल रही है। कहते भी हैं - खुशी जैसी खुराक नहीं। किसी बात का सोच अथवा चिन्तन रहता है तो उसका शरीर पर भी इफेक्ट आता है। ... बाप तुम बच्चों को 21 जन्म खुश मौज में रहने के लिए रुहानी खुराक देते हैं। खुराक है - मन्मनाभव, मध्याजी भव।'' सा.बाबा 18.01.10 रिवा.

''बापदादा ने देखा - बच्चों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के कोर्स बनाये हैं। अच्छा है, उसकी बापदादा मुबारक देते हैं लेकिन अब समय प्रमाण कोर्स के बजाये फोर्स का कोर्स कराओ। ...

जो वे भी हर श्रीमत को पालन करने वाले, सर्व को फोर्स भरने वाली आत्मा बनें। समीप का रतन बनें।''

अ.बापदादा 18.1.10

''प्रजा तो करोड़ों के अन्दाज़ में बनेंगी परन्तु राजा बनने-बनाने के लिए पुरुषार्थ करना होता है। जो जास्ती सर्विस करते हैं, वे जरूर ऊंच पद पायेंगे। ... बाबा हर एक के सरकमस्टाँस देखकर राय देते हैं। कुमार है तो कहेंगे, तुम सर्विस कर सकते हो। सर्विस कर बेहद के बाप से वर्सा लो।''

सा.बाबा 11.01.10 रिवा.

''जो विश्व को झुकाने वाले हैं, वे किसके आगे झुक नहीं सकते। उस अथॉरिटी की खुमारी से किसी भी आत्मा का कल्याण कर सकते हो। ऐसी खुमारी को कभी भी भूलना नहीं। बहुत समय से अभूल बनने से ही भविष्य में बहुत समय के लिए राज्य भाग्य प्राप्त करेंगे।''

अ.बापदादा 24.5.71

''बाबा कहते हैं - प्रदर्शनी आदि में फीमेल्स के लिए अलग से खास दिन रखो। कोई पर्देनशीन होती हैं तो ... यहाँ तो आत्मा की बात है। ज्ञान मिल गया, बुद्धि में बैठ गया तो पर्दा भी खुल जायेगा। सतयुग में पर्दा आदि होता नहीं है।''

सा.बाबा 4.12.09 रिवा.

''बच्चों में योगबल न होने के कारण इतनी सहज बात भी पूरी रीति समझा नहीं सकते हैं। किसको भी यह समझाना है कि हमको भगवान पढ़ाते हैं, वे कहते हैं - पवित्र बनने से तुम 21 जन्म स्वर्ग के मालिक बनेंगे। जबरदस्त लॉटरी मिलती है। हमको तो और ही खुशी होती है पवित्र बनने में।''

सा.बाबा 26.11.09 रिवा.

''बाबा ने माला का राज़ भी समझाया है। ... निवृत्ति मार्ग वालों को माला फेरने का हुक्म नहीं है। यह है ही देवताओं की माला। उन्होंने कैसे राज्य लिया, तुम्हारे में भी यह नम्बरवार ही जानते हैं। कोई-कोई हैं, जो बेधड़क होकर किसको भी समझाते हैं। ... किसको भी बेधड़क होकर रसीला समझाना चाहिए।''

सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''बच्चों को सर्विस का बहुत शौक रखना है। सर्विस को छोड़कर कभी नींद नहीं करनी होती है। सर्विस पर बड़ा एक्यूरेट रहना चाहिए। ... भोजन आदि भी खाना है परन्तु अन्दर में दिन-रात उछल आनी चाहिए कि कोई आये तो हम उनको रास्ता बतायें। भोजन के टाइम पर भी कोई आ जाता है तो पहले उनको अटेण्ड कर फिर भोजन खाना चाहिए।''

सा.बाबा 23.10.09 रिवा.

''तुम अपने को आत्मा नहीं समझते हो, देहाभिमानी बनने से ही तुम बाप को भूलते हो। जैसे बाप समझाते हैं, वैसे तुम बच्चों को भी समझाने की टेव रखनी चाहिए। किससे भी बड़े भभके से बात करनी चाहिए। ऐसे नहीं कि बड़े आदमी के आगे फंक हो जाओ। ... तुमको बड़ा

निडर होकर समझाना है।'' सा.बाबा 24.10.09 रिवा.

''सात दिन का कोर्स किया, फिर तुम जाकर औरों को आप समान बनाओ। ... बाप को याद करो, पवित्र बनना है और दैवीगुण भी धारण करना है। तुम्हारे में कोई भी अवगुण नहीं होना चाहिए।... वास्तव में एक सेकण्ड में समझदार बनना चाहिए।'' सा.बाबा 31.7.09 रिवा.

''ये सब बातें तुम बच्चे ही जानते हो, तुमको फिर औरों को भी समझाना पड़े। यह भी ख्याल रखना चाहिए। किसको पढ़ाते नहीं तो टीचर कैसे ठहरे ! टीचर की औलाद हो तो तुमको भी टीचर ही बनना है।'' सा.बाबा 1.08.09 रिवा.

''बालक और मालिक अर्थात् सर्विस के सम्बन्ध में बालकपन और अपने पुरुषार्थ की स्थिति में मालिकपन। सर्विस और सम्पर्क में बालकपन, याद की यात्रा और मन्थन करने में मालिकपन हो। ... यह है युक्तियुक्त चलना।'' अ.बापदादा 19.07.09 रिवा.

''सबको यह समझाना है कि बाप डायरेक्शन देते हैं - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और फिर औरों को भी यह रास्ता बताओ। ... बाप को जानें तब सब बातें समझें। ... सबको ऐसे-ऐसे समझाओ, सबको पैग़ाम दो। नहीं तो राजधानी कैसे स्थापन होगी।''

सा.बाबा 18.07.09 रिवा.

''भावना के अनुसार भक्ति में साक्षात्कार होता है, इसमें ग्लानि की कोई बात नहीं है। बच्चों को सदैव हर्षित रहना है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। ... इसमें नाराज़ होने की बात नहीं है। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। प्यार से समझानी देनी होती है। बेचारे अज्ञान अन्धेरे में पड़े हैं। नहीं समझते हैं तो तरस पड़ता है। सदैव मुस्कराते रहना चाहिए।''

सा.बाबा 15.07.09 रिवा.

''अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। यहाँ हैं असुर, वहाँ हैं देवतायें। ... बाप को पतित-पावन कहते हैं। तुम भरी सभा में कह सकते हो कि हम गोल्डन एज में कितने श्रृंगारे हुए थे, कितना फर्स्ट क्लास राज्य-भाग्य था। फिर माया रूपी धूल में लिथड़कर मैले हो गये।''

सा.बाबा 15.07.09 रिवा.

''भल कितनी भी बड़ी सभा हो, तुम समझा सकते हो - शिव भगवानुवाच - हम सब आत्मायें उनकी सन्तान, आपस में ब्रदर्स हैं। ... देह के सब धर्म छोड़, बाप को याद करो तो तुम्हारे सब पाप कट जायेंगे।'' सा.बाबा 11.07.09 रिवा.

''तुम किससे भी पूछ सकते हो - इन लक्ष्मी-नारायण ने कौनसे कर्म किये, जो यह बनें ? फिर उनको बताओ परमपिता परमात्मा ही कर्म-अकर्म-विकर्म की गति समझाते हैं।''

सा.बाबा 11.07.09 रिवा.

''पहले-पहले तो यह निश्चय करना है कि बाबा, बाबा भी है और रचना का रचयिता भी है। रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं क्योंकि मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। ... किसको भी पहले-पहले यह मन्त्र पक्का कराना है कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो धन के बन जायेंगे।'' सा.बाबा 19.06.09 रिवा.

''छोटे-छोटे बच्चों को भी कम मत समझो। जितने छोटे हैं, उतना बहुत नाम निकाल सकते हैं। छोटी-छोटी बच्चियाँ बैठ बड़े-बड़े बुजुर्गों को समझायेंगी तो कमाल कर दिखायेंगी। उनको भी आप समान बनाना है, जो कोई भी प्रश्न पूछे तो सही रेस्पान्स दे सकें।''

सा.बाबा 19.06.09 रिवा.

''परिवर्तन की शुभ भावना को तीव्र करना अर्थात् अपने को तीव्र गति से सम्पन्न बनाना। ... रहम की भावना इमर्ज करो, चाहे स्व-प्रति, चाहे सर्व आत्माओं के प्रति। जहाँ रहम होगा, वहाँ तेरा-मेरा की हलचल नहीं होगी। ... संकल्प में होगा तो वाणी और कर्म में स्वत: ही हो जायेगा।'' अ.बापदादा 25.01.94 दादियों से

''आत्माओं के अन्दर बापदादा के स्नेह और सम्बन्ध को प्रत्यक्ष किया ? ... जब सर्विस का रूप प्रत्यक्ष होगा तब प्रत्यक्षता होगी ... बेधड़क होकर सूचना देने, सन्देश देने के लिए जाओ। ... आपस में मिलकर विचार करो - दुनिया को यह कैसे मालूम हो कि अभी समय क्या है और कर्तव्य क्या हो रहा है ?'' अ.बापदादा 28.11.69

''बोलो - फेमिली प्लानिंग की ड्युटी तो गीता के कथन अनुसार एक बाप की ही है। गीता है फेमिली प्लॉनिंग का शास्त्र। गीता से ही नई दुनिया की स्थापना करते हैं। ... इससे नम्बरवन फेमिली प्लॉनिंग हो जायेगी। ... ये बात सबको समझानी है, इसमें डरने की बात नहीं। ... बाप जो ऊंच ते ऊंच है भगवान है, वही आते हैं यह प्लॉनिंग करने।... जो निर्विकारी बनते हैं, उनकी ही फेमिली आकर राज्य करती है।'' सा.बाबा 11.03.09 रिवा.

''इसमें डरने की बात नहीं। तुम बेपरवाह होकर वाणी चलाओ। बोलो, यह कोई तुम मिनिस्टर्स का काम नहीं है, यह तो ऊंच ते ऊंच बाप का काम है। ... देवताओं के राज्य में कितने थोड़े मनुष्य थे। ... बच्चों में वह रुहाब नहीं रहता है।... सबका ध्यान बाप की तरफ खिंचवाना है।'' सा.बाबा 11.03.09 रिवा.

''सालिग्राम समझते हैं कि शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं।... जिसने पढ़ाया, उसको भूलकर पहले नम्बर में पढ़ने वाले का नाम डाल दिया है। तुमको पढ़ते-पढ़ते यह बात सिद्ध करनी है। ... तुम्हारे सिवाए यह बात और कोई सिद्ध कर नहीं सकता।... पहले तो यह समझाना है कि गीता का भगवान कौन ?'' सा.बाबा 4.03.09 रिवा.

''जो ब्राह्मण कुल भूषण सर्विस में तत्पर रहते हैं, उनको ये बातें बुद्धि में लानी है कि भारत वासियों को कैसे सिद्धकर बतायें कि शिवजयन्ति सो गीता जयन्ति और गीता से होती है कृष्ण जयन्ति। ... सतयुग में महाभारत लड़ाई आदि तो हो नहीं सकती, तो जरूर वह संगम पर ही हुई होगी। तुम बच्चों को अच्छी तरह इन बातों पर समझाना है।''

सा.बाबा 14.2.09 रिवा.

''कोई गीतापाठी आयेगा तो उनको भी समझायेंगे कि गीता में ये भूल है। गीता किसने सुनाई, राजयोग किसने सिखाया, किसने कहा - काम पर जीत पाने से तुम जगतजीत बन जायेंगे ? ... जैसे बाप तुम बच्चों को बोलता है, वैसे ही कोई बड़े से बड़ा जज आयेगा, उनको भी बाप बोलेंगे - 'बच्चे' क्योंकि मैं ऊंच से ऊंच भगवान हूँ।''

सा.बाबा 11.02.09 रिवा.

''जितना हम पढ़ेंगे, पढ़ायेंगे, उतना बहुतों का कल्याण होगा। किसको बहुत प्यार से समझाना है। ... ऐसे नहीं कि वे गीता पढ़ने वाले कोई मनुष्य से देवता बनेंगे। ... भगवान पढ़ाकर तुमको नर से नारायण बनाते हैं।''

सा.बाबा 24.01.09 रिवा.

''प्रॉब्लम का दरवाजा बन्द। डबल लॉक लगाना। डबल लॉक है - याद और सेवा। मन्सा सेवा सदा हाजिर है। ऐसे नहीं कि सेवा का चान्स ही नहीं मिला ... मन्सा के लिए कोई नहीं रोकता है। रात को भी जागकर मन्सा सेवा कर सकती हो। मन्सा सेवा अर्थात् सकाश दो, आत्माओं का आवाह्न करो। बेचारे दुखी है, उनको सहारा दो।''

अ.बापदादा 15.11.08

''बाबा कोई को कहते हैं भले बाइसकोप में जाओ परन्तु यह सबके लिए नहीं है। कोई के साथ जाना पड़ता है तो उन्हें भी नॉलेज देनी है। ... सर्विस तो करनी पड़े। ऐसे नहीं कि सिर्फ देखने के लिए जाना है। शमशान में भी जाकर सर्विस करना है।''

सा.बाबा 25.12.08 रिवा.

''समझो इनसे कोई भूल हो जाती है बाप उसको अभूल कराये ठीक कर देते हैं। यह भी कदम-कदम श्रीमत पर चलते रहते हैं। कब नुकसान हो जाता है तो समझते हैं ड्रामा में था। ... भूल की तो उसकी एवज़ में फिर बहुत सर्विस में लग जाना चाहिए, पुरुषार्थ बहुत करना चाहिए। किसका जीवन बनाना, यह है पुरुषार्थ।''

सा.बाबा 20.12.08 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और मुरली

ब्राह्मण जीवन का आधार मुरली है और यह ब्राह्मण जीवन पढ़ाई है, इसके चार मुख्य विषय हैं, जिनमें सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है। बाबा मुरली में सेवा का महत्व भी बताते हैं और सेवा का विधि-विधान तथा प्राप्तियाँ भी बताते हैं। सेवा में सफलता कैसे प्राप्त हो, वह भी बाबा मुरली में बताते हैं। जो मुरली का महत्व समझ उसको पढ़ते हैं और उसकी जीवन में धारणा करते हैं, वे ही इस ईश्वरीय सेवा के विषय में पास होते हैं। उसके आधार पर ही उनको अभी शक्ति और खुशी की प्राप्ति होती है और भविष्य में अच्छा पद प्राप्त होता है।

''हाइएस्ट चार्ट उनका होता है, जो कदम-कदम श्रीमत पर चलते हैं। ... श्रीमत का इतना रिगार्ड नहीं है, मुरली मिलती है, फिर भी नहीं पढ़ते हैं। जो मुरली नहीं पढ़ते हैं, उनको दिल में लगता तो जरूर होगा कि बाबा सच कहते हैं। हम मुरली नहीं पढ़ते हैं तो औरों को क्या सिखलायेंगे।''

सा.बाबा 8.12.09 रिवा.

''मूर्छित हो जाते हैं, फिर जब मुरली पढ़ें, तब सुजाग हों। ... देखते हो कि इनको माया खा रही है तो उसको बचाने की कोशिश करनी चाहिए। कहाँ माया पूरा ही हप न कर लेवे, फिर से सुजाग हो जाये। ... सतगुरु की निन्दा कराते हैं तो पदभ्रष्ट हो जाता है।''

सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''सारी आयु वह गीता पढ़ते आये हैं परन्तु कुछ भी नहीं समझते थे। अब वही गीता का भगवान गीता ज्ञान सुनाते हैं और राजयोग सिखाते हैं, जिससे पतित से पावन बन जाते हैं। अभी हम भगवान से गीता सुनते हैं, फिर वह औरों को भी सुनाना है, पावन बनने का रास्ता बताना है।''

सा.बाबा 30.09.09 रिवा.

''पढ़ाई रोज पढ़नी चाहिए। एक दिन भी मुरली न सुनी तो फिर अब्सेन्ट पड़ जाती है। ... रोज़ अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स सुनाता हूँ, जो समय पर समझाने में बहुत काम आयेगीं। ... अपना घमण्ड नहीं होना चाहिए। अरे, भगवान बाप पढ़ाते हैं, उसमें तो एक दिन भी मिस नहीं होना चाहिए। ऐसी-ऐसी प्वाइन्ट्स निकलती है, जो तुम्हारा वा किसी का भी कपाट खुल सकता है।''

सा.बाबा 12.06.09 रिवा.

''बाप आये हैं बच्चों को स्वर्ग का वर्सा देने, तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए।... 21 जन्म मौज में रहने के लिए यह जबरदस्त खुराक है। यही खुराक खाते रहो और एक-दो को खिलाते रहो। ... बेहद के बाप द्वारा हमको जीवनमुक्ति की खुराक मिलती है।''

सा.बाबा 6.01.09 रिवा.

''यह ज्ञान और योग की कितनी फर्स्ट क्लास वण्डरफुल खुराक है और यह खुराक एक ही रुहानी सर्जन के पास है। ... गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ इज़ दि बेस्ट। यह अभी का ही गायन है। ... अपने को देखो - मैं ऊंच पद पाने के लायक हूँ, रुहानी सर्विस करता हूँ?''

सा.बाबा 6.01.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - बच्चे सर्विसएबुल बनो, बाप को फॉलो करो। मैं आया ही हूँ सर्विस के लिए। रोज सर्विस करता हूँ। इसलिए ही तो यह रथ लिया है। इनका रथ बीमार पड़ जाता है तो भी मैं इनमें बैठ मुरली लिखता हूँ ... बच्चों की मुरली मिस न हो। तो मैं भी सर्विस पर हूँ। यह है रुहानी सर्विस।''

सा.बाबा 6.01.09 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और राजतन्त्र अर्थात् राजशाही और उसकी स्थापना

Q. ईश्वरीय सेवा का विश्व के राजतन्त्र से क्या सम्बन्ध है?

सृष्टि-चक्र को आदि से अन्त तक देखें तो विश्व में दो प्रकार की शासन व्यवस्थायें चली हैं। एक है राजतन्त्र अर्थात् राजशाही और दूसरी है प्रजातन्त्र। विश्व के इतिहास को देखा जाये तो कलियुग के अन्त के थोड़े से समय को छोड़कर सारे सृष्टि-चक्र में राजतन्त्र अर्थात् राजाई ही चलती है और विश्व राजशाही में ही सुखी रहता है। अभी कलियुग के अन्त में राजाई का अन्त होकर विश्व में प्रजातन्त्र आया है। अभी फिर परमपिता परमात्मा संगमयुग पर आकर विश्व में राजतन्त्र की स्थापना करते हैं, उसमें सेवा का क्या स्थान है, वह भी बाबा ने हम बच्चों को बताया है। क्योंकि राजाई में राजा, प्रजा, दास-दासी आदि सब बनते हैं, उसमें सेवा का क्या स्थान है, वह भी समझने की बात है और समझने वाले ही यथार्थ पुरुषार्थ कर अर्थात् यथार्थ रीति सेवा करके ऊंच पद पाते हैं। जो जैसी सेवा करता है, वह उस अनुसार राजपद पाता है।

''जो बच्चे रुहानी सर्विस पर तत्पर रहते हैं, योग में रहकर सर्विस करते हैं, वे ही सतयुगी राजधानी स्थापन करने में बाप के मददगार बनते हैं। सर्विसएबुल बच्चों को बाप का डायरेक्शन है - आराम हराम है। जो बहुत सर्विस करते हैं, वे जरूर राजा-रानी बनेंगे। जो मेहनत कर आप समान बनाते हैं, उनमें ताक़त भी रहती है।''

सा.बाबा 9.04.10 रिवा.

''बाप के सपूत बच्चे वे हैं, जो सबका बुद्धियोग एक बाप के साथ जुड़ाते हैं, जो सर्विसएबुल हैं।... कोई तो और ही बाप से बुद्धियोग तुड़ा देते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। ड्रामा अनुसार यह होने का ही है।... राजाई में दास-दासियाँ भी चाहिए, प्रजा के नौकर-चाकर भी चाहिए। यह सारी राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें बड़ी विशालबुद्धि चाहिए।''

सा.बाबा 23.03.10 रिवा.

''जो बहुतों का कल्याण करते हैं, वे ही राजा-रानी बन सकते हैं, बाकी सब नौकर-चाकर, दास-दासियाँ बनेंगे। ... पढ़ने वाले खुद समझ सकते हैं कि इस हिसाब से हम क्या बनेंगे। ... लूनपानी होने से बाबा राज़ी नहीं होगा। बाप कहेंगे तुम कितना नाम बदनाम करते हो। ... बहुत सज़ा खायेंगे, स्वर्ग में ऊंच पद पा नहीं सकेंगे।''

सा.बाबा 4.03.10 रिवा.

''यह है शिवबाबा का भण्डारा, शिवबाबा के भण्डारे में तुम सर्विस करते हो। सर्विस नहीं करेंगे तो पाई-पैसे का पद पायेंगे। ... यह राजधानी स्थापन हो रही है, इसमें नौकर-चाकर आदि सब बनेंगे ना। ... कितनी गुप्त बात है कि योगबल से तुम विश्व की बादशाही लेते हो।''

सा.बाबा 19.02.10 रिवा.

''अभी तुम फिर से श्रीमत पर अपना राज्य स्थापन कर रहे हो। बाबा हमको युक्ति बतलाते हैं कि राजा-महाराजा कैसे बन सकते हो? तुम्हारी बुद्धि में यह ज्ञान भरा जाता है औरों को समझाने के लिए। ... जो तुम्हारे कुल के होंगे, उनकी बुद्धि में यह रचता और रचना की नॉलेज सहज ही बैठ जायेगी। उनकी शकल से मालूम पड़ेगा कि यह हमारे कुल का है।''

सा.बाबा 9.02.10 रिवा.

''अकालमूर्त बाप इस तख्त पर बैठकर तुम बच्चों को ताउसी तख्तनशीन बनाते हैं। ... ताउसी तख्त गाया हुआ है ना। ... किसको भी इतना ही बोलो कि भगवान कहते हैं, मुझ अपने बाप को याद करो, उनको ही पतित-पावन कहा जाता है।''

सा.बाबा 10.02.10 रिवा.

''यह लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक, सम्पूर्ण निर्विकारी थे। तुम बाप को याद करने से ऐसा सम्पूर्ण बनेंगे। फिर जो जितना याद करते हैं और सर्विस करते हैं, उतना ऊंच पद पाते हैं।''

सा.बाबा 10.02.10 रिवा.

''योगबल से सब बीमारियाँ खत्म हो जाती हैं। इसमें बड़ी मेहनत है। राज्य लेना कोई मासी का घर नहीं है। पुरुषार्थ करना होता है। ... बाबा के बनें तो कुछ न कुछ मिल जायेगा, बाकी बादशाही नहीं मिल सकेगी। वह तो जब सर्विस करेंगे तब बादशाही मिलेगी। उसके लिए बहुत मेहनत चाहिए।''

सा.बाबा 12.02.10 रिवा.

''पढ़ने बिगर लक्ष्मी-नारायण थोड़ेही बनेंगे। पढ़कर होशियार बनो, प्रजा भी बनाओ तब लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। मेहनत है। ... याद से ही आत्मा पवित्र होनी है। बहुतों को पढ़ायेंगे तो ऊंच पद पायेंगे। जो अच्छा समझते हैं, वे अच्छी सेवा कर सकते हैं, वे पद भी अच्छा पाते हैं।''

सा.बाबा 3.02.10 रिवा.

''भक्ति अलग है, ज्ञान अलग है। ज्ञान तो एक ज्ञानेश्वर बाप ही देते हैं। सर्विस तो बहुत है।

... बच्चों को सर्विस का शौक होना चाहिए। तुम्हें राजाई करनी है तो प्रजा भी बनानी है। बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी, यह महामन्त्र कम थोड़ेही है।''

सा.बाबा 21.01.10 रिवा.

''सतयुग में क्या-क्या, कैसे होगा, इसमें मूँझने की तो बात ही नहीं है। जो होना है सो प्रैक्टिकल में देखेंगे। स्वर्ग बनना तो जरूर है। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, उनको निश्चय रहेगा कि हम जाकर भविष्य में प्रिन्स बनूँगा। हीरे-जवाहरों के महल होंगे। यह निश्चय भी सर्विसएबुल बच्चों को ही होगा। ... जो बहुत सर्विस करेंगे, वे ही महलों में जायेंगे ना।''

सा.बाबा 20.01.10 रिवा.

''अभी तुम अपने पुरुषार्थ से अपने आपको राजतिलक दे रहे हो। तुम बाप की शिक्षा पर अच्छी तरह चलते हो तो जैसे कि तुम अपने को राज-तिलक देते हो। ऐसे नहीं कि बाप कोई आशीर्वाद वा कृपा करेंगे। ... फॉलो फादर करने का पुरुषार्थ है, दूसरों को नहीं देखना है।... यह है ही राजयोग, जिससे तुम बेगर टू प्रिन्स बनते हो।'' सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

''परमात्मा है सृष्टि का बीजरूप। वह सत् है, चेतन्य है, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का उनको ही ज्ञान है। ... वे ही आकर तुमको सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज देते हैं। यह बोर्ड लगा देना चाहिए कि इस चक्र को जानने से तुम सतयुग के चक्रवर्ती राजा अथवा स्वर्ग के राजा बन जायेंगे।'' सा.बाबा 29.12.09 रिवा.

''जिनको जितना सुख मिला है, वे फिर औरों को भी वह सुख देंगे। प्रजा बनायेंगे तो फिर खुद राजा बन जायेंगे। ... जिन स्टूडेण्ट्स को निश्चय होता है कि हमको प्रिन्स बनना है, उनको खुशी का पारा जरूर चढ़ेगा। ... ये सब बातें समझने की हैं। एक तो बाप से पूरा बुद्धियोग रखना पड़े और दूसरा बाप को सभी समाचार देना पड़े।'' सा.बाबा 28.12.09 रिवा.

''बाप करनकरावनहार है, तुम्हारे द्वारा कराते हैं। तुम्हारा कल्याण होता है, तो तुम फिर औरों को कलम लगाते हो। जैसे-जैसे जो सर्विस करते हैं, उतना ऊंच पद पाते हैं। राजा बनना है तो प्रजा भी बनानी है। ... पिछाड़ी में सब साक्षात्कार होगा।'' सा.बाबा 10.12.09 रिवा.

''बाप को याद करते रहेंगे और बहुत सर्विस करेंगे तो बड़ा महाराजा बनेंगे। ... बाप को याद करो तो पावन बन जायेंगे। चक्र को याद करो, दैवीगुण धारण करो। बहुतों को आप समान बनाओ। गॉड फादर बाप के तुम स्टूडेण्ट हो। कल्प पहले भी तुम ऐसे बने थे, फिर भी बनेंगे।'' सा.बाबा 5.12.09 रिवा.

''पतित से पावन बनने और बनाने का धन्धा बाप ने तुमको सिखाया है। पावन बनो तो पावन दुनिया में चलेंगे। ... तुम कितना माथा मारते हो समझाने के लिए। तुम अभी अपनी राजधानी

स्थापन कर रहे हो। ... अभी जो पारसबुद्धि बनें हैं, उनका काम है औरों को भी पारसबुद्धि बनाना।''

सा.बाबा 26.11.09 रिवा.

''बहुत हैं, जो ऐसे टीचर का भी क़दर नहीं रखते। यह भी ड्रामा में होना ही है। राजधानी में तो सब चाहिए। सब प्रकार के यहाँ ही बनते हैं।... राजाई यहाँ ही बनती है। नौकर-चाकर, चण्डाल आदि सब यहाँ ही बनेंगे। ... तुम्हारे लिए तो ट्रिब्युनल बैठेगी। खास उन बच्चों के लिए जो सर्विस लायक बनकर फिर ट्रेटर बन जाते हैं।... बाप का बनकर, बाप के पास दान देकर फिर वापस नहीं लेना।''

सा.बाबा 11.11.09 रिवा.

''बच्चे खुद भी समझते हैं - हम आप समान नहीं बनाते तो राजा तो बन नहीं सकेंगे। साहूकार कैसे और कौन बनेंगे, वह तो बाप ही जाने। आगे चलकर तुम बच्चे भी समझ जायेंगे। ... कल्प-कल्प जिसने जो कुछ किया है, वही करेंगे। इसमें कोई फर्क नहीं पड़ सकता है। बाप प्वाइन्ट्स तो सब देते हैं कि ऐसे-ऐसे करो, ऐसे अपना ट्रान्सफर करना है।''

सा.बाबा 31.10.09 रिवा.

''ड्रामा प्लॉन अनुसार तुम बच्चे जितना सर्विस कर प्रजा बनाते हो, उतना आत्माओं का कल्याण होता है, उतनी उन्हों की आशीर्वाद तुमको मिल जाती है। ... पुरुषार्थ करना और कराना है। पुरुषार्थ में कब थकना नहीं है। ... तुमने जिसको सुनाया, जिसने भी सुना, उस पर छाप तो लग गई। पिछाड़ी में फिर सब जागेंगे जरूर।''

सा.बाबा 5.10.09 रिवा.

''अभी यह सारी राजाई स्थापन हुई नहीं है। कितने ढेर मनुष्यों को बाप का पैग़ाम देना है।... जितना ज्ञान को धारण करेंगे, बाप को याद करते रहेंगे, उतना आत्मा पवित्र बनती जायेगी और तुम अथाह ज्ञान की खुशी में रहेंगे।''

सा.बाबा 5.10.09 रिवा.

''तुम बच्चों को यह भी ध्यान में रखना है कि हमको औरों को भी आप समान बनाना है। प्रजा तो चाहिए ना। नहीं तो राजा कैसे बनेंगे। गायन है धन दिये धन न खुटे ... दूसरों को समझायेंगे, दान देते रहें तो कभी खुटेगा नहीं। ... मैं तुमको ये अविनाशी धन देता हूँ, तुम फिर औरों को देते रहो। ... दान नहीं देते तो गोया अपने पास है नहीं। यह कमाई है।''

सा.बाबा 29.07.09 रिवा.

''तुम सब अपना राज्य स्थापन कर रहे हो। तो सर्विस में बिजी रहना चाहिए। ... तुम विचार करो - यह सब कैसे खत्म होंगे। सृष्टि के ऑलराउण्ड सागर है। विनाश होगा तो जलमई हो जायेगी। ... भारत कितना छोटा जाकर रहेगा, सो भी मीठे पानी पर।''

सा.बाबा 18.07.09 रिवा.

''जो बहुत सर्विस करते हैं, वे बड़ा राजा बनते हैं। देलवाड़ा मन्दिर में तुम्हारा ही यादगार है।

... तुम चाहते हो हम महाराजा बनें परन्तु सब तो बन न सकें। पुरुषार्थ सबको करना है। ... यह भी तुम्हारी रुहानी सेवा है। इसमें कमाण्डर्स, मेजर्स, कैप्टन भी हैं तो प्यादे भी हैं। सारा मदार है याद की यात्रा पर।''

सा.बाबा 15.06.09 रिवा.

''कोई सर्विस नहीं करते, सिर्फ खाते-पीते रहते हैं तो फिर 21 जन्म सर्विस करनी पड़ेगी। दास-दासियाँ भी तो बनेंगे ना। ... बाप की दिल पर तो सर्विसएबुल ही चढ़ेंगे। तुम्हारी सर्विस ही यह है कि किसको अमरलोक का वासी बनाना।''

सा.बाबा 10.06.09 रिवा.

''अभी तुम श्रीमत पर आपही अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हो। जो जितनी सर्विस करते हैं, हर एक मन्सा-वाचा-कर्मणा अपना ही कल्याण करते हैं।... बाबा को याद करने से खुशी भी बहुत होती है, सदैव याद रहे तो सदैव खुशी ही खुशी रहे।''

सा.बाबा 14.04.09 रिवा.

''जो एक ही स्थान पर सर्विस करते, बेहद में चक्कर नहीं लगाते हैं, तो उनको भविष्य में भी एक इण्डिविजुअल राजाई मिल जायेगी।... विश्व का राजा वे बनेंगे, जो विश्व की हर आत्मा से सम्बन्ध जोड़ेंगे और सहयोगी बनेंगे। जैसा और जितना, वैसा और उतना का हिसाब है ना। जैसे बापदादा विश्व के स्नेही और सहयोगी बनें, ऐसे बच्चों को भी फॉलो फादर करना है।''

अ.बापदादा 2.07.70

''इस पढ़ाई से बड़ी राजाई स्थापन हो रही है। पुरुषार्थ ऐसा करना है जो हम जाकर राजा बनें। इस समय तुम जो पुरुषार्थ करते हो, वह कल्प-कल्पान्तर करते रहेंगे। ... नम्बरवन पुरुषार्थ है याद का। पहले योगबल से स्वच्छ बनें। तुम जानते हो जितना हम बाप को याद करेंगे, उतनी नॉलेज की धारणा होगी और बहुतों को समझाकर अपनी प्रजा भी बनायेंगे।''

सा.बाबा 13.03.09 रिवा.

''बाप इतना पढ़ाते हैं परन्तु बच्चों में रात-दिन का फर्क पड़ जाता है। कहाँ राजा-रानी और कहाँ एकदम दास-दासियाँ। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं और पढ़ाते हैं, वे छिपे नहीं रह सकते हैं। झट कहेंगे - बाबा हम फलानी जगह जाकर सर्विस करते हैं। सर्विस तो ढेर पड़ी है।''

सा.बाबा 21.01.09 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और मनन-चिन्तन

बाबा ने अनेक बार कहा है कि ज्ञान की सेवा करने वाले का ही चिन्तन चलेगा और उसके आगे ही ज्ञान के गुह्य रहस्य स्पष्ट होंगे। ब्रह्मा बाबा के जीवन को देखें तो सदैव ही उनका चिन्तन विश्व कल्याण के लिए चलता रहता था और वे चिन्तन करके बच्चों नित्य नये

ज्ञान के गुह्य राज़ो को सुनाते थे। साकार में भी बाबा बच्चों को भी कहते थे कि तुम चिन्तन करके नई-नई युक्तियाँ निकालो, जिससे किसको भी सहज रीति समझा को, कोई भी ज्ञान को सहज समझ जाये और उसका योग बाबा से जुट जाये। अभी भी अव्यक्त रूप में ऐसी प्रेरणा देते रहते हैं, अव्यक्त रूप में सुनाते रहते हैं।

''जितना प्रदर्शनी में सर्विस करेंगे तो सुनने वालों को भी सुख मिलेगा। अपना और दूसरों का कल्याण होगा। ... इन आंखों से जो देख रहे हो, उस सबका विनाश होना है, बाकी जो दिव्य-दृष्टि से देखते हो, उसकी स्थापना हो रही है। ऐसे अपने से बातें करो तो तुम पक्के हो जायेंगे।''

सा.बाबा 14.01.09 रिवा.

''बच्चों के अन्दर में ऐसे विचार सागर मन्थन चलना चाहिए। हम ऐसी मुरली चलायें, जो मनुष्य झट समझ जायें। ... तुम बच्चे अभी सर्विस पर हो। समझते हो श्रीमत पर सर्विस में लगने से फल पायेंगे। हमको अपना सब कुछ वहाँ के लिए ट्रान्सफर करना है। अपना बैग-बैगेज ट्रान्सफर कर देना है। ... शुरू में ब्रह्मा बाबा ने अपना सब कुछ ट्रान्सफर किया।''

सा.बाबा 22.01.09 रिवा.

''ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करना चाहिए, फिर शिव के मन्दिर में जाकर सर्विस करनी चाहिए। ... शिवबाबा प्रभात के समय आते हैं। आधी रात नहीं कहेंगे। उस समय तो तुम ज्ञान भी नहीं सुना सकते हो क्योंकि मनुष्य सोये रहते हैं।''

सा.बाबा 23.02.09 रिवा.

''तुम्हारे पास बहुत अच्छी नॉलेज है। ... जितने बड़े चित्र होंगे, उतना तुम किसको भी अच्छी रीति समझा सकेंगे। शौक रहना चाहिए कि हम किसको ऐसे समझायें। तुम्हारी बुद्धि में सदैव रहना चाहिए कि हम ब्राह्मण बनें हैं तो जितनी सर्विस करेंगे, उतना मान होगा। यहाँ भी मान पायेंगे तो वहाँ भी मान होगा। यह ईश्वरीय नॉलेज अच्छी रीति धारण करनी है।''

सा.बाबा 13.04.10 रिवा.

''इसमें बड़ी अन्तर्मुखता चाहिए। समझाने की भी युक्ति चाहिए। ... अगर सारा दिन इस ईश्वरीय सर्विस में रहें तो सारा दिन विचार-सागर मन्थन होता रहेगा। यह बाबा भी विचार सागर मन्थन करता होगा ना। नहीं तो यह कैसे पायेगा।''

सा.बाबा 5.04.10 रिवा.

''बाबा जानते हैं सर्विसएबुल बच्चों का ही विचार सागर मन्थन चलेगा।... ऐसे-ऐसे सर्विसएबुल बच्चे बाप की दिल पर चढ़ते हैं। यूँ तो स्थूल सर्विस भी है परन्तु बाबा का अटेन्शन उन पर जाता है, जो रुहानी सर्विस करते हैं, बहुतों का कल्याण करते हैं। भल कल्याण तो स्थूल सर्विस में भी है, अगर योगयुक्त होकर करें तो।''

सा.बाबा 3.03.10 रिवा.

''पर्चे में लिखा हो - बाप आकर भारत में आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करते हैं और

सभी अनेक धर्म इस महाभारत लड़ाई द्वारा कल्प पहले मिसल ड्रामा प्लेन अनुसार खलास हो जायेंगे।... बच्चों को सारा दिन सर्विस का ख्याल चलना चाहिए।''

सा.बाबा 29.01.10 रिवा.

''जितना-जितना बाप की दी हुई प्रॉपर्टी को मनन करेंगे अर्थात् प्रॉपर्टी को अपना बनायेंगे तो नशा रहेगा। उस नशे से किसको भी सुनायेंगे तो उनको भी नशा चढ़ेगा। नशा नहीं चढ़ता है तो वारिस नहीं बनते, सिर्फ भक्त बन महिमा कर लेते हैं।'' अ.बापदादा 30.5.71

''सिर्फ दो शब्द अलफ और बादशाही याद रखो तो स्थिति ऊपर-नीचे नहीं हो सकती है।... अपने से बातें करो कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान ... सिर्फ मनन और वर्णन करना है। पहले मनन करो और बाद में वर्णन करो। ... मनन करते-करते ऑटोमेटिकली अवस्था मगन हो जायेगी। जो मनन करना नहीं जानते हैं, वे मगन अवस्था का भी अनुभव नहीं कर सकते।''

अ.बापदादा 24.5.71

''जो टाइम मिले, अपने से ये बातें करनी चाहिए। विनाश तो होने का है, पहले हम अपने घर जायेंगे, फिर सुखधाम में आयेंगे। ... कम से कम आठ घण्टा बाप से रूह-रुहान करो और जाकर रुहानी सर्विस करो। ... मुख्य है याद की यात्रा। तुम अच्छी रीति याद की यात्रा में रहेंगे तो प्रकृति तुम्हारी दासी बन जायेगी, तुमको आपही सबकुछ मिलेगा, माँगने की भी दरकार नहीं रहेगी।'' सा.बाबा 14.11.09 रिवा.

''बच्चों की रात-दिन ख्यालात चलती रहे कि हम औरों का जीवन कैसे बनायें, हमारे में जो खमियाँ हैं, वे कैसे निकालकर उन्नति को पायें। सर्विस में बहुत खुशी होती है।''

सा.बाबा 14.11.09 रिवा.

''यह रुद्र शिवबाबा का यज्ञ है, इसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा हो जाती है, नई दुनिया की स्थापना हो जाती है। ... आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कैसे हो रही है ... विश्व में शान्ति की स्थापना कौन और कैसे करते हैं, यह आकर समझो। ... ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन कर टॉपिक्स निकालनी होती है।'' सा.बाबा 21.03.09 रिवा.

''सर्विस में लग जाने से फिर मज़ा आयेगा। मम्मा-बाबा को भी सर्विस में मज़ा आता है। बच्चों को भी सर्विस करनी है। ... इसमें सर्विस का बहुत विचार सागर मन्थन चलना चाहिए। प्रैक्टिस कर, फिर बाहर जाकर ट्रॉयल करनी चाहिए।'' सा.बाबा 24.12.08 रिवा.

''विश्व में शान्ति स्थापन करना और मुक्ति-जीवनमुक्ति देना एक बाप का ही काम है। ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन कर प्वाइन्ट्स निकाल कर समझाना है। ऐसा लिखना चाहिए जो मनुष्यों को बात ठीक से जंच जाये।... ये सभी समझाने की बातें हैं।'' सा.बाबा 9.4.68 रात्रि क्लास

Q. 12 बजे शिव जयन्ति मनाना सही प्रथा है या गलत है और यदि गलत है तो ये कहाँ से आरम्भ हुई ?

वास्तव में ये परतन्त्र भारत अर्थात् दासता की प्रथा है क्योंकि 12 बजे ब्रिटेन में प्रभात होता है, इसलिए दिन की आदि 12 बजे वहाँ होता है, भारत में तो प्रभात 5-6 बजे होता है। वास्तविकता को देखा जाये तो आज के स्वतन्त्र भारत में भी वही दासता की प्रथा चली आ रही है।

''नॉलेज है सोर्स ऑफ इनकम।... सर्विस नहीं करेंगे तो अच्छा फूल कैसे बनेंगे ? हर एक अपनी दिल से पूछे कि मैं किस प्रकार का फूल हूँ, किस प्रकार का माली हूँ ? बच्चों को विचार सागर मन्थन करना पड़े। ... याद करो तो पाप कटें, तब फूल बनकर फिर औरों को भी फूल बनायेंगे।''

सा.बाबा 11.06.09 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और विनाश की प्रक्रिया

Q. सेवा और विनाश की प्रक्रिया का क्या सम्बन्ध है ?

बाबा ने कहा - जब सारे विश्व को बाबा का सन्देश मिल जायेगा, तुम पावन बन जायेंगे तो विनाश शुरू हो जायेगा। सेवा और तुम्हारी अवस्था से विनाश का घनिष्ट सम्बन्ध है।

''इस समय सब पुरुषार्थी हैं। याद करते-करते जब पाप खत्म होंगे, तब लड़ाई शुरू होगी, जब तक सबको पैग़ाम मिल जाये। ... खुदा को पैग़म्बर कहते हैं ना। तुम सबको यह पैग़ाम पहुँचाते हो कि अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाओ तो बाप प्रतिज्ञा करते हैं कि तुमको जन्म-जन्मान्तर के पापों से मुक्त कर दूँगा।''

सा.बाबा 12.02.09 रिवा.

''तुम नई दुनिया के मालिक बन जायेंगे - यह है एम एण्ड आब्जेक्ट। राजाओं के साथ प्रजा भी जरूर बननी है। राजाओं को दास-दासियाँ भी चाहिए। बाप ये सब बातें समझाते रहते हैं। अच्छी तरह योग में नहीं रहेंगे, दैवी गुण धारण नहीं करेंगे तो ऊंच पद कैसे पायेंगे।''

सा.बाबा 12.02.09 रिवा.

''तुम कहाँ भी जाते हो तो यह समझाते हो क्योंकि तुम हो मैसेन्जर, पैगम्बर। बाप का परिचय हर एक को देना है। कोई तो झट समझेंगे कि बरोबर तुम ठीक कहते हो... घर-घर में मैसेज देना है, फिर कोई माने या न माने। विनाश आयेगा तब समझेंगे कि भगवान आया हुआ है। फिर जिन्हों को तुमने मैसेज दिया होगा, वे याद करेंगे कि यह सफेद पोश वाले फरिश्ते कौन थे ?... फिर सतयुग में यह नॉलेज भूल जाती है।''

सा.बाबा 11.05.09 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और अन्तिम विनाश का समय

बाबा ने अनेक बार कहा है - तुम्हारी जब सर्विस पूरी हो जायेगी तो विनाश शुरू हो जायेगा। तुम जब सबको सन्देश देने का काम पूरा करेंगे तो विनाश शुरू हो जायेगा। बाबा ने ये भी कहा है कि जब विनाश का समय नज़दीक होगा तो तुम्हारे सामने आत्माओं की भीड़ लगेगी और उस समय तुमको उनको अपनी शक्ति से शान्ति और शक्ति की अनुभूति करानी होगी, इसलिए अभी पुरुषार्थ करके ऐसी शक्ति और शान्ति का स्टॉक जमा करो। उस समय जमा करने का समय नहीं होगा।

''आजकल आत्मायें सुनना नहीं चाहती, अनुभव करना चाहती हैं। दूसरों को अनुभव कराने के लिए पहले स्वयं अनुभव स्वरूप बनेंगे तब सर्व आत्माओं की इच्छा पूर्ण कर सकेंगे। ... ऐसी तड़फती हुई या भिखारी प्यासी आत्माओं की प्यास मिटाने के लिए अपने को अतीन्द्रिय सुख वा सर्व शक्तियों से भरपूर किया हुआ अनुभव करते हो ? ... स्वयं उस अनुभव में होंगे, तब दूसरों को करा सकेंगे।'' अ.बापदादा 21.7.71

''सर्व शक्तियों का खज़ाना, अतीन्द्रिय सुख का खज़ाना इतना इकट्ठा किया है, जो अपनी स्थिति तो कायम रहे लेकिन अन्य आत्माओं को भी सम्पन्न बना सको। सर्व की झोली भरने वाले दाता के बच्चे हो ना। अब वह दृश्य बहुत जल्दी सामने आयेगा।''

अ.बापदादा 21.7.71

''बड़े-बड़े अक्षरों में लिखत हो - जीवनमुक्ति गॉड फादर का बर्थ राईट है, होवनहार विनाश के पहले। विनाश भी जरूर होना ही है। ड्रामा के प्लेन अनुसार सब आपेही समझ जायेंगे। तुम्हारे समझाने की भी दरकार नहीं रहेगी।'' सा.बाबा 1.09.09 रिवा.

''जब आप सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष होंगे तब तो आप के भक्त प्रत्यक्ष रूप में अपने इष्ट को पा सकेंगे। ... एक तरफ आसुरी आत्माओं की आवाज़ और भी आकर्षक तथा फुल फोर्स में होगी, दूसरी तरफ आपके भक्तों की आवाज़ भी कई प्रकार से और फुल फोर्स में होगी। ... उसको परखना भी बुद्धि का काम है।'' अ.बापदादा 22.10.70

''बिन्दीरूप में स्थित होंगे तो ईविल स्प्रिट वा ईविल संस्कार का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं कर सकेगा और आप लोगों का शक्तिरूप ही उनको उससे मुक्त करेगा। यह भी सर्विस करनी है। ईविल स्प्रिट्स को भी मुक्त करना है क्योंकि अभी अन्त के समय का भी अन्त है तो ईविल स्प्रिट्स और ईविल संस्कारों को भी अति में जाकर फिर उनका अन्त होगा।''

अ.बापदादा 24.7.70

''अगर आप अपनी ही समस्याओं से मुक्त न हुए होंगे तो इन समस्याओं का सामना कैसे कर सकेंगे। ... सिर्फ भाषण करने वा समझाने की सर्विस नहीं, लेकिन अब सर्विस का रूप भी सूक्ष्म होता जायेगा। इसलिए अपनी सूक्ष्म स्वरूप की स्थिति भी बढ़ाओ।''

अ.बापदादा 24.7.70

''आप लोगों का शक्तिरूप ही उनको उससे मुक्त करेगा। ईविल स्प्रिट्स और ईविल संस्कार वालों को भी मुक्त करना है। यह भी सर्विस करनी है। ... अभी सर्विस इतनी बढ़नी है जो एक-एक को दस का कार्य करना पड़ेगा।'' अ.बापदादा 24.7.70

''रचयिता बाप ही रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं, वह अभी तुम बच्चों को मिल रहा है। ... यह किसको समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। बाप खुद कहते हैं - कोटों में कोई ही यह समझेंगे। ... आगे चलकर सबको ये बातें पसन्द आयेंगी।''

सा.बाबा 21.04.09 रिवा.

''अभी दिन प्रतिदिन नाज़ुक समय होने के कारण संहारीमूर्त बनना है। संहार भी किसका ? अपने विकर्मों का और विकारी संस्कारों का। ... कोई के भी ऊपर विकराल रूप बनकर दृष्टि डाली और उनके विकर्मी संस्कारों को भस्म कर दें। ... घुँघरू डालकर असुरों पर नाचना है।'' अ.बापदादा 11.07.70

''दुनिया वालों को अभी दिलासा देने की आवश्यकता है। वे बेचारे सरकमस्टांश को देखकर भयभीत हो रहे हैं। ... अभी उन्होंको आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव कराओ। सिर्फ भाषण नहीं लेकिन अनुभव कराओ। ... अनुभव की अथॉरिटी नम्बरवन है।... ज्ञान के हिसाब से परमात्म ज्ञान का अनुभव हो, योग से शक्तियों की अनुभूति हो ... समस्याओं को हल करने की और धारणा की हिम्मत आये।'' अ.बापदादा 9.3.09 विंग्स

''ऐसे नहीं कि सदैव बाप को याद करते हैं। फिर तो यह शरीर भी न रहे। अभी तो बहुतों को पैग़ाम देना है, पैग़म्बर बनना है। ... यहाँ तो यह राजधानी स्थापन हो रही है। आगे चलकर तुम सबको साक्षात्कार होगा, हम क्या बनेंगे, यह-यह विकर्म किया।''

सा.बाबा 3.02.09 रिवा.

''ज्ञान को बल नहीं कहा जाता है, योगबल कहा जाता है। योगबल से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। अब तुमको बहुतों को आप समान बनाना है। जब तक बहुतों को आप समान नहीं बनाया है, तब तक विनाश हो न सके।'' सा.बाबा 26.01.09 रिवा.

''पूछते - बाबा विनाश की डेट बता दो।... अगली सीज़न में बाबा ने पूछा था कि कम से कम सतयुग आदि के 9 लाख बने हैं ? नहीं बनें हैं तो विनाश कैसे हो।... ज्योतिषियों बच्चों से

पूछो। जो ज्योतिषी कर सकते हैं, वह बाप क्यों करेगा! ... सतयुग की प्रजा भी रॉयल चाहिए।''

अ.बापदादा 31.12.96

ईश्वरीय सेवा और पवित्रता

परमात्मा पतित-पावन है, वह आकर आत्माओं और तत्वों को भी पावन बनाता है। पतित-पावन बाप आकर आत्माओं को एडॉप्ट करके उनको पवित्रता का राज़ समझाते हैं और पावन बनने का पुरुषार्थ कराते हैं। बाबा पवित्रता का ये सन्देश सर्व आत्माओं को देने के लिए ईश्वरीय सेवा की श्रीमत देते हैं। जो आत्मायें स्वयं पवित्र बनने का पुरुषार्थ करती हैं, वे ही अन्य आत्माओं को भी पावन बनने का सन्देश देती हैं और उनको भी पावन बनने में सहयोग करती हैं।

''तुम जितना अच्छा टीचर बनेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। बाप तुमको टीचर के रूप में पढ़ाना सिखाते हैं। तुमको फिर औरों को सिखाना है। तुम पढ़ाने वाले टीचर जरूर बनते हो परन्तु तुम गुरु नहीं बन सकते हो। गुरु तो एक ही सत्गुरु है। ... बाप की याद से ही पाप मिट जाने हैं, इसलिए बाप सबको कहते हैं - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।''

सा.बाबा 2.11.09 रिवा.

''किसको भी बोलो - आत्मा का बाप शिवबाबा है, यह तो समझते हो ना। ... बेहद का बाप यह स्वर्ग का वर्सा देते हैं, वही पतित-पावन है। बाप अभी यह नॉलेज देते हैं। बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे, यह तो अच्छा है ना। बस यहाँ तक ही ठहरा देना चाहिए।''

सा.बाबा 4.11.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझो और मुझे याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। यह पैग़ाम तुमको सबको पहुँचाना है। सर्विस करनी है। जो सर्विस ही नहीं करते तो वे फूल नहीं ठहरे। ... बाप का अटेन्शन भी सर्विस करने वालों की तरफ ही जायेगा। दिल पर भी वे ही चढ़ते हैं।''

सा.बाबा 28.10.09 रिवा.

''बच्चों को सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। किसको भी समझाना है कि यह दुनिया का चक्र कैसे फिरता है। ... अब फिर पतित से पावन तुम कैसे बन सकते हो। पतित-पावन तो एक बाप ही है, उनको याद करने से सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है।''

सा.बाबा 29.10.09 रिवा.

''बाप जानते हैं - कौन-कौन मेरी सर्विस करते हैं अर्थात् कल्याणकारी बन औरों का भी कल्याण करते हैं, वे ही दिल पर चढ़ते हैं। ... देखते सभी को हैं परन्तु खुशबू तो अच्छे फूल

की लेंगे ना। बाप भी देखते हैं - इनकी आत्मा कितना बाप की याद में रहती है, कितना पवित्र बनी है और फिर कितना औरों को भी आप समान बनाते हैं।''

सा.बाबा 23.10.09 रिवा.

''तुम मुझे पतित दुनिया में ही बुलाते हो, मैं आकर तुमको पावन बनाता हूँ। फिर तुम पावन दुनिया में मुझे बुलाते ही नहीं हो। वहाँ आकर क्या करेंगे। उनकी सर्विस ही है पावन बनाने की।''

सा.बाबा 23.10.09 रिवा.

''अभी तुमको बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। वहाँ तुमको यह पता नहीं पड़ेगा कि स्वर्ग का वर्सा हमको कैसे मिला। ... किसको भी यही समझाना है कि बाप को याद करने और स्वदर्शन चक्र को फिराने से ही तुम्हारे पाप कटते हैं। इतना समझाना बस है। आगे चलकर तुमको बहुत तीक-तीक नहीं करनी होगी। इशारे से ही समझ जायेंगे।''

सा.बाबा 21.10.09 रिवा.

''तुम्हारे में भी जो अच्छी रीति पढ़कर, पवित्र बन औरों को भी बनाते हैं, वे प्राइज़ लेते हैं। पास विद् ऑनर 8 होते हैं, उनकी ही माला बनती है। फिर 108 की भी माला होती है, वह भी सुमिरण की जाती है। कोई मनुष्य माला का रहस्य थोड़ेही समझते हैं।''

सा.बाबा 19.09.09 रिवा.

''कोई तुम्हारे पास आता है तो बोलो - हम राजयोग सिखाते हैं, जिससे तुम मनुष्य से देवता अर्थात् राजा बन सकते हो। ... हम तुमको सारे सृष्टि-चक्र का राज़ समझाते हैं, जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे और फिर तुमको पावन बनने की बहुत अच्छी युक्ति बताते हैं ... वह सर्वशक्तिवान भी है, उनको याद करने से ही पाप भस्म होंगे।''

सा.बाबा 7.09.09 रिवा.

''बाप को याद करो तो पाप कट जायेंगे। वह बाप ही पतित-पावन है। ... बच्चे बहुत सर्विस कर सकते हैं। बोलो, हम आपको बाप का पैग़ाम देते हैं, अब करो, न करो, वह तुम्हारी मर्जी। हम पैगाम देकर जाते हैं। और कोई रीति से पावन होना ही नहीं है।''

सा.बाबा 29.08.09 रिवा.

''पतित से पावन बनाने बाप आते हैं, तो फिर पावन बनना चाहिए। औरों को भी बनाना चाहिए। ... मैंने तुमको पावन बनाया, फिर माया रावण के कारण तुम पतित बने हो। अब फिर पावन बनो। पावन बनने का पुरुषार्थ करते हो, फिर माया की युद्ध चलती है।''

सा.बाबा 28.08.09 रिवा.

''बाबा को सर्विसएबुल बच्चे चाहिए। बाप तो सर्विस के लिए ही आते हैं, आकर पतितों को

पावन बनाते हैं। ... सर्व शास्त्र शिरोमणी एक गीता ही है। गीता में ही राजयोग का वर्णन है। ... बाबा बच्चों को कहता रहता है कि गीता से ही प्रभाव निकलेगा। ... उसके लिए योगबल का जौहर अच्छा चाहिए।'' सा.बाबा 23.04.09 रिवा.

''जो बाप को पहचानते हैं और ब्राह्मण भी बनते हैं, वे ही आकर पावन दुनिया में राज्य करते हैं। पवित्र बनने के लिए ब्राह्मण भी जरूर बनना है। ... तो तुमको समझाना है - पावन होते ही हैं सतयुग में और पतित होते हैं कलियुग में। अभी तुम हो संगमयुग पर, पतित से पावन बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो।'' सा.बाबा 25.04.09 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और याद / ईश्वरीय सेवा की सफलता का आधार

Q. ईश्वरीय सेवा की सफलता के लिए किस-किस बात की याद रहे और याद एवं सेवा कैसी हो ?

ईश्वरीय सेवा भी परमात्मा की याद में सहयोगी बनती है क्योंकि ईश्वरीय सेवा है ही किसको बाप का परिचय देना, उसको बाप की याद दिलाना, किसको भी बाप की याद करने में सहयोगी बनना। ईश्वरीय सेवा में बिज़ी रहने से अन्य वस्तु और व्यक्तियों की याद स्वत: भूल जाती है, इसलिए जब अन्य वस्तु-व्यक्तियों की याद नहीं होती है तो परमात्मा की याद ही होगी।

परमात्मा की याद में ईश्वरीय सेवा करने से सेवा में सफलता मिलती है। बाबा ने कहा है - याद से तुम्हारे ज्ञान-वाणों में जौहर भरेगा, जो आत्माओं को सहज घायल कर देगा अर्थात् उनको सहज परमात्मा की अनुभूति करायेगा, जिससे उनको भी परमात्मा की आकर्षण होगी और वे परमात्मा के बन जायेंगे, परमात्मा को याद करने लग जायेंगे।

सेवा के मुख्य तीन साधन हैं - मन्सा, वाचा, कर्मणा। मन्सा सेवा अर्थात् सकाश की सेवा अर्थात् परमात्मा की याद में रहते अन्य आत्माओं को याद कर, उनको सहयोग देना। परमात्मा की याद में स्थित होकर लाइट-हाउस, माइट-हाउस होकर आत्माओं को सकाश देना। सर्च-लाइट स्थिति से सेवा करना। वाचा-सेवा अर्थात् वाणी द्वारा आत्माओं को परमात्मा की याद दिलाना, रास्ता बताना। वाचा सेवा की सफलता के लिए बाबा बाबा ने कहा है - वाचा के साथ योगयुक्त स्थिति होगी तो वाचा में जौहर भर जायेगा, वाचा से सेवा करते भी दृष्टि आत्मिक हो। कर्मणा-सेवा अर्थात् योगयुक्त स्थिति में रहकर कर्म करना, जिसको देखकर और भी सीखें अर्थात् हमारा कर्म भी सेवा करे। परमात्मा की याद में कर्म करने कर्म में बल

भरता है, जो आत्माओं को परमात्मा की याद दिलाता है। परमात्मा की याद होगी और आत्माओं के कल्याण की भावना होगी तो आपही आत्मायें खिंच कर आयेंगी, हम उनकी सेवा कर सकेंगे अर्थात् उनकी सेवा होगी। मन्सा, वाचा, कर्मणा तीनों सेवायें साथ-साथ हों, तब सेवा की सच्ची सफलता होगी।

''तुम होली नन्स पवित्र भी बनाती हो और सभी आत्माओं का एक गॉड फादर से बुद्धियोग जुटाती हो ... जो रुहानी हॉस्पिटल खोलते हैं, जहाँ रोगी मनुष्य आकर निरोगी बनते हैं, स्वर्ग का वर्सा लेंगे, अपना जीवन सफल करेंगे, बहुत सुख पायेंगे तो इतने सबकी आशीर्वाद जरूर उनको मिलेगी।''
सा.बाबा 29.10.08 रिवा.

''बाप कहते हैं - सर्विस का सबूत दो, सभी को सुख दो। यहाँ तो बस यह सर्विस की तात लगी रहे, यह चिन्ता रहे। बुद्धियोग बाप के साथ हो। ... यज्ञ की स्थूल सेवा भी करनी चाहिए तो रुहानी सेवा भी जरूर करनी चाहिए। मन्मनाभव का मन्त्र सबको देना है। मन्मना भव है मन्सा सेवा, मध्याजी भव है वाचा सेवा।''
सा.बाबा 10.12.08 रिवा.

''बाप को याद करने से ताक़त आती है। उससे बाप भी खुश होता है। ऐसी अवस्था वाला जिसको भी देखेगा तो उसको भी झट अशरीरी बना देगा। ... सिर्फ शान्ति में बैठना कोई सुख नहीं है। वह है अल्पकाल का सुख। ... योग में कर्म भी करना है। योग से विकर्म विनाश होंगे।''
सा.बाबा 27.12.08 रिवा.

''ज्ञान का प्रैक्टिकल सबूत यही स्नेह और संगठन की शक्ति है। सर्विस की सफलता का मूल आधार यह है। कहाँ भी रहते यह सोचना चाहिए कि किस रीति ऐसी प्लॉनिंग करें, जिससे सन्देश देने का कार्य जल्दी समाप्त हो। ... स्नेह से त्याग का भी जम्प देने का उमंग आता है।''
अ.बापदादा 29.6.71

''सेवा में निमित्त भाव वाले बाप के तरफ सम्बन्ध जोड़ेंगे। अगर सेवा में निमित्त भाव नहीं तो वे बाप के नज़दीक इतना नहीं आयेंगे। ... तो चेक करो सेवा में भाव, भावना और स्वभाव ठीक रहा? ... सभी सन्तुष्ट रहे क्योंकि सेवा की सफलता है सन्तुष्टता का फल प्राप्त हो, खुशी प्राप्त हो।''
अ.बापदादा 31.3.10

''जो सारा दिन इस सर्विस में बिज़ी रहेंगे, वे ही यथार्थ रीति याद भी कर सकेंगे। घड़ी-घड़ी बाप का परिचय देते रहेंगे तो बाप की याद भी रहेगी। ... कई ऐसे भी हैं, जो मुरली भी नहीं सुनते हैं। मुरली सुनने का बहुत शौक होना चाहिए। ... सारा मदार है योग और पढ़ाई पर। बाप का बनने के बाद हर बच्चे को ख्याल आना चाहिए कि हम बाप के बने हैं तो बाप का बनने के बाद स्वर्ग में क्या पद पायेंगे।''
सा.बाबा 8.3.10 रिवा.

''ब्राह्मण परिवार की ऐसे सम्पर्क वाली आत्मा को आपने उमंग-उत्साह दिलाया, सहयोग दिया, स्नेह दिया, यह भी आपका सेवा का पुण्य जमा होता है। गिरे हुए को उठाना, यह भी पुण्य गाया जाता है। ... तो मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में सेवा ऑटोमेटिकली होती रहे।''
अ.बापदादा 30.1.10

''सर्विस के लिए तुम कहाँ भी सतसंगों आदि में जाकर मिक्स होकर बैठ सकते हो। हनुमान का मिसाल है ना। ... तुमको भी चान्स लेना चाहिए। तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। सर्विस में सफलता तब होगी, जब ज्ञान की सब प्वाइन्ट्स बुद्धि में होंगी, ज्ञान में मस्त होंगे।''
सा.बाबा 21.01.10 रिवा.

''जिस समय दूसरों की सर्विस करते तो ध्यान रखना कि दूसरों की सर्विस साथ अपनी भी सर्विस करनी है। आत्मिक स्थिति में अपने को स्थित रखना - यह है अपनी सर्विस। ... अपनी सर्विस नहीं तो दूसरों की सर्विस में सफलता नहीं होगी।''
अ.बापदादा 10.6.71

''जितना अपने संस्कारों का संस्कार करेंगे, उतना ही सत्कार मिलेगा। सभी आत्मायें आपके आगे मन से नमस्कार करेंगी। ... मन से नमस्कार करेंगे, बाप के गुण गायेंगे कि इन्होंको बनाने वाला कौन ? ... बाहर से नमस्कार करने वाले भक्त नहीं बनाना है, लेकिन मानसिक नमस्कार करने वाले बनाने हैं। वे भक्त ही बदलकर ज्ञानी बन जायें।''
अ.बापदादा 10.6.71

''दृढ़ संकल्प करो तो दृढ़ता सफलता को अवश्य लाती है। कमजोर संकल्प उत्पन्न नहीं करो। ... व्यर्थ को मिटाने में मेहनत लगती है और बापदादा के वरदान व दुआओं से भी वंचित रह जाते हैं। सर्व की शुभ भावनाओं की दुआओं से भी वंचित हो जाते हैं। ... शुद्ध शक्तिशाली संकल्पों का घेराव करो, जो कमजोर संकल्प वाले के लिए भी छत्रछाया बन जाये, सेफ्टी का साधन बन जाये।''
अ.बापदादा 14.4.94

''तुम अपने को आत्मा समझकर और दूसरों को भी आत्मा समझकर नहीं सिखलाते हो, याद में न रहने के कारण जौहर नहीं भरता है। इसलिए बहुतों की बुद्धि में नहीं बैठता है। इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं योगयुक्त होकर, याद की यात्रा में रहकर किसको भी समझाओ। याद रहे - हम भाई, भाई को सिखलाते हैं।''
सा.बाबा 19.11.09 रिवा.

''तुम किसके भी पास जाकर समझा सकते हो परन्तु किससे भी बड़ी ठण्डाई और नम्रता से बात करनी है। ... अपने को आत्मा समझ, दूसरों को आत्मा समझ बात करेंगे तो सुनने से ही उनको कशिश होगी। जितना तुम देही-अभिमानी होते जायेंगे, उतना तुम्हारे में कशिश आयेगी।''
सा.बाबा 14.11.09 रिवा.

''तुम बच्चे सर्विस का अच्छी रीति शौक रखो तो बाप की भी याद रहे। योग में पूरा रहकर किसको कुछ भी कहेंगे तो उसको कोई विचार नहीं आयेगा। योग वाले का तीर पूरा लगेगा। ... पहले अपने अन्दर देखो कि हमारे में कोई माया का भूत तो नहीं है। माया के भूत वाले थोड़ेही सर्विस में सक्सेस हो सकते हैं।'' सा.बाबा 14.11.09 रिवा.

''जैसे सर्विसएबुल हो वैसे ही अभी सर्विस में एक तो त्रिकालदर्शीपन का सेन्स भरना है और दूसरा रुहानियत का इसेन्स भरना है। जब यह तीनों अर्थात् सर्विस, त्रिकालदर्शीपन और रुहानियत मिल जायेंगे तो सर्विसएबुल के साथ सक्सेसफुल हो जायेंगे। ... सुनाया था कि ब्रह्मा कुमार के साथ तपस्वी कुमार दिखाई दें।'' अ.बापदादा 20.04.71

''जो स्वयं ही अधीन है, वह दूसरों का उद्धार क्या करेंगे! इसलिए हर एक की सर्विस की सफलता भी इतनी है, जितना वह अधीनता से परे है। तो सर्व प्रकार की सफलता के लिए सर्व अधीनता से परे होना बहुत जरूरी है। इस स्थिति को बनाने के लिए दो शब्द याद रखो। ... दो शब्द हैं - एक साक्षी और दूसरा साथी।'' अ.बापदादा 13.3.71

''तुम बच्चे अन्धों की लाठी बनते हो, सबको बाप का परिचय देने के लिए। ... तुम्हारे अन्दर फर्स्टक्लास गुण होने चाहिए। अगर अपने अवगुण छिपा देंगे तो कोई को इतना तीर नहीं लगेगा।... गायन है - गुरु की निन्दा कराने वाले ठौर न पायें।'' सा.बाबा 17.6.09 रिवा.

''अगर एक बात को धारण कर लें तो सफलता स्वरूप सहज बन सकते हैं, वह कौनसी बात है? (साक्षीपन) हाँ यह बात ठीक है। आज बापदादा भी साक्षी अवस्था की राखी बाँधने के लिए आये हैं। अगर यह साक्षीपन की राखी सदैव बँधी हुई हो तो सर्विस की सफलता बहुत जल्दी निकलेगी।'' (Q. साक्षीपन की स्थित का मूलाधार क्या है? बाबा ने जो ड्रामा का ज्ञान दिया है, वह साक्षीपन का मूलाधार है, उसकी धारणा हो तो ही सदा काल के लिए साक्षीपन की स्थिति रह सकती है।) अ.बापदादा 6.08.70

''चात्रक, पात्र को परखने की भी बुद्धि चाहिए। जो समझने वाला होगा, उसका चेहरा ही बदल जायेगा। ... किसको भी बहुत प्रेम से समझाना है। ... दान भी हमेशा पात्र को किया जाता है। पात्र तुमको कहाँ मिलेंगे? शिव के, लक्ष्मी-नारायण के, राम-सीता के मन्दिरों में।''

सा.बाबा 8.11.05 रिवा.

''बाबा कहते हैं - जो मुझे याद करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ। जो मेरे लिए सर्विस करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ, जिससे उनको बल मिलता है। ... बाप ही सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज सुनाते हैं और वे ही सब शास्त्रों को जानते हैं।''

सा.बाबा 16.04.09 रिवा.

''ज्ञान तलवार में योग का जौहर चाहिए। खुशमिज़ाज और योगी होगा तो नाम निकालेंगे। ... बाप को जितना याद करेंगे, उतना लव रहेगा, कशिश होगी। सुई साफ है तो चुम्बक की तरफ खिंचती है। कट होगी तो खिंचेगी नहीं। यह भी ऐसे है। दूसरों को ज्ञान देते रहो तो बहुतों की आशीर्वाद मिल जाती है।'' सा.बाबा 5.03.09 रिवा.

''किसको घायल करने में योगबल चाहिए। ... योगबल से तुम किसको कशिश कर सकेंगे। अभी बच्चे भल भाषण अच्छा करते हैं परन्तु योग की कशिश कम है। मुख्य बात है योग की। ...इस ज्ञान-योग से तुम्हारे अन्दर डान्स होती है। बाप की याद में रहते-रहते तुम अशरीरी बन जाते हो। बुद्धि में ज्ञान भी चाहिए।'' सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''तुम्हारे पास फर्स्ट क्लास चीज है। कोई कहे इससे क्या फायदा है? बोलो, हमारा फर्ज है अन्धों की लाठी बन रास्ता दिखाना। ... तुम सबको चढ़ती कला का रास्ता बताते हो। एक बाप को याद करते रहो तो तुमको बहुत खुशी होगी और विकर्म भी विनाश होंगे।''

सा.बाबा 7.3.09 रिवा.

''तुमको बार-बार कहा गया है कि तुम अपने को आत्मा समझ भाई-भाई को को यह ज्ञान सुनाओ। बुद्धि में रहे - बाबा की नॉलेज हम भाइयों को सुनाते हैं।... तुमको अभी जो ये ज्ञान रतन मिलते हैं, ये अविनाशी रतन बन जाते हैं।'' सा.बाबा 5/8.02.09 रिवा.

''जो समझने के लिए आते हैं, उनसे फॉर्म भराना चाहिए ... फॉर्म जो भराते हैं, उस पर ही सारा मदार होना चाहिए। कोई बच्चे भल समझाते बहुत अच्छा हैं परन्तु योग है नहीं, अशरीरी बन बाप को याद करें, वह है नहीं। ... बाप वार्निंग देते हैं - ऐसे मत समझो कि हम तो बहुत अच्छा कनविन्स कर सकते हैं परन्तु इससे फायदा ही क्या।'' सा.बाबा 4.02.09 रिवा.

''कोई भी समस्या या कोई भी वायुमण्डल में रहते न्यारा और प्यारा रहना। क्योंकि समय तो दुख का है, भय का है लेकिन आपके लिए सदा मन में खुशी के नगाड़े बजते रहते हैं। ... इतनी खुशी हो जो खुशी बाँटो भी और खुश रहो भी।... अपना खुशनसीब का टाइटिल सदा याद रखना क्योंकि बाप मिला अर्थात् सर्व प्राप्तियों का भण्डार मिला।''

अ.बापदादा 18.1.09 सेवा का टर्न

''देह-अभिमान क्या आता है? जो भी कोई विशेषता है, उस विशेषता के कारण अभिमान रहता है। मैं कोई कम हूँ, मेरा भाषण सबको पसन्द आता है। ... मेरा कोर्स कराना बहुत अच्छा है। ... सेवा में आगे बढ़ने में यह अभिमान अपने प्रति भी आता है और दूसरे के गुण या कला या विशेषता के प्रति प्यार हो जाता है।'' अ.बापदादा 5.02.09

''कोई न कोई शान्ति का, खुशी का, सुख का, आत्मिक प्रेम का अनुभव कराओ। ... प्रेम-

प्यार का अनुभव करके जाते हैं लेकिन अतीन्द्रिय सुख की फीलिंग, शान्ति का रुहानी नशा अभी वायुमण्डल और वायब्रेशन द्वारा अनुभव कराने का विशेष अटेन्शन रखो।''

अ.बापदादा 5.02.09

''साधारणता को श्रेष्ठता में बदली करो, हर कार्य में सहनशीलता को सामने रखो और अपने चेहरे पर, वाणी पर सरलता को धारण करो। फिर देखों सर्विस वा कर्तव्य की सफलता कितनी श्रेष्ठ होती है। ... अगर स्थिति में प्लेन हो जायेंगे फिर प्लान और प्रैक्टिकल एक हो जायेंगे। ... सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' अ.बापदादा 7.6.70

''बाप का फरमान है - अपने को आत्मा समझ भाई-भाई को देखो, इस शरीर को भूल जाओ। ... राज्य-भाग्य लेना है, विश्व का मालिक बनना है तो यह मेहनत करो। भाई-भाई समझ सभी को ज्ञान दो तो फिर यह आदत पक्की हो जायेगी। ... बाप बच्चों सहित सर्विस कर रहे हैं, सर्विस करने की बाप हिम्मत देते हैं।'' सा.बाबा 6.1.09 रिवा.

''ज्ञान सुनाते हो, योग कराते हो तो भी अपने को आत्मा समझ भाइयों को देखते रहेंगे तो सर्विस अच्छी होगी। ... बाप भी कहते हैं - मैं आत्माओं को देखता हूँ, आत्मायें भी कहती हैं - हम परमात्मा बाप को देख रहे हैं, उनसे नॉलेज ले रहे हैं।... इससे तुम्हारे ज्ञान में जौहर भर जायेगा तो किसको भी समझाने से झट तीर लग जायेगा।'' सा.बाबा 6.1.09 रिवा.

''अगर बहुत समय का लिंक अन्त तक अटूट रहा तो एक्सट्रा हेल्प मिल सकती है। ...सर्विस की सब्जेक्ट में इन्चार्ज बनना आता है लेकिन याद की सब्जेक्ट में बैटरी चार्ज करना बहुत कम आता है। ... साकार रूप में सर्विस की जिम्मेवारी सभी से ज्यादा थी ... रेस्पॉन्सिबिलिटी के संकल्पों में थे फिर भी सागर की लहरों में देखते थे वा सागर के तले में देखते थे ?''

अ.बापदादा 2.4.70

''सेवा में ललकार तब होगी, जब कोई भी बात को अंगीकार नहीं करेंगे अभी क्या होता है, कई बातों को अंगीकार कर लेते हैं। चाहे स्थूल में चाहे सूक्ष्म में। जब संकल्प में भी अंगीकार न हो तब ललकार हो। ... यह सब 'मैं-पन' निकलकर 'बाबा-बाबा' शब्द आयेगा, तब ललकार होगी।'' अ.बापदादा 2.4.70

''यह सब 'मैं-पन' निकलकर 'बाबा-बाबा' शब्द आयेगा, तब ललकार होगी। परमात्मा में ही परम बल होता है, आत्माओं में यथा शक्ति होता है। ... साकार रूप में सब कुछ दिखाया है। कभी कहा कि मैं यह चला रहा हूँ, मैंने मुरली अच्छी चलाई... यह अंगीकार करना खत्म हो जाना है। इसको कहा जाता है - जो वायदा किया है, वह निभाया।''

अ.बापदादा 2.4.70

ईश्वरीय सेवा की सफलता का दर्पण

हमारी ईश्वरीय सेवा यथार्थ है, हम सेवा में सफल हो रहे हैं, हमारी सेवा से अन्य आत्माओं का जीवन लाभान्वित हो रहा है, हमारी सेवा से परमात्मा, अन्य आत्मायें और हम स्वयं सन्तुष्ट है, उसकी चेकिंग के लिए यथार्थ दर्पण क्या है ? बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि सेवा मेवा है अर्थात् सेवा आत्मा को स्वस्थ बनाती है और स्वस्थ आत्मा जीवन में सुख-शान्ति की अनुभूति करती है। परमात्मा पिता की छत्रछाया जीवन में अनुभव होगी, उसका प्यार अनुभव होगा, उसकी दुआयें अनुभव होंगी। सेवा आत्मा को डायरेक्ट खुशी प्रदान करती है। सेवा से हमारा ज्ञान प्रशस्त होता है, जिससे हमको ज्ञान का सच्चा सुख अनुभव होता है अर्थात् हमको भी सन्तुष्टता प्राप्त होती है। सेवा से अन्य आत्माओं को सुख-शान्ति की अनुभूति होती है, इसलिए वे भी सन्तुष्टता का अनुभव करती हैं और उनके दिल से सेवा करने वाले के प्रति दुआयें निकलती हैं, जो सेवा करने वाले को वर्तमान में तो खुशी देती ही हैं और भविष्य में भी समय पर काम आती हैं। संक्षेप में कहें तो सेवा की सफलता का दर्पण है -

स्वयं खुश, अन्य आत्मायें भी खुश,
आत्मायें अपना जीवन बनाने का पुरुषार्थ करने लगें,
स्वयं को, सेवा साथियों को और अन्य आत्माओं को सन्तुष्टता की अनुभूति होगी,
सेवा में दिन-प्रतिदन रुचि, उमंग-उत्साह बढ़ेगा,
परमात्मा के विशेष प्यार की अनुभूति होगी, आदि-आदि

''बापदादा तीव्रगति में आगे बढ़ने के लिए बच्चों को विशेष अटेन्शन दिलाते हैं कि सिर्फ एक वाचा की सेवा नहीं, लेकिन जब सेवा करते हो तो एक ही समय पर तीन सेवायें इकट्ठी करो। मन्सा द्वारा सकाश दो, वाचा द्वारा ज्ञान दो और कर्मणा अर्थात् अपने सम्पर्क द्वारा, सम्बन्ध द्वारा, चेहरे द्वारा भी सेवा हो। उसका प्रभाव साथ-साथ सेवा में हो।''

अ.बापदादा 31.3.10

''मन्सा द्वारा सकाश दो, वाचा द्वारा ज्ञान दो और कर्मणा अर्थात् अपने सम्पर्क द्वारा, सम्बन्ध द्वारा, चेहरे द्वारा भी सेवा हो। उसका प्रभाव साथ-साथ सेवा में हो। ... चेक करो ऐसी सेवा हो रही है। ... सेवा तो करते हो लेकिन सेवा में साथ-साथ अपने में और साथियों में सन्तुष्टता है क्योंकि सेवा का फल है सन्तुष्टता वा खुशी।'' अ.बापदादा 31.3.10

''सेवा की सफलता की तीन बातें विशेष सुनाई थी, याद होंगी। पहला नम्बर सेवा अर्थात्

निमित्त भाव, दूसरा निर्माण भावना और तीसरा निर्मल वाणी। भाव, भावना और स्वभाव - यह तीनों सेवा में साथ-साथ हैं तो स्वयं भी सन्तुष्ट, साथी भी सन्तुष्ट और जिनकी सेवा की, वे भी आगे बढ़ते जायेंगे।'' अ.बापदादा 31.3.10

''आप लोग सबके आगे दर्पण के रूप में हो। आप नॉलेज की स्थिति के दर्पण से अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराने वाले दर्पण हो। तो जितना दर्पण पॉवरफुल होगा, उतना साक्षात्कार स्पष्ट होगा। ... जो भी सामने आये तो उसको अपना साक्षात्कार ऐसा स्पष्ट हो, जो वह स्मृति उसको कभी न भूले।'' अ.बापदादा 11.7.71

''बाबा जो काम देते हैं, वह करके दिखाना चाहिए, तो बाबा देखेंगे कि किसमें पूरा ज्ञान है। कई बच्चे तो मुरली पर भी ध्यान नहीं देते हैं, मुरली रेगुलर पढ़ते नहीं हैं। जो मुरली नहीं पढ़ते हैं, वे किसका क्या कल्याण करते होंगे। ... बाबा को हर एक की सर्विस से मालूम तो पड़ता है ना कि इसमें कितना ज्ञान है।'' सा.बाबा 1.03.10 रिवा.

''सर्विस करने वाले बच्चों को गुप्त नशा रहना चाहिए। नशे से किसको समझायेंगे तो सफलता होगी। ... इस महाभारत लड़ाई के बाद नई दुनिया की स्थापना होनी है। बच्चों को अभी यह नॉलेज मिलती है, यह भी सब नम्बरवार धारण करते हैं। योग में भी नम्बरवार ही रहते हैं। यह भी अपनी जाँच करनी चाहिए कि हम कितना बाप की याद में रहते हैं।''

सा.बाबा 6.2.10 रिवा.

''बाप की नॉलेज और बाप का वर्सा, यह दोनों सदा स्मृति में रहेंगे तो सदैव हर्षित रहेंगे। ... जिनमें ज्ञान और योग नहीं है, सर्विस में तत्पर नहीं हैं तो फिर अन्दर में इतनी खुशी भी नहीं रहती है। दान करने से मनुष्य को खुशी होती है।... अच्छे कर्मों का फल भी अच्छा मिलता है।'' सा.बाबा 28.01.10 रिवा.

''आजकल के अधूरी नॉलेज प्राप्त करने वालों को भी अल्पकाल के लिए सफलता की प्राप्ति का अनुभव होता है तो सम्पूर्ण श्रेष्ठ नॉलेज से प्रत्यक्ष प्राप्ति का अनुभव भी अभी ही करना है। ऐसे नहीं समझना कि इस नॉलेज की प्राप्ति भविष्य में होनी है। नहीं, वर्तमान समय में ही नॉलेज से प्राप्ति का अनुभव अपने पुरुषार्थ की सफलता और सेवा में सफलता से होता है। उस सफलता के आधार पर अपनी नॉलेज की धारणा को जान सकते हो।'' अ.बापदादा 19.4.71

''सर्विस पर ही सारा मदार है। सर्विस से ही बाप बतायेंगे कि इनको इन्जेक्शन लगा है या नहीं। ... गाते भी हैं बेहद का बाबा आप जब आयेंगे तो हम आपके ही बनेंगे। आपकी मत पर ही चलेंगे। भक्ति में तो बाप का पता ही नहीं है। यह पार्ट अभी ही चलता है।''

सा.बाबा 5.08.09 रिवा.

''सर्विस की सफलता का स्वरूप यही है कि सर्व आत्माओं को बाप के स्नेही और बाप के कर्तव्य में सहयोगी और पुरुषार्थ में उन आत्माओं को शक्तिरूप बनाना। यह है सर्विस की सफलता का स्वरूप। जिन आत्माओं की सर्विस करो, उन आत्माओं की यह तीनों (स्नेही, सहयोगी और शक्तिरूप) ही क्वालीफिकेशन प्रत्यक्ष रूप में देखने में आनी चाहिए। ... तीनों हैं तब सर्विस की सफलता है।'' अ.बापदादा 6.08.70

''कोई ऐसा निकले, जो अपना अनुभव सुनाये कि वास्तव में परमात्मा का परिचय जो ये ब्रह्मा कुमारियाँ-कुमार देते हैं, वह राइट है। उनके मुख से ये अथॉरिटी के बोल निकलें। आखिर एक प्वाइन्ट रही हुई है - गीता का भगवान कौन ? वह भी तो सिद्ध होगी ना। जब वह सिद्ध हो तब कहें भगवान आ गया।'' अ.बापदादा 7.04.09

''मीडिया द्वारा चारो ओर दिखायें, ऐसा कोई प्रबन्ध करें। तो क्या है अगर घर बैठे सभी को देखने को मिलता है तो वह भी आपका उल्हना पूरा हो जाता है। ... हो सकता है कि मीडिया वाले चारो तरफ आपका फंक्शन देख आपकी शुभ भावना देख साथी-सहयोगी भी बन जायें। तो सेवा करो लेकिन सेवा के साथ-साथ अपने बेहद के वैराग्य की चेकिंग भी जरूर रखना। बैलेन्स हो।'' अ.बापदादा 7.04.09 सेवा का टर्न ईस्टर्न

''तुम ब्राह्मणों में भी ये बातें नम्बरवार समझते हैं। जो खुद ही पूरा नहीं समझा होगा, वह औरों को क्या समझायेगा। ... जितनी तुम्हारे में ज्ञान की ताक़त भरती जायेगी तो तुम चुम्बक बन जायेंगे, सबको कशिश होगी।'' सा.बाबा 3.02.09 रिवा.

''अभी तक ब्रह्मा-कुमारियाँ अच्छा काम कर रही हैं, ब्रह्मा-कुमारियों का ज्ञान अच्छा है। लेकिन देने वाला कौन ? चलाने वाला कौन ? सोर्स कौन ? बाबा शब्द भी आप सबका सुनकर कहते हैं। बाबा है इन्हों का, लेकिन मेरा वही बाबा है, बाबा की प्रत्यक्षता अभी गुप्त रूप में है। बाबा-बाबा कहते हैं लेकिन मेरा बाबा, मैं बाबा का, यह कोटों में कोई के मुख से निकलता है।'' अ.बापदादा 5.02.09

Q. सकाश देने की सेवा क्या है, उसका विधि-विधान क्या है ?

''सर्च-लाइट वे बन सकेंगे, जो स्वयं को सर्च कर सकते हैं। जितना जो स्वयं को सर्च कर सकेंगे, उतना ही सर्च-लाइट बनेंगे। ... अभी पॉवरफुल भी नहीं लेकिन विल-पॉवर वाला बनना है। अपने में विल-पॉवर और वाइड पॉवर चाहिए। विल-पॉवर और वाइड-पॉवर अर्थात् बेहद की तरफ दृष्टि-वृत्ति।'' अ.बापदादा 2.07.70

''कोई सर्विसएबुल बच्चा है तो उसको मदद करनी होती है। शरीर को याद कर फिर आत्मा

को याद करना है। ... खुद को आत्मा समझ, उनकी आत्मा को याद करना होता है। यह जैसे सर्चलाइट देना होता है। ... दूसरे को करेण्ट देनी है तो फिर रात्रि को भी जागो।''

सा.बाबा 20.03.09 रिवा.

''सर्विसएबुल बच्चा बीमार होगा तो बाप को भी तरस पड़ेगा। रात को जागकर भी उनकी आत्मा को याद करेंगे क्योंकि उनको पॉवर की दरकार है। याद करते हैं तो उनको रिटर्न में याद मिलती है। बाप का बच्चों पर जास्ती लव है।'' सा.बाबा 20.03.09 रिवा.

''यह बच्ची अनन्य बहुत अच्छी है, इनको सर्विस बिगर कुछ सूझता नहीं है। ... बाबा को और धन्धा क्या है। सबको याद करते हैं। ... याद करना माना सकाश देना। आत्मा का कनेक्शन परमात्मा के साथ रहता है ना।'' सा.बाबा 8.03.09 रिवा.

''भक्ति और ज्ञान में बहुत फर्क है। भक्ति में कितने अच्छे-अच्छे गीत गाते हैं परन्तु वे किसका कल्याण नहीं करते हैं। कल्याण तो है ही अपने स्वधर्म में टिकने में और बाप को याद करने में। तुम्हारा स्वधर्म शान्ति है। तुम्हारा याद करना ऐसा ही है जैसे लाइट हाउस फिरता है।'' सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

Q. किसी आत्मा को याद करने और सकाश देने में क्या अन्तर है?

Q. किसी आत्मा को सन्देश देने और सकाश देने में क्या अन्तर है?

किसी आत्मा को हम सेवा के अर्थ भी याद कर सकते हैं और स्वार्थवश भी याद कर सकते हैं। यदि स्वार्थवश याद करते हैं तो उसके साथ हमारा हिसाब-किताब बनता है, हमारी आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है अर्थात् हमारी उतरती कला होती है। जब हम परमात्मा की याद में अपना ईश्वरीय कर्तव्य समझकर किसी आत्मा को उसके कल्याणार्थ, ईश्वरीय सन्देश देने अर्थ, वह आत्मा अपने ईश्वरीय जीवन में सफल हो, उसके लिए उसको सहयोग देने अर्थ याद करते हैं तो वह हमारी सेवा है और उससे हमारा भाग्य बनता है, हमारी चढ़ती कला होती है। यहाँ विशेष बात ये है कि किसी आत्मा को ईश्वरीय सेवार्थ भी याद करते हैं तो बीच में परमात्मा जरूर होना चाहिए, तब ही वह हमारी सेवा होगी और हम उस सेवा में सफल होंगे। परमात्मा को याद कर किसी आत्मा को याद करने से उसे भी परमात्मा की याद आयेगी।

किसी आत्मा को याद करते हैं तो उसको भी हमारी याद अवश्य आयेगी परन्तु जब हम उसको परमात्मा की याद में स्थित होकर सकाश देंगे तो उसे भी परमात्मा की याद आयेगी, जिससे वह आत्मा अपने में शक्ति अनुभव करेगी। सकाश देने से उस आत्मा की बुद्धि परमात्मा की तरफ आकर्षित होती है। सकाश देना अर्थात् किसी आत्मा को शान्ति और

सुख का अनुभव कराना, निर्विघ्न बनाना, उसकी समस्या का समाधान कर देना।

सन्देश देना अर्थात् किसी आत्मा को ठिकाना बताना अर्थात् परमात्मा को याद करने की प्रेरणा देना, सुख-शान्ति के लिए सेवाकेन्द्र का पता बताना अर्थात् अमुख स्थान पर जाओ तो परमात्मा का ज्ञान मिलेगा, मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता मिलेगा, परिस्थिति से पार होने के लिए समाधान मिलेगा परन्तु सकाश देने से उसको परमात्मा का अनुभव होगा, मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होगा, परिस्थिति पर विजय पाने के लिए समधान मिलेगा, शक्ति मिलेगी। सन्देश वाचा से भी दिया जा सकता है परन्तु सकाश मन्सा द्वारा ही दिया जाता है, उसके लिए मन्सा शक्तिशाली चाहिए, मन्सा में कोई विघ्न नहीं होना चाहिए, तब ही हम सकाश देने में सफल होंगे।

Q. किसी आत्मा को याद करना और उसके स्व-स्वरूप और परमात्मा की याद दिलाने और सकाश देने में क्या अन्तर है?

याद हम अपने स्वार्थ से, मोह से भी करते हैं परन्तु उसके स्व-स्वरूप की याद दिलाते, परमात्मा की याद दिलाते हैं, वह उसके कल्याणार्थ के लिए होता है, इसलिए उसे सुकर्म कहा जाता है, उससे याद दिलाने वाली आत्मा का पुण्य का खाता जमा होता है। आत्मा को उसके स्व-स्वरूप की और परमात्मा की याद दिलाना सुकर्म है परन्तु उसको याद करना सुकर्म नहीं है अर्थात् किसी आत्मा को याद करने मात्र से पुण्य का खाता जमा नहीं होता है।

सकाश देना अर्थात् उसे अपनी देह और देह की दुनिया भुला देना और परमात्मा की याद में स्थित कर देना, जिससे वह आत्मा अपने में शक्ति और शान्ति का अनुभव करेगी। सकाश देने के लिए देने वाली आत्मा को परमात्मा की याद होगी, तब वह सकाश दे सकेगा अर्थात् उस आत्मा का कल्याण कर सकेगा।

Q. सकाश और दृष्टि में क्या अन्तर है?

दृष्टि अर्थात् किसी आत्मा को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उसके मूल स्वरूप में देखना, उसके गुण-विशेषताओं को देखना परन्तु सकाश अर्थात् उसमें अपनी दृष्टि से शक्ति का संचार करना। दृष्टि से उस आत्मा को अपने आत्मिक स्वरूप की अनुभूति नहीं होगी परन्तु सकाश देने से वह भी अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अतीन्द्रिय सुख की अर्थात् परमाननद की अनुभूति करेगी क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है।

दृष्टि में गुण-अवगुण दोनों दिखाई देते हैं और वे अपने को भी प्रभावित कर सकते हैं इसलिए अवगुण से बुद्धि हटाकर गुणों पर केन्द्रित करने से उसका भला होता है परन्तु सकाश में देने का संकल्प होता है तो उसके अवगुणों की ओर ध्यान नहीं जाता है, उसके

कल्याण की भावना रहती है। सकाश देने में लेने का नाम-निशान नहीं होता, इसलिए गुण-अवगुण देखने का प्रश्न ही नहीं उठता।

Q. सकाश और लाइट-हाउस, माइट-हाउस, सर्च-लाइट में क्या अन्तर है ?

लाइट-हाउस अर्थात् आत्मा-परमात्मा के गुणों और शक्तियों का, ईश्वरीय ज्ञान का चिन्तन कर उसके वायब्रेशन्स निर्वाध रूप से वातावरण में प्रसारित करना।

माइट-हाउस अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप या परमात्मा की याद में शक्ति रूप बन शक्ति के वायब्रेशन्स वातावरण में प्रसारित करना।

सर्च-लाइट अर्थात् शक्ति के वायब्रेशन्स किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष पर फेंकना अर्थात् अपने वायब्रेशन से उसको प्रभावित करन। सर्च-लाइट अर्थात् शक्ति के वायब्रेशन्स देकर आत्मा को जाग्रत करना और आभास कराना कि हम यहाँ है अर्थात् यहाँ से रास्ता मिल सकता है।

सकाश अर्थात् लाइट-माइट से सम्पन्न होकर किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष पर लाइट-माइट फैलाना, जिससे आत्मायें स्वत: ही लाइट-माइट का अनुभव करें। सकाश अर्थात् परमात्मा से शक्ति लेना है और सर्व आत्माओं को देना है। परमात्मा से लाइट-माइट लेने वाली भरपूर आत्मा ही औरों को लाइट-माइट दे सकती है। परमात्मा को भूला हुआ, कोई कमजोर आत्मा अर्थात् जिसमें शक्ति की कमी है, इच्छा-आकांक्षाओं के वशीभूत है, ऐसी आत्मा सकाश नहीं दे सकती है। जो स्वयं ही सम्पन्न नहीं है, भरपूर नहीं है, वह औरों को कैसे दे सकता है क्योंकि पहले तो वह स्वयं में ही भरना चाहेगा।

यदि कोई आत्मा स्वयं ही खाली है तो शक्ति उसमें ही रुक जायेगी क्योंकि वह स्वयं ही खाली है। जो भरपूर है, उससे ही परमात्मा के द्वारा आने वाली शक्ति अन्य आत्माओं के लिए जा सकती है क्योंकि भरपूर होने के कारण उसमें अपने अन्दर रखने की इच्छा नहीं है। जब हमारी स्थिति निर्संकल्प, निर्भय, निश्चिन्त, निस्वार्थ, भरपूर होगी, सम्पन्न होगी, तब ही हम किसी आत्मा को सकाश दे सकेंगे।

निर्संकल्प स्थिति वाली आत्मा ही किसको सकाश दे सकती है। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, शत्रुता-मित्रता के वशीभूत आत्मा कब किसको सकाश दे नहीं सकती क्योंकि वह कभी निर्संकल्प स्थिति में स्थित नहीं हो सकता।

''कोई भी बड़ी सभा में भाषण आदि में यही समझाना है - परमपिता परमात्मा फिर से कहते हैं - हे बच्चे, देह सहित देह के सब धर्म त्याग अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप खत्म होंगे।'' सा.बाबा 26.11.08 रिवा.

''प्रॉब्लम का दरवाजा बन्द। डबल लॉक लगाना। डबल लॉक है - याद और सेवा। मन्सा सेवा सदा हाजिर है। ऐसे नहीं कि सेवा का चान्स ही नहीं मिला ... मन्सा के लिए कोई नहीं रोकता है। रात को भी जागकर मन्सा सेवा कर सकती हो। मन्सा सेवा अर्थात् सकाश दो, आत्माओं का आवाह्न करो। बेचारे दुखी है, उनको सहारा दो।'' अ.बापदादा 15.11.08

''अलौकिक सर्विस क्या करते हो। आत्मा का कनेक्शन पॉवरहाउस के साथ करने की सर्विस करते हो। तार का तार के साथ कनेक्शन करना होता है तो रबड़ उतारना होता है। वैसे ही आपका पहला कर्तव्य है - अपने को आत्मा समझ शरीर के भान से अलग रहना और औरों को भी शरीर के भान से अलग बनाना अर्थात् अनुभव कराना।'' अ.बापदादा 23.1.70

''दुखियों को सुख की अन्चलि देनी है। एक तो मन्सा सेवा द्वारा सकाश दो और दूसरा अपने चेहरे और चलन द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करो। ... अभी एक सेवा रही हुई। सबके दिल से यह आवाज़ निकले कि अभी बाप आया है, परमात्मा आ गया है, परमात्म-ज्ञान यह दे रहे हैं, मेरा बाप वर्सा देने आ गया है। बाप की तरफ नज़र जाने से उन्होंको भी परमात्म-प्यार, परमात्मा की आकर्षण आकर्षित करेगी। ... बाप की प्रत्यक्षता आकर्षित कर अच्छा बनायेगी।''

अ.बापदादा 15.3.10

''सेवाधारी का एक सेकेण्ड वा एक संकल्प भी सेवा के सिवाए नहीं जा सकता। इसको कहते हैं सच्चा रुहानी सेवाधारी। रुहानी सेवाधारी तो रूह अथवा आत्मा से भी सेवा कर सकते हैं। जैसे लाइट-हाउस एक स्थानपर होते हुए भी चारो ओर अपनी लाइट द्वारा सेवा करते हैं। ... ज्ञान स्वरूप है लाइट-हाउस और योगयुक्त अवस्था है माइट-हाउस।'' अ.बापदादा 11.6.71

''आप लोग नॉलेज और याद की सर्चलाइट द्वारा मार्ग दिखलाने वाले सर्चलाइट हो। ... संकल्प है कि हम विजयी रतन हैं, तो स्वरूप भी विजय का ही बन जाता है। ... विजय का तिलक सर्विसएबुल आत्माओं को लगा हुआ है। सर्विस अर्थात् विजय का तिलक लगा है।''

अ.बापदादा 10.6.71

''जो मेरे सिकीलधे सपूत बच्चे हैं, ज्ञान धारण कर पवित्र रहते हैं, सच्चे ज्ञानी-योगी हैं, वे मुझको प्यारे लगते हैं। ... तुम बच्चे इस समय नर्क को स्वर्ग बनाने वाले हो, तुम सारे जगत को रोशनी देने वाले हो, जागृत करने वाले हो। और तो सभी कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े हैं।''

सा.बाबा 22.12.09 रिवा.

''सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा का साक्षात्कार होता है, तुम भी ऐसे सूक्ष्म वतनवासी बनो। मूवी की प्रैक्टिस करनी है। धीरे से बहुत कम बोलना है, मीठा बोलना है। ऐसा पुरुषार्थ करते-करते तुम शान्ति के टॉवर बन जायेंगे। तुमको सिखलाने वाला बाप है। तुमको सीखकर फिर औरों को

भी सिखलाना है।'' सा.बाबा 3.12.09 रिवा.

''तुमको लाइट-हाउस भी कहा जाता है, बाप को भी लाइट-हाउस कहा जाता है। तुम एक ऑख में शान्तिधाम और दूसरी ऑख में सुखधाम रखो। उठते-बैठते, चलते-फिरते तुम लाइट होकर रहो और सबको सुखधाम-शान्तिधाम का रास्ता बताते रहो।''

सा.बाबा 5.09.09 रिवा.

''लाइट-हाउस बनने से तुम अपना भी कल्याण करते हो और दूसरों को भी रास्ता बताते हो। ... जो भी मिले, उसको शान्तिधाम-सुखधाम का रास्ता बताते रहो। ... लाइट-हाउस भी इशारा देता है। सबकी नैया रावण की जेल में लटक पड़ी है। ... सभी का बेड़ा पार करना, यह है सच्ची सोशल सेवा।'' सा.बाबा 5.09.09 रिवा.

''जिस समय स्टेज पर आओ, तो लोगों को आपकी आन्तरिक स्टेज का साक्षात्कार हो।... के साथ यह तैयारी भी करो और देखो अलंकारी बनकर स्टेज पर आ रही हूँ। लाइट हाउस, माइट हाउस दोनों ही स्वरूप इमर्ज रूप में हों। जब दोनों स्वरूप इमर्ज रूप में होंगे तब ही ठीक रीति से गाइड कर सकेंगे।'' अ.बापदादा 11.2.71

''जो सर्विसएबुल बच्चे हैं, वे बाप को बहुत प्यारे लगते हैं। बाबा अच्छे सर्विसएबुल बच्चों को चुन-चुन कर सर्चलाइट देते हैं, वे भी जरूर बाबा को याद करते हैं। सर्विसएबुल बचचों को बाप और दादा दोनों याद करते हैं, सर्चलाइट देते हैं। याद करो तो याद का रेस्पान्स मिलेगा।'' सा.बाबा 14.04.09 रिवा.

''प्रजापिता ब्रह्मा को देखो कितने ढेर बच्चे हैं। बुद्धि हद से निकलकर बेहद में चली गई है। ... तुम्हारी बुद्धि ऊपर से लेकर नीचे तक चक्कर लगाती रहती है। तुम लाइट-हाउस, सबको रास्ता बताने वाले हो। ... तुम अशरीरी आये थे, पवित्र थे, फिर अशरीरी होकर ही वापस जायेंगे। मामेकम् याद करो तो पाप कट जायेंगे।'' सा.बाबा 01.01.09 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और विश्व-नाटक अर्थात् ड्रामा

ये सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। जैसे इसमें आत्माओं और प्रकृति का सारे कल्प का पार्ट नूँधा हुआ है, उसी प्रकार इसके अनादि-अविनाशी विधि-विधान अनुसार संगमयुग पर ईश्वरीस सेवा का भी पार्ट नूँधा हुआ है, जिस अनुसार जो आत्मायें परमात्मा की बनती हैं, वे विश्व-सेवा के लिए भी निमित्त बनती हैं और उस सेवा अनुसार उनको नई दुनिया में पद, राज्य-भाग्य की प्राप्ति होती है। इस सब राज़ को

समझने वाले अपने पार्ट और समझ के अनुसार सेवा करते हैं और सेवा करके अपना भाग्य बनाते हैं।

''अपनी आपही जाँच रखेंगें तो कोई भूल नहीं होगी। ... बाबा भी बहुत मदद करते हैं। औरों का भी कल्याण करना है। वह भी ड्रामा में नूँध है। एक सेकेण्ड न मिले दूसरे से। ... यह सेकेण्ड फिर 5 हजार वर्ष के बाद रिपीट होगा। यह भी अच्छी रीति समझना है।''

सा.बाबा 2.05.09 रिवा.

''विश्व का आधार आप आत्माओं के ऊपर है। तो जो विश्व के आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हैं, उनके मुख से कमजोरी के शब्द शोभते नहीं हैं। ... आप मूर्तियों के द्वारा ही कोई को मुक्तिधाम और कोई को जीवनमुक्ति धाम का वर्सा बाप से मिलना है। ... सभी आत्माओं को आप लोगों के द्वारा अपना-अपना यथा पार्ट तथा बाप का वर्सा जरूर लेना है।''

अ.बापदादा 30.7.70

''लक्ष्मी-नारायण कोई एक नहीं होते, इन्हों की डिनायस्टी होगी। ... राजायें तो बहुत बनते हैं ना। सारी माला बनी हुई है। माला को सुमिरण करते हैं ना। जो बाप के मददगार बन बाप की सर्विस करते हैं, उन्हों की ही माला बनती है। जो पूरे चक्र में आते हैं, पूज्य और पुजारी बनते हैं, उनका ही यह यादगार है।... माला का यह राज़ तुम ही जानते हो।''

सा.बाबा 5.02.10 रिवा.

''बाप कितनी अच्छी-अच्छी बातें समझाते हैं तो तुमको कितनी खुशी रहनी चाहिए। हम स्टूडेण्ट हैं, बाबा हमारा बाप, टीचर, सत्गुरु है। अभी हम बाप से वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी सुन रहे हैं। जो सुनते हैं, वह औरों को भी सुनाते हैं। ... स्कूल-कॉलेजों में भी यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझानी चाहिए।''

सा.बाबा 9.01.10 रिवा.

''वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझनी और समझानी चाहिए ना। मनुष्य ही समझेंगे और वर्ल्ड का मालिक ही वर्ल्ड की हिस्ट्री, जॉग्राफी समझा सकते हैं।... किसको समझाने के लिए परखने की भी बुद्धि चाहिए ना। देखना चाहिए कि बुद्धि में कुछ बैठता है या नहीं। नब्ज़ देखनी चाहिए। नब्ज़ देखकर दवाई देनी होती है।''

सा.बाबा 9.01.10 रिवा.

''तुम ही ऊंच ते ऊंच पद पाते हो और फिर तुम ही उतरते भी ऐसे हो। ... हर एक एक्टर को अपना-अपना अविनाशी पार्ट मिला हुआ है, किसको किस समय क्या पार्ट बजाना है, वह निश्चित है। यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, जिसका राज़ बाप समझाते हैं। बाप तुमको समझाते हैं, तुमको फिर अपने अन्य भाइयों को समझाना है।''

सा.बाबा 12.12.09 रिवा.

''बाबा ने आकर ड्रामा का राज़ अच्छी रीति समझाया है, जो तुमको अच्छी रीति समझकर औरों को भी समझाना है। ... यह सारा ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए और क्रिमिनल आईज़ को ज्ञान से सिविल बनाना है।'' सा.बाबा 27.11.09 रिवा.

''तुमको स्मृति आई है कि हम आत्मा अविनाशी हैं, उसमें पार्ट भी अविनाशी है, जो चलता ही रहेगा। यह बनी बनाई बन रही... इसमें नई बात कोई एड वा कट नहीं हो सकती है।... स्मृति में होगा तो औरों को भी स्मृति दिलायेंगे। तुम्हारा धन्धा ही यह है।''

सा.बाबा 12.08.09 रिवा.

''अभी तुम सारे ड्रामा को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जान गये हो। जो जितना अच्छी रीति जानते हैं, वे औरों को भी उतना अच्छी रीति समझा सकते हैं। सबको समझाना तो बच्चों का ही काम है। गायन भी है सन शोज फादर।'' सा.बाबा 12.08.09 रिवा.

''ड्रामा कितना विचित्र बना हुआ है, इसको जानने के लिए भी अच्छी समझ चाहिए। जैसे नीचे उतरे हो, अब फिर वैसे ही चढ़ना है। नम्बरवार ही पास होंगे और फिर नम्बरवार ही नीचे आयेंगे। ... तुम किसको किस रीति से समझाते हो, उससे हर एक की पढ़ाई का मालूम पड़ जाता है।'' सा.बाबा 10.08.09 रिवा.

''सबसे उत्तम पार्ट वे बजाते हैं, जो स्वयं उत्तम बनते हैं और सभी को बाप का परिचय देते हैं। सबको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाना है।... ये बातें अच्छी रीति समझकर, फिर बच्चों को चिन्तन करना है, फिर औरों को भी समझाना होता है।''

सा.बाबा 20.07.09 रिवा.

''यह कितना बड़ा ह्यूज़ ड्रामा है। यह सारा ड्रामा तो कभी कोई देख भी न सके। इम्पॉसिबुल है। ... अब तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है, कल्प पहले मिसल पद पाने के लिए पढ़ना है। ... जो खुद जानते हैं, वे औरों को भी समझाने लग पड़ेंगे। कल्प पहले भी यही किया होगा। ... पुरुषार्थ करते रहते हैं और करते रहेंगे। यह भी ड्रामा में नूँध है।''

सा.बाबा 22.07.09 रिवा.

''ऐसी-ऐसी वण्डरफुल बातें किसको भी सुनानी चाहिए। बोलो, यह बेहद का खेल है। हर एक एक्टर को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। ... ऐसे याद करते-करते अन्त मती सो गति हो जायेगी। कितनी अच्छी-अच्छी बातें हैं, जिनका सुमिरण करना चाहिए।''

सा.बाबा 20.06.09 रिवा.

''खेल है ना। खेल-खेल में विजयी बन सभी को मायाजीत विजयी बनाना ही है, यह तो गॉरण्टी है ही। लेकिन बीच-बीच में ये खेल देखने पड़ते हैं। थकते तो नहीं हो ना! हँसते-खेलते

पार करते और कराते चलो। ... वाह ड्रामा वाह।'' अ.बापदादा 10.1.94 दादियों से

''झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। पहले-पहले देवी-देवतायें थे। उनके ही 84 जन्म गाये जाते हैं। ... नॉलेजफुल गॉड फादर ही है। ब्रह्मा को भी नॉलेजफुल नहीं कहेंगे, कृष्ण को भी नहीं कहेंगे। ... हर एक आत्मा को अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। यह सिद्ध कर किसको भी बताना है।'' सा.बाबा 13.12.08 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और संगमयुग

रूहों की रुहानी सेवा करने का युग ये संगमयुग ही है, जब बाप आकर ये रुहानी ज्ञान देते हैं। इस रुहानी ज्ञान के आधार पर ही आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला होती है। वास्तव में देखा जाये तो संगमयुग ही ऐसा समय है, जब आत्मायें, आत्माओं की समझकर सेवा करती हैं। अभी की सेवा अनुसार ही भविष्य नई दुनिया के सम्बन्ध बनते हैं और आधे कल्प के विकारी सम्बन्ध खत्म होते हैं।

''सारा मदार है इस समय की पढ़ाई पर। जितना पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे, उतना अपना ही फायदा है। ... सर्विस का ख्याल नहीं आता है तो वे पाई-पैसे का पद पा लेंगे। वहाँ यह ख्यालात नहीं रहती है कि इसने पुरुषार्थ नहीं किया, इसलिए यह पद मिला है। नहीं, कर्म-अकर्म-विकर्म की बातें सब यहाँ बुद्धि में है। कल्प के संगमयुग पर ही बाप समझाते हैं।''

सा.बाबा 17.07.09 रिवा.

''जब संगमयुग को समझें तब भेंट कर सकें सतयुग और कलियुग में। कलियुग में अपार दुख हैं, सतयुग में अपार सुख हैं। ... अभी संगमयुग चल रहा है। अभी बाप रास्ता बताते हैं। ऐसे नहीं कि बाप सुख देते हैं। नहीं, बाप सुख का रास्ता बताते हैं। रावण भी दुख देते नहीं हैं लेकिन दुख का उल्टा रास्ता बताते हैं।'' सा.बाबा 17.07.09 रिवा.

''बाप आते ही हैं संगमयुग पर नई दुनिया बनाने। अभी तुम पुरानी दुनिया से नई दुनिया में बदली हो रहे हो। ... बच्चों की बुद्धि में रहे कि अभी हम पुरुषोत्तम बनते हैं तो सदैव हर्षित रहेंगे। जितना सर्विस करेंगे, उतना हर्षित रहेंगे। यह रुहानी कमाई करनी और करानी है।''

सा.बाबा 14.01.09 रिवा.

''इन लक्ष्मी-नारायण को तो यह ज्ञान ही नहीं है। ज्ञान तो तुम बच्चों को ही है। ... बाबा भी कहते हैं - मुझे ज्ञानी तू आत्मा बच्चे प्यारे लगते हैं, जो बाप की याद में भी रहते हैं और सर्विस के लिए भी फथकते रहते हैं। ... यहाँ भी जो सर्विस करते हैं, वे ही बाप को प्यारे लगते हैं।''

सा.बाबा 3.03.10 रिवा.

''जैसे बाप तुमको हीरे जैसा बनाते हैं, वैसे बच्चे भी औरों को हीरे जैसा बनाते हैं। किसको कैसे हीरे जैसा बनायें, वह सीखना है। ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफिक कल्प-कल्प के संगमयुग पर ही बाप आकर हमको सिखलाते हैं, हम फिर औरों को भी सिखाते हैं। ... अभी तुम बच्चे सच्ची कमाई कर रहे हो।'' सा.बाबा 26.01.10 रिवा.

''अभी बाप ने तुमको समझाया है कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, सर्व आत्माओं को विश्राम कहाँ और कैसे मिलता है। तुम बच्चों का फर्ज है, सबको बाप का पैग़ाम देना। ... बाप इस संगमयुग पर ही नई दुनिया स्वर्ग रचते हैं।'' सा.बाबा 30.12.09 रिवा.

''इस संगमयुग के ताज, तिलक और तख्त के आगे भविष्य राज्य का ताज-तिलक-तख्त कुछ भी नहीं है। जिसने संगमयुग का ताज और तख्त नहीं लिया, उसने कुछ भी नहीं लिया। विश्व के कल्याण की जिम्मेवारी का ताज है और जब तक ताज धारण नहीं करते तब तक बाप के दिल रूपी तख्त पर विराजमान नहीं हो सकते।'' अ.बापदादा 24.5.71

''ड्रामा अनुसार तुम बच्चों को ही सर्विस करनी है। गायन है फादर शोज़ सन। बच्चों को ही जाकर सबका कल्याण करना है। ... बाप कहते हैं - मैं ग़रीब निवाज़ हूँ। यहाँ ग़रीब ही आते हैं, साहूकारों की तो तकदीर में ही नहीं हैं।'' सा.बाबा 14.10.09 रिवा.

''जैसे बाप समझाते हैं, ऐसे फिर बैठकर रिपीट करना चाहिए ... फिर किसको सुनाओ, बाप ने यह प्वाइन्ट सुनाई है। बोलो - मैं तो गीता का ज्ञान सुनाता हूँ। यह गीता का ही युग है। ... इस संगमयुग का किसको भी पता नहीं है। तुम जानते हो यह पुरुषोत्तम संगमयुग है।''

सा.बाबा 27.07.09 रिवा.

''अभी तुम संगमयुग पर हो। तुम कलियुग की तरफ भी देख सकते हो तो सतयुग की तरफ भी देख सकते हो। तुम संगमयुग पर सब साक्षी होकर देखते हो। कोई भी प्रदर्शनी या म्युजियम में आते हैं तो तुम उनको संगमयुग पर खड़ा कर दो। बोलो, इस तरफ है कलियुग, उस तरफ है सतयुग। हम अभी बीच में हैं। बाप नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं।''

सा.बाबा 6.06.09 रिवा.

''तुमको सबको समझाना पड़ता है कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। बहुत लोग पूछते हैं - तुम भारत की क्या सेवा कर रहे हो। हम श्रीमत पर अपने तन-मन-धन से भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा कर रहे हैं। ... तुम्हारा फर्ज है मनुष्य मात्र को यह पैग़ाम देना कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आया है।'' सा.बाबा 13.4.09 रिवा.

''रावण जब आता है, उस समय भी संगम था लेकिन वह त्रेता और द्वापर का संगम था। अभी जब राम आते हैं तो यह संगम है कलियुग और सतयुग का। ज्ञान कितना समय चलता है और

भक्ति कितना समय चलती है, ये सब बातें समझदार बच्चों को समझकर फिर सबको समझानी है।'' (भक्ति आधा कल्प चलती है, ज्ञान संगमयुग पर ही होता है, फिर आधा कल्प ज्ञान की प्रालब्ध चलती है, ज्ञान नहीं।) सा.बाबा 13.04.09 रिवा.

''संगमयुग को कभी भूलो मत। संगमयुग को भूलने से सारा ज्ञान भूल जाता है। ... सारी दुनिया की जो भी आत्मायें, सब मेरे बच्चे हैं। सबका इस ड्रामा में पार्ट है। चक्र का राज़ भी सिद्ध करना है। हर एक धर्म-स्थापक अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं।''

सा.बाबा 2.03.09 रिवा.

''संगमयुग का तिलक लगाया और तख्तनशीन बने हो?... संगमयुग का ताज है सर्विस की जिम्मेवारी का ताज। ... संगम के तख्तनशीन होने के बाद ही सतयुग के तख्तनशीन होंगे। ... संगमयुग है सर्व बातों का बीज डालने का समय। ... संगमयुग पर बीजरूप द्वारा सर्व बातों का बीज पड़ता है। उस बीजरूप के साथ-साथ आप सभी भी बीज डालने की मदद करना।'' अ.बापदादा 14.5.70

ईश्वरीय सेवा और कल्प-वृक्ष
ईश्वरीय सेवा और विभिन्न धर्म, मठ-पंथ और सभ्यतायें

Q. ईश्वरीय सेवा और कल्प-वृक्ष में क्या सम्बन्ध है अर्थात् ईश्वरीय सेवा के लिए कल्प-वृक्ष के ज्ञान का क्या महत्व है?

कल्प-वृक्ष के राज़ को बुद्धि में रखें तो हम देखेंगे कि कल्प-वृक्ष और ईश्वरीय सेवा में घनिष्ट सम्बन्ध है। जैसे किसी वृक्ष के बीज-जड़ें-तना का पत्तों से घनिष्ट सम्बन्ध होता है, उनके द्वारा ही उनकी पालना होती है, उसके अनुरूप ही वृक्ष के गुण-धर्म और फल-फूल होते हैं, ऐसे ही इस कल्प-वृक्ष के जो आधारमूर्त हैं अर्थात् पूर्वज हैं, वे ही सारे कल्प-वृक्ष के उत्थान-पतन के उत्तरदायी होते हैं और वे ही जब कल्प-वृक्ष की नई कलम लगाने के लिए बीजरूप परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं तो उनके सहयोगी बनकर सारे विश्व की आत्माओं की सेवा करते हैं, जिसके आधार पर उनके भविष्य नये कल्प के लिए सम्बन्धों का निर्माण होता है। जिन आत्माओं को परमात्मा पिता से ज्ञान मिला है, उनका उत्तरदायित्व है कि वे अपने अन्य भाई-बहनों को ज्ञान दें, सुख-शान्ति का रास्ता बतायें।

ये कल्प-वृक्ष, जिसका तना है आदि-सनातन देवी-देवता धर्म और विभिन्न धर्मों, मठ-पंथ और सभ्यतायें इसकी शाखायें-प्रशाखायें हैं। परमात्मा इस कल्प-वृक्ष का चैतन्य

बीजरूप है, उसके द्वारा इसकी कलम लगती है, जिससे सब धर्म, मठ-पंथ और सभ्यताओं पुनरुत्थान होता है, सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है, उसके लिए परमात्मा का ये सन्देश सबको मिलना चाहिए और मिलता अवश्य है। बाबा ब्राह्मण बच्चों को प्रेरित करके सर्व आत्माओं को ज्ञान देकर सर्व का कल्याण करते हैं।

''अभी बाप बीज और झाड़ वा ड्रामा चक्र का सारा राज़ समझाते हैं। अभी तुम हो स्वदर्शन चक्रधारी। ... कोई नया आता है तो 7 दिन के लिए भट्ठी में रखा जाता है, जिससे बुद्धि में जो किचड़ा भरा है, वह निकल जाये और बुद्धि बाप से लग जाये।''

सा.बाबा 10.02.10 रिवा.

''अब मनुष्यों को कैसे समझायें, इस पर विचार सागर मन्थन चलना चाहिए। ... मनुष्यों को कैसे समझायें कि यह युनिवर्सिटी है ... सारे युनिवर्स को पढ़ाने के लिए एक बाप ही आते हैं, उनकी यह युनिवर्सिटी है। बाप आकर सारे युनिवर्स को पावन बनाते हैं, योग सिखाते हैं। यह तो सब धर्म वालों के लिए है।'' सा.बाबा 9.02.10 रिवा.

''भक्ति का भी धन्धा है। तुम बच्चों का धन्धा है ज्ञान रत्नों का। इसको भी व्यापार कहा जाता है। बाप भी ज्ञान रत्नों का व्यापारी है। तुम समझते हो कि वे कौन से रत्न हैं। इन बातों को भी समझेंगे वे ही, जिन्होंने कल्प पहले समझा है। दूसरे कोई इन बातों को समझेंगे नहीं।''

सा.बाबा 6.02.10 रिवा.

''बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। वहाँ आकाश-धरती सब तुम्हारी होगी। तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए। तुम हमेशा समझो कि शिवबाबा सुनाते हैं ... याद शिवबाबा की ही रहनी चाहिए। इसको कहा जाता है निरहंकारी।... सर्विस करना तो हमारा फर्ज है, इसमें अहंकार नहीं आना चाहिए। अहंकार आया और यह गिरा।'' सा.बाबा 8.02.10 रिवा.

''सब अपने-अपने सेक्शन में चले जायेंगे, फिर पहले नम्बरवार डीटी धर्म वाले पार्ट बजाने आयेंगे। यह तो बुद्धि में अच्छी रीति धारणा होना चाहिए।... तुमको इन अविनाशी ज्ञान रत्नों की दुकान निकाल बैठना है, ज्ञान रत्नों का धन्धा करना है।'' सा.बाबा 7.01.10 रिवा.

''किसको समझाते हो तो कब यह नहीं समझना है कि यह मुसलमान है, मैं फलाना हूँ। नहीं, अपने को आत्मा समझना है और उनको भी आत्मा रूप में ही देखना है। ... सदा बुद्धि में रहे कि हम आत्मा, आत्मा भाई को समझाते हैं। ... अपने को आत्मा समझने की प्रक्टिस डालो तो नाम-रूप, देह सब भूल जाये।'' सा.बाबा 5.01.10 रिवा.

''आपस में प्लेन बनाओ कि कोई भी कोना रह नहीं जाये, कोई का उल्हना न मिले। हर एक को मालूम पड़े कि हमारा बाप आ गया, कोई वंचित न रह जाये। ... बापदादा को हर एक

बच्चे पर रहम आता है। तो आपको भी अपने भाई-बहनों के ऊपर विशेष रहमदिल, कल्याणकारी स्वरूप धारण कर सबको सन्देश देना है।'' अ.बापदादा 31.12.09

''जितना जो पुरुषार्थ करते हैं, उनकी चलन से साक्षात्कार होता रहता है। ... तुम्हारा फर्ज है सबको बाप का परिचय देना। अभी सभी निधन के बन गये हैं। ये बातें भी कल्प पहले वाले कोटों में कोई ही समझेंगे। ... योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं, आपही ऑख खुल जायेगी।'' सा.बाबा 22.12.09 रिवा.

''अभी तुम बच्चे इस खेल को जानते हो। यह खेल कितना वण्डरफुल बना हुआ है। इस खेल का राज़ बाप बैठ समझाते हैं। बाप ही नॉलेजफुल, बीजरूप है ना। बाप ही आकर सारे वृक्ष की नॉलेज देते हैं कि इसमें कब-कब क्या-क्या होता है, तुमने इसमें कितना समय पार्ट बजाया। ... जो अच्छे-अच्छे बच्चे हैं, उनकी बुद्धि में सारी नॉलेज रहती है। वे औरों को भी आप समान बनाते हैं।'' सा.बाबा 3.12.09 रिवा.

''वहाँ एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म होता है। बाद में द्वापर से फिर और धर्म शुरू होते हैं। सन्यास धर्म भी बाद में होता है, जो घरबार का सन्यास करते हैं। सबको जानना तो चाहिए ना। ... ज्ञान माना सतयुग-त्रेता सुख, भक्ति माना अज्ञान और दुख। यह सब अच्छी रीति समझना और समझाना होता है। फिर दुख और सुख से पार अर्थात् हद-बेहद से पार जाना होता है।'' सा.बाबा 17.11.09 रिवा.

''अच्छी रीति नहीं पढ़ते हैं तो समझा जाता है कि ये कल्प-कल्प नहीं पढ़ते हैं। ... जो पढ़ाई में होशियार हैं, वे तो पढ़कर औरों को भी पढ़ाते रहेंगे। बाप कहते हैं - मैं तुम बच्चों का सर्वेन्ट हूँ। बच्चे भी कहते हैं कि हम भी सर्वेन्ट हैं, हमको हर एक भाई-बहन का कल्याण करना है। बाप हमारा कल्याण करता है, हमको फिर औरों का कल्याण करना है।''

सा.बाबा 7.11.09 रिवा.

''अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि बाप आते हैं देवी-देवता धर्म की स्थापना करने। वह तो जरूर छोटा झाड़ होगा। वहाँ है ही एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा। उसको ही कहा जाता है विश्व में शान्ति। ... यह सारा ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए, जो किसको भी समझा सको।''

सा.बाबा 28.09.09 रिवा.

''अभी तुमको ज्ञान मिला है कि हम एक बाप के बच्चे सब भाई-भाई हैं, यह किसको भी समझाना बहुत सहज है। सब आत्माओं का बाप तो एक सुप्रीम शिवबाबा है। उससे जरूर सुप्रीम बेहद का वर्सा मिलना चाहिए।'' सा.बाबा 10.09.09 रिवा.

''सब धर्म वालों को सुनाओ - मनुष्य को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का मालूम होना चाहिए कि

यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, इसका रचयिता कौन है, इसके फिरने में कितना समय लगता है। ... देवतायें इस बात को नहीं जानते हैं। मनुष्य ही इस बात को जानकर देवता बनते हैं। ... बाप ही अपना और रचना का परिचय देते हैं।'' सा.बाबा 12.09.09 रिवा.

''ब्राह्मणियों का काम है - एक सेन्टर जमाया, फिर जाकर और सेन्टर जमाये। ... परन्तु ऐसे ऑनेस्ट कोई बिरले रहते हैं। ऑनेस्ट उनको कहा जाता है, जो सारी युनिवर्स की सेवा करे। एक सेन्टर खोला, आप समान बनाया, फिर दूसरे स्थान पर जाकर सेवा की। एक ही स्थान पर अटक नहीं जाना चाहिए।'' सा.बाबा 29.08.09 रिवा.

''कोई भी धर्म वाला मिले, उसको सन्देश देते रहो।... आत्मायें सब भाई-भाई हैं। अब बाप शिक्षा देते हैं कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप ही पतित-पावन है।''

सा.बाबा 26.08.09 रिवा.

''तुम्हारे पास अच्छे ते अच्छे चित्र हैं - त्रिमूर्ति, गोला और झाड़ का चित्र नम्बरवन है। ये ही दो चित्र शुरूआत के हैं। ये ही तुम्हारे बहुत काम में आने के हैं।... और किसी चित्र से और धर्म वाले ज्ञान नहीं उठा सकेंगे।'' सा.बाबा 27.08.09 रिवा.

''पवित्र जरूर बनना है, फिर राजा बनना है तो प्रजा भी बनानी है। कल्प-कल्प तुम इतनी ही प्रजा बनाते हो, जितनी सतयुग में थी। तुम विलायत में भी यह समझा सकते हो कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। लक्ष्मी-नारायण के चित्र से और धर्म वालों कनेक्शन नहीं है, इसलिए बाबा कहते हैं कि यह त्रिमूर्ति, झाड़ और गोला मुख्य चित्र हैं।'' सा.बाबा 27.8.09 रिवा.

''तुम किसको भी यह समझाओ कि विश्व-विद्यालय यह एक ही है, जो बाप स्थापन करते हैं। हम सारे विश्व को शान्तिधाम, सुखधाम ले जाते हैं, इसलिए इसको कहा जाता है ईश्वरीय विश्व-विद्यालय। ईश्वर आकर सारे विश्व को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देते हैं।''

सा.बाबा 29.08.09 रिवा.

''तुम्हारे खातिर सारी दुनिया चट खाते में आ गई है, निमित्त तुम बने हो। अब तुमको ये बातें सबको समझानी हैं। भल ड्रामा अनुसार होता है परन्तु तुम पतित तो बन गये हो ना! ... सब धर्म वालों को मुक्तिधाम घर में जाना है। वहाँ सब आत्मायें पवित्र रहती हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है, जो बाप आकर समझाते हैं।'' सा.बाबा 24.08.09 रिवा.

''यह ज्ञान सब धर्म वालों के लिए है। ... जिन्होंने जास्ती भक्ति नहीं की है, वे ठहरते नहीं हैं। ... इससे समझना चाहिए कि भक्ति कम की है। ... अभी तुमको पैगाम तो सबको देना है। सबको कहना है - अपने को आत्मा समझ, बाप को याद करो। यदि तुम ही पूरा याद नहीं कर सकते हो तुम्हारा तीर कैसे लगेगा।'' सा.बाबा 24.8.09 रिवा.

''ऐसे आप भी बाप समान सबको शुभ भावना से देखो। गिरे हुए को गिराना नहीं है, लेकिन सहारा दो। यही पुण्यात्मा की निशानी है। सर्व के न्यारे और प्यारे बनना है क्योंकि परमात्म परिवार है।'' 19.8.09 अ.बापदादा का सन्देश

''तुमने कितनी भूल की है। बाप समझाते हैं - ड्रामा में ऐसा ही है। जब तुम ऐसे बनो तब तो मैं आऊं। तुमको सब धर्म वालों का कल्याण करना है। बाप जो सबकी सद्गति करते हैं, उनके लिए सब धर्म वाले सर्वव्यापी कह देते हैं। यह कहाँ से सीखे हैं। तुम्हारे कारण औरों का भी ऐसा हॉल हो गया है।'' सा.बाबा 24.08.09 रिवा.

''भल मुसलमान है, पारसी है, हिन्दू है, सबको बोलो तुम स्थूल कपड़े धुलाते हो परन्तु यह जो तुम्हारा शरीर है, यह तो पुराना मैला वस्त्र है, आत्मा भी तमोप्रधान है, उनको सतोप्रधान, स्वच्छ बनाना है। ... अब करो न करो, समझो न समझो, तुम्हारी मर्जी।''

सा.बाबा 27.07.09 रिवा.

''हिन्दू धर्म तो कोई ने स्थापन किया नहीं है। यह बच्चों को अच्छी रीति धारण कर और सबको समझाना है। ... जो जास्ती ज्ञान धारण नहीं कर सकते, वे ऊंच पद भी पा नहीं सकते। वे पास विद् ऑनर हो न सकें। ... ज्ञान धारण करने की भी मेहनत है। ज्ञान और योग दोनों में सब होशियार हो जायें, सो भी हो न सके क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है।''

सा.बाबा 16.07.09 रिवा.

''तुम सब धर्म वालों को समझायेंगे कि यह नई दुनिया की स्थापना कैसे हो रही है। तुम भी इसको समझेंगे तो अपने धर्म में ऊंच पद पायेंगे। अपने धर्म में ऊंच पद पाना चाहते हो तो आकर इसको अच्छी रीति समझो।'' सा.बाबा 15.07.09 रिवा.

''भल लखपति, करोड़पति हैं परन्तु जन्म तो विकारों से ही होता है ना। धक्का खाया, मच्छर ने काटा, यह सब दुख हैं ना। नाम ही है रौरव नर्क। प्वाइन्ट्स तो बाबा बहुत सुनाते रहते हैं, उनको धारण कर अच्छी रीति समझाना है। नहीं मानते हैं तो समझा जाता है कि यह हमारे कुल का नहीं है।'' सा.बाबा 9.07.09 रिवा.

''तुम आत्माओं का आपस में बहुत लव होना चाहिए। ... तुम आत्मायें भाई-भाई हो। एक बाप की याद से तुम सारे विश्व का कल्याण करते हो। तुम अपना कल्याण करते हो, तो अपने भाइयों का भी कल्याण करना चाहिए।'' सा.बाबा 13.06.09 रिवा.

''जो खुद जानते हैं, वे ही औरों को भी समझा सकते हैं। एक बार ड्रामा देखा तो फिर सारा ड्रामा बुद्धि में आ जायेगा। बाबा ने समझाया है - यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है, इसका बीज ऊपर में है। ... बीज को सारे झाड़ की नॉलेज होती है। वह तो है जड़ बीज, तुम हो चेतन्य।

तुम अपने झाड़ की नॉलेज समझा सकते हो।'' सा.बाबा 26.05.09 रिवा.

''पहले-पहले तो किसको भी यह निश्चय बिठाना है कि वह हमारा बाप है, हम सब आत्मायें ब्रदर्स हैं। बाप से वर्सा लेने का सबको हक है। वर्सा मिला था, अभी नहीं है। बाप ने राजयोग सिखलाकर सुखधाम का मालिक बनाया था। बाकी सब शानतिधाम गये थे।''

सा.बाबा 6.05.09 रिवा.

''तुम सर्व धर्म वालों को यह ज्ञान दे सकते हो। आत्माओं का बाप तो एक ही है। सभी आत्मायें ब्रदर्स हैं क्योंकि सभी आत्मायें एक बाप के बच्चे हैं। ... भक्त तो आत्मा सो परमात्मा कह देते हैं। बाप कहते हैं - यह बड़ी भूल है। पहले-पहले अपन को आत्मा निश्चय करना है। अभी हम आत्मायें ब्राह्मण कुल के हैं, फिर देवता कुल में जाते हैं। यह ब्राह्मण कुल सर्वोत्तम कुल है।'' सा.बाबा 1.05.09 रिवा.

''सभी धर्म वालों को सन्देश तो पहुँचना है ना। नास्तिक को आस्तिक बनाकर, कोई धर्म वाले कोई अथॉरिटी को तैयार करो, जो सबके आगे अपना अनुभव सुनाये कि वास्तव में परमात्मा का परिचय जो ये ब्रह्मा कुमारियाँ-कुमार देते हैं, वह राइट है।'' अ.बापदादा 7.4.09

''कैसे भी अशान्त आत्मा, दुखी आत्मा हो अगर आप उसको खुशी की अनुभूति करा दो तो कितनी दिल से दुआयें देगी। ... दिल से रहम आना चाहिए। जो अशान्ति-दुख में भटक रहे हैं, वे भी आपका परिवार है ना। परिवार को सहयोग दिया जाता है।''

अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी

''बच्चे यह तो समझते हैं कि हम सतयुगी आदि सनातन पवित्र देवी-देवता धर्म के थे, तो यह याद रखना है। ... अभी हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। ... बाबा ने बहुत बार कहा है कि यह ज्ञान आदि सनातन धर्म वालों को समझाओ।''

सा.बाबा 17.03.09 रिवा.

''आदि सनातन हिन्दू, जो पहले देवी-देवता थे, वे अक्सर करके धर्मात्मा होते हैं। ... उनको बतायेंगे कि तुम्हारा धर्म आदि सनातन देवी-देवता था, तुम ही सतोप्रधान थे, फिर पुनर्जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बने हो, अब फिर याद की यात्रा से सतोप्रधान बनो। उनको ये दवाई अच्छी लगेगी। बाबा सर्जन भी है ना।'' सा.बाबा 4.02.09 रिवा.

''जो आदि सनातन देवी-देवता से हिन्दू बनें होंगे, वे देवताओं को पूजने वाले भी होंगे। उनमें भी जो शिव के या लक्ष्मी-नारायण, राधे-कृष्ण, सीता-राम आदि देवताओं के भक्त हैं, वे देवता घराने के हैं। ... ऐसे-ऐसे भक्तों को ढूँढना चाहिए, उनको ही स्मृति आयेगी।''

सा.बाबा 4.02.09 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और पुरुषार्थ

सेवा भी एक पुरुषार्थ है क्योंकि इस ईश्वरीय पढ़ाई के चार मुख्य विषयों में सेवा भी एक विषय है। जैसे पास विद् ऑनर बनने के लिए ज्ञान-योग-धारणा में अच्छे मार्क्स आवश्यक हैं वैसे ही ईश्वरीय सेवा में भी अच्छे मार्क्स आवश्यक हैं।

सेवा से पुरुषार्थ में क्या-क्या लाभ होता है, क्या-क्या अनुभूतियाँ होती है, इस पर विचार करना अति आवश्य है।

''व्यर्थ बातों से किनारा करने से चमकता हुआ लकी सितारा बन जायेंगे। इन्चार्ज टीचर बनने के लिए पहले अपनी आत्मा की बैटरी चार्ज करो। जिसकी जितनी बैटरी चार्ज है, वह उतना ही अच्छा इन्चार्ज टीचर बन सकती है। ... अगर बैटरी चार्ज के बिना इन्चार्ज बनेंगे तो क्या होगा ? चार्ज अर्थात् दोष लग जायेगा। चार्ज शब्द के तीन अर्थ (बैटरी चार्ज होना, ड्युटी और दोष लगना) होते हैं।'' अ.बापदादा 25.3.71

''जो टीचर्स बनती हैं, उनको सिर्फ प्वाइन्ट बुद्धि में नहीं रखनी है वा वर्णन करनी है लेकिन प्वाइन्ट रूप बनकर प्वाइन्ट वर्णन करनी है। अगर स्वयं प्वाइन्ट स्थिति में स्थित नहीं होंगे तो प्वाइन्ट का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।'' अ.बापदादा 25.3.71

अब तीव्रगति से तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है।... अब रॉयल रूप के अलबेलेपन और आलस्य से मुक्त बन आगे उड़ो और उड़ाओ। अ.बापदादा का सन्देश 31.7.09

''दुनिया यह नहीं जानती है कि दुनिया में यह क्या हो रहा है और क्या होने का है ? तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं, जो पूरी रीति समझते हैं और बहुत खुशी में रहते हैं। ... तुम सब पुरुषार्थ करते हो अपने लिए। जो जितना करेंगे, उतना फल पायेंगे। हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है और दूसरों को भी पुरुषार्थ कराना है। सबको रास्ता बताना है।''

सा.बाबा 23.03.10 रिवा.

''बापदादा फिर से इशारा दे रहे हैं कि स्व-पुरुषार्थ, स्व-पुरुषार्थ से स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति दोनों तरफ अटेन्शन देते रहो, आगे बढ़ते रहो और सदा उड़ते रहो, उड़ाते रहो। ... सदा शब्द एडीशन करो, कभी-कभी शब्द डिक्शनरी से निकाल दो।''

अ.बापदादा 28.02.10

''रुहानी बाप की याद में रह औरों को रास्ता बताना है, अन्धों की लाठी बनना है। तुम तो रास्ता जानते हो। रचयिता और रचना का ज्ञान मुक्ति और जीवनमुक्ति तुम्हारी बुद्धि में फिरते रहते हैं। ... बाप आये हैं सबका कल्याण करने। अपना भी कल्याण करना है और दूसरों का भी कल्याण करने का पुरुषार्थ करना है।'' सा.बाबा 12.02.10 रिवा.

''अब इस सच्ची कमाई के लिए कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। जिन्होंने कल्प पहले यह कमाई की है, वे ही अब भी करेंगे। पहले खुद यह कमाई कर, फिर औरों को भी करानी है। ... चेरिटी बिगिन्स एट होम।''
सा.बाबा 29.12.09 रिवा.

''भक्ति आधा कल्प चलती है। ज्ञान आधा कल्प नहीं चलता है, ज्ञान का जो वर्सा मिलता है, वह आधा कल्प चलता है। ज्ञान तो एक ही बार इस संगमयुग पर मिलता है।... ये सब बातें अच्छी रीति समझकर फिर औरों को भी समझाना हैं। पद का सारा मदार है सर्विस पर। तुम जानते हो अभी हमको पुरुषार्थ कर नई दुनिया में जाना है और धारणा कर दूसरों को भी समझाना है।''
सा.बाबा 4.12.09 रिवा.

''पहली बार आये हैं ... फिर भी समाप्ति के पहले पहुँच गये, नया जन्म ले लिया, उसकी मुबारक हो। ... अभी बहुत समय बीत गया, बहुत थोड़ा रहा है, इसलिए पुरुषार्थ तीव्र करना है। तीव्र पुरुषार्थी आगे बढ़ेंगे। चलना नहीं लेकिन उड़ना है। ... उड़ती कला का पुरुषार्थ करेंगे तो देर से आते हुए भी बाप के वर्से का अपना पुरा हक़ ले सकते हो। हर सेकण्ड खुश रहना और सभी को पैग़ाम देना, सन्देश देना।''
अ.बापदादा 15.11.09

''बाप को याद भी वे ही करेंगे, जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के भाती होंगे। भाती भी बहुत होते हैं परन्तु सभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। यह बात बड़ी समझने और समझाने की है। ... जैसे बाप बैठकर यह नॉलेज तुमको समझाते हैं, वैसे फिर तुमको औरों को समझानी है।''
सा.बाबा 22.10.09 रिवा.

''तुम बच्चों को अपने को आत्मा समझ, शरीर को भूलकर शिवबाबा को याद करना है। ... बाप बच्चों को श्रीमत देते हैं - जितना हो सके पुरुषार्थ कर सभी के दुख दूर करते रहो। पुरुषार्थ से ही अच्छा पद मिलेगा। ... बच्चों को अपने पर आपही रहम करना है।''
सा.बाबा 13.10.09 रिवा.

''बाप कितनी सहज बातें समझाते हैं, जो धारण करनी है और करानी हैं। ... बाप जो सर्विस सिखलाते हैं, वह सर्विस ही करनी है। तुम्हारी है यह गॉडली सर्विस। ... इसमें सब बातों को भूलना पड़ता है। देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूलकर अपने को आत्मा समझना है।''
सा.बाबा 13.10.09 रिवा.

''यह 7 रोज़ का कोर्स है। सब समझाया जाता है। परन्तु 7 रोज़ कोई दे न सके। बुद्धियोग कहाँ न कहाँ चला जाता है। तुम तो भट्ठी में पड़े ... उस समय यह चक्र का ज्ञान नहीं समझा था। यह पढ़ाई नहीं समझते थे। पहले-पहले तो बाबा से योग चाहिए।''
सा.बाबा 27.07.09 रिवा.

''जो स्वयं सरल पुरुषार्थी होता है, वह औरों को भी सरल पुरुषार्थी बना देता है। ... सर्व बातों में सेम्पुल बनने से पास विद् ऑनर बन सकते हैं। ... आलराउण्डर बनना दूसरी बात है, यह हुई कमाई परन्तु आलराउण्ड एग्जॉम्पुल बनना दूसरी बात है। हर बात में सेम्पुल बनकर औरों के आगे दिखाना।'' अ.बापदादा 19.7.09 रिवा.

''सबको पैग़ाम देना है। कल्प पहले जिन्होंने वर्सा लिया है, वह ले लेंगे। पुरुषार्थ करते रहते हैं क्योंकि बेचारे बाप को नहीं जानते हैं।... भगवानुवाच - तुम इस अन्तिम जन्म में मेरी मत पर चलेंगे, पवित्र बनेंगे तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे।'' सा.बाबा 18.07.09 रिवा.

''ये तो बहुत सहज समझने और समझाने की बातें हैं परन्तु जो खुद ही नहीं समझते हैं, वे प्रदर्शनी में क्या समझायेंगे। ... बाहर में जाकर सर्विस करना मासी का घर नहीं है। इसमें बड़ी समझ चाहिए। ... समझा वे ही सकेंगे, जो रोज़ प्रैक्टिस करते रहेंगे। अगर प्रैक्टिस नहीं होगी तो वे क्या बात कर सकेंगे।'' सा.बाबा 6.02.09 रिवा.

''तुमने अनेक बार बाप से वर्सा लिया है और गँवाया है। यह ड्रामा का चक्र बुद्धि में बैठ गया है। ... जिन्होंने कल्प पहले बाप से वर्सा लिया था, उन्हों का ही अब भी पुरुषार्थ चलता है। ... भल बाबा कहते हैं - तुम सर्विस ठण्डी करते हो, परन्तु यह भी समझाते हैं कि कल्प पहले जो तुमने सर्विस की थी, वही अभी भी करते हो। पुरुषार्थ फिर भी करते रहना है।''

सा.बाबा 4.12.08 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और धारणा

जब आत्मा में परमात्मा के द्वारा दिये गये विश्व-नाटक के सत्य ज्ञान की धारणा होती है, कर्मों के यथार्थ ज्ञान की धारणा होती है, तो उससे ईश्वरीय सेवा स्वत: होती है और उसकी सेवा सफल अवश्य होती है। बाबा ने अनेक बार कहा है, जिसकी बुद्धि में ज्ञान की धारणा होगी, वह सेवा के बिना रह नहीं सकता। जिसके पास धन होता है, वह दान भी अवश्य करता है और फिर ये तो है ज्ञान-धन, जो दान करने से बढ़ता है, प्रशस्त होता है।

ऐसे ही जो ईश्वरीय सेवा में बिज़ी रहता है, उसमें ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा स्वत: होती जाती है, उसको परमात्मा पिता की और दूसरी आत्माओं की दुआयें मिलती हैं, जो उसको ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा में सहयोग करती हैं। धारणा और ईश्वरीय सेवा दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और दोनों ही इस ईश्वरीय पढ़ाई के मुख्य विषय हैं।

''यह नॉलेज भी तुमको इस संगमयुग पर ही मिलती है। ... तुमको इन ज्ञान रत्नों की दुकान सम्भालनी है। अगर ज्ञान-योग की धारणा नहीं होगी तो दुकान सम्भाल नहीं सकेंगे। सबको

सर्विस का उजूरा देने वाला तो बाबा ही है। उसने ही यह यज्ञ रचा है।''

सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

''यह ज्ञान रत्न तुम धारण करते हो। यह ज्ञान का एक-एक रतन लाखों रुपयों का है। ... अभी तुमको पुरुषार्थ करके ऊंच बनना है। यह राजधानी स्थापन हो रही है। ... तुम बच्चों को सर्विस करने का बहुत उमंग होना चाहिए। जब तक किसको रास्ता नहीं बताया, तब तक खाना नहीं खायेंगे - इतना उमंग-उल्ल्हास हो, तब ऊंच पद पा सकते हैं।''

सा.बाबा 26.02.10 रिवा.

''अगर प्वाइन्ट को स्वरूप में लायेंगे तो वर्णन करने के बजाये साक्षात्कारमूर्त बन जायेंगे। ... वर्णन करना तो सहज है, मनन करना भी सहज है परन्तु जो मनन करते हो, वर्णन करते हो, वह स्वरूप बनकर अन्य आत्माओं को भी स्वरूपों का अनुभव कराओ। ऐसे को कहते हैं सपूत और सबूत दिखाने वाले।'' अ.बापदादा 22.6.71

''जो नई-नई प्वाइन्ट्स निकलती हैं, उनको अपने पास नोट करने का शौक होना चाहिए बच्चों में। ... नोट्स लेकर, धारण कर फिर किसको समझाना भी है। ... बाप आये हैं तुमको ज्ञान-चिता पर बिठाने। ज्ञान चिता पर बैठने से तुम विश्व के मालिक, जगतजीत बन जाते हो।''

सा.बाबा 17.02.10 रिवा.

''हम आत्मा हैं, बाबा हमको पढ़ाते हैं - यह पक्का करना है। बाप हमको पतित से पावन बनाते हैं। आत्मा में ही अच्छे या बुरे संस्कार होते हैं। ... तुम अभी सामने बैठे हो। सम्मुख सुनने में मज़ा आता है परन्तु सब तो यहाँ रह नहीं सकते। ... आत्माओं को सागर के पास आना है, धारण कर फिर जाये औरों को सुनाना हैं। नहीं तो औरों का कल्याण कैसे करेंगे ?''

सा.बाबा 18.02.10 रिवा.

''जो बादल सागर के साथ हैं, उनके लिए ही बरसात है। शिवबाबा है ज्ञान सागर। ... जो बादल अच्छा बरसते हैं, उनकी महिमा होती है। ... यहाँ भी जो धारणा कर और धारणा नहीं कराते हैं, उनका पेट जाकर पीठ से लगेगा। खूब बरसने वाले जाकर राजा-रानी बनेंगे और वे ग़रीब बनेंगे।'' सा.बाबा 31.01.10 रिवा.

''बाबा प्वाइन्ट्स तो ढेर समझाते हैं, जो धारण करनी होती हैं। जो अच्छी रीति धारण करेंगे, वे अच्छी रीति सर्विस कर सकेंगे।'' सा.बाबा 31.01.10 रिवा.

''ये सब बातें बुद्धि में धारण करना है, फिर दूसरों को भी समझाना है। अन्धों की लाठी बन घर का रास्ता बताना है क्योंकि अभी सब आत्मायें अपने घर को भूल गये हैं। ... ज्ञान का सागर, आनन्द का सागर, यह बाप की ही महिमा है।'' सा.बाबा 25.01.10 रिवा.

''बाप का हर बच्चा डबल अथॉरिटी से बोले तो नॉलेज का तीर अनुभव की अथॉरिटी के साथ बोलने से सेकण्ड में प्रभाव डालता है। स्वरूप और बोल दोनों अथॉरिटी के हों, तब सफलता सहज होगी।... ऐसा डबल अथॉरिटी वाला ग्रुप चाहिए, जो मस्त फकीर हो, कोई भी इच्छा न हो।''
अ.बापदादा 18.01.10 रिवा.

''सर्विसएबुल बच्चे बाप को भी प्रिय लगेंगे। बाप देखते हैं - यह तो बहुतों का कल्याण करते हैं, रात-दिन इनको यही चिन्तन रहता है कि हमको बहुतों का कल्याण करना है। बहुतों का कल्याण करना गोया अपना कल्याण करते हैं। ... बच्चों का तो यही धन्धा है। टीचर बनकर बहुतों को रास्ता बताना है। पहले तो अपने में यह पूरी नॉलेज धारण करनी पड़े।''
सा.बाबा 14.01.10 रिवा.

''तुम्हारे में भी सब इतना नहीं समझते हैं। जो सर्विसएबुल हैं, वह समझते हैं। अगर बाप की पूरी पहचान बच्चों को हो तो बाप को अच्छी रीति याद करें और अपने में दैवी गुण धारण करें। ... तुम संगमयुगी ब्राह्मण हो प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। यह बाप तो कहेंगे सब आत्मायें हमारे बच्चे हैं। ... ड्रामा के प्लैन अनुसार अभी मैंने इस शरीर में प्रवेश किया है।''
सा.बाबा 12.01.10 रिवा.

''तुम बच्चों को कोई पुस्तक आदि हाथ में लेकर नहीं सुनानी है। तुमको तो ज्ञान की धारणा करनी है और धारणा करके औरों को भी सुनाना है। तुम रुहानी बाप के बच्चे रुहानी ब्राह्मण हो। इस सच्ची गीता से ही भारत स्वर्ग बनता है।''
सा.बाबा 24.12.09 रिवा.

''अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। अभी तुम्हारे में गुणों की धारणा होती है। ... 84 का ये चक्र अच्छी रीति बुद्धि में याद रखना चाहिए और फिर दूसरों को भी समझाना है कि हम कैसे यह बनते हैं? ... यह ब्रह्मा सो विष्णु और विष्णु सो ब्रह्मा कैसे बनते हैं, यह किसको भी समझाना बहुत सहज है।''
सा.बाबा 7.12.09 रिवा.

''इन सब बातो को धारणा कर दूसरों को भी समझाना है। इस पर ही तुम्हारे पद का मदार है। विनाश होने के पहले सबको बाप का परिचय देना है और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाना है। ... मुक्ति में सबको जाना है, फिर सबको यहाँ आकर शरीर धारण कर पार्ट बजाना है। अभी अन्त में सब एक्टर्स इस ड्रामा स्टेज पर आकर खड़े हुए हैं।''
सा.बाबा 4.12.09 रिवा.

''अच्छे-अच्छे बच्चों को ही माया पकड़ती है क्योंकि बड़ी ऊंची मन्जिल है, इसमें बड़ी खबरदारी रखनी होती है।... यह माया रावण को जीतने का युद्ध का मैदान है। थोड़ा भी देहाभिमान न आये कि मैं ऐसी सर्विस करता हूँ ... हम तो गॉडली सर्वेन्ट हैं, हमको सबको

पैग़ाम देना ही है। इसमें गुप्त मेहनत बहुत है।'' सा.बाबा 5.11.09 रिवा.

''इस ग्रुप की यह विशेषता सभी को दिखाई दे, सभी अनुभव करें कि ये तपस्वी कुमार, तपस्वी भूमि से आये हैं। समझा। हर एक लाइट के ताजधारी दिखाई दें। ... सर्विस की जिम्मेवारी का ताज इस ताज के साथ स्वत: ही प्राप्त हो जाता है। इसलिए मुख्य ध्यान इस लाइट के ताज धारण करने का रखना है।'' अ.बापदादा 19.4.71

''कृष्ण को ऐसा पद किसने दिया? शिवबाबा ने। श्रीकृष्ण है स्वर्ग का पहला राजकुमार। बेहद के बाप इनको यह राज्य-भाग्य देते हैं। बाप है नई दुनिया स्वर्ग का स्थापन करने वाला, उसमें श्रीकृष्ण है नम्बरवन प्रिन्स। ... जो पास्ट हो गया, वह फिर फ्युचर होगा। यह चक्र फिरता रहता है। यह ज्ञान अभी ही तुम बच्चों को मिलता है। यह धारण कर औरों को भी कराना है।'' सा.बाबा 17.10.09 रिवा.

''कोई यह ज्ञान सुनकर, धारण कर औरों को सुनाते हैं, उनको कहा जाता है महारथी। वे सुनकर फिर धारण करते हैं और दूसरों को भी रुचि से समझाते हैं। ... कमाई में कब झुटका नहीं आता है। झुटका खाते रहेंगे तो धारणा कैसे होगी।'' सा.बाबा 8.10.09 रिवा.

''कमाई में कब थकावट नहीं होती है। उबासी है उदासी की निशानी। कोई न कोई बात में घुटका खाते रहने वालों को उबासी बहुत आती है। ... अब तुमको बाप का राइट हेण्ड बनना चाहिए ना। जो बहुतों का कल्याण करते हैं, वे हैं बाप के राइट हेण्ड।''

सा.बाबा 8.10.09 रिवा.

''तुम अच्छी रीति बाप को याद करो और स्वदर्शन चक्रधारी बनो। बच्चों को ये बातें अच्छी रीति सुनकर, फिर उगारना है, सुमिरण करना है। ... स्वर्ग में ऊंच पद पाना है तो ये सब बातें सुनकर अच्छी रीति धारण करो और दूसरों को भी रास्ता बताते रहो, सुनाते रहो। बाप रास्ता तो बहुत सहज बताते हैं।'' सा.बाबा 1.10.09 रिवा.

''तुम धारण कर औरों को सुनाते हो तो दिल होती है कि डायरेक्ट जाकर सुनें, बाप के परिवार में जायें। उस गोरखधन्धे से निकलकर तुम यहाँ आते हो। तुम जानते हो ये देह के सम्बन्धी तो खलास हो जाने हैं, तुम यहाँ गुप्त कमाई कर रहे हो।''

सा.बाबा 16.06.09 रिवा.

''यह भी जानते हैं कि कल्प पहले जिन्होंने जितना समझा था, वे ही अभी भी समझेंगे। दैवी परिवार वाले जितने बनने वाले होंगे, उनको ही धारणा होगी। तुम जानते हो हम श्रीमत पर अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। बाप का डायरेक्शन है कि औरों को भी आप समान बनाओ।'' सा.बाबा 13.05.09 रिवा.

''अन्तर्मुखी और एकान्तवासी यह लक्षण धारण करने से जो लक्ष्य रखा है, उसकी सहज प्राप्ति हो सकती है। साधन से सिद्धि होती है ना। सर्विस में सदैव सम्पूर्ण सफलता के लिए विशेष किस गुण को सामने रखना पड़ता है। साकार रूप में देखा ... जितना उदारचित्त, उतना सर्व के उद्धार करने के निमित्त बन सकते हैं।'' अ.बापदादा 27.7.70

''जितना-जितना चक्रवर्ती बनेंगे, उतना सर्व के सम्बन्ध में आ सकते हैं। ... सर्व के सम्बन्ध में आने से सर्व को सहयोग दे भी सकेंगे और सर्व का सहयोग ले भी सकते हैं। ... प्रैक्टिकल में सर्व का सहयोगी बनना है।'' अ.बापदादा 27.7.70

''एक सेकेण्ड में आकारी और एक सेकेण्ड में साकारी बन सकते हो ? यह भी आवश्यक सर्विस है। जैसे सर्विस के और अनेक साधन हैं, वैसे यह प्रैक्टिस भी अनेक आत्माओं के कल्याण के लिए एक साधन है। इस सर्विस से कोई भी आत्मा को सहज आकर्षित कर सकते हो।'' अ.बापदादा 27.7.70

''तुम बच्चों को तो बहुत निर्मानचित्त होकर चलना है। अहंकार जरा भी न रहे। ... फलाने-फलाने भाषण कैसे करते हैं, वह सीखना चाहिए। सर्विस करने की युक्तियाँ बाप सिखलाते हैं। ... प्रश्न पूछे तो बोलो, पहले मन्मनाभव हो जाओ। बाप को जानने से तुम सब कुछ जान जायेगे।'' सा.बाबा 27.04.09 रिवा.

''ड्रामा कैसा वण्डरफुल बना हुआ है। ये बड़ी महीन समझने की बातें हैं। जो अच्छे बुद्धिवान हैं और सब्रिस में तत्पर रहते हैं, वे ही इनको अच्छी रीति समझ सकते हैं। बाप ने कहा है - धन दिये धन न खुटे। दान करते रहेंगे तो धारणा भी होगी। नहीं तो धारणा होना मुश्किल है। ऐसे मत समझो कि लिखने से धारणा हो जायेगी।'' सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''बच्चों में अगर सही रीति धारणा होती तो कमाल कर दिखाते। वे अपना और दूसरों का कल्याण करने बिना रह नहीं सकते।... इतने करोड़पति घर की थीं, नष्टोमोहा बन सब छोड़कर चली आई। ... बाबा इन नारियों के द्वारा स्वर्ग के द्वार खुलवाते हैं। माताओं पर ही ज्ञान का कलष रखा जाता है।'' सा.बाबा 7.02.09 रिवा.

''अपनी धारणा को अविनाशी बनाने के लिए वा सदा कायम रखने के लिए दो बातें याद रखनी हैं। वे कौनसी ?... सिम्पुल रहना है और अपने को सेम्पुल समझना है। जैसे आप सेम्पुल बन दिखायेंगी, वैसे ही अनेक आत्माये भी यह सौदा करने के लिए पात्र बनेंगी। ... अच्छे सेम्पुल पर छाप लगाई जाती है। आप कौनसी छाप लगाकर जायेंगी, जो कभी मिटे नहीं ? शिवशक्तियाँ और ब्रह्माकुमारियाँ।'' अ.बापदादा 11.6.70

''तीन बातें सदा याद रखनी हैं - उपकारी, निरहंकारी, अधिकारी। ... अधिकार भी सामने

रखना है और निरहंकार का गुण भी सामने रखना है और उपकार करने का कर्तव्य भी सामने रखना है। कितना भी कोई अपकारी हो लेकिन अपनी दृष्टि-वृत्ति उपकारी की हो। ... जितना अधिकारी, उतना ही निरहंकारी। तब यह ताज और तख्त सदैव कायम रहेगा।''

अ.बापदादा 14.5.70

''अलंकारधारी शक्तियाँ ही बापदादा का शो करती हैं।... अलंकार धारण कर, अलंकार कायम होंगे तो ललकार कर सकेंगी। ... शक्तिपन का पहला गुण निर्भयता और दूसरा विस्तार को एक सेकेण्ड में समेटने की युक्ति है, वह सीखनी है।''

अ.बापदादा 5.4.70

ईश्वरीय सेवा, भाग्य और भाग्य-विधाता

परमपिता परमात्मा भाग्य-विधाता है परन्तु भाग्य बनाने का आधार ईश्वरीय सेवा है। सेवा का विधि-विधान भी भाग्य-विधाता परमात्मा ही बताता है और सिखाता है तथा ईश्वरीय सेवा के लिए प्रेरणा देकर आत्माओं का भाग्य बनाता है। ईश्वरीय सेवा के लिए शक्ति और साधनों की प्राप्ति कैसे हो या कैसे होती है, वह विधि-विधान भी वही बताता है

''सेवा का टर्न ... इस सेवा का एक फायदा यह है कि सेवा का मेवा हर एक का पुण्य जमा होता है, दूसरा फायदा यहाँ मधुवन का ज्ञान का वायुमण्डल, बड़े परिवार का वायुमण्डल, स्नेह का भी पुरुषार्थ में बल मिलता है। ... एकान्त के वायुमण्डल का लाभ भी मिलता है। ... यज्ञ का काम भी चलता है और आने वालों का पुण्य भी जमा होता है।''

अ.बापदादा 30.1.10

''बापदादा का यह संकल्प है कि इस शिवरात्रि पर एक सप्ताह पहले या एक सप्ताह पीछे इन दिनों में अपने परिचित ... हर एक को यह सन्देश जरूर दो कि अगर बाप से वर्सा लेना है तो ले लो ... फिर रहा, उनकी तकदीर लेकिन आपने अपना कार्य पूरा किया। ... किसी भी साधन से उनको सन्देश जरूर पहुँचाओ, जिससे कोई भी वंचित न रह जाये।''

अ.बापदादा 30.1.10

''बापदादा को अन्त सो आदि करने वाले, ऐसे आलराउण्ड पार्टधारी, परोपकारी ग्रुप चाहिए। ... राजा सदा दाता होता है, लेने वाला नहीं। ... कभी कोई सेलवेशन देवे तो हम दें, ऐसा कभी संकल्प में भी न हो। इसको कहा जाता है - बेगर टू प्रिन्स। स्वयं किसी से कुछ लेने की इच्छा नहीं। ... त्याग से सदाकाल का भाग्य स्वत: ही बन जाता है। ... जैसे साकार बाप को देखा, स्वयं का समय भी सेवा में लगा दिया।'' अ.बापदादा 18.01.10 रिवा.

''राजाई पद वालों की तो रहनी-करनी ही अलग होगी, उनकी कथनी और करनी सब एक होगी। ... तुमको इन चित्रों पर समझाने की भी प्रैक्टिस करनी चाहिए। वह भी किसकी तकदीर पर है। भविष्य में ऊंच पद तकदीर में नहीं है तो तदबीर भी नहीं करते हैं।''

सा.बाबा 16.01.10 रिवा.

''जो खुद याद में होंगे, वे औरों को भी बाप की याद दिलाते रहेंगे। बाप तो तदबीर कराते हैं परन्तु तकदीर में नहीं है तो ध्यान ही नहीं देते है। ... सबको शिवबाबा की याद दिलानी है। यह है सबसे बड़ी सेवा, इससे ही पतित से पावन बनेंगे। पतित-पावन बाप की याद के सिवाए पावन बनने का और कोई उपाय नहीं है।'' सा.बाबा 16.01.10 रिवा.

''आपको ही समाप्ति को समीप लाना है क्योंकि राज्य करने वाले तैयार नहीं होंगे तो समय क्या करेगा! इसलिए बहाना, कारण शब्द को समाप्त करो। कारण नहीं, निवारण को सामने लाओ। ... दुखियों को मुक्त करने के बिना आप मुक्ति में जा नहीं सकते। तो उन्हों को मुक्त करो क्योंकि बाप आया है तो सारे विश्व के बच्चों को वर्सा तो देंगे ना। आपको जीवनमुक्ति का वर्सा देंगे लेकिन बच्चे तो सभी हैं ना।'' अ.बापदादा 15.12.09

''बाप आया है तो सारे विश्व के बच्चों को वर्सा तो देंगे ना। आपको जीवनमुक्ति का वर्सा देंगे लेकिन बच्चे तो सभी हैं ना। उनको भी वर्सा तो देना है ना। उनका वर्सा है मुक्ति।... इसके लिए यह ड्रिल करो। 24 बारी करनी है। ... रात को नींद भल करो लेकिन दिन में नम्बर बढ़ाओ।'' अ.बापदादा 15.12.09

''अब बाप कहते हैं - तुम बच्चे सबको यह पैग़ाम दो और टीचर बनकर सबको समझाओ। जो टीचर नहीं बनते हैं, उनका पद कम होगा। टीचर बनने बिगर किसकी आशीर्वाद कैसे मिलेगी। ... यूँ तो महिमा एक बाप की ही है। कहते हैं - वाह बाबा, आप इन बच्चों के द्वारा हमारा कितना कल्याण करते हो।'' सा.बाबा 10.12.09 रिवा.

''अगर ज्ञान-योग की धारणा हो तो फिर औरों को भी धारणा करायें। ... यह तो तुम बच्चे ही जानते हो कि अभी विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना हो रही है। बाप आया हुआ है। ... यह देलवाड़ा मन्दिर में पूरा यादगार है। ... आदिदेव भी बिठाया है और ऊपर में स्वर्ग भी दिखाया है। जैसे वह जड़ यादगार है, वैसे तुम हो चैतन्य में।'' सा.बाबा 14.9.09 रिवा.

''यह आबू सबसे ऊंच ते ऊंच तीर्थ है क्योंकि यहाँ बाप आकर विश्व की सद्गति कर रहे हैं। ... अब तुम बच्चों को आबू की बहुत ऊंची महिमा करके समझाना चाहिए। ... परमपिता परमात्मा ने आबू में आकर स्वर्ग की स्थापना की है। ... नई दुनिया का मॉडल आबू में है।''

सा.बाबा 14.09.09 रिवा.

''ऐसा ख्याल मत करो कि जो नसीब में होगा, वह मिलेगा। स्कूल में पढ़ाई का पुरुषार्थ करते हैं। ... मूल बात है - पवित्र बन औरों को भी पवित्र बनाना। ... बाप यह भी समझते हैं कि जिसने कल्प पहले जो सर्विस की है, वही अभी करते हैं। जो बहुत सर्विस करते हैं, वे बाप को भी बहुत प्यारे लगते हैं।''

सा.बाबा 30.06.09 रिवा.

''साथ में बच्ची को, रथ को भी बापदादा मुबारक दे रहे हैं... बच्ची में सरलता और सहनशीलता इसकी विशेष्ता के कारण यह निमित्त पार्ट मिला है। हर एक का अपना-अपना अच्छा पार्ट है। ... टीचर्स के लिए होम वर्क है कि सदा अपने को बापदादा के सच्चे साथी, समीप के साथी बन अपने द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने वाली हो। स्थिति ऐसी हो, जो कोई भी आपको देखे तो कहे - इनको बनाने वाला कौन!''

अ.बापदादा 7.04.09

''तुम बच्चे बहुत ऊंच सर्विस पर हो। तुमको इस सारे माण्डवे को रोशनी देनी है। तुम धरती के चेतन्य सितारे हो। ... जैसे ऊपर सितारों की रिमझिम है, कोई सितारा बहुत तीखा होता है और कोई हल्का। कोई चन्द्रमा के नज़दीक होते हैं, कोई दूर होते हैं।''

सा.बाबा 18.01.09 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और समर्पणता

परमात्मा पतित विश्व को पावन बनाने के लिए इस धरा पर अवतरित हुए हैं परन्तु वह तो निराकार है, उसको अपना कर्तव्य करने के लिए आत्माओं का सहयोग लेना होता है और आत्माओं को भी उसका सहयोग मिलता है, उसके सानिध्य से आत्माओं को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान मिलता है। जिन आत्माओं को परमात्मा के द्वारा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है और सत्य ज्ञान पर निश्चय होता है, वे परमात्मा के इस दिव्य कर्तव्य में सहयोग के लिए तन-मन-धन-जन से समर्पित होती है और ईश्वरीय सेवा के कार्य में सहयोग करती हैं। इस समर्पणता और ईश्वरीय सेवा के दिव्य कर्तव्य में प्राण प्यारे ब्रह्मा सबसे अग्रणी रहे और वे इसके लिए हम सबके आदर्श बनें।

जो जितना परमात्मा के प्रति समर्पित होता है और ईश्वरीय सेवा का महत्व अनुभव करता है, वह उतना ही इस ईश्वरीय सेवा के कार्य में सफल होता है। ईश्वरीय सेवा से आत्मा को बहुत सुख की अनुभूति होती है, जो आत्मा को समर्पित होने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार हम देखें तो अनुभव करेंगे कि जो समर्पण होकर ईश्वरीय सेवा में लग जाता है, वह अपने जीवन में सच्ची सफलता का अनुभव करता है और जो ईश्वरीय सेवा के कर्तव्य को अच्छा समझकर सेवा में लग जाता है, उसका तन-मन-धन ईश्वरीय सेवा में अवश्य ही समर्पण

हो जाता है।

ईश्वरीय सेवा के लिए समर्पणता के दो स्वरूप हैं अर्थात् निम्न दो प्रकार से समर्पण होकर आत्मायें परमात्मा के दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनती हैं।

तन-मन-धन-जन से समर्पण होकर यज्ञ में रहते हुए सेवा

गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए समर्पण बुद्धि से सेवा

''बाबा ने इनको कहा - अपना तन-मन-धन सब इसमें लगा तो इसने सबकुछ न्यौछावर कर दिया ना। इनको कहा जाता है महादानी। विनाशी धन के साथ अविनाशी धन भी दान करना होता है, फिर जो जितना दान करे।... वह है इण्डायरेक्ट, यह है डायरेक्ट ईश्वर अर्थ। ... पुरुषार्थ करना चाहिए बाप को पूरा फॉलो करने का। इसमें मन-बुद्धि से सब सरेण्डर करना होता है।'' सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

''अभी राजाई स्थापन होती है, इसलिए कम्पलीट फ्लेन्थ्रोफिस्ट बनना है। भक्ति मार्ग में तो गाते हैं आप जब आयेंगे तो हम वारी जायेंगे। अभी... यहाँ तुम जो कुछ करते हो अपने लिए ही करते हो। ... ऐसा योग कमाओ, जो कर्मातीत अवस्था को पा लो, अन्त में कोई सजा न खाओ।'' सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

''बाप कहेंगे यह सब सर्विस में लगाओ। मैं तुमको जो मत देता हूँ, वैसे कार्य करो। युनिवर्सिटी खोलो, सेन्टर खोलो, जिससे बहुतों का कल्याण हो जाये।... तुम बच्चों को ही मैसेन्जर, पैगम्बर कहा जाता है। सबको यह मैसेज दो कि बाप ब्रह्मा द्वारा कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुमको जीवनमुक्ति मिल जायेगी।''

सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

''टीचर्स को विशेष बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाने में टाइट रहना चाहिए। हके नहीं होना है। ... सेवा में बेहद की वैराग्य वृत्ति अन्य आत्माओं को और समीप लायेगी। मुख की सेवा सम्पर्क में लाती है और वृत्ति से वायुमण्डल की सेवा समीप लायेगी। ... सेवा के निमित्त हो - ये श्रेष्ठ भाग्य कम नहीं है। ये भी विशेष वर्सा है। इस विशेष वर्से के भाग्य के अधिकारी बने हो।'' अ.बापदादा 5.12.94

''सारा ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में बैठा हुआ हो। जब भी किसको समझाते हो तो बोलो - हम कभी भी कोई से भीख नहीं माँगते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के तो बहुत बच्चे हैं। हम सब अपने ही तन-मन-धन से सेवा करते हैं। ब्राह्मण ही अपनी कमाई से यह यज्ञ चला रहे हैं शूद्रों के पैसे तो हम यज्ञ में लगा नहीं सकते। सभी बच्चे जानते हैं - जितना हम अपने तन-मन-धन से सर्विस करेंगे, सरेण्डर होंगे, उतना पद पायेंगे।'' सा.बाबा 31.01.10 रिवा.

''संगमयुग पर जिन्होंने अपना तन-मन-धन सब ईश्वरीय सेवा में सफल किया है या कर रहे हैं, वे हैं तकदीरवान। परन्तु जिनकी तकदीर में नहीं है, वे इन बातों को समझते नहीं हैं। ... बच्चों को सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। सर्विस की युक्तियाँ तो बाबा बहुत बताते रहते हैं। ... किसको भी समझाने की बड़ी अच्छी युक्ति चाहिए।'' सा.बाबा 23.01.10 रिवा.

''बाप के फिर डायरेक्शन मिलते रहेंगे। अपना जो भी कखपन है, वह युनिवर्सिटी और हॉस्पिटल में लगा दो। उससे तुमको भविष्य में हेल्थ और वेल्थ मिलेगी। ... अपने को आत्मा समझना है और बाप से पूरा लव रखना है, देहाभिमान में नहीं आना है। ... मित्र-सम्बन्धियों आदि को देखते भी बुद्धि बाप की याद में लटकी रहे।'' सा.बाबा 8.01.10 रिवा.

''बहुत हैं, जो चाहते हैं कि हम शिवबाबा के बन जायें। परन्तु लायक भी हो, तन्दुरुस्त भी हो, ज्ञान भी किसको दे सके। वह गवर्मेन्ट भी बहुत जाँच करके लेती है। यहाँ भी सब कुछ देखा जाता है। सर्विस कर सकते हैं? नम्बरवार तो होते ही हैं। ... जो समझते हैं कि याद से हमारे पाप कटते हैं, वे अच्छा पुरुषार्थ करते हैं।'' सा.बाबा 18.03.09 रिवा.

''हटना कमजोरों का काम है। शिवशक्तियाँ अपने को मिटाती हैं, न कि हटती हैं। ... इस ग्रुप से देखेंगे कितनों का सम्पूर्ण समर्पण का समारोह होता है। ... जितना बापदादा के स्नेही हो, उतना फिर सहयोगी भी बनना है। सहयोगी तब बनेंगे, जब अपने में सर्वशक्तियों को धारण करेंगे। ... सर्व शक्तियाँ अपने में भरकर जायेंगे तब हिसाब-किताब चुक्तू कर सकेंगे।''
अ.बापदादा 11.6.70

''तुम खुदाई खिज़मतगार बनते हो। खुदा जो स्वर्ग स्थापन करने की खिज़मत करते हैं, उसमें तुम मदद करते हो। जो जास्ती मदद करेंगे, वे ही ऊंच पद पायेंगे। यहाँ कोई भूख नहीं मर सकते। ... यहाँ तुम बेहद के बाप के बने हो।'' सा.बाबा 7.01.09 रिवा.

''आप कुमारियों को कोई पर बलि नहीं चढ़ना है, लेकिन उसको अपने ऊपर अर्थात् जिसके ऊपर आप सभी बलि चढ़े हो, उन पर सभी को बलि चढ़ाना है। ... जब कुमारियाँ काली रूप बन जायें, तब सर्विस की सफलता हो।'' अ.बापदादा 28.5.70

''अपने को इन्श्योर नहीं करेंगे तो भविष्य 21 जन्मों के लिए कैसे मिलेगा। मरना तो है ही, तो क्यों न इन्श्योर कर देना चाहिए। कहते - सब कुछ उनका है तो परवरिश भी वह करेंगे। भल कोई सब कुछ देते हैं परन्तु सर्विस नहीं करेंगे तो जो दिया, वह खाते रहते हैं। बाकी जमा क्या होगा। कुछ नहीं। सर्विस का सबूत चाहिए।'' सा.बाबा 9.12.08 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और गृहस्थ-व्यवहार

सेवा ही भाग्य बनाने और सतयुग में श्रेष्ठ पाने तथा वर्तमान में आत्माओं की और परमात्मा की दुआयें लेने का मुख्य आधार है। ईश्वरीय सेवा आत्मा को शक्ति और खुशी देती है। इस ईश्वरीय सेवा के लिए हम जो हैं, जहाँ हैं, वहाँ और वैसे ही कर सकते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं - कोई यह बहाना नहीं दे सकता कि हम इस परिस्थिति में ईश्वरीय सेवा नहीं कर सकते हैं। ईश्वरीय सेवा में समर्पणता का अपना महत्व है और गृहस्थ-व्यवहार में रहते हुए सेवा का अपना महत्व है। गृहस्थ व्यवहार वालों के लिए बाबा कहते हैं - ये नई दुनिया के प्रवृत्ति मार्ग का सेम्पुल हैं।

''बाप ने तुमको मूलवतन से लेकर सारा राज़ समझाया है। मूलवतन का राज़ बाप के बिगर कोई समझा नहीं सकता। तुमको भी फिर टीचर बनना है। ... औरों को भी आप समान बनायेंगे तो बहुत ऊंच पद पायेंगे। यहाँ रहने वालों से भी गृहस्थ व्यवहार में रहते सेवा करने वाले ऊंच पद पा सकते हैं।'' सा.बाबा 30.09.09 रिवा.

''कई नये-नये लाड़ले बच्चे आते हैं, कितनी सर्विस करते हैं। जैसे कि शिवबाबा के पिछाड़ी आत्मा को कुर्बान कर दिया है। कुर्बान करने से फिर सर्विस भी कितनी करते हैं। वे बाप को कितने प्रिय लगते हैं!'' सा.बाबा 24.09.09 रिवा.

''प्रवृत्ति के बन्धनों को हल्का करके जितना सर्विस में मददगार बनती जायेंगी, उतना ही यह हिसाब-किताब जल्दी चुक्तू होगा। ... सुनना और सुनाना दोनों ही अनुभव करना चाहिए। जैसे बाप मददगार बनते हैं, वैसे बच्चों को भी मददगार बनना है। यही मदद लेना है। ... फुल पास होने के लिए सर्विस की सब्जेक्ट में मार्क्स लेना है।'' अ.बापदादा 01.3.71

''बाप युक्तियाँ तो बहुत अच्छी समझाते रहते हैं, फिर कोई करे या न करे, वह उनकी मर्जी। बच्चे भी समझते होंगे कि बाप राय तो बहुत अच्छी देते हैं। हमारा काम है मित्र-सम्बन्धी आदि जो भी मिलें, उन सबको बाप पैग़ाम देना।'' सा.बाबा 17.08.09 रिवा.

''व्यवहार भी ईश्वरीय सेवा अर्थ कर रहा हूँ। ... यह परिवर्तन संकल्प सदा स्मृति में रहे तो मन और तन डबल कमाई करते रहेंगे। स्थूल धन भी आता रहेगा और मन से अविनाशी धन भी जमा होता रहेगा। ... ईश्वरीय सेवा में सदा निमित्त मात्र का मन्त्र वा करावनहार की स्मृति का संकल्प सदा याद रहे। करावनहार भूले नहीं। तो सेवा में सदा निर्माण ही निर्माण करते रहेंगे।'' अ.बापदादा 31.12.70

''ऊंच ते ऊंच सेवा है, बाप का परिचय देना। ... बच्चों को यह बनना है तो सेवा भी करनी

चाहिए ना। इनको देखो, यह भी लौकिक परिवार वाला था ना। इनसे बाबा ने कराया। इनमें प्रवेश कर इनको भी कहते हैं, तो तुमको भी कहते हैं कि यह करो। ... बैठे-बैठे कहा - यह छोड़ो, यह तो छी-छी दुनिया है, चलो वैकुण्ठ।'' सा.बाबा 24.06.09 रिवा.

''अर्जुन और भील का भी मिसाल दिखाते हैं। अर्जुन से भी भील तीखा हो गया वाण मारने में। अर्जुन अर्थात् जो घर में रहते हैं, समर्पित हैं, रोज़ सुनते हैं। उनसे बाहर रहने वाले तीखे हो जाते हैं। जिनमें ज्ञान का जौहर है, उनके आगे वे भरी ढोते हैं।''

सा.बाबा 12.02.09 रिवा.

''तुम घर में रहते भी सर्विस कर सकते हो। ... ऐसे नहीं कि यहाँ आकर बैठना है। ... ऐसे बहुत हैं, जो घर में रहकर भी सर्विस करते हैं तो बहुत होशियार हो जाते हैं। मुख्य बात बाप समझाते हैं कि अपने को आत्मा समझो और मुझ बाप को याद करो। घर में रहने वालों की यहाँ रहने वालों से भी अच्छी उन्नति हो सकती है।'' सा.बाबा 15.01.09 रिवा.

''जिनको कल्याण करने की आदत पड़ जाती है, वह कल्याण करने बिगर रह नहीं सकते। ज्ञान और योग पूरा है तो कोई भी बेइज्जती नहीं कर सकते। ... साई के घर से कोई खाली न जाये। अभी साई तुम्हारे सम्मुख है। कोई को तुम दो अक्षर भी सुनाओ, वे भी प्रजा में आयेंगे जरूर।'' सा.बाबा 15.01.09 रिवा.

''तुम्हारे पास नॉलेज बहुत अच्छी है, उससे बहुत काम हो सकता है। ... तुम्हारा काम है सबको रास्ता बताना। बाप तो अच्छी रीति समझाते रहते हैं परन्तु बच्चे अपने ही धन्धाधोरी में, बच्चों आदि की सम्भाल में फँसे हुए हैं।'' सा.बाबा 10.12.08 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और भारत

भारत परमात्मा की अवतरण भूमि है, इसलिए भारत से ही परमात्मा का विश्व-कल्याण का कर्तव्य आरम्भ होता है। बाबा ने भी कहा है - चेरिटी बिगिन्स एट होम। भारत हमारा जन्म-स्थान है, इसलिए पहले भारत का कल्याण करता हूँ, फिर विश्व का कल्याण होता है। भारत से ही पैगम्बर-मैसेन्जर सारे विश्व में परमात्मा का पैग़ाम देने के लिए जाते हैं, जिससे सर्व आत्माओं का कल्याण होता है। इसलिए भारत को सब देशों से अधिक दानी कहा जाता है।

''बाप कहते हैं - मैं आया हूँ तुम्हारी सेवा में। तुम सब बच्चे भी भारत की अलौकिक सेवा में हो, जो सर्विस तुम्हारे सिवाए और कोई कर नहीं सकते। तुम पवित्र बन भारत को भी पवित्र

बनाते हो। ... तुम बच्चों को भारत के लिए कितना लव है। खास भारत और आम सारी दुनिया की तुम सच्ची सेवा करते हो।''
सा.बाबा 15.01.10 रिवा.

''श्रीमत पर तुम भारत की ऊंच ते ऊंच सेवा अपने तन-मन-धन से कर रहे हो। ... तुम्हारी लड़ाई है 5 विकारों रूपी रावण से, जिस रावण का सारी पृथ्वी पर राज्य है। ... तुम गुप्त रीति भारत की बहुतबड़ी सेवा कर रहे हो, जिसका आगे चलकर सबको पता पड़ेगा। ... अभी तुम हो राम की श्रीमत पर, बाकी सारी दुनिया रावण की मत पर है।''
सा.बाबा 15.01.10 रिवा.

''तुम गुप्त कर्तव्य कर रहे हो, इसलिए तुमको नशा भी गुप्त है। तुम रुहानी गवर्मेन्ट के रुहानी सर्वेन्ट हो। तुम भारत को स्वर्ग बना रहे हो। ... अभी देहली कब्रिस्तान है, फिर यही परिस्तान बननी है। नई दुनिया में यही देहली परिस्तान होगी, जो तुम बना बना रहे हो। ये बड़ी समझने की बातें हैं, जो भूलनी नहीं चाहिए।''
सा.बाबा 15.01.10 रिवा.

''बाप की ही महिमा गाई जाती है कि वह निराकार, निरहंकारी है। ... सच्चा निष्काम सेवाधारी तो एक बाप ही है। तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए कि बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, खुद नहीं बनते हैं। ... कोई भी मिले तो उसको बोलो - हम परमात्मा की श्रीमत पर भारत की सेवा में है, जो सबका बापूजी है। श्रीमत भगवत् गीता गाई हुई है।''
सा.बाबा 15.01.10 रिवा.

''इस घड़ी तक जो कुछ हुआ, कल्प पहले भी हुआ था। नथिंग न्यु। अच्छा काम करने में विघ्न पड़ते ही हैं, नई बात नहीं। हमको तो अपने तन-मन-धन से भारत को स्वर्ग जरूर बनाना है। ... हम श्रीमत पर इस भारत की रुहानी सेवा कर रहे हैं। तुम्हारी बुद्धि में है कि हम अपना राज्य फिर से स्थापन कर रहे हैं।''
सा.बाबा 26.03.10 रिवा.

''बच्चे जानते हैं कि खास भारत और आम सारी दुनिया को यह खुशी का सन्देश देना है कि भारत अब फिर से स्वर्ग बन रहा है अथवा अभी स्वर्ग की स्थापना हो रही है। बाप जिनको हेविनली गॉड फादर कहते हैं, वे हेविन की स्थापना करने आये हैं।... तुम बच्चों को बाप का डायरेक्शन है कि यह खुशखबरी अच्छी रीति सबको सुनाओ।''
सा.बाबा 22.02.10 रिवा.

''बाप समझाते हैं - तुम जितना पुरुषार्थ करेंगे, सुखधाम में उतना ऊंच पद पायेंगे। स्वर्ग में तो बहुत जायेंगे। भारत पुण्यात्माओं की दुनिया थी, पाप का नाम-निशान नहीं था। अभी तो बहुत पापात्मा बन गये हैं। ... बाप इतना समझाते हैं तो भी समझते नहीं हैं। कल्प-कल्प ऐसा होता आया है, कोई नई बात नहीं है।''
सा.बाबा 26.01.10 रिवा.

''समझाना चाहिए - स्वर्ग के देवी-देवताओं की राजाई सहज राजयोग से भारत को प्राप्त होती है तो क्यों न यह म्युजियम गवर्मेन्ट हाउस में अन्दर लगा दें, जहाँ कॉन्फ्रेन्स आदि होती रहती है। यह ख्यालात सर्विसएबुल बच्चों के चलने चाहिए। ... विजय तो बच्चों की जरूर होनी है। तो ख्यालात चलने चाहिए। देही-अभिमानी को ही ऐसे-ऐसे ख्याल आयेंगे।''

सा.बाबा 5.11.09 रिवा.

''इसमें गुप्त मेहनत बहुत है। गुप्त रहकर विचार सागर मन्थन करे, तब नशा चढ़े। किसको भी प्यार से समझाना चाहिए कि बेहद के बाप का वर्सा हर कल्प भारतवासियों को मिलता है। ... बच्चे बरोबर फील करते हैं कि हम क्या बन गये थे, अभी बाबा आप समान बनाते हैं। मूल बात है देही-अभिमानी बनना है। देही-अभिमानी बनकर विचार करना होता है।''

सा.बाबा 5.11.09 रिवा.

''ऊपर में स्वर्ग की राजधानी खड़ी है, नीचे में आदि देव बैठा है, जिसको एडम भी कहते हैं। वह है ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर। ... कैसे यह संगमयुग पर राजयोग सीखते हैं, जिससे फिर विश्व के मालिक बने हैं। संगमयुग की तपस्या भी दिखायी है। जो प्रैक्टिकल हुआ था, उसका यादगार दिखाया है। ऐसे किसको समझाना चाहिए।'' सा.बाबा 14.09.09 रिवा.

''बोलो - आबू सबसे बड़ा तीर्थ है, सब धर्म वालों की सद्गति करने वाला एक ही बाप है, उनका यादगार आबू में है। चलो तो हम आपको दिखायें।... क्रिश्चियन लोग भी जानना चाहते हैं कि प्राचीन भारत का राजयोग किसने सिखाया, वह क्या है।'' सा.बाबा 14.9.09 रिवा.

''बच्चों को ऐसी युक्तियाँ रचनी चाहिए, जो आपही समझने के लिए लोग आयें। ... ख्याल तो चलता है ना कि सारा भारत कैसे गोल्डन एज में आ जाये। उसके लिए बाबा कितना समझाते हैं।'' सा.बाबा 15.09.09 रिवा.

''यह जरूर सबको मालूम होना चाहिए कि भारत बड़े ते बड़ा तीर्थ है, जहाँ बेहद का बाप आते हैं। ऐसे नहीं कि वह सारे भारत में विराजमान हुआ। ... आबू में कैसे आये ? देलवाड़ा मन्दिर भी यहाँ पूरा यादगार है। जिन्होंने भी बनाया है, उनकी बुद्धि में आया और बैठकर बनवाया। ... बाप यहाँ ही आकर सर्व की सद्गति करते हैं, मगध देश में नहीं। वह तो पाकिस्तान हो गया। (भल आया मगध देश में)'' सा.बाबा 2.09.09 रिवा.

''भारत वाइसलेस था, अभी विशश बना है, फिर वाइसलेस कैसे बनेगा - पहले तो यह उनकी बुद्धि में बिठाना है।... स्वर्ग का फाउण्डेशन तो बाप ने लगा दिया है, बाकी अब सर्विस स्टेशन का उद्घाटन होता है। यह तो गीता की ही बात है कि हे बच्चो, तुम काम पर जीत पहनो तो ऐसे जगतजीत बनेंगे।... जो काम पर जीत पाते हैं, वे ही जगतजीत बनते हैं।''

सा.बाबा 19.08.09 रिवा.

''बाप ने भारत को स्वर्ग का वर्सा दिया था, जिसको सुखधाम कहते हैं। ... योग में रह किसको बताओ तो सबको टाइम आदि ही भूल जायेगा। कोई कुछ कह न सकेंगे, 15-20 मिनट के बदले घण्टा भी सुनते रहेंगे। परन्तु वह योगबल की ताक़त चाहिए। देहाभिमान नहीं हो।''

सा.बाबा 18.07.09 रिवा.

''बच्चों की यह बुद्धि में रखना चाहिए कि हम कैसे लिखें, जो मनुष्यों को समझाने में सेकेण्ड लगे। तुम ही यह समझा सकते हो। ... शिवबाबा आया था सूर्यवंशी घराना स्थापन करने। बरोबर भारत में स्वर्ग था। ... वह है ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। उनको वृक्षपति अथवा बृहस्पति भी कहते हैं।''

सा.बाबा 9.05.09 रिवा.

''तुम योगबल से वायुमण्डल को भी शुद्ध करते हो। अभी तुम बहुत सर्विस कर रहे हो। जो अपनी सेवा करते हैं, वे ही भारत की सेवा करते हैं।... तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान है। यह भी जानते हो कि कल्प पहले जिसने जो सर्विस की है, वही अब भी करते रहते हैं।''

सा.बाबा 14.04.09 रिवा.

''फॉरेन वाले कहते हैं ना कि भारत में ही बाप क्यों आया ? तो भारत में प्रभाव है ना। भारत में भी ईस्टर्न में ज्ञान सूर्य प्रगटा। तो धरनी में प्रभाव है। ... सेन्टर खुल गये हैं, सेवा बढ़ रही है। उसकी मुबारक हो। लेकिन अभी जो होम वर्क दिया है, उसमें नम्बरवन बनेंगे ना।''

अ.बापदादा 7.04.09

''बच्चों को युक्ति रचनी है कि कैसे किसको समझायें कि भारत का प्राचीन योग सिवाए परमपिता परमात्मा के कोइ सिखला नहीं सकता। ... तुम्हारी है यह ईश्वरीय मिशन। तुमको मनुष्यों को देवता बनाने की सेवा करनी है।''

सा.बाबा 23.03.09 रिवा.

''बाबा कहते हैं - वेश्याओं को भी समझाना है। भारत का नाम भी उन्होंने ही गिराया है। इसमें मुख्य चाहिए योगबल। ... ऐसे पतितों को पावन बनाने की तलवार बहुत तीखी चाहिए। ... जब समझाते हो तो उनकी शकल से मालूम पड़ता है कि वे कहाँ तक समझते हैं।''

सा.बाबा 23.01.09 रिवा.

''राम और रावण का जन्म भारत में ही दिखाते हैं। शिव जयन्ति विलायत में नहीं मनाते हैं, यहाँ ही मनाते हैं। ... जब दिन पूरा हो रात शुरू हुई तो रावण आ गया, जिसको वाम मार्ग कहा जाता है। ... बच्चों को सर्विस करनी चाहिए। जो खुद जागृत होगा, वही औरों को भी जागृत कर सकेंगे।''

सा.बाबा 18.12.08 रिवा.

''तुम्हारे पास भी जो पैसा आदि है, वह सब इस सेवा में लगा रहे हो ताकि भारत स्वर्ग बनें।

तुम बाप को स्वर्ग बनाने में मदद करते हो। ... तुम तो कहते हो - बाबा यह पाई-पैसा सब यज्ञ-सर्विस में लगा दो। ... उन सबका तो पैसा धन-सम्पत्ति सब विनाश हो जाता है।''

सा.बाबा 10.12.08 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और फरिश्ता स्वरूप

वास्तव में फरिश्ता स्वरूप है ही ईश्वरीय सेवा के लिए क्योंकि उसकी अपनी कोई आवश्यकतायें नहीं, इच्छा-आकांक्षायें नहीं होती हैं, जिसके लिए उसको पुरुषार्थ करना पड़े। इसलिए फरिश्ता सदा ही विश्व-कल्याण की सेवा में तत्पर रहता है। फरिश्ता का एक सेकेण्ड भी बिना सेवा के नहीं होता है। साकार देहधारी ब्रह्मा बाबा ही प्रथम आत्मा हैं, जो अपने पुरुषार्थ से फरिश्ता बनें और 40-45 वर्षों से विश्व-कल्याण की सेवा कर रहे हैं। ब्रह्मा बाबा ने साकार देह में रहते हुए भी अपने फरिश्ता स्वरूप से सेवा की और उसका स्वरूप दिखाया, जिसको सभी ज्ञान-अज्ञानी, जो उनसे मिलते थे, अनुभव करते थे।

''सभी की सेवा की रिजल्ट अच्छी देखी लेकिन अशरीरीपन का वायुमण्डल मेहनत कम और प्रभाव ज्यादा डालता है। सुना हुआ अच्छा तो लगता है लेकिन वायुमण्डल से अशरीरीपन की दृष्टि से अनुभव करते हैं और अनुभव कब भूलता नहीं है। तो फरिश्तेपन की धुन अभी सेवा में विशेष एडीशन करो।''

अ.बापदादा 5.02.09

''लाइट के डबल हल्केपन की स्थिति में स्थित होकर अगर कोई को भी मिलते हैं तो उनके मस्तक में आत्मा ज्योति का भान चलते-फिरते भी दिखाई देगा। ... जैसे ब्रह्मा बाप में देखा अगर कोई भी मिलता, दृष्टि लेता तो बात करते-करते क्या दिखाई देता ? ... मीठी अशरीरी स्थिति में स्थित हो जाता। ... दूसरे को भी सेकेण्ड में अशरीरीपन का अनुभव कराते रहे।''

अ.बापदादा 5.02.09

''लाइट कहाँ भी जलेगी, छिपेगी नहीं और यह तो रुहानी लाइट है। तो अपने वायुमण्डल से उन्हों को अनुभव कराओ कि यह कौन हैं! ... इसीलिए दादी का उदाहरण देते हैं। क्योंकि ब्रह्मा बाप के लिए सोचते हैं, उनमें शिवबाबा था, शिव बाप के लिए सोचते हैं कि वह तो निराकार, न्यारा और निराकार है, हम तो स्थूल शरीरधारी हैं। ... दिल शिकस्त हो जाते हैं।''

अ.बापदादा 5.02.09

''स्वभाव-संस्कार मिलाना अर्थात सर्व के प्यारे बनना है, कोई-कोई के प्यारे नहीं। ... कोई-कोई की विशेषता को देखकर प्यार हो जाता है ... फरिश्ता बनने में यह विघ्न आता है। प्यारा भले बनाओ लेकिन मैं आत्मा न्यारी हूँ। न्यारी स्टेज से प्यारा बनाओ, विशेषता से प्यारा

नहीं।'' अ.बापदादा 5.02.09

''अन्त में चाहेंगे तो भी सेवा नहीं कर सकेंगे, ... उस समय फरिश्ता लाइफ या अशरीरी बनने का सेकेण्ड में बिन्दु लगाने का यह अभ्यास ही काम में आना है और अचानक होना है। ... सेवा करनी है लेकिन दोनों का बैलेन्स चाहिए। बापदादा बार-बार इशारा दे रहा है, जिससे कोई उल्हना न दे। अचानक होना है और ऐसे सरकमस्टांश में होना है।''

अ.बापदादा 5.02.09

''उसका वह गुण धारण भले करो लेकिन इसके कारण सिर्फ प्यारा बनना, वह रांग है। फरिश्ता सभी का प्यारा होता है। हर एक कहे मेरा, अपनापन अनुभव करे। ऐसी फरिश्तेपन की अवस्था में दो चीजें विघ्न डालती हैं। एक है देह का भान, वह तो नेचुरल सबको अनुभव है। ... दूसरा है देह-अभिमान।'' अ.बापदादा 5.02.09

ईश्वरीय सेवा और संगठन

ईश्वरीय सेवा में सफलता प्राप्त करने संगठन में एकमत होना अति आवश्यक है। जितना संगठन में परस्पर प्यार होगा, स्नेह होगा, उतना ही सेवा में सफलता होगी।

''सेवा में सेवा साथियों को भी आत्मा रूप में देखो। ... जब आत्मा देखो तो आत्मा के जो ओरिजिनल संस्कार हैं, उस रूप में देखो। ... लेकिन अभी जब आत्मा रूप में देखते हो तो उसमें वर्तमान के जो मिक्स संस्कार हैं, वे भी आ जाते हैं, जिससे आपस में जो सम्पूर्ण स्थिति होनी चाहिए, उसमें दूरी पड़ जाती है। ... आत्मा के ओरिजिनल संस्कार के रूप में देखने से जो संगठन में रुकावट आती वह खत्म हो जायेगी।'' अ.बापदादा 31.3.10

ईश्वरीय सेवा और समाज सेवा

परमात्मा आकर आत्माओं को पावन बनाकर, उनमें दैवी गुणों की धारणा कराकर दैवी समाज की स्थापना करते हैं। परमात्मा आत्माओं को जो सेवा सिखाते हैं, उससे दैवी समाज की स्थापना होती है, जहाँ सभी आत्मायें सुखी, शान्त और समृद्ध होती हैं, जिसको स्वर्ग कहा जाता है। दुनिया में समाज सेवा के नाम पर जो भी सेवा करते हैं, उसके करते हुए भी समाज में आसुरी वृत्तियाँ बढ़ती ही जाती है और समाज आसुरियता और दुख-अशान्ति की ओर ही बढ़ता ही जाता है। भले जो सच्ची दिल से समाज-सेवा करते हैं, समाज और विश्व के

कल्याणार्थ अपना तन-मन-धन लगाते हैं, उसका उनको अल्पकाल के लिए फल अवश्य मिलता है। जिसके लिए बाबा कहते हैं - जो हॉस्पिटल खोलता है, उसको अगले जन्म में स्वास्थय अच्छा मिलता है, धर्मशाला आदि बनवाता है, उसको रहने की अच्छी सुविधा मिलती है, परन्तु ये सब अल्पकाल का फल होता है। सच्चा फल तो ईश्वरीय सेवा से ही मिलता है। ईश्वरीय सेवा के बिना देश, दुनिया और समाज का उत्थान हो नहीं सकता। इसलिए हम परमात्मा के बच्चों को अपना तन-मन-धन ईश्वरीय सेवा में ही लगाना चाहिए, जिससे समाज, देश और विश्व सदा के लिए सुखी, शान्त और समृद्ध हो जाता है।

''अभी बाप इस ड्रामा का राज़ समझाते हैं। इस बेहद के ड्रामा को जब कोई अच्छी रीति समझे, तब बुद्धि में बैठे। ... अभी बाप तुम बच्चों को रिफ्रेश करते हैं, तुमको फिर औरों को रिफ्रेश करना है। अभी तुमको ज्ञान मिल रहा है, जिससे तुम सद्गति को पा लेंगे।''

सा.बाबा 12.12.09 रिवा.

''तुम सर्जन के बच्चे हो ना। तुमको हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस सब मिलती है, तो तुम फिर औरों को दो। दे सकते हो तो क्यों नहीं अपने घर पर बोर्ड लगा दो - हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस फार 21 जेनरेशन इन वन सेकेण्ड। मनुष्य आकर समझें कि भारत में आज से 5000 वर्ष पहले हेल्थ-वेल्थ-हैपीनेस थी, पवित्रता भी थी।''

सा.बाबा 25.08.09 रिवा.

''सेवा के लिए अति पाप-आत्मा, अति अपकारी आत्मा, बगुले के ऊपर भी नफरत नहीं, घृणा नहीं, निरादर नहीं लेकिन विश्व-कल्याणकारी स्थिति में स्थित होकर रहमदिल बनकर तरस की भावना रखते हुए सेवा का सम्बन्ध समझकर सेवा करेंगे और जितने भी होपलेस केस की सेवा करेंगे तो उतने ही प्राइज़ के अधिकारी बनेंगे।''

अ.बापदादा 31.12.70

Q. ईश्वरीय सेवा और समाज सेवा में क्या मूलभूत अन्तर है ?

ईश्वरीय सेवा में समाज सेवा समाई हुई है क्योंकि परमात्मा आते ही सर्व आत्माओं को सुख-शान्ति देने के लिए, विश्व को पावन बनाने के लिए। इसलिए ईश्वरीय सेवा में समाज की सेवा समाई हुई है परन्तु आजकल समाज सेवा के नाम पर जो कार्य करते हैं, उसमें ईश्वरीय सेवा नहीं होती है क्योंकि उस सेवा से न तो समाज और व्यक्ति की चढ़ती कला होती है, न ही उसमें ईश्वर अर्थात् परमात्मा का कोई हाथ होता है और न उससे आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति की राह मिलती है, जो आत्माओं की मूलभूत प्यास है। उस समाज सेवा से न ही विश्व का कल्याण होता है। समाज सेवा होते भी समाज में विघटन होता रहता है, परस्पर ईर्ष्या-द्वेष बढ़ता ही रहता है।

Q. क्या हम आत्माओं को ईश्वरीय सेवा को छोड़कर अपना तन-मन-धन समाज सेवा में लगाना चाहिए?

परमात्मा ने कहा है - तुम आत्माओं को अपना तन-मन-धन ईश्वरीय सेवा में लगाना है अर्थात् ईश्वरीय सन्देश देने के लिए खर्च करना है और जो आत्मायें पावन बनने की प्रतिज्ञा करती हैं, उनको सहयोग देना है। यदि तुम पतित आत्माओं को देते हो तो तुम भी पतित बन जाओगे। बाबा ने कहा है - तुमको तो विश्व को पावन बनाने के लिए अपना तन-मन-धन लगाना है, गरीब तो सारी दुनिया है और उनको देने वाले भी दुनिया बहुत है, इसलिए तुमको उसके लिए अपना समय, शक्ति और साधन नहीं लगाना है। हर आत्मा के पास साधन सीमित होते हैं और यदि वह उस समाज सेवा में उनको लगायेगा तो इस ईश्वरीय सेवा में अवश्य ही कम करेगा।

''आपको भी नशा है ना कि हम गोल्डन वर्ल्ड के अधिकारी बन रहे हैं। ऐसी गिफ्ट और कोई दे नहीं सकता। बाप ने हर एक बच्चे को यह डायरेक्शन दिया है कि सभी आत्माओं को यह बाप का वर्सा गोल्डन वर्ल्ड का सन्देश देकर, उनको भी आप ये गिफ्ट दो। (बाप ने ये गिफ्ट आपको दी, आप औरों को भी दो)'' अ.बापदादा 31.12.09

''आपके पास कौनसी गिफ्ट है? एक तो नई दुनिया की गिफ्ट दो और दूसरा आपके पास बहुत खज़ाने हैं। (ज्ञान का) गुणों के, शक्तियों के, स्वमान के, कितने खज़ाने हैं।... कोई न कोई गिफ्ट अवश्य दो, जिससे उन्होंकी जीवन बदल जाये और गोल्डन दुनिया के अधिकारी बन जायें। ... चारो ओर दुख-अशान्ति बढ़ रही है और हर एक में भय-चिन्ता है।''

अ.बापदादा 31.12.09

''चारो ओर दुख-अशान्ति बढ़ रही है और हर एक में भय-चिन्ता है। ऐसी दुखी-अशान्त आत्माओं को कम से कम यह सन्देश जरूर दो कि अब बाप आये हैं, अब उनके अविनाशी वर्से के अधिकारी बन जाओ। यह सन्देश हर आत्मा को दे भी रहे हो लेकिन अभी भी कई बच्चे बाप के सन्देश से वंचित रहे हुए हैं। ... कोई भी वंचित न रह जाये।''

अ.बापदादा 31.12.09

ईश्वरीय सेवा और विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी

ज्ञान सागर परमात्मा आकर अभी हमको रिलीजियो-पॉलिटीकल ज्ञान देते हैं अर्थात् विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं, जिससे विश्व में राजसत्ता और धर्मसत्ता दोनों की स्थापना होती है और दोनों ही सत्तायें एक के ही हाथ में होती हैं। परमात्मा के द्वारा राजसत्ता और

धर्मसत्ता की स्थापना के बाद विश्व में विनाश होता है और विश्व की हिस्ट्री-जाग्राफी में मूलभूत परिवर्तन होता है। पृथ्वी 90 अंश पर सीधी हो जाती है, विश्व में सदाबहार मौसम होता है। फिर जो राजाई स्थापन होती है और भौगोलिक परिवर्तन होता है, जिससे पृथ्वी साढ़े तेइस अंश अपनी धूरी पर झुक जाती है, जिससे द्वापर आदि में पुन: भौगोलिक स्थिति में मूलभूत परिवर्तन होता है, जिससे विश्व में अनेक नये भूखण्डों का उद्गम होता है।

''तुम कहेंगे कल्प-कल्प ऐसा बाप आते हैं, बाप कहते हैं - मैं कल्प-कल्प आकर ऐसी स्थापना करूँगा। ... स्थापना, विनाश और पालना का कर्तव्य कैसे होता है, यह तुम ही जानते हो। तुमको फिर औरों को भी समझाना है। बाप को जानने से बाप द्वारा तुम सब कुछ जान जाते हो।''

सा.बाबा 9.04.09 रिवा.

''वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी यथार्थ रीति तुम ही जानते हो। मनुष्य कैसे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं, यह बाप तुमको समझा रहे हैं, तुमको फिर औरों को समझाना है।... इसको गीता एपीसोड कहा जाता है, जब तुम पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनते हो।''

सा.बाबा 9.4.09 रिवा.

''जितनी प्रकृति की हलचल, उतनी आपकी अचल सथिति प्रकृति को परिवर्तन करेगी। ... 'नथिंग न्यू' अपनी अचल स्थिति के लिए तो ठीक है लेकिन ... आत्माओं के रहम की पुकार आप लोगों को पहुँचती तो है ना! ये छोटी-छोटी आपदायें और अधिक तड़पाती हैं।... तो रहम पड़ता है या नहीं?''

अ.बापदादा 25.1.94 दादियों से

''ब्राह्मण सम्पन्न हो जाओ तो दुख की दुनिया सम्पन्न हो जाये। ... चिल्लाते-चिल्लाते मरना और एक धक से परिवर्तन होना, फर्क तो है ना। महाविनाश और निहर्सल का विनाश में फर्क है। महाविनाश अर्थात् महान परिवर्तन। उसके निमित्त आप हो। आप सम्पन्न बनेंगे तो समाप्ति होगी।''

अ.बापदादा 25.1.94 दादियों से

''ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करने से तुम बहुत रौनक में आयेंगे। सतयुगी रौनक और कलियुगी रौनक में रात-दिन का फर्क है। ... बाप भी वण्डरफुल, ज्ञान भी वण्डरफुल। इन वण्डर्स को समझने-समझाने वाला भी ऐसा चाहिए, जिसकी बुद्धि इन वण्डर्स में ही लगी रहे।''

सा.बाबा 4.04.09 रिवा.

''तुम संन्देश में यह छपाओ कि अगर फूल बनना चाहते हो तो आपने को आत्मा समझो और फूल बनाने वाले परमपिता परमात्मा को याद करो तो तुम्हारे सब अवगुण निकल जायेंगे और तुम सतोप्रधान फूल बन जायेंगे। ... बाबा तुम्हें बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 7.02.09 रिवा.

''ऐसी-ऐसी बातों में रमण करने से फिर यह पुरानी दुनिया भूल जायेगी। आपस में भी ऐसी-ऐसी बातें करनी चाहिए तो तुमको बहुत खुशी रहेगी। ... 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी को तुम जानते हो। ... यह हिस्ट्री-जॉग्राफी सबको सुनाते रहो। ... इस चक्र को याद करने से तुमको बड़ी खुशी रहनी चाहिए।'' सा.बाबा 12.12.08 रिवा.

''ज्ञान का नशा चढ़ा हुआ है। तुम भाषण करो - वर्ल्ड में सिवाए ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारियों के वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कोई भी जानते नहीं हैं। तुम चेलेन्ज करो। शमशान में भी जाकर सर्विस करनी चाहिए। ... तुम हो भारत के सौभाग्य विधाता, तो कितना नशा होना चाहिए।''
सा.बाबा 10.12.08 रिवा.

ईश्वरीय सेवा और एडवान्स पार्टी

जो भी आत्मायें संगमयुग पर निश्चयबुद्धि बनकर परमात्मा के बनते हैं और ईश्वरीय सेवा में अपना जीवन समर्पित करते हैं, वे कहाँ भी हैं और कैसे भी हैं, सेवा के बिना रह नहीं सकते। वे यह शरीर छोड़कर जाने के बाद भी सेवा के बिना रह नहीं सकते, परन्तु उनकी सेवा का रूप बदल जाता है। उनकी भी पालना ब्रह्मा बाप और शिवबाबा के द्वारा ही होती है।

''आज बापदादा ने एडवान्स पार्टी के साथ एडवान्स में होली मनाई। जानते हो क्या होली मनाई ? ... जो अभी एडवान्स पार्टी में जाने वाले हैं, उन्होंने भी बचपन से लेकर यानी काफी समय से अपना सेवा का पार्ट बजाया।... आज वतन में मम्मा, दीदी और दादी त्रिमूर्ति को विशेष संगठन के बीच खड़ा किया।... इन्होंको गुप्त रूप में सेवा करनी पड़ती है।''
अ.बापदादा 9.03.09

''इन्होंको गुप्त रूप में सेवा करनी पड़ती है। अमृतवेले ये भी वतन में इमर्ज होते हैं और फिर सेवा पर जाते हैं। जो विशेष आत्मायें हैं, उन्होने सेवा छोड़ी नहीं है। अमृतवेले उन्होंका वतन में आना फिक्स है। अपने ब्राह्मण जीवन में इमर्ज होना और चारो ओर कोई न कोई सेवा अर्थ मन्सा-सेवा और बुद्धि द्वारा आत्माओं के मन और बुद्धि को आकर्षण करने की विशेष सेवा करते हैं।'' अ.बापदादा 9.03.09

''त्रिमूर्ति अर्थात् मम्मा, दीदी और दादी से बाप ने पूछा आप क्या कर रहे ? बाप जानता है तो भी पूछता तो है ना। उन्होंने कहा हम दो प्रकार से प्रेरणा देते हैं। एक हलचल मचाने वालों को और दूसरा नयी सृष्टि के निमित्त बनने वालों को।'' अ.बापदादा 9.03.09

ईश्वरीय सेवा और सतयुगी राजाई

सतयुगी राजाई की स्थापना का आधार इस समय की पुरुषोत्तम संगमयुग पर की हुई सेवा पर ही है। अभी की सेवा के आधार पर ही कोई राजा-महाराजा, प्रजा, नौकर-चाकर, दास-दासी आदि बनते हैं। जो तन-मन-धन से समर्पित बुद्धि से जिन आत्माओं की सेवा करते हैं, वे आत्मायें ही उसकी प्रजा में आती हैं और वह राजा बनता है या राज-परिवार में ऊंच पद पाता है।

''ऐसी न्यारेपन की स्टेज में रहने से अन्य आत्माओं को भी आप लोगों से न्यारेपन का अनुभव होगा। वे भी न्यारापन महसूस करेंगे। ... ऐसे चलते-फिरते फरिश्तेपन के साक्षात्कार होंगे। यहाँ बैठे हुए भी अनेक आत्माओं को, जो भी आपके सतयुगी फेमिली में समीप सम्बन्ध में आने वाले होंगे, उनको आप लोगों के फरिश्ते रूप और भविष्य राज्य पद दोनों के इकट्ठे साक्षात्कार होंगे। जैसे शुरू में ब्रह्मा बाबा के सम्पूर्ण स्वरूप का और श्रीकृष्ण दोनों का साक्षात्कार करते थे।''

अ.बापदादा 21.1.72

प्रश्नोत्तर

Q. ईश्वरीय सेवा क्या है?

Q. ईश्वरीय सेवा से त्याग-तपस्या का क्या सम्बन्ध है?

Q. ईश्वरीय सेवा का विश्व के राजतन्त्र से क्या सम्बन्ध है?

Q. ईश्वरीय सेवा और विनाश की प्रक्रिया का क्या सम्बन्ध है?

Q. ईश्वरीय सेवा की सफलता के लिए किस-किस बात की याद रहे और याद एवं सेवा कैसी हो?

Q. सकाश देने की सेवा क्या है, उसका विधि-विधान क्या है?

Q. किसी आत्मा को याद करने और सकाश देने में क्या अन्तर है?

Q. किसी आत्मा को सन्देश देने और सकाश देने में क्या अन्तर है?

Q. किसी आत्मा को याद करना और उसके स्व-स्वरूप और परमात्मा की याद दिलाने और सकाश देने में क्या अन्तर है?

Q. सकाश और दृष्टि में क्या अन्तर है?

Q. सकाश और लाइट-हाउस, माइट-हाउस, सर्च-लाइट में क्या अन्तर है?

Q. ईश्वरीय सेवा और कल्प-वृक्ष में क्या सम्बन्ध है अर्थात् ईश्वरीय सेवा के लिए कल्प-वृक्ष के ज्ञान का क्या महत्व है?

सेवा के सम्बन्ध में विविध ईश्वरीय महावाक्य

साकार तन द्वारा उच्चारे महावाक्य

''अपने को अशरीरी आत्मा समझ मुझ निराकार बाप को याद करो। प्रीत और विपरीत का सारा मदार है सर्विस पर। अच्छी प्रीत होगी तो वे बाप की अच्छी सर्विस करेंगे। ... तुम्हारा यह रुहानी धन्धा तो बहुत अच्छा है। सवेरे और शाम को इस सर्विस में लग जाओ।''

सा.बाबा 25.03.10 रिवा.

''यह ज्ञान धन है। जितना इस धन से अपनी झोली भरकर औरों को दान करेंगे, उतना फायदा होगा। ... भक्ति में ईश्वर अर्थ दान-पुण्य करते हैं तो उसका फल दूसरे जन्म में अल्पकाल के लिए मिलता है। यह है डायरेक्ट, जिसका फल 21 जन्म के लिए मिलता है।''

सा.बाबा 22.03.10 रिवा.

''विश्व की बादशाही बाप के बिगर कोई दे न सके। इन लक्ष्मी-नारायण ने कोई लड़ाई से यह राज्य नहीं लिया है। ... ये बड़ी समझ की बातें हैं। तो बच्चों को बड़ा खुश होना चाहिए कि हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं। ... बाप जो सिखलाते हैं, वह सीखकर औरों को भी सिखलाओ। इस सृष्टि-चक्र को याद करो और औरों को भी कराओ।'' सा.बाबा 19.03.10 रिवा.

''स्वर्ग का रचयिता बाप स्वर्ग का वर्सा भारतवासियों को ही देते हैं, बाकी सबको वापस घर ले जाते हैं। ... जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, वे उतना ऊंच पद पायेंगे। जो जितना श्रीमत पर चलेंगे, वे उतना श्रेष्ठ बनेंगे। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। मम्मा-बाबा के तख्तनशीन बनना है तो पूरा-पूरा फॉलो फादर। ... औरों को भी आप समान बनाओ।'' सा.बाबा 20.3.10 रिवा.

''जब बहुत भक्ति करते हैं तब भगवान मिलते हैं। सो भी रात के बाद दिन जरूर आना है। परन्तु समय पर होगा ना। ... समझाने के लिए तुम बच्चों में योग का बल चाहिए। योगबल से सब काम सहज हो जाते है। ... कहाँ-कहाँ बाबा भी मदद करते हैं। ड्रामा में जो नूँध है, वह रिपीट होता है।''

सा.बाबा 21.11.08 रिवा.

''हर एक को बाप का परिचय देना है और यह सच्ची यात्रा सिखलानी है। ... आत्माओं के रूप में कोई फर्क नहीं होता बाकी शरीरों में और पार्ट में फर्क होता है।''

सा.बाबा 14.10.08 रिवा.

''हम बहुतों को समझाते हैं, इसमें खुश नहीं होना चाहिए। पहले देखना है मैं बाबा को कितना याद करता हूँ, रात को बाबा को याद करके सोता हूँ या भूल जाता हूँ? ... सर्विस भी करनी है और याद में रहकर विकर्म भी विनाश करने हैं।'' सा.बाबा 14.1.09 रिवा.

''ऐसे मत समझो कि भाषण करने वाले ऊंच हैं। ... सिर्फ कहना नहीं है लेकिन करना भी है। कथनी, करनी, रहनी सब समान हो। ... भल भाषण बहुत अच्छा करते हैं परन्तु बाप के साथ बुद्धियोग भी अच्छा चाहिए।'' सा.बाबा 29.9.08 रिवा.

''बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, हम उनको याद करते हैं। बाप की और 84 जन्मों के चक्र की याद रहे तो अहो सौभाग्य। ... अब हम अपने घर जाते हैं, औरों को भी यही सुनाना है। बाबा बिगर सतयुग की राजाई कोई दे नहीं सकता।'' सा.बाबा 13.03.10 रिवा.

''जो सत बाप के संग में रहेंगे, बहुतों को रास्ता बताते रहेंगे, वे ऊंच पद पायेंगे। सत बाप से हमको क्या वर्सा मिला है, वह अपने अन्दर में देखना है। यह तो जानते हैं कि सब नम्बरवार हैं। कोई कितना वर्सा पाते हैं, कोई कितना वर्सा पाते हैं। रात-दिन का फर्क रहता है।''

सा.बाबा 24.02.10 रिवा.

''तुम सब जौहरी हो, यह है अविनाशी ज्ञान रतनों की जवाहरात। जिसके पास अच्छे-अच्छे रतन होंगे, वे साहूकार बनेंगे, वे औरों को भी साहूकार बनायेंगे।''

सा.बाबा 8.02.10 रिवा.

''जो भी मिले उसे रास्ता बताना है। सबको बहुत प्यार से बोलो - बाप को याद करना है और पवित्र बनना है। ... अभी बाप ने हमको रास्ता बताया है, तो अपने को देखना है - हम अविनाशी ज्ञान रतनों का दान करता रहता हूँ? ... अभी तुम मनुष्य से देवता, पापात्मा से पुण्यात्मा बनते हो। यह सब हैं ज्ञान की बातें।'' सा.बाबा 29.01.10 रिवा.

''समझो तुम किसको कहते हो विनाश में बाकी थोड़े वर्ष हैं। वह कहता - यह कैसे हो सकता है? तो फट से कहना चाहिए - यह कोई हम थोड़ेही बताते हैं, यह तो भगवानुवाच है। ... घड़ी-घड़ी बोलो - यह तो शिवबाबा की श्रीमत है। ... पहले-पहले किसको भी बाप का परिचय देना है।'' सा.बाबा 14.01.10 रिवा.

''किसको समझाते हो तो घड़ी-घड़ी शिवबाबा का नाम लेते रहेंगे तो शिवबाबा को याद करते रहेंगे। इसमें बच्चों का भी कल्याण है। बाप ने जो तुमको समझाया है, वह तुम फिर औरों को समझाते रहो। सर्विस करने वालों का चार्ट अच्छा रहता होगा।''

सा.बाबा 14.01.10 रिवा.

''जास्ती सर्विस करने वाले ही ऊंच पद पायेंगे, तो उनका रिगार्ड भी रखना चाहिए। उनसे सीखना चाहिए। ... बेहद की राजाई के लिए पढ़ाई और सर्विस पर पूरा अटेन्शन चाहिए। यह है बेहद की पढ़ाई। अभी यह राजधानी स्थापन हो रही है।''

सा.बाबा 11.01.10 रिवा.

''सबको इस मैडल पर समझाओ, फिर जो इस धर्म का होगा, उसको तीर लग जायेगा, उसका कल्याण हो जायेगा। ... सर्विस की सफलता के लिए देही-अभिमानी अवस्था में स्थित होकर सर्विस करो। दिल साफ तो मुराद हासिल।'' सा.बाबा 11.01.10 रिवा.

''शिव के मन्दिर में सबसे अच्छी सर्विस हो सकती है। ... शिवबाबा इन ब्रह्मा द्वारा कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। ... मैडल पर समझा कर बोलो - ग़रीब है तो फ्री देते हैं, साहूकार है तो बोलो तुम देंगे तो बहुतों के कल्याण के लिए और भी छपा लेंगे तो तुम्हारा भी कल्याण हो जायेगा। तुम्हारा यह धन्धा सबसे तीखा हो जायेगा।''

सा.बाबा 11.01.10 रिवा.

''कोई भी धर्म वाला हो, उसको कहना है कि बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे, फिर मैं साथ घर ले जाऊंगा।... कोई रह न जाये, इसलिए पूरा ढिंढोरा पीटना चाहिए। एक दिन सबको जरूर पता पड़ेगा कि बाप आये हैं, शान्तिधाम-सुखधाम का वर्सा देने।'' सा.बाबा 7.01.10 रिवा.

''किसको भी प्यार से समझाना चाहिए कि यह वही महाभारत की लड़ाई है, बाप ने रुद्र ज्ञान यज्ञ भी रचा है। ... माया योग में ही विघ्न जरूर डालती है, फिर भी पुरुषार्थ करते-करते विजय पा लेंगे। ... पावन जरूर बनना है। मेहनत करनी है, औरों को भी रास्ता बताना है।''

सा.बाबा 4.01.10 रिवा.

''मौका और समय देखकर किसको तीर मारा जाता है। ज्ञान देने की भी बड़ी युक्ति चाहिए। बाप युक्तियाँ तो अनेक बताते रहते हैं। ... यह है ज्ञान यज्ञ। ब्राह्मणों को ही ज्ञान मिलता है, जो फिर देवता बनते हैं।'' सा.बाबा 4.01.10 रिवा.

''किसी भी मनुष्य में ये नॉलेज होती नहीं है। बाप ही आकर यह नॉलेज देते हैं, जिससे मनुष्य से देवता बनते हैं। ... म्युजियम में बड़े अच्छे-अच्छे चित्र हैं, जिन पर तुम किसको भी अच्छी रीति समझा सकते हो। बाबा यहाँ पाण्डव भवन में म्युजियम नहीं बनवाते हैं। इसको कहा जाता है टॉवर ऑफ साइलेन्स।'' सा.बाबा 27.12.09 रिवा.

''बाबा ने पढ़ाया है - बादल भरकर फिर बरसना भी है। सच्चे ब्राह्मणों को सच्ची गीता जरूर सुनानी है। ... मुक्ति का वर्सा तो सबको मिलता है। सबको वापस मुक्तिधाम में जाना ही है। बाकी स्वर्ग का वर्सा मिलता है पढ़ाई से। फिर जो जितना पढ़ेगा, उतना वर्सा मिलेगा।''

सा.बाबा 28.12.09 रिवा.

''बाप ने कोई वह गीता नहीं सुनाई थी। बाप तो जैसे अब समझा रहे हैं, ऐसे ही कल्प पहले भी समझाया था। ... रावण ने सीता को चुराया। ... इन बातों पर भी विचार किया जाता है।...

ये सब राज़ बहुत समझने के हैं, जो तुम बच्चे समझकर किसको भी बड़ी शीतलता से समझा सकते हो।''
सा.बाबा 23.12.09 रिवा.

''अभी प्रैक्टिकल की बात है कि में बाप सहज ज्ञान देता हूँ और सहज राजयोग सिखलाता हूँ। ... बाप गीता भी पूरा अर्थ समझाते हैं। मैं योग सिखलाता भी हूँ और सिखलवाता भी हूँ। बच्चे योग सीखकर फिर औरों को भी सिखलाते हैं ना। ... तुम बच्चे सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनकर फिर औरों को भी सुनाते हो। इसको ही शंख-ध्वनि कहा जाता है।''
सा.बाबा 24.12.09 रिवा.

''इस समय सभी काम चिता पर जल रहे हैं।... तुम हो शीतला देवियाँ, शीतल छींटे डालने वाली। यह है ज्ञान के छींटे, जो आत्मा के ऊपर डाले जाते हैं, जिससे आत्मा पवित्र बनने से शीतल बन जाती है। ... तुम खुद भी शीतल बनते हो और दूसरों को बनाते हो।''
सा.बाबा 26.12.09 रिवा.

''यह सब राज़ जैसे बाप ने तुमको समझाये हैं, वैसे तुमको और सबको समझाना है। ... निराकार शिवबाबा इस तन का आधार लेते हैं। बाबा को मुख तो जरूर चाहिए, इसलिए गऊमुख की महिमा है। यह राज़ ज़रा पेचीला है। शिवबाबा के आक्यूपेशन को सबको समझाना है। ''
सा.बाबा 23.12.09 रिवा.

''आत्मा बिन्दी मिसल छोटी है, जो देखने में भी नहीं आती है, बाप भी बिन्दी है। ... इन बातों पर बच्चों को अच्छी रीति विचार भी करना है। हम आत्मायें ऊपर से आई हैं, शरीर धारण का पार्ट बजाने के लिए। ... अभी जैसे तुमने समझा है, वैसे औरों को समझाना है। यह तो जरूर है कि नम्बरवार जिसने जितना पढ़ा है, वे उतना ही पढ़ा सकते हैं। सबको टीचर भी जरूर बनना है।''
सा.बाबा 23.12.09 रिवा.

''अमृतवेले उठकर बाबा से बातें करो। ... बाबा को याद कर बाबा की सर्विस पर जाओ। फिर माया के तूफान नहीं आयेंगे। वह नशा दिन भर चलेगा और अवस्था भी बड़ी रिफाइन हो जायेगी। योग में भी लाइन क्लीयर हो जायेगी।... गरीब भी बाबा की इस सर्विस में लग जायें तो उनको महल मिल सकते हैं।''
सा.बाबा 18.12.09 रिवा.

''यह भी व्यापार है परन्तु यह व्यापार कोई विरला ही करता है। व्यापार तो सभी को करना है। छोटे बच्चे भी ज्ञान और योग का व्यापार कर सकते हैं।''
सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

''महिमा सारी तुम्हारी है। नवरात्रि पर पूजा आदि सब तुम्हारी होती है। तुम ही बाप की श्रीमत पर चलकर स्थापना करते हो। श्रीमत पर तुम सारे विश्व को चेन्ज करते हो तो उनकी श्रीमत पर पूरा चलना चाहिए ना। सब नम्बरवार पुरुषार्थ करते रहते हैं और स्थापना होती रहती है।''

सा.बाबा 29.11.09 रिवा.

''आत्मा की ही सद्गति होती है और आत्मा की ही दुर्गति होती है। ये सभी बातें विचार सागर मन्थन करने की हैं। अपनी बुद्धि में ही नहीं होंगी तो दूसरों को कैसे समझायेंगे। ... बाप को याद न करने से अवस्था अचल-अडोल नहीं बन पाती है।''

सा.बाबा 1.12.09 रिवा.

''पिछाड़ी में तुमको सब साक्षात्कार होंगे कि हम क्या बनेंगे, हमसे क्या विकर्म हुआ है, जो मेरी ऐसी हालत हुई है। ... लक्ष्मी-नारायण बनना है तो पुरुषार्थ भी ऐसा चाहिए। अपने को आपही देखना है कि हम कितना औरों का कल्याण करते हैं, अन्तर्मुख हो कितना समय बाबा की याद में रहते हैं?''

सा.बाबा 23.11.09 रिवा.

''अभी बाप ने तुम बच्चों को यह सारा ज्ञान समझाया है, तुम फिर किसको भी समझा सकते हो। पहले-पहले तो किसको भी बेहद के बाप का परिचय देना है। ... वह नॉलेजफुल है, तो तुमको भी नॉलेज सिखलाते हैं। यह ईश्वरीय नॉलेज है सोर्स ऑफ इनकम।''

सा.बाबा 24.11.09 रिवा.

''तुम ही पूज्य और तुम ही पुजारी बनते हो, 84 का चक्र तुम ही लगाते हो। अब फिर वापस घर जाना है। कोई पतित वापस घर जा नहीं सकता। ... तुम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया में चले जायेंगे। अब जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। बहुतों को बाप का परिचय देते रहो।''

सा.बाबा 11.11.09 रिवा.

''बाप जो सुनाते हैं, ये सहज समझने की बातें हैं। इनको समझने में कोई मुश्किलात नहीं है और न किसको सुनाने में कोई मुश्किलात है। जब भी कोई मिले तो उसको बोलो - अपने को आत्मा समझ बेहद के बाप को याद करो। आत्माओं का बाप है परमपिता परमात्मा शिव। ... बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं और हिन्दी में ही समझाते हैं।''

सा.बाबा 12.11.09 रिवा.

''सतयुग में आयु पूरी होने पर आपही शरीर छोड़ते हैं। इसको कहा जाता है योगबल। वहाँ ज्ञान की बात नहीं रहती है।.. जो सर्विस नहीं करते हैं, वे क्या पद पायेंगे। सर्विस तो होनी ही है। गाँव-गाँव में सर्विस करनी है। बाप का परिचय सबाको देना है।''

सा.बाबा 13.11.09 रिवा.

''अभी तुमको एक बाप से ही सुनना है। सिवाए बाप के और कोई से कुछ सुनना ही नहीं है। बाप से सुनकर फिर अपने और भाइयों को सुनाना है। ... अभी तुम जानते हो बाप ही सतयुगी राजाई की डॉयनेस्टी स्थापन करते हैं।''

सा.बाबा 10.11.09 रिवा.

''जिन बच्चों में ज्ञान है, वे औरों का भी कल्याण करने के लिए, आप समान बनाने के लिए

भागते रहेंगे। अपने को आपही देखना है कि हमने कितनों ज्ञान सुनाया है। ... तुम सब शिवबाबा के ब्रह्मा के द्वारा एडॉप्टेड बच्चे हो।'' सा.बाबा 10.11.09 रिवा.

''बाप ने समझाया है - यह सुख और दुख का खेल है। जो भी नई-नई आत्मायें ऊपर से आती हैं, उनको पहले दुख नहीं हो सकता है। खेल है ही पहले सुख, पीछे दुख।... बाप ये सब बातें तुमको समझाते हैं, तुमको फिर औरों को समझाना है।''

सा.बाबा 10.11.09 रिवा.

''जो जितना-जितना बहुतों को पैग़ाम पहुँचाते हैं, उनको बड़ा पैगम्बर कहेंगे, उनको ही महारथी अथवा घोड़ेसवार कहा जाता है। ... तुम बच्चे सर्विस के लिए निमित्त बने हुए हो, सर्विस के लिए ही जीवन दी हुई है। जो सर्विस करेंगे, वे ही पद भी पायेंगे। उनको किसी की परवाह नहीं रहती है।'' सा.बाबा 7.11.09 रिवा.

''सच्ची दिल वाले ही यहाँ स्कॉलरशिप पाते हैं, शैतानी दिल वाले तो चल न सकें। शैतानी दिल वाले अपना बेड़ा गर्क करते हैं। ... समझना चाहिए कि आपस में लूनपानी होने से हम बाप की सर्विस कर नहीं सकेंगे। अन्दर ही जलते रहेंगे। देहाभिमान आत्मा को जलाता है।''

सा.बाबा 7.11.09 रिवा.

''देही-अभिमानी को ही ऐसे-ऐसे ख्याल आयेंगे कि क्या करना चाहिए जो बेचारों को मालूम पड़े और बाप से वर्सा ले लेवें। ... बाबा कहते हैं बड़े-बड़े आदमियों के पास जाओ, आगे चलकर वे भी यह समझेंगे और आयेंगे।'' सा.बाबा 5.11.09 रिवा.

''जो भी टाइम मिले तो सर्विस के लिए ख्याल करना चाहिए कि हम औरों का कल्याण कैसे करें ? ... गायन है - मानुस से देवता किये करत न लागी वार। पुरानी दुनिया से नई दुनिया जरूर बनती है, फिर पुरानी का विनाश भी जरूर होना है।'' सा.बाबा 29.10.09 रिवा.

''अच्छा याद करने वालों के करेक्टर्स अच्छे होते जाते हैं, वे बहुत-बहुत मीठे सर्विसएबुल बनते जाते हैं। करेक्टर्स अच्छे नहीं हैं तो कोई को पसन्द नहीं आते हैं। ... ईश्वर की मत को लीगल मत कहा जाता है। लीगल मत से तुम ऊंच बनते हो।... सबसे इल्लीगल काम है विकार का भूत।'' सा.बाबा 31.10.09 रिवा.

''एक ही बात बस है। इसमें जास्ती कुछ भी पढ़ाना नहीं चाहिए। तुम एक सेकेण्ड में किसको भी स्वर्गवासी बना सकते हो। ... फिर बाप तुमको इतना ज्ञान देते हैं, जिसके लिए गायन है - सागर को स्याही बनाओ, सारा जंगल कलम बनाओ, तो भी ज्ञान का अन्त नहीं हो सकता है।'' सा.बाबा 27.10.09 रिवा.

''तुम बच्चे जानते हो - हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। यही सबको बताना है कि बाप कहते हैं -

मन्मनाभव अर्थात् अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। जितनी तुम सर्विस करेंगे, उतना तुमको फल मिलेगा। ये सब बातें अच्छी रीति समझने की हैं। ... इसमें ही मेहनत है। मेहनत बिगर फल थोड़ेही मिल सकता है।'' सा.बाबा 15.10.09 रिवा.

''वानप्रस्थ आश्रमों में जाकर तुम सर्विस कर सकते हो। पूछो - वानप्रस्थ का अर्थ क्या है? वह अभी बाप बैठ समझाते हैं। अभी सारी दुनिया वानप्रस्थी है। ... सबको वाणी से परे जाना ही है। जो अच्छी रीति पुरुषार्थ करते हैं, वे ही ऊंच पद पाते हैं। इसको कहा जाता क़यामत का समय।'' सा.बाबा 15.10.09 रिवा.

''तुम रुहानी पण्डे हो, तुम सबको रुहानी घर का रास्ता बताते हो। वह है तुम आत्माओं का रुहानी घर। रूह शरीर धारण कर यहाँ पार्ट बजाती है।... हर एक का ड्रामा में अपना जो पार्ट है, वही बजायेंगे। इस ड्रामा में कोई रिप्लेस हो नहीं सकता।''

सा.बाबा 21.09.09 रिवा.

''तुमको अपना भी श्रृंगार करना है और फिर औरों को भी रास्ता बताना है। ... कोई तो अपना भी श्रृंगार कर फिर दूसरों का भी करते हैं। ... अच्छी रीति सोच-विचार करो कि बाबा कैसे-कैसे युक्तियाँ बताते हैं।'' सा.बाबा 9.09.09 रिवा.

''ये ईश्वरीय कॉलेज खोलने की बहुत कोशिश करनी है क्योंकि यह ईश्वरीय कॉलेज स्थापन करने की बहुत ऊंची सर्विस है। ... विश्व-विद्यालय तो यह एक ही होता है, जहाँ बाप आकर सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं।'' सा.बाबा 3.09.09 रिवा.

''कहाँ भी रहते यह याद की प्रैक्टिस करनी है कि जो कोई भी आये, उनको भी बाप का पैग़ाम दो कि बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, इसको ही योगबल कहा जाता है। ... नीचे उतरते-उतरते तमोप्रधान बन गये, आत्मा की शक्ति बिल्कुल खत्म हो गई है।'' सा.बाबा 17.08.09 रिवा.

''सबसे बड़ा तो बाप ही है, उनसे हम सीख रहे हैं। सीखकर औरों को समझाते हैं। सत्गुरु जो तुमको समझाते हैं, वह तुम औरों को समझाते हो। ... हर एक आत्मा में अपना-अपना पार्ट भरा हुआ है। सब एक्टर्स हैं, उनको अपना पार्ट बजाना ही है। आत्मा का पार्ट कभी मिट नहीं सकता।'' सा.बाबा 19.08.09 रिवा.

''बाप ने तुमको जो स्मृति दिलाई है, तुम फिर वह औरों को भी दिलाओ, तब ही तुम ऊंच पद पा सकेंगे। ऊंच पद पाने के लिए बहुत मेहनत करनी है। ... आत्मा को कोई काल खाता नहीं है। ... सतयुग में ड्रामा अनुसार जब समय होता है तो आत्मा चली जाती है। जिस समय जिसको जाना होता है, वह चला जाता है।'' सा.बाबा 12.08.09 रिवा.

''कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे बाप आता है। यह सारा चक्र रिपीट होता रहता है। यह स्मृति इस समय ही तुमको आई, जब बाप ने स्मृति दिलाई है। ... इस स्मृति के नशे में जब रहेंगे, तब किसको उसी खुशी और नशे से समझा भी सकेंगे।''

सा.बाबा 12.08.09 रिवा.

''बाप आते ही हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। तो समझाने की कितनी मेहनत करनी पड़ती है। ... सभी आत्माओं को एक परमपिता परमात्मा से वर्सा मिलता है। मनुष्य, मनुष्य को जीवनमुक्ति दे न सके। तुम बच्चे यह वर्सा पाने का पुरुषार्थ अभी कर रहे हो।''

सा.बाबा 13.08.09 रिवा.

''यह है रुहानी यात्रा। छोटे बच्चों को भी सिखलाओ कि शिवबाबा को याद करो। उनका भी हक है बाप से वर्सा लेने का। वे यह तो नहीं समझेंगे कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। नहीं, वे सिर्फ शिवबाबा को याद करेंगे। मेहनत करने से उनका भी कल्याण हो सकता है।''

सा.बाबा 13.08.09 रिवा.

''सतयुग में तो थोड़े देवतायें होते हैं, यहाँ तो कितने अनगिनत मनुष्य हैं। वहाँ तो होगा ही एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म। अभी तुम सबको बेहद के बाप का परिचय देते हो। बेहद का बाप ही आकर नई दुनिया स्वर्ग रचते हैं।''

सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''कोई कहते-तुम कहते हो भगवानुवाच तो रथ द्वारा हमको भगवान का साक्षात्कार कराओ। अरे, तुमने आत्मा का साक्षात्कार किया है? इतनी छोटी सी बिन्दु का तुम साक्षात्कार क्या कर सकेंगे। जरूरत ही नहीं है। यह तो आत्मा को जानना होता है। आत्मा भृकुटी के बीच में रहती है, जिसके आधार पर इतना बड़ा शरीर चलता है।''

सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''आत्मायें निराकारी दुनिया में जायेंगे, वहाँ से जायेंगे सुखधाम में। सुखधाम में ले जाने वाला एक ही बाप है। तुम कोई को भी समझाओ, बोलो अभी वापस घर जाना है। ... अशरीरी बाप ही घर वापस ले जायेंगे, वह अभी आये हैं।''

सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''बाप से ऊंच ते ऊंच पद पाना है तो पुरुषार्थ करना पड़े। पढ़ाई याद होगी तो 84 का चक्र भी याद आ जायेगा। ... अगर यह याद आये तो किसको सुनायें भी जरूर। ... सर्विसएबुल बच्चों का सारा दिन यही ख्याल चलते रहते हैं। सर्विस नहीं करते तो समझा जाता है कि बुद्धि ही नहीं चलती है।''

सा.बाबा 4.08.09 रिवा.

''किसको समझाने की भी बड़ी युक्ति चाहिए। किसको उठाने के लिए सोचना चाहिए कि क्या युक्ति रचें, जो किसको सहज समझ में आ जाये। कोई को नाराज़ भी नहीं करना है। ... इस संगमयुग का तुमको ही पता है, और कोई तो समझ न सके। बाप तो सर्विस के लिए अनेक

प्रकार की युक्तियाँ बताते हैं।''

सा.बाबा 4.08.09 रिवा.

''अपनी आपही जाँच करनी चाहिए कि हम बाबा को कितना याद करते हैं, हमारी बुद्धि और किसी तरफ तो नहीं जाती है ? ... तुम कोई को भी युक्ति से समझायेंगे तो तुम्हारे दुश्मन नहीं बनेंगे। ... समझाने की युक्ति रचनी चाहिए।''

सा.बाबा 4.08.09 रिवा.

''एक बाप के सिवाए कोई की भी याद नहीं आनी चाहिए। और संग तोड़ एक संग जोड़ना है। ये हैं किसके कल्याण करने की युक्तियाँ। ... भिन्न-भिन्न युक्तियाँ रच बहुतों का कल्याण कर सकते हो। हट्टी तो एक ही है। और कोई हट्टी है ही नहीं तो जायेंगे कहाँ।''

सा.बाबा 4.08.09 रिवा.

''सतयुग में कोई त्योहार होता नहीं है।... जो यहाँ मनाते हैं, वे वहाँ नहीं मना सकते। ... अभी है ज्ञान मार्ग का समय। तुम बच्चों को समझाया गया है - भक्ति की कोई बात सुनाये तो उनको समझाना चाहिए हम अभी ज्ञानमार्ग में हैं, ज्ञान सागर एक भगवान ही है, जो सारी दुनिया को वाइसलेस बनाते हैं।''

सा.बाबा 31.07.09 रिवा.

''बच्चे जो सर्विस करते हैं, उसका समाचार मेग्जीन में आता है। जो मेग्जीन पढ़ते हैं, उनको मालूम पड़ेगा कि फलानी जगह ऐसी सर्विस हो रही है। ... सर्विस समाचार सुनकर दिल में आता है कि मैं भी ऐसी सर्विस करूँ। ... यह तो बच्चे समझते हैं कि जितनी सर्विस, उतना ऊंच पद मिलेगा।''

सा.बाबा 17.07.09 रिवा.

''जो जानते हैं लेकिन औरों को नहीं समझाते हैं तो बाबा कहेगा कि वे कुछ नहीं जानते हैं। जानते हैं तब कहें, जब सर्विस करें, समाचार मैग्जीन में आये।''

सा.बाबा 17.07.09 रिवा.

''सोचो नहीं। थोड़ा भी सुना तो वह प्रजा हो गई। प्रजा तो ढेर बननी है। ज्ञान कभी विनाश को नहीं पाता है। ज्ञान सुना और एक बार कहा शिवबाबा है, तो भी बस, प्रजा में आ जायेंगे। अन्दर में तुम्हें यह स्मृति आनी चाहिए कि हम जिस राज्य में थे, वह फिर अब पा रहे हैं, उसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। बिल्कुल एक्यूरेट सर्विस चल रही है कल्प पहले के माफिक।''

सा.बाबा 13.07.09 रिवा.

''ड्रामा अनुसार सारे कल्प नीचे उतरना ही है।... संगमयुग पर ही बाप आकर सिखलाते हैं कि अब चढ़ती कला शुरू होती है।... तुम पैग़ाम भी ड्रामा के प्लेन अनुसार ही पहुँचाते हो। कोई को पैग़ाम नहीं देते हो तो गोया सर्विस नहीं करते हो। सारी दुनिया में पैग़ाम पहुँचाना है।''

सा.बाबा 1.07.09 रिवा.

''अच्छी रीति सब बातें समझकर औरों को भी समझाना है। ... यहाँ तो तुमको सबको बाप

का पैग़ाम देना है।''
सा.बाबा 1.07.09 रिवा.

''मनुष्यों को इस बन्दरपने से छुड़ाना है। ... बाप तुम बच्चों को विश्व की बादशाही दे रहे हैं। बाकी सब खत्म हो जायेगा, इससे तो क्यों न बाप से बादशाही ले लो। कोई तकलीफ की बात नहीं है, सिर्फ बाप को याद करना है और स्वदर्शन चक्र फिराना है। भुगरों से मुट्ठी खाली कर हीरे-जवाहरों से भरकर जाना है।''
सा.बाबा 26.06.09 रिवा.

''हिन्दू से देवता नहीं, ब्राह्मण से देवता बनते हो। ये बाते अच्छी रीति धारण करनी हैं। ... पहले-पहले बाप का परिचय देकर, फिर दिखाना है कि यह पुरानी दुनिया बदलनी है। बाप नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं। ... अभी हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं।''
सा.बाबा 27.06.09 रिवा.

''जिन्होंने कल्प पहले बाप को जाना है, वे ही अभी जानते हैं, वे ही अब पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह पुरुषार्थ भी बाप के बिना कोई करा नहीं सकता। ... इन बातों को मानेंगे भी वे ही, जिन्होंने कल्प पहले माना होगा। तुम्हारा फर्ज है जो भी आये, उनको बाप का फरमान बताना।''
सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''सब जरूर समझते होंगे कि पहले नम्बर में सेवा तो यह दादा ही कर रहे हैं श्रीमत पर। ... मुख्य रुहानी सेवा है, सबको बाप का परिचय देना। यह है सबसे सहज बात। स्थूल सर्विस करने में ... तुम स्वर्ग में ही होंगे, राज्य करते होंगे - यह बुद्धि में रहने से खुशी होती है।''
सा.बाबा 24.06.09 रिवा.

''पहले-पहले अलफ को समझाना है। अलफ को समझ जायेंगे फिर इतने प्रश्न आदि कोई पूछेंगे नहीं। अलफ समझने बिगर तुम बाकी और चित्रों पर समझायेंगे तो माथा खराब कर देंगे। ... ऐसे भी निकलेंगे, जो कहेंगे अल्फ समझ लिया बाकी यह चित्र आदि क्या देखने के हैं। हमने अलफ को जानने से सब कुछ समझ लिया है। ... तुम यह फर्स्ट क्लास भिक्षा देते हो।''
सा.बाबा 19.06.09 रिवा.

''पहले-पहले किसको भी यह जरूर समझाना चाहिए कि अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो, देह के सब धर्म और सम्बन्ध भूल जाओ तो सब पाप कट जायेंगे और आत्मा पावन बन जायेगी। ... बाबा को ख्याल आया कि बच्चे पहला पाठ इस रीति पक्का नहीं कराते हैं, जो है बिल्कुल जरूरी। जितना यह अच्छी रीति कूटेंगे, उतना बुद्धि में याद रहेगा।''
सा.बाबा 19.06.09 रिवा.

''बाप का पैगाम सबको देना है, फिर है रचना की नॉलेज कि यह चक्र कैसे फिरता है। ... तुम उनको बाप की याद दिलायेंगे, उसमें तुम बच्चों का भी कल्याण है। तुम भी मन्मनाभव

रहेंगे। तुम पैग़म्बर हो तो तुमको बाप का परिचय सबको देना है।''

सा.बाबा 19.06.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। गीता के अक्षर कितने क्लीयर हैं। बाबा ने कहा भी है ... यह ज्ञान मेरे और देवताओं के भक्तों को सुनाना।''

सा.बाबा 2.06.09 रिवा.

''ऊंच ते ऊंच बाप बड़े ते बड़ी कहानी सुनाते हैं। यह कहानी तुमको बहुत ऊंच बनाने वाली है। यह सदैव याद रखनी चाहिए और बहुतों को सुनानी है। ... यह रियल कहानी है, जो चेतन्य वृक्षपति बाप बैठ तुम बच्चों को सुनाते हैं, जिससे तुम देवता बनते हो। इसमें पवित्रता है मुख्य।''

सा.बाबा 2.06.09 रिवा.

''तुम बच्चे पढ़ रहे हो। तुमको पढ़कर औरों को भी पढ़ाना है। सबको सिर्फ बाप का ही मैसेज देना है। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आये हैं। ... बाप के सिवाए मनुष्य को देवता कोई बना न सके। ... बाप ही तुम बच्चों को रचता और रचना का परिचय देते हैं।''

सा.बाबा 6.06.09 रिवा.

''ये बातें अच्छी रीति समझना और समझाना जरूर है। समझने-समझाने बिगर देवता पद कैसे पायेंगे। ... अभी तुम्हारा लंगर भक्ति मार्ग से उठ गया है, अब ज्ञान मार्ग में चलता है। ... अभी तुम ईश्वरीय सन्तान हो।''

सा.बाबा 19.05.09 रिवा.

''तुम कहाँ भी खड़े-खड़े सबको यह रास्ता बता सकते हो कि बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो, अपने को आत्मा समझो। यह समझा कर फिर उनका चेहरा देखो, कुछ बदलता है, नैन गीले होते हैं? ... यह है ही मनुष्य से देवता बनने का विद्यालय, इतना निश्चय में बच्चों को रहना है।''

सा.बाबा 18.05.09 रिवा.

''जो जास्ती खायेंगे, उनको नींद जास्ती आयेगी। जिनको नींद का नशा होगा, वे किसको समझा भी नहीं सकेंगे। जैसे लाचारी में समझायेंगे। यह ज्ञान की बातें तो बड़ी खुशी से सुननी और सुनानी चाहिए। मूल बात है सबको बाप का परिचय देना।''

सा.बाबा 19.05.09 रिवा.

''जिनको सर्विस का शौक रहता है, उनको अन्दर में आना चाहिए कि कैसे किसको सुखी बनायें। उनको बहुत खुशी होनी चाहिए। सबको बतायें कि हम आत्मायें कहाँ की रहने वाली हैं, फिर कैसे आती हैं पार्ट बजाने।''

सा.बाबा 13.05.09 रिवा.

''तुमको सिर्फ बाप को सिद्ध नहीं करना है। वह बाप भी है तो शिक्षा देने वाला भी है और सत्गुरु भी है। ऐसा समझाओ तो सर्वव्यापी का ख्याल उड़ जाये। ... बाप ही मनुष्य सृष्टि का

बीजरूप है। वह आकर हमको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं।''

सा.बाबा 6.05.09 रिवा.

''सारा मदार है पढ़ने और पढ़ाने पर। अपने दिल से पूछना है कि हम कितनों को पढ़ाते हैं। अभी सम्पूर्ण देवता तो कोई बना नहीं है। ... टीचर की नज़र एक-एक बच्चे पर जाती है देखते हैं कि ये मेरे अर्थ क्या सर्विस कर रहे हैं।'' सा.बाबा 7.05.09 रिवा.

''तुमको सबको पैग़ाम देना है। बाबा ने कहा था - अखबार में डालो, भल खर्चा हो परन्तु यह पैग़ाम सबको मिल जाये।'' सा.बाबा 7.05.09 रिवा.

''किसको बड़ी युक्ति से बताना पड़े। हद और बेहद के दो बाप हैं। अभी बेहद का बाप राजाई दे रहे हैं। पुरानी दुनिया का विनाश भी सामने खड़ा है।... यह योग अग्नि है, जिससे तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे।'' सा.बाबा 8.05.09 रिवा.

''बाप सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं, सबकी अवस्था को भी जानते हैं।... ऐसे नहीं कि बाप सबको सर्चलाइट देते हैं। जो जैसा है, वैसी कशिश करते हैं। जिनमें कोई गुण नहीं, वे क्या कशिश करेंगे। ... जो सर्विस करना नहीं जानते, योग में बैठते नहीं, ज्ञान की धारणा नहीं है, वे क्या पद पायेंगे।'' सा.बाबा 23.04.09 रिवा.

''वे तो घरबार छोड़ सन्यास करते हैं। तुमको बाबा कभी नहीं कहते कि घरबार छोड़ो। ... तुमको अपनी वा भारत की सेवा भी करनी है। ... होशियार होकर औरों को भी आप समान बनाना है। ... तुमको बेहद में टिकना है।'' सा.बाबा 9.04.09 रिवा.

''यहाँ का जो होगा, उनको यह ज्ञान बहुत अच्छा लगेगा।... आदि-देव और आदि-देवी, ये हैं संगमयुग के। संगमयुग ही सबसे उत्तम है, जब इन देवी-देवताओं के राज्य की स्थापना हो रही है। तुम बच्चों को अभी 16 कला सम्पूर्ण बनना है।'' सा.बाबा 31.03.09 रिवा.

''है बहुत सहज। अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो पाप कट जायेंगे और दैवीगुण धारण करो तो ऐसे (लक्ष्मी-नारायण) बन जायेंगे। ढिंढोरा पिटवाते रहो। देहाभिमान न हो तो ढोलक गले में डालकर सबको बताते रहो कि बाप आया है, वह कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जायेंगे।'' सा.बाबा 23.03.09 रिवा.

''ब्राह्मण-ब्राह्मणी वह, जिनके मुख में बाबा का गीता ज्ञान कण्ठ हो। ... हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है। सर्विस का सबूत देना चाहिए। सर्विस से समझ में आयेगा कि यह ऐसा पद पायेगा, फिर वह कल्प-कल्पानतर के लिए हो जायेगा।'' सा.बाबा 18.03.09 रिवा.

''अपनी आपही जाँच करनी है। बाप समझाते हैं - गफलत करेंगे तो पता पड़ जायेगा कि यह किसको पढ़ा नहीं सकते। ... जो किसको पढ़ा नहीं सकते हैं तो अन्दर में समझना चाहिए कि

मैं पूरा पढ़ा नहीं हूँ, तब किसको पढ़ा नहीं सकता।'' सा.बाबा 18.03.09 रिवा.

''आठ घण्टा इस गवर्मेन्ट की सर्विस करो। यह भी तुम मेरी नहीं, सारे विश्व की सेवा करते हो। इसके लिए टाइम निकालो। ... इस गवर्मेन्ट की सर्विस करने से तुम पद्मापदमपति बनते हो तो कितना दिल से सेवा करनी चाहिए।'' सा.बाबा 18.03.09 रिवा.

''जितना अच्छी रीति पढ़ेंगे, उतना स्कॉलरशिप मिलेगी।... बाप पहले-पहले आत्मा का ज्ञान समझाते हैं, फिर बाप का परिचय देते हैं। ... जो इन बातों को अच्छी रीति समझते हैं, वे फिर औरों का भी कल्याण करते हैं। बाप है सर्व का कल्याणकारी, तो बच्चों को भी बनना है। ... किसको विषय सागर से निकालना मासी का घर नहीं है।'' सा.बाबा 19.03.09 रिवा.

''बाहर वाले आते हैं तो फार्म भराते हैं, जिससे मालूम पड़े यह हमारे कुल का है या नहीं।... तुम किसको माथा नहीं टेक सकते हो। तुम पूछेंगे, यह लक्ष्मी-नारायण कहाँ गये, इनकी बायोग्राफी बताओ। बाबा ने तुम बच्चों को कितना नॉलेजफुल बनाया है, तब तुम यह पूछते हो। तो कितना नशा रहना चाहिए।'' सा.बाबा 4.03.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - आत्माभिमानी बनो। कितना नशा चढ़ना चाहिए - हमको भगवान पढ़ाते हैं। बाप तुमको अथाह खज़ाने देते हैं, उनको धारण करना है। ... मैं तुम्हारी ज्ञान रतनों से झोली भरता हूँ। फिर नम्बरवार जो झोली भरते हैं, वे फिर दान भी करते हैं। वे सबको प्यारे लगते हैं। अपने पास ही नहीं होगा तो देंगे क्या।'' सा.बाबा 5.03.09 रिवा.

''तुमको अन्दरूनी खुशी होगी तो दूसरों को भी समझायेंगे तो असर होगा। ... त्रिमूर्ति-गोला और झाड़ ये दो मुख्य चित्र हैं, इन पर तुमको समझाना है।... बाप को ही नहीं समझा तो दूसरे चित्रों पर ले जाना ही फालतू है। अल्फ को समझने बिगर कुछ भी समझेंगे नहीं।''

सा.बाबा 6.03.09 रिवा.

''चित्र आदि जो भी ड्रामा अनुसार बनें हैं, वे ही ठीक हैं। ... बच्चे कहते हैं - बाबा, क्या हमारे समझाने में कोई भूल है, जो मनुष्य समझते नहीं हैं? बाबा फट से कह देते हैं - हाँ, भूल है, तुम आत्माभिमानी अवस्था में रहकर नहीं समझाते हो तो आंखे क्रिमिनल हो जाती हैं। सिविल तब बनेंगी, जब तुम अपने को आत्मा समझेंगे।'' सा.बाबा 6.03.09 रिवा.

''जो बच्चे योग में नहीं रहते हैं, वे इतनी सर्विस भी नहीं कर सकते हैं। ... जब तुम खुद ही योग में नहीं रहते हो तो तुम दूसरों को फिर कैसे कहेंगे कि बाप को याद करो। ... तुम आत्माभिमानी होकर किसको समझायेंगे तो तीर लगेगा।'' सा.बाबा 6.03.09 रिवा.

''आत्मा में जन्म-जन्मान्तर का किचड़ा है, वह सारा जलना है। जब तुम्हारा सारा किचड़ा जल जायेगा तब दुनिया भी साफ हो जायेगी। ... तुमको सिर्फ अपना किचड़ा साफ नहीं करना

है, सभी का किचड़ा साफ करना है।'' सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''तुम हो खुदाई खिदमतगार। सबको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाना - यह है खिदमत। बाप और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। किसको समझाना भी बहुत सहज है। ... प्रभात फेरी में दिखाओ कि हम प्रजापिता ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ भारत पर इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य स्थापन कर रहे हैं।'' सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''पुरुषोत्तम संगमयुग एक ही है। इस समय ही बाप तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। भक्ति में फिर उसका यादगार चलता है। ... बाप कहते हैं - मैं आकर तुम्हारी रत्नों से झोली भरता हूँ। ... तुम मनुष्यों से अनेक प्रकार के प्रश्न पूछ सकते हो। तुमको अभी अकल मिलता है पूछने के लिए।'' सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''अपने आपसे पूछो - हम सतोप्रधान बनें हैं, दिल गवाही देती है ? अभी कर्मातीत अवस्था तो हुई नहीं है। होनी है जरूर। ... किसको भी बहुत धैर्य और प्यार से समझाना है। ... तुम मिनिस्टर आदि को भी समझा सकते हो। समझाना ऐसा चाहिए, जो उनको पानी-पानी कर दे।'' सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''यह तो घर है, शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं, फिर अगर सर्विस नहीं करते हैं तो मुफ्त में खाते हैं, गोया भीख पर चलना होता है। फिर 21 जन्म सर्विस करनी पड़ेगी। राजा से रंक तक सब यहाँ हैं, वहाँ भी हैं परन्तु वहाँ सदैव सुख है, यहाँ सदैव दुख है। पोजीशन तो वहाँ भी होती है।'' सा.बाबा 26.02.09 रिवा.

''अपने दिल से पूछना है कि हम यज्ञ की कितनी सेवा करते हैं ? कहते हैं - ईश्वर के पास सब हिसाब बना-बनाया है, उसको साक्षी होकर देखा जाता है कि इस चलन से ये क्या पद पायेंगे। ... ये सब समझने की बातें हैं।'' सा.बाबा 26.02.09 रिवा.

''ही बाप की दिल पर चढ़े रहते हैं। बाबा का अटेन्शन सारा सर्विसएबुल बच्चों की तरफ ही जाता है।'' सा.बाबा 3.03.10 रिवा.

''तुम बच्चों के मुख से सदैव रत्न निकलना चाहिए, पत्थर नहीं।... भल चाहते भी हैं कि हम किचड़े से जल्दी बाहर निकलें परन्तु जल्दी हो न सके।... समझाने वालों में भी नम्बरवार हैं। युक्तियुक्त समझानी पिछाड़ी में होगी, तब तुम्हारे बाण तीखे चलेंगे।''

सा.बाबा 27.02.09 रिवा.

''विचार सागर मन्थन कर ऐसा लिखें, जो मनुष्य वण्डर खायें। ... यह है बेहद का ड्रामा। यह ड्रामा बड़ा एक्यूरेट है, इसमें ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता है। ... विचार करना चाहिए कि इसकी पहचान सबको कैसे दी जाये।'' सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''यह वैरायटी ड्रामा है। एक सेकेण्ड न मिले दूसरे से। कुछ न कुछ फर्क जरूर पड़ जाता है।... यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है। इसको अच्छी रीति समझ और धारण कर औरों को भी समझाना है। ... जो इस ड्रामा को जानते हैं, वे दूसरों को भी समझा सकते हैं, उनको बहुत खुशी रहती है।'' सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''जिनको बुद्धि में यह न बैठता होगा, विचार सागर मन्थन करते होंगे, वे दूसरों को भी जरूर समझायेंगे। ... जो पक्के निश्चयबुद्धि होंगे, उनको कोई भी फिरा नहीं सकते। कच्चे को जल्दी फिरा देंगे। वे सर्वव्यापी की बात पर कितनी डिबेट करते हैं। वे भी अपने ज्ञान पर पक्के हैं।''

सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''यह नॉलेज लेने का वेश्याओं, अन्धे-लूले-लंगड़े सबको हक़ है। अन्धे-लूले-लंगड़े भी कोई न कोई प्रकार सेसमझ सकते हैं।'' सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''स्वदर्शन चक्रधारी बनकर तुमको अन्त तक पुरुषार्थ करना है।... वह धन्धा करते, साथ में आप समान बनाने का यह धन्धा जो बाप ने दिया है, वह भी करना है। यह भी शरीर निर्वाह हुआ ना। वह है अल्प काल का और यह है 21 जन्मों के लिए।''

सा.बाबा 18.02.09 रिवा.

''भारत में शिवजयन्ति मनाते हैं। वह तो है निराकार, उनकी जयन्ति कैसे हो सकती है? ... शिवबाबा की ब्रह्मा तन में प्रवेशता होती है, वही उनकी जयन्ति गाई जाती है। ... तुमको यह सबको समझाना चाहिए, समझाने की अच्छी-अच्छी युक्तियाँ निकालनी चाहिए।''

सा.बाबा 23.02.09 रिवा.

''इस ज्ञान को मानेंगे वे ही, जिन्होंने कल्प पहले माना है। इसमें अपनी चलन को बहुत सुधारना पड़ता है। सर्विस करनी पड़ती है। बहुतों का कल्याण करना है। बहुतों को जाकर रास्ता बताना है। बहुत मीठी जबान से समझाना है।'' सा.बाबा 24.02.09 रिवा.

''हमारी अनेक बार हार और जीत हुई है। सतयुग से कलियुग तक जो कुछ हुआ है, वह फिर रिपीट होना है। ... बाप कैसे डिटीज्म स्थापन कर रहे हैं, वह तुम देख रहे हो। ... तुम समझा सकते हो कि हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे, तब तो देवी-देवताओं को पूजते हैं। ... आदि सनातन धर्म कोई हिन्दू धर्म नहीं है, आदि सनातन तो देवी-देवता धर्म है।''

सा.बाबा 24.02.09 रिवा.

''जो काम को जीतेगा, वही जगतजीत बनेगा। मैं गोल्डन वर्ल्ड की स्थापना कर रहा हूँ। अनेक बार यह भारत गोल्डन एज बना, फिर आइरन एज में आया, - यह कोई भी जानते नहीं हैं।... ये सब बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हैं, अपने तन-मन-धन से रुहानी सेवा करते हैं।''

सा.बाबा 11.02.09 रिवा.

''बच्चों को समझाने की उछल आनी चाहिए परन्तु बच्चे अजुन छोटे हैं, बालिग नहीं बनें हैं। बालिगपने की हिम्मत चाहिए।... तुम बच्चों का काम है सबको बाप का परिचय देना। झाड़ धीरे-धीरे बढ़ता है। फिर बहुत वृद्धि को पायेंगे।''

सा.बाबा 11.02.09 रिवा.

''बाप का बनकर विकार में गया और मरा, फिर नये सिर पुरुषार्थ करना पड़े। ... ऐसे नहीं कि उनको एलाउ नहीं करना है। नहीं, उनको समझाना है जो कुछ याद की यात्रा की, पढ़ा वह सब खलास हो गया। ... दो बारी माफी दी, फिर केस होपलेस हो जाता है, तो कहेंगे गेट-आउट।''

सा.बाबा 11.02.09 रिवा.

''ज्ञान के साथ योग का जौहर भी जरूर चाहिए। जौहर नहीं है तो गोया कुक्कड़-ज्ञानी हैं। ... ज्ञान होता है संगमयुग पर। यह समझाने की युक्ति चाहिए, बड़ा अन्तर्मुख चाहिए। शरीर का भान छोड़ अपने को आत्मा समझना है।''

सा.बाबा 12.02.09 रिवा.

''ज्ञान सागर और ज्ञान गंगायें इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होते हैं। ज्ञान सागर बाप आते ही हैं कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर। ... पतित-पावन तो एक बाप ही है, वह आते ही एक बार हैं, जब पुरानी दुनिया बदलनी है। अब यह किसको समझाने में भी बुद्धि चाहिए। एकान्त में विचार सागर मन्थन करना पड़े।''

सा.बाबा 12.02.09 रिवा.

''नष्टोमोहा बनना है। पिछाड़ी में तुम इस देह और दुनिया को ही भूल जायेंगे। ... गरीब जो हैं, वे अच्छी सर्विस करते रहते हैं। यह तो पता है ना कि कौन-कौन खाली हाथ आये हैं परन्तु वे अच्छी सर्विस कर रहे हैं। बहुत कुछ ले आने वाले आज हैं नहीं और गरीब बहुत ऊंच मर्तबा पा रहे हैं।''

सा.बाबा 12.02.09 रिवा.

''अच्छे बच्चे कहेंगे हम बच्चे भी हैं तो हम सर्वेन्ट भी हैं। बच्चों को देखकर बाबा को बहुत खुशी होती है। ... विश्व में शान्ति तुम स्थापन करते हो। तुमको ही विश्व के बादशाही की प्राइज़ मिलती है, देने वाला है बाप। योगबल से तुम विश्व की बादशाही लेते हो, शारीरिक बल से विश्व का विनाश होता है। साइलेन्स से तुम विजय पाते हो।''

सा.बाबा 13.02.09 रिवा.

''स्टूडेण्ट्स खुद समझ सकते हैं कि हम कहाँ तक पढ़ते हैं और फिर किसको पढ़ा सकते हैं वा नहीं। ... तुमको बनना है सोने की बुद्धि परन्तु वह उनकी बनेंगी, जो सर्विस में रहेंगे। ... फार्म भराना, हर एक को अलग-अलग समझाना ... ये सब युक्तियां अपनाओगे तब तुम सर्विस में सक्सेसफुल होते जायेंगे।''

सा.बाबा 28.01.09 रिवा.

''बाबा ने कहा है - यह ज्ञान तुमको भक्तों को ही सुनाना है। हमारे भक्त और देवताओं के

भक्त इसे जल्दी समझेंगे। ... किसकी चलन से मालूम पड़ जाता है कि यह अच्छे मददगार बनेंगे, कल्प पहले मिसल।''

सा.बाबा 28.01.09 रिवा.

''बच्चे अगर मुख्य-मुख्य प्वाइन्ट्स धारण करें तो भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। अगर बाप को जानते हो तो दूसरों को भी परिचय दो। किसको परिचय नहीं देते तो गोया अपने में ही ज्ञान नहीं है। ... कल्याणकारी बाप के बच्चे हैं तो किसका कल्याण करना चाहिए ना।''

सा.बाबा 30.01.09 रिवा.

''अभी तुम अपना और औरों का भी कल्याण करते हो। जो अपना ही कल्याण नहीं करते तो औरों का भी कर नहीं सकते। बाप तो है सर्व का कल्याणकारी, सर्व का सद्गतिदाता। तुम भी उनके मददगार हो ना। ... अगर किसका कल्याण नहीं करते तो अपने को कल्याणकारी बाप का बच्चा क्यों कहलाना चाहिए। बाप पुरुषार्थ तो करायेगा ना।''

सा.बाबा 30.01.09 रिवा.

''मैं तुमको देवता बनाता हूँ तो तुमको बहुत मीठा बनना पड़े, दैवी गुण धारण करने हैं। जो जैसा है, वैसा ही बनायेंगे। तुम सबको टीचर बनना है। तुम सब पाण्डव सेना हो ना। पण्डों का काम है सबको रास्ता बताना।''

सा.बाबा 15.01.09 रिवा.

''तुम बच्चों को पहले-पहले देही-अभिमानी बनना है। देही-अभिमानी बच्चे सर्विस बहुत अच्छी करेंगे और बहुत खुशी में भी रहेंगे। उनकी बुद्धि में फालतू विकल्प नहीं आयेंगे। ... जो अच्छी सर्विस करते हैं, उनको महावीर की लाइन में रखेंगे। ... बड़ी निर्मानता से कोई को समझाना है।''

सा.बाबा 16.01.09 रिवा.

''देह सहित देह के सर्व धर्मों को छोड़कर अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो पाप भस्म हो जायेंगे। ...तुम्हें सबको बाप का यह पैगाम देना है कि बाप को याद करो तो घर चले जायेंगे। ... इसमें फिकर की कोई बात नहीं, आगे चलकर सब समझेंगे।''

सा.बाबा 16.01.09 रिवा.

''यह है रुहानी लव, जिससे आत्मा की उन्नति होती है, फिर भी कोई जिस्मानी लव से गिर पड़ते हैं। तकदीर में नहीं है तो भागन्ती हो जाते हैं। ... शिवबाबा को याद करते, सर्विस करते रहो तो बहुत उन्नति हो सकती है। शिवबाबा की सर्विस में शरीर भी न्योछावर करना चाहिए।''

सा.बाबा 17.01.09 रिवा.

''यज्ञ की बड़ी सम्भाल करनी चाहिए। माताओं की पाई-पाई से यज्ञ की सर्विस हो रही है। यहाँ गरीब ही साहूकार बनते हैं।... बीती को याद न करो और आगे की कोई आश मत रखो।... जो टाइम मिले, उसमें बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे।''

सा.बाबा 17.01.09 रिवा.

''अब तुमको अपने घर शान्तिधाम चलना है। टॉकी से मूवी में आना है और फिर साइलेन्स में चले जायेंगे। तुमको यह पैगाम सबको देना है। ... तुमको सभी आत्माओं की बहुत रुचि से सर्विस करनी है। हर एक को सेवा के लायक बनना है। जो दूसरों की प्यार से सेवा करते हैं, उनको सभी प्यार करते हैं। सेवा में कभी अहंकार नहीं आना चाहिए।''

सा.बाबा 18.01.09 रिवा.

''अब ज्ञान रतनों से अपनी खूब झोली भरो।... जो अच्छी रीति धारण करते हैं, वे फिर औरों की भी अच्छी सर्विस जरूर करेंगे। वे समय बरबाद नहीं करेंगे। ... तुम बच्चे अपने लिए ही श्रीमत पर राजाई स्थापन कर रहे हो।'' सा.बाबा 18.01.09 रिवा.

''तुम्हारे में भी ये बातें नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही समझते हैं और जो जितना समझते हैं, उतना ही औरों को समझाते हैं।... रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त की, सृष्टि-चक्र की नॉलेज सारी दुनिया में कोई मनुष्य नहीं जानते हैं।'' सा.बाबा 19.01.09 रिवा.

''यहाँ तो तुम वनवाह में हो। किसी चीज का शौक नहीं रहना चाहिए। हम अच्छे कपड़े आदि पहनें, यह भी देहाभिमान है। जो मिला सो अच्छा।... बाप कहते हैं - मैं तुमको अविनाशी ज्ञान रतनों का दान देता हूँ अगर तुम इनको दान देते रहेंगे तो भरतू रहेंगे।''

सा. बाबा 19.01.09 रिवा.

''अब बाप से तुमको ज्ञान रतनों की थालियाँ भर-भर कर मिलती हैं। ... जो अच्छी रीति पढ़ेंगे, पढ़ायेंगे, वे जरूर अच्छा धनवान बनेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है। यह सब ड्रामा में नूँध है।'' सा.बाबा 19.01.09 रिवा.

''तुम्हारी खुशी का पारावार नहीं। तुमको बेअन्त खुशी होनी चाहिए। तुमको बहुतों का कल्याण करना है। ... लाखों लोग तुम्हारे पास आयेंगे, तुमको फुर्सत नहीं मिलेगी। सबसे जास्ती तुम्हारे इन अविनाशी ज्ञान रतनों के दुकान निकलेंगे।'' सा.बाबा 21.01.09 रिवा.

''बहुत थोड़े हैं, जिनको सर्विस का बहुत शौक रहता है।... बाप जो ज्ञान का सागर है, पतित-पावन है, सर्व का सद्गतिदाता है, उनकी खूब महिमा करो।... भगवान तो एक को कहा जाता है, फिर अगर कोई इन बातों को मानता नहीं है तो समझना चाहिए, यह अपने धर्म का नहीं है।'' सा.बाबा 22.01.09 रिवा.

''गीता का भगवान कौन ... मूल बात ही यह है। इसमें ही तुम्हारी विजय है। परन्तु देही-अभिमानी अवस्था कहाँ है? एक-दो के नाम-रूप में फँसते हैं। ... भाषण करने वालों को आत्मा का ज्ञान बहुत मस्ती से देना चाहिए।'' सा.बाबा 22.01.09 रिवा.

''बहुतों का कल्याण करेंगे तो वे तुमको बहुत प्यार करेंगे। कहेंगे - तुम तो हमारी माता है। जगत के कल्याण के लिए तुम मातायें निमित्त हो। अपने को देखना है - हमने कितनों का कल्याण किया है, कितनों को बाप का पैगाम दिया है। ... तुम बाप का मैसेज सबको सुनाओ।'' सा.बाबा 7.01.09 रिवा.

''तुम अपने घर पर बोर्ड लगा दो - 21 जन्म के लिए हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस आकर प्राप्त करो। ... ऐसे-ऐसे लिखेंगे भी वे ही, जो निश्चयबुद्धि होंगे और इस नशे में रहते होंगे। जो भी आये, उनको समझाओ।'' सा.बाबा 7.01.09 रिवा.

''हर एक अपनी बुद्धि से समझ सकते हैं - मेरे में कितनी धारणा है। अगर धारणा है तो किसको समझाकर दिखाओ। यह है धन। धन देते नहीं तो कोई मानेंगे भी नहीं कि इनके पास धन है। धन दान करेंगे तो महादानी कहेंगे।'' सा.बाबा 8.01.09 रिवा.

''चित्र को देखने से याद आती है कि इस चित्र पर यह समझायें। और भी बहुत चित्र बनते जायेंगे। एकदम ऊपर आत्माओं को भी दिखाना है। ... अब तक जितने चित्र हैं, उनसे सर्विस करनी है। फिर ऐसे-ऐसे चित्र बनेंगे, जिनसे मनुष्य जल्दी समझ जायेंगे। झाड़ बहुत जल्दी बढ़ता जायेगा।'' सा.बाबा 9.01.09 रिवा.

''जो सर्विस करेंगे, उनका नाम जरूर बाबा भी लेंगे। सबको रास्ता बताना चाहिए। ... बाबा की रुहानी सर्विस नहीं कर सकते हो तो फिर यज्ञ की स्थूल सर्विस करना चाहिए। बाबा की याद में रहकर सर्विस करे तो अहो भाग्य।'' सा.बाबा 9.01.09 रिवा.

''तुम यह जैसे गरीबों को भीख देते हो, जिससे मनुष्य एकदम मालामाल बन जाते हैं। कोई भी भिखारी हो, बोलो हम तुमको ऐसी भीख देते हैं, जो तुम जन्म-जन्मान्तर के लिए भीख माँगने से ही छूट जायेंगे। ... तुम्हारा ये बैज भी कमाल कर सकता है। इससे तुम सेकेण्ड में कोई को बेहद का वर्सा दे सकते हो।'' सा.बाबा 10.01.09 रिवा.

''सर्विस करते रहो, फिर तुमको भोजन आदि की भी दरकार नहीं रहेगी। कहा जाता हे खुशी जैसी खुराक नहीं। धन नहीं होगा तो उनको घड़ी-घड़ी भूख लगती रहेगी। धनवान-राजाओं का जैसे पेट भरा रहता है। उनकी चलन बड़ी रॉचल होती है।'' सा.बाबा 10.01.09 रिवा.

''तुम बच्चों पर अब बृहस्पति की दशा है। तुम स्वर्ग में तो जरूर जायेंगे, यह तो पक्का है। बाकी पुरुषार्थ से ऊंच पद पाना है। अपने दिल से पूछना है कि हम फलाने मिसल सर्विस करते हैं। ऐसे नहीं कि ब्राह्मणी चाहिए। तुम खुद टीचर बनो।'' सा.बाबा 10.01.09 रिवा.

''जो सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करते हैं, वे फिर औरों को भी सतोप्रधान बनने का रास्ता जरूर बताते हैं। अभी तुम बच्चों को सुकर्म करना है।'' सा. बाबा 10.01.09 रिवा.

''यह है बेहद की पढ़ाई। ... किसको भी समझाने के समय अच्छी तरह से घोट-घोट कर समझाओ। ... तुम उस बाप की श्रीमत पर चलते हो, बाप के मददगार हो। बाप नहीं होता तो तुम कुछ भी कर नहीं सकते।'' सा.बाबा 12.01.09 रिवा.

''जो शिव की वा देवताओं की भक्ति करते हैं, उनको यह ज्ञान समझाना है, वे झट मानेंगे। बाकी नेचर वा साइन्स को मानने वालों की बुद्धि में यह ज्ञान बैठेगा ही नहीं। दूसरे धर्म वालों की बुद्धि में भी नहीं आयेगा। हाँ, जो कन्वर्ट हुए होंगे, वे ही निकल आयेंगे।''

सा.बाबा 13.01.09 रिवा.

''किसको भी अच्छी तरह से समझाना है। इस समय तो तुमको इतना समय बात करने नहीं देते हैं क्योंकि उनके सुनने का समय नहीं आया है। यह ज्ञान सुनने का भी सौभाग्य चाहिए। तुम पद्मापदम भाग्यशाली बच्चे ही बाप से सुनने के हक़दार बनते हो। ... बाप तुम बच्चों को ही सुनाते हैं।'' सा.बाबा 13.01.09 रिवा.

''मुख्य ये 2-3 चित्र हैं। बाकी ढेर चित्रों पर समझाने से मनुष्यों के ख्यालात और तरफ चले जाते हैं, जिससे जो समझा है वह भी भूल जाता है। इसलिए कहा जाता है टू मैनी कुक्स ... बहुत चित्र होते हैं और हँसीकुडी के मॉडल अथवा डायलॉग आदि होते हैं तो मूल बात बुद्धि से निकल जाती है।'' सा.बाबा 14'01'09 रिवा.

''तुम बच्चे समझते हो हम बाप को मदद करने के लिए इस गॉडली सर्विस पर खड़े हैं। बाप कहते हैं हम भी अपना स्वीट होम छोड़कर यहाँ आये हैं। ... बाकी खेल सारा इस सृष्टि पर चलता है। यह वण्डरफुल खेल है।'' सा.बाबा 14.01.09 रिवा.

''तुम्हारी यह है ईश्वरीय सभा, तो तुमको कितना नशा होना चाहिए। ... तुम बच्चों को सारा ज्ञान बुद्धि में रखना है। ... माताओं पर ज्ञान का कलष रखता हूँ। तो पहले-पहले किसको भी समझाओ - शिवाए नमः, भगवानुवाच। तुम्हारा आवाज़ कितना बुलन्द निकलना चाहिए।''

सा.बाबा 28.11.08 रिवा.

''शिवबाबा है निराकार, निरहंकारी। उनको आकर सर्विस करनी पड़ती है। पतित दुनिया, पतित शरीर में आते हैं। अभी वही गीता एपीसोड रिपीट हो रहा है, जब महाभारी महाभारत लड़ाई लगी थी। सब आत्मायें मच्छरों सदृश्य वापस गई थीं।'' सा.बाबा 29.12.08 रिवा.

''तूने रात गँवाई ... इस पर भी बच्चों को समझाना है... अब जगाने वाला बाप आया है, अज्ञान निद्रा से जागो। सारी सृष्टि और उसमें भी खास भारत में अज्ञान ही अज्ञान है। बाप कहते हैं - ग़फलत करेंगे तो बहुत-बहुत पछताना पड़ेगा। फिर पछताने से कुछ नहीं होगा।''

सा.बाबा 30.12.08 रिवा.

''ज्ञान सागर बाप यहाँ ही पढ़ाते हैं। राजाई स्थापन हो जायेगी तो यह पढ़ाई और पढ़ाने वाला गुम हो जायेगा। ... क्या केवल शिवबाबा और वर्से को याद करने से सभी लक्ष्मी-नारायण बन जायेंगे? नहीं, फिर पढ़ाई भी तो है। जितना ज्यादा सर्विस करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 30.12.08 रिवा.

''जिनमें ज्ञान की धारणा नहीं है, वे जैसे छोटे ठहरे।... कोई देखने में भल पड़े हैं परन्तु बुद्धि इतनी नहीं हैं तो वे जैसे कि छोटे ठहरे।... सारा मदार बुद्धि पर है। कोई छोटे-छोटे भी तीखे चले जाते हैं। कोई की समझानी में बड़ा मिठास होता है।'' सा.बाबा 31/28.12.08 रिवा.

''तुम बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। तुम जैसा खुशनसीब वा सौभाग्यशाली तो कोई नहीं है। ... विष्णु कुल सेकेण्ड नम्बर में हो गया। वह है दैवी गोद, अभी यह है ईश्वरीय गोद। ... जितनी समझ तुम ब्राह्मणों को है, उतनी देवताओं को भी नहीं है। ... ब्राह्मण ही नर्क को स्वर्ग बनाने की सर्विस करते हैं।''

सा.बाबा रात्रि क्लास

''बाप भी कहते हैं - मैं ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट हूँ, तो दादा भी कहते हैं हम ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट हैं। हम फिर 5 हजार वर्ष के बाद हर कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आते हैं। आकर बच्चों की सेवा करता हूँ। ... बाप आकर वेदों-शास्त्रों का सार समझाते हैं।''

सा.बाबा 01.01.09 रिवा.

''तुम बच्चों को बाप का बहुत शुक्रिया मानना चाहिए। तुम बाप को जानते हो और फिर औरों को भी बताते हो कि बाप ने कहा है - मैं साधारण बूढ़े तन में, इनकी भी वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करता हूँ। ... ये सब बातें नोट कर, धारण कर औरों को सुनाना है।''

सा.बाबा 2.01.09 रिवा.

''जगत अम्बा के मन्दिर में जाकर परिचय देना चाहिए, जिससे उन्होंका भी बुद्धियोग बाप से जुटे। जगत अम्बा भी उनसे योग लगाती है, तो हम भी उनसे योग लगायें। ... तुम्हारी बुद्धि में यह सारा ज्ञान रहना चाहिए। ... बुद्धि में तब बैठे, जब सर्विस में लग जाये।''

सा.बाबा 24.12.08 रिवा.

''ये बड़ी वण्डरफुल बातें हैं। जो बच्चे पूरी रीति नहीं समझा सकते हैं तो कॉन्सट्रक्शन के बदले डिस्ट्रक्शन कर देते हैं। ... हम कहेंगे - कल्प पहले भी ऐसा हुआ था, बीती सो बीती देखो। अभी तुम बच्चे सारी सृटि के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो।''

सा.बाबा 23.12.08 रिवा.

''भक्त जरूर मन्दिरों में ही मिलेंगे, उनको प्यार से समझाओ।... बुद्धि में ज्ञान की पराकाष्ठा चाहिए। बाबा कितनी दूर से हमको सिखाने आया है। अगर सर्विस नहीं करेंगे तो ऊंच पद

कैसे पायेंगे।''
सा.बाबा 24.12.08 रिवा.

''जिनमें देहाभिमान है, वे क्या सर्विस कर सकेंगे। सर्विस अगर पूरी नहीं कि तो नाम बदनाम करेंगे। योगी में बल बड़ा अच्छा रहता है। बाबा समझाने के लिए प्वाइन्ट्स तो बहुत देते रहते हैं परन्तु अच्छे-अच्छे महारथी भी भूल जाते हैं। ... सर्विस वाले मान भी बहुत पाते हैं ... कार्य-व्यवहार के साथ-साथ यह सर्विस भी कर सकते हैं।''
सा.बाबा 24.12.08 रिवा.

''सर्विस तो बहुत है परन्तु सर्विस करने वाले बच्चों में भी सच्चाई चाहिए। ... तुम कन्याओं-माताओं को सर्विस में लग जाना चाहिए। ... इसमें लोकलाज को छोड़ना होता है और बिल्कुल ही नष्टोमोहा होना है।''
सा.बाबा 18.12.08 रिवा.

''कुमारियां कहेंगी - हमको तो सगाई करनी ही नहीं है, हम तो पवित्र रहकर भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करेंगी। अधर कुमारी को तो फिर दाग़ लग जाता है। कुमारी ने सगाई की और दाग़ लगने शुरू हो जाते हैं।''
सा.बाबा 18.12.08 रिवा.

''कन्यायें ऐसे-ऐसे मन्दिरों में जाकर सर्विस करें तो बहुत आयेंगे। शाबासी देंगे, पांव पड़ेंगे। ... जैसे शुरू में साक्षात्कार होते थे, ऐसे अन्त में भी बाबा बहुत बहलायेंगे। बहुत बच्चे आबू में आयेंगे। जो होंगे, सो देखेंगे।''
सा.बाबा 18.12.08 रिवा.

''कई बच्चे तो बहुत अच्छी सर्विस करते हैं, तो कई डिस्सर्विस भी करते हैं, ग्लानि कराते हैं। एक तरफ कई कॉन्सट्रक्शन करते हैं तो दूसरी तरफ कई डिस्ट्रक्शन भी करते हैं क्योंकि ज्ञान नहीं है। यह सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। जो पूरी रीति नहीं समझते हैं, उनको समझाना है।''
सा.बाबा 19.12.08 रिवा.

''तुम्हारे में किसको ज्ञान समझाने की उछल आनी चाहिए।... इतना ज्ञान जब बुद्धि में हो तब उछल आ सकती है और किसको भी समझा सकते हैं।''
सा.बाबा 20.12.08 रिवा.

''ये बड़ी वण्डरफुल बातें हैं। जो बच्चे पूरी रीति नहीं समझा सकते हैं तो कॉन्सट्रक्शन के बदले डिस्ट्रक्शन कर देते हैं। ... हम कहेंगे - कल्प पहले भी ऐसा हुआ था, बीती सो बीती देखो। अभी तुम बच्चे सारी सृटि के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो।''
सा.बाबा 23.12.08 रिवा.

''बच्चों को अपना अनुभव सुनाना चाहिए। बस क्या सुनाऊं दिल की बात, बेहद का बाप बेहद की बादशाही देने वाला मिला और क्या अनुभव सुनाऊं। और कोई बात ही नहीं है। इस जैसी खुशी और कोई होती ही नहीं है। ... रूठकर पढ़ाई छोड़ना अपनी तकदीर से रूठना है।''
सा.बाबा 16.04.68 रात्रि क्लास

''हर एक अपने पुरुषार्थ और तकदीर अनुसार वर्सा पाते हैं। सारा मदार पुरुषार्थ और तकदीर

के ऊपर ही होता है। पुरुषार्थ से पता लग जाता है कि इनकी तकदीर में क्या है, ये क्या पद पायेंगे। ... अगर गृहस्थ व्यवहार का बन्धन नहीं है तो जाकर अन्धों की लाठी बनो, सत्य नारायण की कथा सुनाने जरूर जाना है।'' सा.बाबा 14/15.12.08 रिवा.

''ज्ञान सुनाने वाले बच्चों की अवस्था भी बहुत अच्छी चाहिए। भल किसमें ज्ञान बहुत अच्छा हो, योग भी अच्छा हो परन्तु साथ-साथ चलन भी अच्छी चाहिए। दैवी चलन उनकी होगी, जिनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का भूत नहीं होगा।'' सा.बाबा 17.12.08 रिवा.

''तुम बच्चे सबको भारत की कहानी सुनाओ। भारत सतोप्रधान था, अभी तमोप्रधान, पूज्य से पुजारी बना है।... हम सब एक्टर हैं तो ड्रामा के डायरेक्टर आदि का मालूम होना चाहिए।''

सा.बाबा 17.12.08 रिवा.

''अभी तुमको भक्ति का फल ज्ञान मिलता है। अभी भगवान पढ़ाते हैं तो धक्का खाना बन्द हो जाता है। बाबा कहते हैं - बच्चे, अशरीरी भव। ... राजधानी स्थापन हो रही है। कितनी समझने की बातें हैं। समझाने के लिए यह प्रश्नावली बहुत अच्छी है। यह सबके पाकेट में पड़ी रहे। सर्विसएबुल बच्चे ही इन बातों पर गौर करेंगे।'' सा.बाबा 17.12.08 रिवा.

''बच्चों में सर्विस करने का शौक और उमंग चाहिए। किन्होंको भल उमंग आता है परन्तु सर्विस करने का ढंग नहीं आता है। ... बच्चों को स्थापना में बाप का मददगार बनना है।''

सा.बाबा 10.12.08 रिवा.

''रोज कोई न कोई को बाप का परिचय जरूर देना चाहिए। तुम तो हो गुप्त। कितने विघ्न पड़ते हैं, सर्विस के लायक बनते नहीं हैं।... बच्चों को सर्विस का सबूत देना है। सैकड़ों को सन्देश देंगे तो कोई निकलेंगे।... सर्विस में कब थकावट नहीं होनी चाहिए।''

सा.बाबा 10.12.08 रिवा.

''यहाँ सुनना भी है और सुनाना भी है। जब तक सुनाने वाले नहीं बनें हैं, तब तक पास हो न सकें।... धारणा कर फिर औरों को करानी है, फॉलोअर्स बनाने हैं।... हर एक को माँ-बाप समान बनना है। औरों को सुनाये तब पास हो और बाप की दिल पर चढ़े।''

सा.बाबा 11.12.08 रिवा.

''मुख्य यह बात सबको समझानी है कि भगवान है सबका बाप, वही जीवनमुक्ति दाता है। ... भ्रष्टाचारी ही श्रेष्ठाचारी बनते हैं। भारत की नई रचना की कहानी कोई जानते ही नहीं हैं।''

सा.बाबा 13.12.08 रिवा.

''आपस में राय कर सर्विस के प्लान बनाने हैं। परन्तु किसकी लाइन क्लीयर नहीं होगी, कोई विकार होगा, या किसी के नाम-रूप में फंसा होगा तो वह यह काम कर न सके।''

सा.बाबा 13.12.08 रिवा.

''शिवबाबा के साथ बच्चों ने भी मेहनत की है। जो शिवबाबा के मददगार हैं, उनको कहा जाता है खुदाई खिजमतगार।... ये यज्ञ आदि भी भारत में ही रचते हैं। यह सब राज़ बाप ही समझाते हैं।''

सा.बाबा 2.12.08 रिवा.

''तुम ही भारत की सर्विस करते हो, इसलिए तुम ही स्वर्ग के मालिक बनते हो। भारत की सर्विस करने में सबकी सर्विस हो जाती है।''

सा.बाबा 2.12.08 रिवा.

''ये सब बड़ी गुह्य बातें हैं, इन बातों को समझने वाला बड़ा बुद्धिवान चाहिए। जिनका पूरा योग होगा, उनकी बुद्धि पारस बनती जायेगी। भटकने वाले की बुद्धि में यह न ठहर न सके। विद्यार्थी अपनी बुद्धि भी चलाते हैं ना। तो अभी बैठकर लिखो। शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। विचार करो - हम सागर के बच्चे अपने भाई-बहनों को कैसे बचायें।''

सा.बाबा 3.12.08 रिवा.

''यहाँ तो सबसे नष्टोमोहा होना पड़े। नहीं तो बाबा सव्रिस पर जाने के लिए कभी नहीं कहेंगे। बाबा कहते हैं - मैं तो नष्टोमोहा हूँ। मैं किसी चीज़ में मोह क्यों रखूँ। ... बाबा कहेंगे - अगर नष्टोमोहा हो तो तुम मालिक हो, जहाँ चाहो जाकर सर्विस करो। मूँझते क्यों हो। मालिक हो, अन्धों को राह बतानी है। नष्टोमोहा नहीं हैं तब पूछते हैं।''

सा.बाबा 4.12.08 रिवा.

''तुम जब किसी को यह ज्ञान समझाते हो तो पहले उनकी नब्ज़ देखनी है। सबके सामने एक जैसी बात नहीं करनी है। ... जो अच्छा योग में रहते हैं, धारणा करते हैं, वे जरूर अच्छा समझायेंगे।''

सा.बाबा 5.12.08 रिवा.

''जगत-अम्बा, जगत-पिता ही नामीग्रामी हैं। इन जैसी सर्विस कोई कर नहीं सकेंगे। यह निमित्त बने हुए हैं। इसलिए कभी हार्टफेल नहीं होना चाहिए। अच्छा, मम्मा-बाबा जैसा नहीं तो सेकेण्ड नम्बर तो बन सकते हो। सारा मदार सर्विस पर है। प्रजा और वारिस दोनों बनाने हैं।''

सा.बाबा 5.12.08 रिवा.

''कितना बच्चों को समझाया जाता है। तो अब सर्विस करके दिखाओ। बाबा तो सर्विस पर इनाम देते हैं। बाबा तुम्हारा ज्ञान रत्नों से कितना श्रृंगार कराते हैं।''

सा.बाबा 5.12.08 रिवा.

''अभी सारी दुनिया ब्लाइण्डफेथ में है। अब अन्धों को लाठी चाहिए। तुम अब लाठी बने हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। ... कोई तो बहुत सर्विसएबुल हैं। ... काटों को फूल बनाने में मेहनत लगती है।''

सा.बाबा 6.12.08 रिवा.

''हर एक आत्मा में अपना-अपना पार्ट नूँधा हुआ है, सब एक समान नहीं हो सकते हैं। ... ये

बातें समझाने वाला बड़ा बुद्धिवान चाहिए। बाप जानते हैं - कौन-कौन समझा सकते हैं, कौन-कौन सर्विस करने में समझदार हैं, किसकी लाइन किलियर है, देही-अभिमानी रहते हैं।''

सा.बाबा 9.12.08 रिवा.

''शिवबाबा और ब्रह्मा का क्या सम्बन्ध है -यह जिसकी बुद्धि में बैठा होगा, वही किसको यह समझा सकेंगे। बुद्धि में ही नहीं होगा तो उनको समझाने आयेगा ही नहीं।... वे खुद कहते हैं - मुझ निराकार को इनका आधार लेना पड़ता है, तो नाम भी बदली करता हूँ।''

सा.बाबा 9.12.08 रिवा.

''ज्ञानमूर्त और यादमूर्त दोनों में समान बनना है। ... जितना जो खुद यादमूर्त रहता है, उतना ही वह औरों को भी बाप की याद दिला सकता है। यादमूर्त बन सभी को याद दिलाना है।''

अ.बापदादा 5.4.70

''न्यारे और प्यारे बनना है और बनाना है - यही लक्ष्य रखना है। जो जितना बनता है, उतना ही बनाता है। ... विघ्नों को मिटाने की युक्तियाँ अगर सदैव याद हैं तो पुरुषार्थ में ढीला नहीं पड़ेंगे।'' अ.बापदादा 25.1.70

''जैसे-जैसे अव्यक्त स्थिति होती जायेगी, वैसे बोलना भी कम होता जायेगा। योगबल और ज्ञानबल दोनों इकट्ठा होने सर्विस में सफलता होती है। ... जितना ज्ञानबल और योगबल समानता में लायेंगे, उतनी सफलता होगी।'' अ.बापदादा 23.1.70

''यह स्मृति रखनी चाहिए कि मैं ईश्वरीय सर्विस पर हूँ। यज्ञ कारोबार है तो ऑटोमेटिकली यज्ञ रचयिता की स्मृति आयेगी और कोई भी कार्य करते हो तो सदा समझो कि इस कार्य के निमित्त बनाने वाला बेकबोन बाप है। ... मैं निमित्त हूँ, कराने वाला बाप है।''

अ.बापदादा 4.07.71

''करावनहार बाप है, मैं निमित्त हूँ समझने से सारा कारोबार खेल महसूस होगा। साक्षी होकर जैसे पार्ट बजा रहे हैं। ... सिर्फ कोर्स देने से प्रजा बनती है लेकिन फोर्स के साथ कोर्स में समीप सम्बन्ध में आते हैं। ... यह कठिन योग नहीं है। यह सहजयोग ही वहाँ सहज राज्य करायेगा।'' अ.बापदादा 4.07.71

''कैसे भी स्भाव-संस्कार वाली आत्मा हो ... आपके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना हो। ऐसे सर्व आत्माओं का सेवाधारी अर्थात् कल्याणकारी बनना है।'' अ.बापदादा 19.4.71

''सदैव यह ख्याल रखो कि जो भी आत्मायें सम्पर्क में आती हैं, उनको जो आवश्यकता है, वह मिले। रोटी की आवश्यकता वाले को पानी दे दो तो क्या वह सन्तुष्ट होगा ... स्वभाव से भी सर्विस कर सकते हो। ... सम्पर्क में लाकर फिर सम्बन्ध में लाओ।''

अ.बापदादा 22.1.71 पार्टी 1

''जो निराकार स्नेही होते हैं, उनकी विशेषता है कि वे ज्यादा निराकारी स्थिति में होंगे और जो साकार स्नेही हैं, वे चरित्रवान होंगे। उनका एक-एक चरित्र सर्विसएबुल होगा। दूसरा वे औरों को भी स्नेह में ज्यादा ला सकेंगे। निराकारी और निरहंकारी दोनों समान चाहिए।''

अ.बापदादा 22.1.71 पार्टी 2

''जैसे साकार रूप के सामने आने से ही हर एक को भावना अनुसार साक्षात्कार वा अनुभव होता था। ऐसे आप लोगों के द्वारा भी ... साक्षात्कार होंगे। ऐसे दर्शनीय मूर्त वा साक्षात्कार मूर्त तब बनेंगे, जब अपना अव्यक्त आकृति रूप दिखायेंगे। ... प्रकाशमय रूप दिखाई दे। जब लाइट ही लाइट देखेंगे तो स्वयं भी लाइट रूप हो जायेंगे।'' अ.बापदादा 2.07.70

''जैसे बाप ने बच्चों को अपने से भी ऊंचा बनाया, वैसे अपने से भी ऊंचा बाप समान बनायेंगे तो गोया फालो फादर किया। ... इसलिए लक्ष्य सदैव सम्पूर्णता का रखना है। जो सम्पूर्णमूर्त प्रत्यक्ष प्रख्यात हो चुके हैं, उसका ही लक्ष्य रखना है। जो अभी गुप्त हैं, प्रत्यक्षता में नहीं आये हैं, उनका भी लक्ष्य नहीं रख सकते हैं।'' अ.बापदादा 29.6.70

''तुम्हारी लाइट को देखकर दूसरे भी जैसे लाइट हो जायेंगे। कितना भी मन से वा स्थिति में भारीपन हो लेकिन आने से ही हल्का हो जायें, ऐसी स्टेज अब पकड़नी है। ... द्वापर का गायन कोई बड़ी बात नहीं हे लेकिन ऐसे साक्षात्कारमूर्त और साक्षात् मूर्त बनने से अभी से ही अपना गायन सुनेंगे।'' अ.बापदादा 19.6.70

''जो जितना सहयोगी बनता है, उसको एक्स्ट्रा सहयोग देना पड़ता है। ... दोनों रूप से किसी भी आत्मा को विशेष सहयोग दे सकते हो और देना चाहिए। इससे बहुत मदद मिलती है। ... साकार रूप में भी कोई आत्मा को एक्स्ट्रा सहयोग देने का सबूत करके दिखाया ना। उस आत्मा को स्वयं को भी अनुभव हुआ।'' अ.बापदादा 19.6.70

''जितना-जितना आप सूक्ष्म होते जायेंगे, उतना यह सूक्ष्म सर्विस भी बढ़ती जायेगी। स्थूल के साथ सूक्ष्म का प्रभाव जल्दी पड़ता है और सदा काल के लिए। बापदादा भी विशेष सहयोग देते हैं। एक्स्ट्रा मदद का अनुभव होगा। मेहनत कम और प्राप्ति अधिक।''

अ.बापदादा 19.6.70

''जो जितना चेकर होगा, वह उतना ही मेकर बन सकता है। इस समय आप लॉ मेकर भी हो, न्यू वर्ल्ड के मेकर भी हो और पीस मेकर भी हो। विशेष क्या चेक करना है। यही सर्विस अब रही हुई है, जिससे नाम बाला होना है।'' अ.बापदादा 25.6.70

''पाण्डव गवर्मेन्ट के चेकर्स बनकर जाओ, जो वे देखने से ही अपनी करप्शन, एडल्ट्रेशन से घबरायेंगे और फिर सिर झुकायेंगे। ... एक ने भी सिर झुकाया, तो अनेकों के सिर झुक जायेंगे। ... अपना भी चेकर बनना है और सर्विस में भी चैकर बनना है। जो जितना यहाँ चेकर और मेकर बनता है, वही फिर रूलर भी बनता है।'' अ.बापदादा 25.6.70

''अलौकिक सर्विस क्या करते हो। आत्मा का कनेक्शन पॉवरहाउस के साथ करने की सर्विस करते हो। तार का तार के साथ कनेक्शन करना होता है तो रबड़ उतारना होता है। वैसे ही

आपका पहला कर्तव्य है - अपने को आत्मा समझ शरीर के भान से अलग रहना और औरों को भी शरीर के भान से अलग बनाना अर्थात् अनुभव कराना।'' अ.बापदादा 23.1.70

''समय आपका इन्तजार कर रहा है और आपको इन्तजाम करना है, समय का इन्तजार नहीं करना है। सर्व को सन्देश देने का और समय को सम्पन्न बनाने का इन्तजाम करना है।''

अ.बापदादा 20.12.92

''जब एक-दो के संस्कारों में समीप होंगे, तब कोई भी सम्मेलन की सफलता होगी। ... जितना एक-दो को सम्मान देंगे, उतना ही सारी विश्व आप सभी का सम्मान करेगी। सम्मान देने से सम्मान मिलेगा। ... जब आप यहाँ एक-दो के विचारों में हाँ जी करेंगे, तब वहाँ सतयुग में आपकी प्रजा हाँजी, हाँ जी करेगी।'' अ.बापदादा 7.6.70

''जितना अपने को सर्विस के बन्धन में बाँधते जायेंगे तो दूसरे बन्धन छूटते जायेंगे। आप सोचो कि यह बन्धन छूटे तो सर्विस में लग जायें परन्तु ऐसे नहीं होगा। ... जितना जोड़ेंगे, उतना ही टूटेगा।'' अ.बापदादा 7.6.70 पार्टी

''स्नेह का रिटर्न है साहयेग ... विनाश के समय भल सभी आत्मायें पहचान लेंगे लेकिन वर्सा नहीं पा सकेंगी क्योंकि सहयोगी नहीं बन सकेंगे। ... बन्धन से ही बन्धन कटता है। जितना ईश्वरीय बन्धनों में बँधेंगे, उतना कर्म-बन्धन से छूटेंगे।'' अ.बापदादा 7.6.70 पार्टी

अव्यक्त बापदादा के वर्तमान के महावाक्य

''जहाँ बाप है, वहाँ विजय है ही। ... सूर्यवंशी अर्थात् सदा विजयी। विजय जन्मसिद्ध अधिकार अनुभव हो। कहना नहीं लेकिन अनुभव हो। ... सेवा करना अर्थात् खाता जमा करना। सेवा, सेवा नहीं है लेकिन मेवा है।'' अ.बापदादा 18.11.93 पार्टी 3

''बाप को याद करने वाली आत्मा, जिसको बाप का खज़ाना मिल गया, वह सेवा के बिना रह ही नहीं सकता क्योंकि अथाह प्राप्ति है, अखुट खज़ाने हैं, दाता के बच्चे हैं, वे देने के बिना रह नहीं सकते।'' अ.बापदादा 20.10.08

''ब्रह्मा कुमारियों तक पहुँचे हैं लेकिन ब्रह्माकुमारियों को सिखाने वाला कौन! ब्रह्माकुमारियों, ब्रह्माकुमारों का दाता कौन! अभी समय को समीप लाना है और समाप्ति करनी है। ... समझते हो ना कि मैं ही निमित्त हूँ। बाप ने यह जिम्मेवारी अपने साथ बच्चों को दी है। सन शोज़ फादर। ... अभी वर्सा लेने वाली आत्माओं की क्यू लगनी चाहिए।'' अ.बापदादा 15.3.10

''वी.आई.पी हैं, बाकी एक एडीशन चाहिए, वह एडीशन क्या है? सहज योगी की लिस्ट में

भी आओ। ... और ही योग की शक्ति मदद देगी। ... आपको देखकर औरों को भी उमंग आयेगा कि हम भी चल सकते हैं। तो आपकी सेवा हो जायेगी। आप अनेकों के तकदीर का ताला खोल सकते हो। ... वरदान है - आप सभी आने वाली नई दुनिया में 21 जन्म सदा खुश रहेंगे।''

अ.बापदादा 15.3.10

''अवतरण के स्थान का कितना महत्व होता है। जो भी धर्म पिता आये, उनके जन्म स्थान का कितना यादगार रहता है। तो सिन्ध जन्मभूमि (शिवबाबा की अवतरण-भूमि और ब्रह्मा बाबा की जन्म-भूमि), उसका भी बहुत महत्व है। जनक प्रोग्राम बना रही है। ... जहाँ जन्म स्थान है, वहाँ प्रत्यक्षता होनी ही चाहिए। चाहे कोई भी धर्म वाले हों लेकिन हैं तो एक ही बाप के बच्चे। बाप का सन्देश सुनने के लिए सभी का हक़ लगता है। तो बापदादा आपका यह प्लेन देखकर खुश है।''

अ.बापदादा 30.1.10 सिन्धी ग्रुप

''आजकल नेचर की सभी को चिन्ता है। तो आप सबको विशेष सन्देश दो कि मन की नेचर द्वारा प्रकृति की नेचर को कैसे सुधार सकते हैं। ... सभी वायुमण्डल में वैराग्य वृत्ति की नवीनता देखना चाहते हैं, सुनने का इच्छुक कम है।''

अ.बापदादा 30.1.10

''स्वराज्य अधिकारी बन स्वराज्य की सीट नहीं छोड़ो।... सन्देश देने में भी विश्व-कल्याणकारी हैं, तो कई बच्चे समझते अभी समय पड़ा है, आगे चलकर सन्देश दे देंगे ... उल्हना देंगे कि आपने अभी लास्ट में बताया। ... ऐसे पूरा वर्सा लेने वाले यही लक्ष्य बुद्धि में रखो कि अचानक, एवर-रेडी और बहुत समय। तीनों शब्द साथ-साथ याद रखो।''

अ.बापदादा 18.1.10

''मन और तन के डबल डाक्टर बनो क्योंकि आजकल मन का रोग और बढ़ता जायेगा इसलिए डबल डाक्टर्स की सेवा और बढ़ती जायेगी। प्रकृति की हलचल के कारण नये-नये रोग निकलते रहते हैं, तो ऐसे समय पर डबल डाक्रटर्स की आवश्यकता है। तो आप सभी एवर-रेडी हो। ... अपने कार्ड के पीछे मन की दवाई के लिए एड्रेस लिख दो... डाक्टर्स बहुत सेवा कर सकते हैं।''

अ.बापदादा 18.1.10

''सेवा के निमित्त बहुत वर्ष बने, अब औरों को सेवा के निमित्त बनाने की सेवा के निमित्त बनो। वे माइक हों और आप माइट हो। ... आपकी माइट से माइक निमित्त बनें। इसको कहा जाता है तीव्र गति की उड़ान।''

अ.बापदादा 14.4.94

''अब बापदादा ऐसा ग्रुप चाहता है, जिसके संकल्प, बोल और कर्म सब में अलौकिकता, दिव्यता की झलक हो। ... जो निमित्त बनते हैं, उनका सूक्ष्म वायबेशन वायुमण्डल में जरूर जाता है। उससे उनको उसका पद्मगुणा पुण्य भी मिलता है और पदम गुणा निमित्त भी बनते हैं।

(अर्थात् अच्छे या बुरे दोनों का प्रभाव होता है) ... ये तो चलता आता है, होता रहता है - यह वायब्रेशन भी कमजोर बनाता है।''

अ.बापदादा 14.4.94

''बाकी जहाँ से भी जो भी बच्चे आये हैं ... 'सदा सम्पन्न और सम्पूर्ण भव', ... सभी स्थान वाले अपने स्नेह सम्पन्न स्वरूप से अथक सेवाधारी बन सेवा कर रहे हैं और करते रहेंगे। सेवा की मुबारक हो।''

अ.बापदादा 3.04.94

''हर संकल्प, बोल और कर्म द्वारा सदा बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा अपने दिल में लहराओ। कोई भी संकल्प, बोल और कर्म ऐसा नहीं हो, जो बाप को प्रत्यक्ष करने का नहीं हो। ... सदा अपने संकल्प, बोल और कर्म द्वारा दिल में बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा लहराओ और सदा खुश रहने की डान्स करते रहो।''

अ.बापदादा 9.03.94

''जब तक जीना है, तब तक खुश रहना है - यह पक्का व्रत लिया है ना। जिसके पास विल पॉवर है, वह क्या नहीं कर सकता है। अगर आप मास्टर सर्वशक्तिवान नहीं कर सकेंगे तो और कौन करेगा! ... जो स्वयं खुश रहेगा, वह खुशी की मिठाई सबको बाँटता रहेगा। ... मीठा बाबा, प्यारा बाबा, मेरा बाबा - यह गीत ऑटोमेटिक बजता रहे।''

अ.बापदादा 9.03.94

''अभी बापदादा को यही संकल्प है कि अब के समय प्रमाण जो सरकमस्टांसेस हैं, वे आगे-आगे और नाज़ुक होते जायेंगे। इसलिए कोई गाँव, कोई भी कोना ऐसा न रह जाये जो कोई उल्हना दे कि हमारा बाप आया और आपने हमको सन्देश नहीं दिया। ... और भी आपस में मिलकर ऐसे प्रोग्राम बनाते रहना। ... सभी ने बहुत अच्छा किया।''

अ.बापदादा 15.11.09

''ऐसे सेवा के कार्यों में अपना भी पुरुषार्थ चलता है और आत्माओं का भी कल्याण होता है।... बापदादा बार-बार सभी बच्चों को यही कहते हैं कि आत्माओं के प्रति रहमदिल बनो।... बापदादा अभी हर एक बच्चे का रहमदिल का पार्ट देखना चाहते हैं।''

अ.बापदादा 15.11.09

''डबल विदेशी बच्चे लगन से जो चारो ओर मेहनत कर रहे हैं, उससे बाप का विश्व-कल्याणकारी कर्तव्य प्रसिद्ध किया है, इसलिए बापदादा हर बच्चे को 'वाह, बच्चा, वाह!' की मुबारक देते हैं। अभी भी जैसे भारत में कोने-कोने में सन्देश देने की सेवा चलती रहती है, ऐसे वहाँ भी उमंग-उत्साह रहे कि रहे हुए देश में बापदादा का सन्देश दे दें क्योंकि समय पर कोई भरोसा नहीं है।''

अ.बापदादा 25.10.09

''स्व-पुरुषार्थ, ... सन्तुष्टता ... तीसरा सेवा से भी खज़ाना जमा करते हो। क्योंकि सेवा से

सर्व आत्माओं को खुशी की प्राप्ति होती है, तो खुशी का खजाना भी प्राप्त कर सकते हो। अपना पुरुषार्थ, सर्व को सन्तुष्ट करने का पुरुषार्थ और सेवा का पुरुषार्थ इन तीनों प्रकार से खज़ाने जमा कर सकते हो।'' अ.बापदादा 24.3.09

''खजाने जमा करने में विषेष सम्बन्ध-सम्पर्क में आने से एक तो निमित्त-भाव, निर्मान-भाव, निस्वार्थ-भाव से हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखने की आवश्यकता है। सेवा में व सम्बन्ध-सम्पर्क में इस समय पुण्य का खाता और दुआओं का खाता बहुत सहज जमा कर सकते हो।'' अ.बापदादा 24.3.09

''जिसका जितना भण्डारा भरपूर होता है, उसके नयनों से, चलन से, चेहरे से मालूम होता है। ... नयनों से रुहानियत, चेहरे से मुस्कराहट और कर्म से हर एक गुण सभी को अनुभव होते हैं। तो हर एक अपने आपको चेक करे। बापदादा की हर एक बच्चे में यही शुभ भावना है कि हर एक बच्चा अनेक आत्माओं को ऐसा खज़ानों से सम्पन्न बनाये।''

अ.बापदादा 24.3.09

''आज विश्व में सर्व आत्मायें यही चाहतीं हैं कि कुछ न कुछ आध्यात्मिक शक्ति मिल जाये और आध्यात्मिक शक्ति के दाता आप ब्राह्मण आत्मायें ही हो क्योंकि आप होलीएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट आत्मायें हो। ऐसे होलीएस्ट हो ... ऐसी विधिपूर्वक पूजा किसी भी अन्य आत्मा की नहीं होती है।'' अ.बापदादा 24.3.09

''चारो ओर के सर्व बच्चों को जो सदा खज़ाने से सम्पन्न हैं, सदा अपनी चलन और चेहरे से सेवाधारी हैं क्योंकि आप सबका वायदा है कि हम विश्व-परिवर्तक बन विश्व का परिवर्तन करेंगे, तो चलते-फिरते भी सेवाधारी सेवा में तत्पर रहते हैं, ऐसे विश्व-सेवाधारी, विश्व-परिवर्तक हर एक को बाप के खज़ानों से भरपूर करने वाले बापदादा के चारो ओर के बच्चों को बापदादा का यादप्यार और दिल से दुआयें और नमस्ते।'' अ.बापदादा 24.03.09

''प्रॉब्लम सेकेण्ड में परिवर्तन हो जाये। प्रॉब्लम के रूप में आये और सम्पन्न स्वरूप में बदल जाये। संकल्प और स्वांस में 'नो प्रॉब्लम' ... नो प्रॉब्लम अर्थात् सदा बाप समान रहेंगे। इसलिए बापदादा पदमगुणा बधाइयाँ दे रहे हैं। ... किसी का उल्हना न रह जाये। बेचारी आत्मायें अभी समझती हैं कि आध्यात्मिकता आवश्यक है, शान्ति चाहिए लेकिन बेचारों को साधन नहीं मिलता है।'' अ.बापदादा 24.3.09

''मिलता बहुत है लेकिन यूज़ कम करते हो। ... बहुत अच्छा, बहुत अच्छा - ये है सम्भाल कर रखना। अच्छाई को स्वयं के प्रति और दूसरों के प्रति कार्य में लगाओ। यहाँ खर्चना अर्थात् बढ़ाना है। ... प्वाइन्ट बड़ी अच्छी है, विधि बड़ी अच्छी है, सिर्फ बुद्धि के लॉकर में

देखकर खुश हो जाते हैं। ... उसको यूज़ करो।'' अ.बापदादा 18.1.94

''संगमयुग का विशेष खज़ाना है खुशी का खज़ाना। ... आपके पास तो अथाह खजाना है। ... अनगिनत है तो यूज़ करो ना। बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि प्राण चले जायें लेकिन खुशी नहीं जाये। ... महादानी बनो। ... आवश्यकता के समय आप आत्माओं को महादानी बनना है।'' अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी

''गालियाँ भी खाद का काम करेंगी। ... जितनी गालियाँ देंगे, उतना आपके गुण गायेंगे। इसलिए हर आत्मा को दाता बन देते जाओ। ... लेने की इच्छा नहीं रखो कि वह अच्छा बोले, अच्छा माने तो दें। नहीं, दाता के बच्चे मास्टर दाता बनो।''

अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी

''अभी प्रत्यक्षता का कार्य रहा हुआ है, इसका ही पुरुषार्थ कर रहे हो ना। मेरा बाबा आ गया। ... तो जितनी जागरण की, व्रत लेने की प्रतिज्ञा पक्की करेंगे तो प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी होगी। प्रत्यक्षता चाहते हो ना! तो समय को समीप लाने वाले कौन? आप सब सेवाधारी बच्चे हो ना।'' अ.बापदादा 22.2.09

''अव्यक्त का अर्थ ही है फरिश्ता। ... अब फरिश्ता बनकर क्या करेंगे? सदा हर दिन, हर समय महादानी और वरदानी बनना है। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये, उस आत्मा को महादानी बन कोई न कोई शक्ति का, ज्ञान का, गुण का दान देना ही है।''

अ.बापदादा 31.12.93

''आपके ज्ञान, गुण, शक्तियों के खज़ाने कितने भरपूर हो गये हैं। ... तीनों में सम्पन्न हो या एक में सम्पन्न हो, दो में नहीं? वर्तमान समय आत्माओं को तीनों की बहुत आवश्यकता है। ... ज्ञानी-अज्ञानी जिसके भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ, उसको कोई न कोई दान अर्थात् सहयोग अवश्य दो।'' अ.बापदादा 31.12.93

''वरदान देने की विधि क्या है? आपके जड़ चित्र तो अभी तक वरदान दे रहे हैं। तो वरदान देने की विधि है - जो भी आत्मा सम्बन्ध-सम्पर्क में आये, उसको अपनी स्थिति के वायुमण्डल द्वारा और अपनी वृत्ति के वायब्रेशन्स द्वारा सहयोग देना अर्थात् वरदान देना।''

अ.बापदादा 31.12.93

''गाली देने वाली, निन्दा करने वाली आत्मा भी हो लेकिन आप अपनी शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा, वृत्ति द्वारा, स्थिति द्वारा ऐसी आत्मा को भी गुण-दान या सहनशीलता की शक्ति का वरदान दो। ... क्रोधी आत्मा परवश है, इसलिए उसको रहम के शीतल जल द्वारा वरदान दो।'' अ.बापदादा 31.12.93

''चेतन्य में संस्कार भरते हो तब ते जड़ चित्रों द्वारा भी वरदानी मूर्त बनते हो। संस्कार तो अभी ही भरने हैं ना। ... महादानी-वरदानी मूर्त बनने से व्यर्थ स्वत: खत्म हो जायेगा क्योंकि जो महादानी हैं, वरदानी हैं, वे दूसरों को देने वाले दाता हैं। तो दाता का अर्थ ही है समर्थ। समर्थ होगा तब तो देगा।'' अ.बापदादा 31.12.93

''सेवा का फल मिलता है ... सेवा के सब्जेक्ट की मार्क्स मिलेगी ... लेकिन चारो ही सब्जेक्ट में फर्स्ट नम्बर आना चाहिए। ... बाप की आशाओं के सितारे हो तो बापदादा की यही सबसे बड़ी आश है कि सबका चारो ही सब्जेक्ट में नम्बर अच्छा हो।... महारथी उसको कहा जाता है, जो चारो ही सब्जेक्ट्स में अच्छे मार्क्स ले।'' अ.बापदादा 5.02.09

''जो फारेन में रहते हैं और उनके इण्डिया में गाँव है, स्थान है। उन्होंने फारेन में रहते भी अपने जन्म-भूमि ... सेन्टर स्थापन किया है, बापदादा उन बच्चों को बहुत-बहुत पुण्यात्मा का टाइटिल देते हैं। ... यह है पुण्यात्मा का कर्तव्य।'' अ.बापदादा 31.12.08

''अभी ऐसे सहयोगियों को सहयोगी से वारिस बनाओ।... माइक भी हो और वारिस क्वालिटी भी हो। सहयोगी नहीं, सहयोगी तो बनायेंगे ही और बन रहे हैं लेकिन वारिस क्वालिटी बनाओ। ... पहले फटाफट वारिस निकले हैं, वैसे अभी और सब क्वालिफिकेशन्स हैं लेकिन वारिस क्वालिटी हर श्रीमत, हर डायरेक्शन पर मन और गुप्त रूप से भी चलने वाले हों।... कोई भी जोन करे।'' अ.बापदादा 31.12.08 दिल्ली सेवा का टर्न

''बापदादा कहते थे - मीडिया कमाल कर सकती है, लेकिन अभी अव्यक्त रूप में देख रहे हैं। ... सिर्फ अच्छा लगा नहीं, अच्छा बनाकर दिखाओ। ... दुखी आत्माओं का दुख देखकर बापदादा को तरस पड़ता है। फिर भी बच्चे हैं ना। सगे हैं या लगे हैं लेकिन हैं तो बच्चे, इसलिए और प्लॉन बढ़ाते चलो।'' अ.बापदादा 31.12.08 मीडिया

''कल्चरल और कल्चर दोनों मिलते हैं। तो कल्चरल द्वारा कल्चर बन जाये। ... जब मनुष्यात्माओं का कल्चर बदल जायेगा तो अभी तो आप कल्चरल दिखाते हो लेकिन कल्चर बदलने से वे भी अपने कार्य में रहते खुशी की डांस शुरू कर देंगे। ... मन में खुशी की डांस करें। ... दुख-अशान्ति-भय बढ़ता जा रहा है। आप खुशी की डांस करो और भयभीत होने से बचाओ।'' अ.बापदादा 31.12.08 कल्चरल

''शुरू-शुरू में बापदादा के महावाक्य हैं कि विदेश वाले इण्डिया के कुम्भकरणों को जगायेंगे। ... अपने ब्राह्मण तो आते हैं लेकिन वी.आई.पी. आकर अपना अनुभव सुनायें कि हमको यहाँ क्या मिला है। ... अभी आपको डबल पुरुषार्थी का टाइटिल मिला है, फिर आपको टाइटिल मिलेगा - फरिश्ता पुरुषार्थी।'' अ.बापदादा 15.12.08

''जो अटल, अखण्ड और अखुट हैं, वे ही विजय माला के विजयी मणके हैं। ... नम्बरवन बनने के लिए सबसे सहज विधि है - अखण्ड महादानी बनो। अखण्ड महादानी अर्थात् निरन्तर सहज सेवाधारी। ... दाता के बच्चे हो, सर्व खज़ानों से सम्पन्न श्रेष्ठ आत्मायें हो। सम्पन्न की निशानी है - अखण्ड महादानी।''

अ.बापदादा 2.12.93

सृष्टि - चक्र
हर 5000 वर्ष के बाद
हू-ब-हू पुनरावृत्त

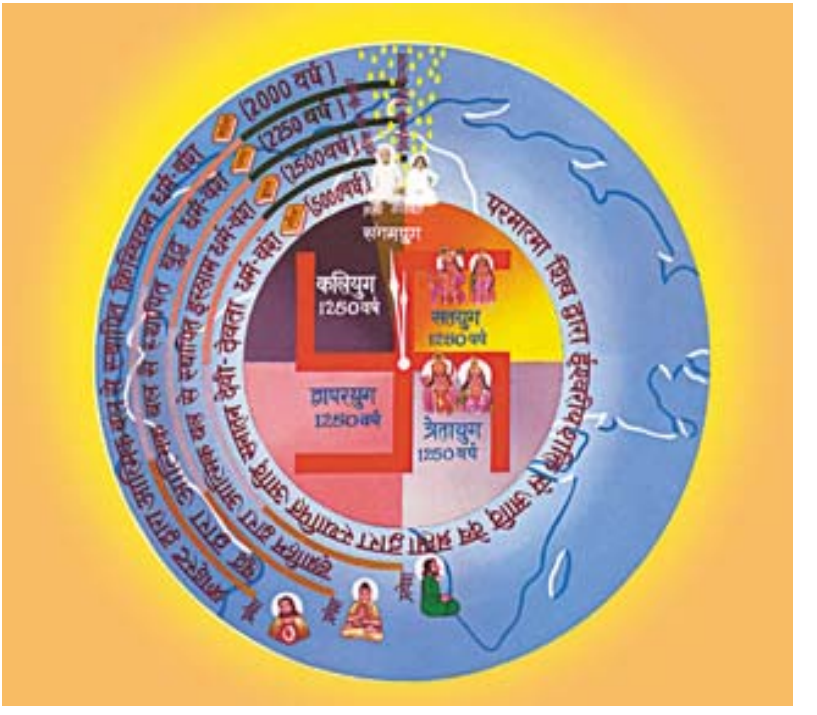

अमृत-धारा

''जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।'' सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

यह अटल सत्य है कि जो हुआ, वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुअ, वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा. वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं और इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता का नाम-निशान नहीं होता है और मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, यश-अपयश, सुख-दुख, अपने-पराये में समान स्थिति होगी। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जागृत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व आत्माओं की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होती है।

यह विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।'' अ.बापदादा 15.4.92